सेवकाई और अगुआई प्रशिक्षण कोर्स

स्तर : अगुवा / पास्टर

अध्ययन पुस्तक क्रमांक : 12

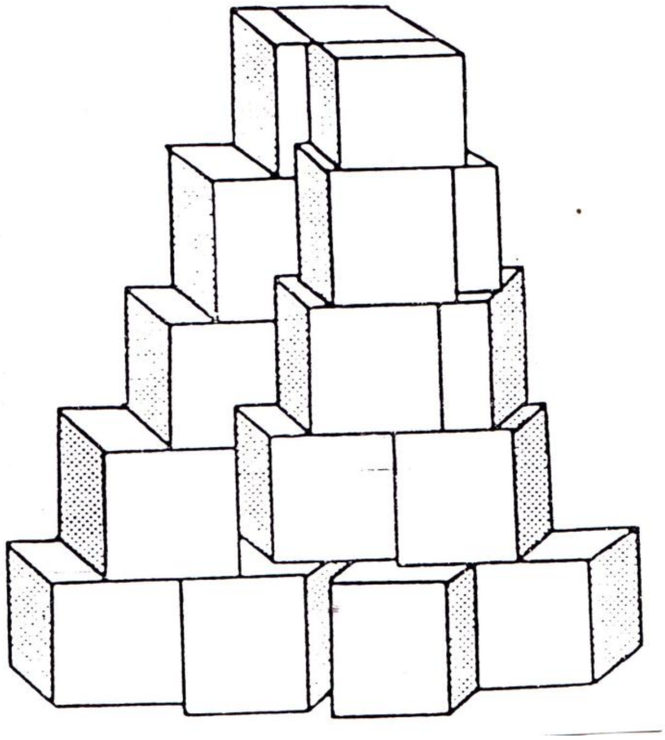

स्तरः

5. सेवक
4. अगुवा / पास्टर
3. सैल अगुवा
2. चेला
1. नौसिखिया

मसीह में हर विश्वासी को एक सेवक बनाते हुए आत्मिक परिपक्वता में विकसित होने और एक प्रभावशाली और कुशल सेवकाई में बढ़ने के लिए बाइबल अध्ययन कोर्स !!!

स्वयं-अध्ययन और दूसरों को सिखाने के लिए सरलता से इस्तेमाल करने योग्य !!!

सेवकाई और अगुआई प्रशिक्षण कोर्स

<u>उद्देश्य:</u>

- उसे जानना, जो एक मात्र सच्चा परमेश्वर है

(विकसित होना / परिपक्व होना)

- यहोशू 1:8 "व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित से कभी न उतरने पाए, इसी में दिन रात ध्यान दिए रखना, इसलिए कि जो कुछ उस में लिखा है उसके अनुसार करने को तू चौकसी करे; क्योंकि ऐसा ही करने से तेरे सब काम सफल होंगे, और तू प्रभावशाली होगा।"

- 2 पतरस 3:18 "पर हमारे प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और पहचान में बढ़ते जाओ। उसी की महिमा अभी भी हो, और युगानुयुग होती रहे। आमीन।"

- 2 तीमुथियुस 2:15 "अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।"

- कुलुस्सियों 1:27-28 "मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है, जिसका प्रचार करके हम हर एक मनुष्य को चेतावनी देते हैं और सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं, कि हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करें।"

- और उसके बारे में दूसरों को बताएँ!

(गुणा / पुनरुत्पादन)

- 2 तीमुथियुस 2:2 "और जो बातें तू ने बहुत से गवाहों के सामने मुझ से सुनी हैं, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे; जो दूसरों को भी सिखाने के योग्य हों।"

- 2 तीमुथियुस 3:16-17 "सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए।"

- इफिसियों 2:10 "क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं, और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिए तैयार किया।"

- 2 पतरस 1:8 "क्योंकि यदि ये तुम में वर्तमान रहें और बढ़ती जाएँ, तो तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह की पहचान में निकम्मे और निष्फल न होने देंगी।"

<u>सिद्धान्त</u> : "क्योंकि उसी की ओर से, और उसी के द्वारा, और उसी के लिए सब कुछ है।" (रोमियों 11:36)

(ज्ञान में बढ़ना; चरित्र में परिपक्व होना; आत्मिक वरदान इस्तेमाल करना)

सूची अध्ययन पुस्तक क्र. : 12

क्रमाँक		पृष्ठ
-	शैतान का तंत्र और योजनाएँ	1822
-	आत्मिक विश्लेषण और सामाजिक विश्लेषण: कैसे करें	1831
-	दुष्टात्माओं को निकालना	1840
-	दुष्टात्माओं को कैसे निकालें और श्रापों को कैसे तोड़ें (7 पाठ) (1) दुष्टात्माएँ क्या हैं ? (2) दुष्टात्माएँ कैसे प्रवेश करती हैं ? (3) श्राप (4) किस तरह मुक्ति पाएँ (5) प्रकटिकरण (6) सलाह और मुक्ति (7) मुक्ति के उपाए	1845
-	तंत्र-मंत्र की सूची - स्वयं को मुक्त करें	1856
-	क्या एक मसीही दुष्टात्माग्रस्त हो सकता है ?	1860
-	मुक्ति शिविर: (आत्मिक युद्ध, श्राप, मुक्ति)	1868
-	श्रापों को तोड़ने के लिए पूर्वजों के पापों का अंगीकार करना	1873
-	पीढ़ी के पापों का आरंभ और उन्हें तोड़ना	1878
-	तांत्रिक विद्या: उसकी जड़ को समझना और उसकी शक्ति को हराना	1881
-	आशीष और श्राप - परमेश्वर के वचन से विश्लेषण	1884
-	पुराने नियम की पुस्तकें: अध्ययन रूप रेखा	1895
-	नए नियम की पुस्तकें: अध्ययन रूप रेखा	1948
-	मसीही जीवन के महत्त्वपूर्ण शब्दों को समझना: समझाए गए विषय हैं - (मेलमिलाप, धर्मी ठहराया जाना, प्रायश्चित, आरोपण, पवित्रिकरण, मध्यस्थता, उद्धार, बनाया, भाग्य, महिमान्वित होना, नवजीवन, धार्मिकता)	1983
-	अपनी पहचान को जानिए: "मसीह में / उस में और मसीह के द्वारा / उसके द्वारा	2017

शैतान का तंत्र और योजनाएँ: जीतने के लिए समझो!

अब हम जानते हैं कि अंधकार के राज्य में कौन है - शैतान और उसके दूत। हमें यह जानने की आवश्यकता है कि किस प्रकार उसका राज्य चलता है, या यदि बाइबल की भाषा में कहा जाए तो - "शैतान का हम पर दांव न चले क्योंकि हम उसकी युक्तियों से अनजान नहीं" (2 कुरिं. 2:11)। यदि हम पुलिस में होते तो हम सीखते कि किस प्रकार मुज़रिम को हराने के लिए आवश्यकता है उसके जुर्म करने का तरीका जानना।

शैतान का तरीका उसके तीन कांटों से समझा सकता है।

पहला कांटाः शैतान का तंत्र

शैतान का पहला कांटा है उसका तंत्र। अपने तंत्र के द्वारा वह संसार की घटनाओं को नियंत्रित करता और देखता है। इस संसार का देवता होने के नाते, शैतान के पास दूरदर्शी योजनाएँ हैं। किसी भी तंत्र की तरह, उसके कई कार्य हैं। अंधकार के राज्य के 3 कार्य बाइबल में वर्णित हैं, जिनमें राजा, राज्य और शक्तियाँ शामिल हैं। इन शब्दों का अर्थ कई अनुवादों में अलग-अलग हैं। परन्तु मुख्य बात यह है कि हम इन कार्यों को जानें और उनको पराजित करें।

अ) राजा

बाइबल सिंहासन, प्रभुत्व और राजा जैसे शब्दों का उपयोग करती है। ये शब्द उन पदों को दर्शाते हैं जिन पर आत्मिक प्राणी बैठे हैं। शासन करने का अर्थ है अपने विचार या इच्छा दूसरों पर जताना। यह समझना महत्त्वपूर्ण है कि किस प्रकार दुश्मन पृथ्वी पर निमंत्रण पा कर अपने विचार मनुष्यों की इच्छा पर थोपता है।

यीशु ने मत्ती 16 में नर्क के द्वारों की बात की है। बाइबल के समय में किसी भी शहर के बड़े बुजुर्ग द्वार पर बैठ कर शासन चलाने हेतु निर्णय लिया करते थे। अतः द्वार का आधुनिक मतलब शहर की सीमा न होते हुए शहर की सभा या सम्मेलन होता है - अर्थात् एक ऐसी जगह जहाँ महत्त्वपूर्ण निर्णय लिए जाते हैं। शैतान इसी मानवीय अधिकार के ढाँचे में घुसपैठ करता है ताकि खुद शासन कर सके। और वह यह कैसे करता है? जिस प्रकार वह हमेशा से करता आया है। अदन के बगीचे के समय से शैतान ने पुरुष और स्त्रियों की गलत व स्वार्थी चुनावों के द्वारा शासन किया है।

जब अधिकार या स्वार्थी ढाँचे की बात आती है तब हम केवल बड़े पदों के बारे में सोचते हैं। परन्तु आधिकारिक ढाँचे कई अधिक स्थूल व शिथिल होते हैं जो हमारे जीवन के हर पहलू को छूता है। ऐसे आधिकारिक ढाँचे हैं जो सबकुछ नियंत्रित करते हैं - बड़े से बड़े और छोटे से छोटे मुदे भी। राष्ट्रीय, राज्य व स्थानीय सरकारों के अलावा, स्कूलों, व्यापारों, मजदूर संघों, रोटरी क्लबों, खेल टीमों और यहाँ तक कि परिवारों के भी आधिकारिक ढाँचे होते हैं। सबसे पुरातन जातियों में भी सरकारी ढाँचा हुआ करता था जिनमें प्रमुख और गाँव के बुजुर्ग होते थे।

दीवार में छेद

यदि "द्वार" का मतलब अधिकार का चुनाव है तो दीवार उस अधिकार की सुरक्षा का बाइबलीय चिन्ह है। शैतान हमारे समाज में आधिकारिक ढाँचों को देखता है। उसको पता है कि यदि वे ठीक ढंग से काम कर रहे हैं, तो वह शासन नहीं कर सकता। अधिकार की दीवारें उसे बाहर निकाल देती हैं। यदि यह दीवारें ढह जाती हैं, तो वह शासन कर सकता है और करेगा। वह घुसपैठ कर सकता है। जहाँ कोई अधिकार या अधीनता नहीं है, वह घुसपैठ कर सकता है। जहाँ विद्रोह और अराजकता है, शैतान शासन करता है। ये संस्थाएँ जितनी अधिक टूटतीं हैं वह उतना अधिक शासन कर पाता है। यह समझना आसान है कि क्यों शादियाँ, परिवार, कलीसियाएँ और स्कूल इस चंगुल में हैं।

आत्मिक युद्ध के लिए सबसे अच्छी निर्देशिका है पुराना नियम। जो युद्ध उस दौरान पृथ्वी पर लड़े गए वही आज अनदेखे संसार में हमें लड़ना है। शैतान ने इस्राएल को नाश करने के लिए मनुष्यों की सेनाओं में घुसपैठ की। आज भी वह परमेश्वर के लोगों को नाश करना चाहता है और युद्ध की नीतियाँ उसने कुछ बदली नहीं हैं।

पुराने नियम के इस्राएल में लोग शहरों में रहते थे। इन शहरों में ऊँची दीवारें दुश्मन को बाहर रखती थीं। यदि इन दीवारों का कुछ भाग भी तोड़ा जाता, तो दुश्मन के सिपाही अंदर प्रवेश कर लूट मार और हत्या कर सकते थे। जब नहेम्याह यरूशलेम को लौटा, तब उसने अपने घर को बनाने, परमेश्वर का घर बनाने से पहले शहर की दीवारों को फिर से बनाया। विनाशकारी संसार में किसी शहर की दीवारें उसकी सबसे बड़ी सुरक्षा थी और सदैव पहली प्राथमिकता।

यह पुरातन शहर एक ऐसी ऐतिहासिक तस्वीर है जो हमें आज अनदेखे संसार में दिखाई देती है। पुराने नियम के शहरों की तरह समाज के सरकारी ढाँचों में दीवारें हैं। हालाँकि वे दिखाई नहीं देतीं, परन्तु वे अधिकार और सुरक्षा की वास्तविक दीवारें हैं। जब ये दीवारें तोड़ दी जाती हैं तब उसके फल विनाशकारी होते हैं।

अनदेखे संसार में शैतान सक्रिय और प्रभावशाली रूप से इन दीवारों को 3 तरह से तोड़ रहा है:

शैतान को गद्दी देना

इन दीवारों का सबसे पहला विनाशक अभक्त अगुआई है। जब नेता या अगुवे बाइबलीय सिद्धन्तों के अनुसार और परमेश्वर की इच्छा की सहमित में नहीं जीते और अगुआई करते, तब उनके अधिकार की दीवारें चरमराने लगती हैं। शैतान उनके द्वारा शासन कर पाता है। उदाहरण के लिए, यदि एक न्यायाधीश भ्रष्ट और ईश्वरहीन है तो वह अपनी अगुआई अनदेखे शासकों को दे देता है। वह यह नहीं सोचता कि वह अपना न्याय दूसरों के हाथ में दे रहा है परन्तु उसके अधीन हर व्यक्ति शैतान के हमले से नहीं बच सकता। यही बात सभी तरह के आधिकारिक ढाँचों पर लागू होती हैं। ईश्वर विहीन अगुआई दीवारों को तोड़ती है और अनजाने संसार के शासकों को शासन करने की अनुमति देती है। और वे यह मौका कभी नहीं चूकते। इसलिए 2 तीमुथियुस 2:1-2 हमें बताता है - कि बिनती, प्रार्थना, और निवेदन सब मनुष्यों के लिए किए जाएँ। हर अधिकारी शासन करना चाहता है। हमारे समाज में अगुआई का अभाव है। हमें अगुआई की दीवारों को मजबूत बनाने की आवश्यकता है। हमें मजबूत बनने और ईमानदारी से अगुआई करने की जरूरत है। इससे दुश्मन हारेगा। यदि दूसरी ओर हम बार बार अधिकार तो तुच्छ जानते हैं तो हम शैतान की मदद कर रहे हैं।

समाज की सुरक्षा का दूसरा विनाशक है उपेक्षा - अगुवे जो अगुआई नहीं करते। दुर्भाग्यवश, ऐसे पति हैं जो पति धर्म नहीं निभाते हैं, ऐसे माता-पिता हैं जो अपना फर्ज़ नहीं निभाते, और शिक्षक हैं जो शिक्षा नहीं देते। हम इस हद तक अपनी जिम्मेवारियों की उपेक्षा करते हैं कि हम अंधेरे के शासकों को शासन करने की खाली जगह छोड़ देते हैं। उदाहरण के लिए, कई माता और पिता इतने अधिक व्यस्त हैं कि वे अपने बच्चों के साथ समय नहीं बिता पाते, उन्हें नैतिक शिक्षाएँ नहीं दे पाते और उन्हें चेला नहीं बना पाते। इससे बच्चे गलत प्रभावों की तरह आकर्षित होते हैं।

तीसरा और सबसे आम विनाशक है विद्रोह। मैं जहाँ कहीं भी शिक्षा देता हूँ कि वे हाथ उठाएँ, यदि उन्होंने कभी विद्रोह किया है। करीब हर समूह में हर एक हाथ उठता है। छोटे बच्चों से लेकर परिपक्व व्यस्कों तक, हम सभी ने विद्रोह किया है। दुर्भाग्यवश, मसीही समूहों में भी विद्रोहों को नज़रअंदाज़ किया जाता है। हम कहते हैं:

"मैं ऐसा ही हूँ।"

"मुझ में थोड़ी सी ढीठाई है।"

"मैं हाँ से हाँ मिलानेवाला नहीं हूँ।"

"मुझे अपनी जगह चाहिए।"

"कभी-कभी आपको अपने अधिकारों के लिए खड़ा होना पड़ता है।"

"मेरा व्यक्तित्व ही कुछ ऐसा है।"

हम अपने विद्रोही मन को इन छोटे छोटे वाक्यों से बचा लेते हैं परन्तु हम अधिकार की दीवारों को बुरी तरह नुक्सान पहुँचाते हैं। अधीनता और विद्रोह, समर्थन और विरोध, समर्पण और अवज्ञा के बीच की रेखा को जब आसानी से तभी पार कर लिया जाता है जब हम खुद को "जरा-सा विद्रोही" होने की अनुमति देते हैं।

विद्रोह क्या है और क्या नहीं है

1 शमूएल 15:23 - देख, बलवा करना और भावी कहने वालों से पूछना एक ही समान है, और हठ करना मूरतों और ग्रह देवताओं की पूजा के तुल्य है। यह कठोर तुलना है। परन्तु हमें यह एहसास करना चाहिए कि विद्रोह दीवारों को ढाह देता है। विद्रोह मन का एक विचार है जो कहता है, मुझे नियमों की आवश्यकता नहीं। मुझे अगुवों की या किसी और की जरूरत नहीं जो मुझे बताएँ कि मुझे क्या करना है। सीधे शब्दों में, विद्रोह की आत्मा अधिकार को अस्वीकार करती है। यह ऐसी इच्छा है जो उस हर एक बात से आज़ादी चाहती है जो हम पर थोपी गई है। यह जादू टोना के बराबर इसलिए है क्योंकि विद्रोह शैतान को प्रवेश करने की अनुमित देता है। विद्रोह और जादू टोना सरकारी ढाँचों और व्यक्तिगत जीवनों में एक ही कार्य करता है। दोनों ही अंघेरे के साथ कार्य करते हैं।

"हर एक व्यक्ति प्रधान अधिकारियों के अधीन रहे; क्योंकि कोई अधिकार ऐसा नहीं, जो परमेश्वर की ओर से न हो; और जो अधिकार हैं, वे परमेश्वर के ठहराए हुए हैं। इससे जो कोई अधिकार का विरोध करता है, वह परमेश्वर की विधि का सामना करता

है, और सामना करनेवाले दंड पाएँगे। क्योंकि हाकिम अच्छे काम के लिए नहीं; परन्तु बुरे काम के लिए डर का कारण हैं; सो यदि तू हाकिम से निडर रहना चाहता है, तो अच्छा काम कर और उसकी ओर से तेरी सराहना होगी।" (रोमियों 13:1-3)

यह भाग यह नहीं कहता कि हर अधिकारी ईश्वर की ओर से है। हमारे पास भ्रष्ट अधिकारी, न्यायाधीश, राष्ट्रपति, और पालक हैं। परन्तु अधिकारी का पद परमेश्वर द्वारा स्थापित है यह उसकी इच्छा है कि अधिकार का ढाँचा है और सभी लोग उनके अधीन हों जो इन पदों पर विराजमान हैं। अगुवे खुद बुरे हो सकते हैं परन्तु उनके द्वारा नियंत्रित पद सुरक्षा की दीवार का कार्य करते हैं। रोमियों 13:3 के अनुसार अधिकार अपने आप में प्रभावशाली ढंग से पाप को खत्म करता है। यह बुराई करनेवालों के लिए भय का कारण होता है। एक देश जहाँ एक मजबूत आधिकारिक ढाँचा है, वहाँ बुराई कम होगी, भले ही वह देश मसीह न हो। एक परिवार जो मूल्यों पर चलता है, पाप को खत्म करेगा। शैतान इन आधिकारिक दीवारों से पीछे हटता है जो इन संस्थाओं के आस-पास लगाई जाती हैं। यह परमेश्वर का विश्वव्यापी सिद्धान्त है। यह सबको प्रभावित करता है।

अनाज्ञाकारिता करना, परन्तु विद्रोह नहीं

क्या इसका यह अर्थ है कि हम परमेश्वर की आज्ञा के ऊपर सांसारिक अधिकारियों की आज्ञा मानें? नहीं! प्रेरितों के काम 4 में, पतरस को याजकों के समक्ष लाया गया क्योंकि वह वचन की सेवकाई कर रहा था। उनकी आज्ञाएँ परमेश्वर की आज्ञाओं के ठीक विपरीत थीं। पतरस ने उनकी बात मानने से इंकार किया। उसने मनुष्य की जगह परमेश्वर की आज्ञा मानी, परन्तु याजक के अधिकारों पर हमला नहीं किया। उसने विद्रोह से काम नहीं लिया। विद्रोह और वैधानिक आनाज्ञाकारिता में फर्क है।

अधिकारी के अधीन होने का मतलब यह नहीं कि हम केवल हाँ कहते जाएँ और अपना कोई विचार न रखें। हम तब भी अधर्म और गलत कार्यो के खिलाफ खड़े हो सकते हैं। हम मसीह की आत्मा में जरूरत पड़ने पर असहमत हो सकते हैं, ताड़ना दे सकते हैं या किसी का सामना कर सकते हैं। परन्तु हमें कभी भी ढाँचों को तोड़ना या अगुवों का विरोध करना नहीं चाहिए सिर्फ इसलिए क्योंकि वे अधिकारी हैं। शैतान परिवारों पर परिवारों की तरह, मजदूर संघों पर मजदूर संघों की तरह और देशों पर देशों की तरह हमला कर रहा है। जब हम विद्रोह का साथ देते हैं, अधिकार को तोड़ने का प्रयास करते हैं तब हम उसके साथी बनते हैं।

दीवारों को तोड़ने के शैतान के प्रयासों को समझना एक बात है। परन्तु हम क्या कर सकते हैं? यहेजकेल 22:30 कहता है - और मैं ने उनमें ऐसा मनुष्य ढूंढना चाहा जो बाड़े को सुधारे और देश के निमित्त नाके में मेरे सामने ऐसा खड़ा हो कि मुझे उसे नाश न करना पड़े। परमेश्वर ऐसे लोगों को ढूंढ रहा है जो मध्यस्थता की प्रार्थना के द्वारा इन दीवारों को पुनःनिर्मित कर सकें। अब हम जानते हैं कि वे दीवारें और उनके बीच दरारें कहाँ हैं। वे हमारे आस पास ही हैं, समाज के ढाँचे टूट रहे हैं। हम परमेश्वर के सामने झुक कर इन दीवारों को भर सकते हैं और शहरों, परिवारों, स्कूलों और लोगों की ओर से हम दुश्मन को भगा सकते हैं।

यहेजकेल 13:4-5 हमें अपनी जिम्मेवारी और मध्यस्थता के प्रति और अधिक चुनौती देता है - "हे इस्राएल, तेरे भविष्यद्वक्ता खंडहरों में की लोमड़ियों के समान बने हैं। तुम ने नाकों में चढ़ कर इस्राएल के घराने के लिए भीत नहीं सुधारी, जिससे वे यहोवा के दिन युद्ध में स्थिर रह सकते हैं।" एक लोमड़ी अकसर टूटी हुई दीवारों में अपना घर बनाती हैं। यही काम अकसर मसीही करते हैं जब समाज का पतन उनके सामने होता है। हमें बुलाया गया है ताकि हम उठें और युद्ध, प्रार्थना और सहभागिता के द्वारा समाज में टूटी हुई दीवारों को जोड़ें।

ब) शासक

शैतानी तंत्र में दूसरा कार्य शासक का होता है। शासक अंधेरे के साम्राज्य की अन्य आत्माओं से अधिक बड़े या बलवान या क्रूर नहीं होते। उनके चार मुँह या दस आँखें नहीं होतीं। शासक केवल वे लोग हैं जिनके पास शैतान के राज्य में प्रमुख क्षेत्रों का प्रभाव हासिल है।

शासक अकसर एक भौगोलिक क्षेत्र का होता है जिसको नियंत्रित करनेवाला शासक कहलाता है। शासक शब्द हमारे ग्रह में शैतान के प्रवेश को दर्शाता है। शैतान अपनी सेनाओं को संसार के अनुसार लगाता है। उसने जल्दबाजी में अपनी सेना को बिखेरा नहीं है। वे बिना सोचे समझे कहीं दौड़ते या एक दूसरे से टकराते नहीं हैं। अंधेरे के साम्राज्य को भी किसी भी मानवीय सैनिक मशीन की तरह बराबर तेल दिया जाता है। शैतान के पास हर भौगोलिक क्षेत्र और हर समूह के लोगों के लिए योजना है। एक देश के लिए उसकी योजना दूसरे देश से अलग हो सकती है। एक देश में बेघर बच्चों पर शासन करने की उसकी नीति दूसरे देश के वैश्याओं या अन्य लोगों पर शासन करने से अलग होती है।

किसी भी अच्छे जनरल की तरह संसार पर शासन करने की शैतान की योजनाएँ अच्छे नक्शों द्वारा बनाई गई हैं। वह संसार को अलग-अलग भागों में देखता है। वह राज्यों, देशों, प्रदेशों और गाँवों को देखता है। वह ग्रामीण और शहरी जनसंख्या को भी देखता है। वह जातियों, राष्ट्रीयताओं, समूहों और यहाँ तक कि परिवारों को भी बहुत अच्छे से जानता है। शैतान भाषा समूहों,

लिपियों, सांस्कृतिक घरोहर और पौराणिक वंशों का भी छात्र है। वह हर समाज, संस्था और कल्ब को जानता है। शैतान अपनी युद्धि भूमि को बहुत अच्छी तरह से समझता है। वह अपने दुश्मन को जानता है और युद्ध के लिए अच्छी तरह से तैयार है।

अपनी मानचित्रावली (एटलस) से बाहर निकलो

इसीलिए हम एक देश में पाते हैं कि अधिकतर लोग मसीही हैं किसी अन्य देश में एक भी प्रमुख मसीही गवाही नहीं होती। कई यात्रियों ने एक जगह से दूसरी जगह जाते वक्त यह विरोधाभास महसूस किया है। एक शहर में हम परमेश्वर की प्रगति देखते हैं और वास्तव में शांतिपूर्ण वातावरण को पाते हैं। परन्तु किसी अन्य शहर में हम लड़ाई का अनुभव करते हैं, सताव को महसूस करते हैं और अंधेरे की शक्तियों का प्रभाव देखते हैं। उसी शहर के किसी पुल को पार करते हुए, हम में से कुछ लोगों ने आत्मिक स्थिति में बदलाव महसूस किया होगा। उदाहरण के लिए, लॉस एंजलिस में एक गाँव छोड़ा दूसरे के लिए परन्तु वहाँ मैं ने आत्मिक शून्यता पाई। फिर मैं ने पाया कि उस गाँव में आधुनिक दुकानें, अधिक तांत्रिक विद्या, बहुत कम चर्च थे और शैतान की उपस्थिति और तांत्रिक शक्तियों को मैं ने महसूस किया। इस शहर और ऐसे कई शहर कई लोगों को चुंबक की तरह आकर्षित करते हैं।

परमेश्वर हमें कुछ खास जगहों पर आत्मिक प्रभाव की ओर संवेदनशीलता प्रदान करता है परन्तु उसके बिना भी, हमें केवल आँकड़ों को देखने की जरूरत है। दो शहरों में हत्या, हिंसा, ड्रग्स, और शराब का सेवन, वेश्यावृत्ति, अश्लील चित्र, किशोरावस्था में गर्भधारण, गर्भपात, व्यभिचार, तलाक और आत्महत्या के आँकड़े अलग-अलग हो सकते हैं। उसी तरह समलौंगिकों या शैतानी और गैर मसीही समूहों और धर्मों के आँकड़े दो शहरों के अलग होते हैं। उसी तरह नवजात मृत्यु, पागलपन और बीमारियों के आँकड़े अलग-अलग होते हैं।

शैतान अपनी सेनाएँ और अपनी नीतियाँ मानचित्र के अनुसार लगाता है। यदि हम आत्मिक युद्ध को लेकर गंभीर हैं तो यह बहुत अधिक जरूरी है कि हम भूगोल और इस गृह के व्यक्ति समूहों को जान लें। मसीही होने के नाते, हमें अपना काफी समय एटलस, संसार और उसमें रहनेवाले लोगों का अध्ययन करने में लगाना चाहिए।

उसके पिंजरे को तोड़ना

शैतान हमारे कार्यो को अकसर नज़रअंदाज़ करता है। ऐसा नहीं है कि हम लोग गलत या सांसारिक कार्य कर रहे हैं, परन्तु हमारे कई प्रयास शैतान की नज़रों में बहुत गैर जरूरी हैं। हालाँकि जब हम एक मानचित्र को लेकर प्रार्थना करते हैं, और जब हम अपनी प्रार्थनाएँ स्थानों और लोगों पर केन्द्रित करते हैं जो शैतान ने अपने प्रभुत्व व विनाश के लिए चिन्हित की हैं, तब हम जरूर उसका ध्यान आकर्षित करते हैं। क्या एक ऐसे देश के लिए प्रार्थना करना जहाँ आप कभी नहीं गए अजीब नहीं ? क्या यह अजीब लगता है कि हम नैशनल जियोग्राफी में किसी छोटी सी जाति के बारे में पढ़ें और फिर उस जाति के बारे में परमेश्वर के समक्ष प्रार्थना करें ? संसार को मसीह के लिए जीतने के हमारे महान उद्देश्य कि रौशनी में यदि हम देखें तो संसार के लोगों के लिए प्रार्थना करना हर मसीही की जिम्मेवारी है। भौगोलिक रूप से प्रार्थना करना शैतान को हिला देगा और उसकी योजनाओं को विफल करेगा। परन्तु हम उन लोगों के लिए किस प्रकार प्रार्थना कर सकते हैं जिन्हें हम जानते नहीं हैं और जो पता नहीं कहाँ हैं ? एक बात पक्की है कि शैतान ने अपना अध्ययन कर लिया है। हमें चर्च में भूगोल को सीखना और पढ़ना होगा। हम सिक्किम के लिए प्रार्थना कैसे कर सकते हैं जब हमें पता ही नहीं कि वह कहाँ है ? हमें पता होना चाहिए कि सिक्किम भूटान के बगल में है जो एक ऐसा देश जहाँ केवल मुट्ठीभर मसीही हैं। हम में से बहुत कम लोग जानते हैं कि मौज़ैम्बिक कहाँ है जबकि शैतान ने बहुत पहले से इस देश के विनाश और सदियों से चली आ रही दासता की योजना बना ली थी। बहुत कम मसीही मौरीटानिया के लिए प्रार्थना करते हैं जिसकी वजह से ही शायद वहाँ पर बहुत कम विश्वासी हैं। हम नहीं जानते कि वह कहाँ है और वहाँ कौन रहता है। पर शैतान वहाँ जरूर है।

किसी अच्छे जनरल की तरह शैतान की योजनाएँ हमेशा अच्छे मानचित्रों से आरंभ हुई हैं। वह संसार को अलग-अलग भागों में देखता है। वह राज्यों, देशों, प्रदेशों, शहरों और गाँवों को देखता है। वह जातियों, राष्ट्रीयताओं, समूहों और यहाँ तक कि परिवारों को भी बहुत अच्छे से जानता है। शैतान भाषा समूहों, लिपियों, सांस्कृतियों, धरोहर और पौराणिक वंशों का भी छात्र है। वह हर समाज, संस्था और क्लब को जानता है। शैतान अपनी युद्ध भूमि को बहुत अच्छी तरह से समझता है। वह अपने दुश्मन को जानता है और युद्ध के लिए अच्छी तरह से तैयार है।

अंधेरे की शक्तियाँ लोगों के हर समूह को जानती हैं और उनके पास नीतियाँ हैं। शैतान के रास्ते में जो एक मात्र रोड़ा है वह है चर्च। विश्वव्यापी स्तर पर आत्मिक युद्ध का अर्थ है भौगोलिक रूप से प्रार्थना करना सीखना।

दानिय्येल 10वें अध्याय में फारस के राजकुमार का जिक्र करता है। जो फारस का शासक था। यह शासक अधिक उम्र के कारण मरा नहीं है और न सेवानिवृत्त हुआ है। शायद यह अभी भी वहीं है और पहले की तरह काम कर रहा है। दानिय्येल यूनान के राजकुमारों का भी जिक्र करता है। यदि फारस और यूनान के राजकुमार थे, तो स्कॉटलेण्ड, हवाई, लंदन, दालास और यहाँ तक कि दिल्ली का भी राजकुमार है।

जनसांख्यिकी-जो लोगों के समूहों का अध्ययन है - एक और प्रभावशाली नींव है जिस पर शैतान अपनी नीतियाँ बनाता है और अपनी सेनाओं को लगाता है। उसके पास हर समूह के लिए योजना है। उसके पास अलग-अलग नीतियाँ हैं और उसके अपने दूतों को शरणार्थियों, पुलिसवालों, तिरस्क्रित पत्नियों, दूरसंचार कर्मचारियों, अंधों, और व्यापारियों, मानवता के असंख्य छोटे-छोटे और अलग-अलग समूहों के बीच छोड़ रखा है।

एक ऐसा फुटबाल खेल जिसे देखने के लिए कोई पैसा नहीं देगा

यीशु मसीह की चर्च और अंधेरे की शक्तियों के बीच चल रहा है वह फुटबाल खेल की तरह है। किसी भी फुटबाल खेल में, दो टीमें होती हैं जिनके गोल करने की जगह एक दूसरे के पाले में होती है। हर टीम का यह उद्देश्य होता है कि वह दुश्मन के पाले में जाकर गोल करे, साथ ही दुश्मन को अपने पाले में आगे बढ़ने से रोके। चर्च की भी अपनी एक टीम है जिसके पास अपनी नीतियाँ हैं। उसमें वरिष्ठ पास्टर और कनिष्ठ पास्टर, संगीत निर्देशक, अलग-अलग विभाग, बड़े प्राचीन, संडे सिकूल, बाइबल अध्ययन और बहुत सी चीजें हैं। कई सभाओं में हम ने यह खूबसूरत उद्दश्य और नीतियाँ बनाई हैं। ये अच्छी चीजें हैं। ये बुरी या पाप मय या सांसारिक नहीं हैं। हमारी टीम फुटबाल फील्ड की ओर खड़ी होकर गा रही है; चर्च विजयी है।

फील्ड के उस तरफ अंधेरे की शक्तियाँ हैं। यदि हम यह सोचते हैं कि इनके पास संघटित संस्था नहीं है तो हम गलती कर रहे हैं। उनकी संस्था के पास अपने कार्य भी हैं। साथ ही कुंवारी माँओ, ब्राज़ील के अनाथों, न्यूयॉर्क के चेक्सी चालकों, चीन के उजर, अमेजन की जाति आदि के लिए भी नीतियाँ हैं।

इस फुटबाल के खेल में एक मात्र समस्या यह है कि कोई भी अपने कपड़े गंदे नहीं करना चाहता। हम सिर्फ एक ओर खड़े रहते हैं और अपनी संस्थाओं के कार्य करते रहते हैं जबकि शैतान एक के बाद एक हमले करता है। कोई भी इस तरह के फुटबाल मैच के लिए पैसा नहीं लगाएगा जिसमें टीमें तो हैं परन्तु कोई प्रतिद्वंदिता नहीं। मैं इस फुटबाल के खेल को मजेदार बनाने का एक तरीका बताना चाहता हूँ। मेरी सलाह है कि यीशु मसीह का चर्च यह पता लगाए कि पिछली कुछ शताब्दियों से शैतान क्या कर रहा था। फिर फील्ड में आए और उसे रोके।

आत्मिक युद्ध फुटबाल का मैच नहीं है परन्तु हम तब भी अंधेरे की शक्तियों को रोक सकते हैं। हम दुश्मन को उलझा सकते हैं और कुछ खास लोगों के खिलाफ उसकी नीतियों को अपनी प्रार्थना द्वारा निष्फल कर सकते हैं। दुश्मन को उसकी भौगोलिक और जनसांख्कि नीतियों के अनुसार हराइए। हमले के लिए, चर्च को भौगोलिक रूप से खेलना पड़ेगा और हर क्षेत्र और सभी समूहों को मसीह में जीतना होगा। दुश्मन बहुत योजना पूर्ण ढंग से संसार में विनाश कर रहा है। पूरे देश दासता में हैं जिसमें कोई मसीही गवाही नहीं है क्योंकि हम शैतान को योजनापूर्ण ढंग से पराजित नहीं कर रहे हैं। हम ने यह कभी नहीं जाना कि शैतान किस प्रकार संसार में अपना काम कर रहा था। हम उसके हथियारों से अनभिज्ञ थे।

दूसरी ओर, हम ने देखा कि पूरे इलाके जो कभी सुसमाचार से अनभिज्ञ थे आश्चर्यकारी रूप से बदल गए क्योंकि मसीही लोग भौगोलिक रूप से और विशेष रूप से प्रार्थना कर रहे थे। उदाहरण के लिए, नेपाल में 1959 में केवल 29 मसीही थे और 40 साल बाद वहाँ 1 लाख मसीही हो गए।

युद्ध में फुसफुसाहट

विशेष प्रार्थनाओं के फल का एक और उदाहरण है रोमानिया। तानाशाह के राज्य के दौरान गुप्त पुलिस ने 1980 के दशकों में करीब 60 हज़ार लोगों को मार दिया था। आर्थिक रोक इतनी जटिल थी कि हर घर में केवल एक छोटा सा बल्ब सिर्फ कुछ घंटों के लिए रात में जलाने की अनुमित थी। कई अस्पतालों में नवजात शिशु ठंड के मारे मर गए क्योंकि सरकार ने एक नियम लागू किया था कि कोई भी नवजात तब तक व्यक्ति माना नहीं जा सकता जब तक वह एक महिने का न हो जाए - इस तरह बहुत सारे नवजात जो मर गए कभी भी रिकॉर्ड में नहीं आ पाए। एक सेवक रोमानिया बार-बार गया और परमेश्वर ने उसे एक छोटे से शहर में एक छोटे से समूह में अगुआई के लिए भेजा। वे लोग छुप-छुप कर घरों में मिलते थे और परमेश्वर उनके साथ आत्मिक युद्ध के बारे में बात करने लगा। प्रभु ने उन्हें भय की आत्मा से मुक्त किया जो रोमानिया के समाज में हर जगह फैली थी। उन्हें लगा कि वे देर रात प्रार्थना पूर्वक समूहों में पूरे शहर में चक्कर लगाएँ। वहाँ उन्होंने हर एक शास्कीय इमारत के सामने फुसफुसाते हुए अधिकारियों और शक्तियों के खिलाफ प्रार्थना की, ताकि कोई भी सिपाही उन्हें न सुन ले। ऐसा करते हुए उन्हें अजीब लगा परन्तु तब भी उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा मानी। आगे कुछ महिनों में परिस्थितियाँ और मुश्किल हो गई। सबसे पहले दो पादरी गायब हो

गए-उन्हें गुप्त सिपाहियों द्वारा मार दिया गया। अन्य लोग जेल में डाल दिए गए। परन्तु मसीहियों ने मिलना और आत्मिक युद्ध जारी रखा। परमेश्वर ने उनसे दुबारा बातचीत की, और उन्हें यकीन दिलाया कि विजय निकट है।
"और मैं ने ऐसे मनुष्यों को ढूंढना चाहा जो उस दीवार को बनाए....।" परमेश्वर ऐसे लोगों की खोज में है जो दीवारों को पुनःनिर्मित करे मध्यस्थता प्रार्थना के द्वारा। अब हम जानते हैं कि दीवारें और दरारें कहाँ हैं। वे हमारे आस-पास हैं। समाज के ढाँचे जर-जर अवस्था में हैं। जब हम परमेश्वर से प्रार्थना करें तब हमें इन दरारों को भरना है और दुश्मन को शहरों, परिवारों, स्कूलों और लोगों की ओर से बाहर फेंकना है।
कुछ वर्षो बाद, प्रभु का वचन प्रकट हुआ, जिसने उन्हें बताया कि उनके शहर में एक आग शुरू होगी जो रोमानिया पर जलती रहेगी। उनके लिए इस संदेश पर विश्वास करना कितना कठिन था-विशेषकर उस छोटे से समूह के लिए जो गुप्त में प्रार्थना करता था। हालाँकि इस आग की चिंगारी उस छोटे से शहर से आरंभ हुई जैसा कि परमेश्वर ने कहा था। अगले महिने यह आग एक नज़रबंद किए जाने से शुरू हुई। यह पहली बार नहीं था कि कोई पादरी की गिरप्तारी हुई थी परन्तु इस बार कुछ अलग था। उसकी गिरफ्तारी की बात हर जगह फैल गई और सामान्य प्रतिक्रिया के विपरीत मसीही लोग उस पादरी के घर गए और प्रवेश द्वार के सामने एक मानव शिंखला बना ली। सिपाहियों ने उनको धमकाया परन्तु उन्होंने आंदोलन का पहला नारा बोला-हम आज़ाद हैं अब डर नहीं। लोगों की संख्या बढ़ती गई कुछ लोगों को ले जाया गया और सताया गया। परन्तु अन्य लोग तितर बितर नहीं हुए, और हज़ारों लोग आ गए। गैर मसीहियों ने भी मसीहियों का साथ दिया और किसी को भी भय नहीं रहा। लोग मसीहियों के पास गए और अपना सीना तानकर कहने लगेः हम जीत रहे हैं! तानाशाह हार रहा है। समाचार पत्रिकाओं ने बताया, सौंकड़ों या शायद हज़ारों कि संख्या में निहत्थे पुरुष, स्त्रियाँ और बच्चे मारे गए परन्तु भीड़ बढ़ती गई। लोग सिपाहियों के पास जाते थे और उनके सामने प्रार्थना में झुकते थे।
आग लगाई जा चुकी थी। सेना ने भी अपना रुख लोगों की ओर किया और उनके साथ मिलकर गुप्त पुलीस के खिलाफ लड़ाई की और महिने के खत्म होने से पहले तानाशाह का क्रूर शासन खत्म कर दिया गया। देश के अखबारों ने कहाः भय और डर का शासन हराया जा चुका है। डर और आंतकवाद शैतान की ही शक्तियों में से एक है। परमेश्वर ने इन शक्तियों के खिलाफ प्रार्थना करने के लिए एक छोटे समूह को तीन वर्ष पूर्व ही निर्देशित किया था।
यह सिर्फ एक कहानी है - कई और लोग भी प्रार्थना कर रहे थे, केवल रूमानिया के लोगों के लिए ही नहीं परन्तु पूर्व यूरोप के लोगों के लिए भी। पिछले 30 वर्षो के दौरान, अधिकतर चर्च ने अपना ध्यान साम्यवादी संसार के पीड़ित चर्च के लिए प्रार्थना करने में बुलाया है। जो हुआ वह इस बात का प्रमाण है कि इस तरह कि प्रार्थना शैतानी अधिकारियों और शक्तियों के सामर्थ्य को तोड़ती है। हालाँकि हमें अब भी प्रार्थना करने की आवश्यकता है कि परमेश्वर पूर्वी यूरोप में भी अपनी इस सक्षमता को कायम रखे।

स) शक्तियाँ

शैतान के तंत्र का तीसरा भाग है शक्तियाँ। इसका अर्थ उन सारी शैतानों और दुष्टात्माओं से है जो पाप करते हैं। यह एक सोचे समझे प्रयास की ओर इंगित करता है जो बुर कर्मो के लिए किया जाता है।
एक हारा हुआ शैतान किस तरह पृथ्वी पर अपनी पकड़ दुबारा पा लेता है? जब मैं छोटा था मुझे याद है एक प्रचारक ने कहा था कि शैतान को हराया गया। उन्होंने कहा कि यीशु ने शैतान को हराया। हमारे पास विजय है। उसके पास कोई और काम नहीं। अब वो बेरोजगार है। यह सुन कर जब मैं चर्च के बाहर आया तो मैं ने सोचा कि यदि दो हज़ार वर्ष पूर्व शैतान को हराया जा चुका है, तो वह अब भी हमारे शहर में क्यों? एक छोटे लड़के के लिए भी यह देखना बहुत कठिन नहीं था कि हारा हुआ शैतान भी अब तक किस तरह सक्रिय है।
यह सच है कि शैतान वास्तव में और हमेशा के लिए हराया गया था। यह बात आनंद मनाने लायक है कि उसकी हार हुई परन्तु यह भी सच है कि वह हारा हुआ शैतान आज भी पृथ्वी पर सक्रिय है। यह कैसे हो सकता है? वह हमारे समाज में इस हद तक सक्रिय है कि लोग पाप कर रहे हैं और स्वार्थी जीवन जी रहे हैं। उसके पास उतना ही अधिकार है जितना हम उसे देते हैं जब हम परमेश्वर के विरुद्ध जीते हैं। साथ ही उन लोगों का अवशेष भी शामिल है जिन्होंने इतिहास में पाप किया। हमारे समाज में आराम से घूमने की आज़ादी आप और मुझ जैसे लोगों ने उसे दी है जिन्होंने पाप किया है और अब भी स्वार्थी जीवन जीते हैं।
शैतान का क्रियाकलाप हमारे पापमय स्वभाव से निश्चित होता है। जिस तरह से हम पाप करते हैं उसी से शैतान हमें प्रभावित करता है। वह शैतानी शक्तियों का उपयोग हमारे पाप के प्रकार के अनुसार करता है। इसलिए लालच, समलौंगिकता, निराशा, भय, काला जादू जैसी शक्तियाँ मौजूद हैं। जितने पाप हैं उतनी ही शक्तियाँ हैं।
ऐसा नहीं कि शैतान के पास शक्तियों का खज़ाना है। उसके पास लोभ का कोई बक्सा नहीं है जिसे वह खोलता है और एक शहर में डाल देता है जिससे सभी लोग लोभी हो जाते हैं वह इस तरह से कार्य नहीं करता। हालाँकि एक शहर या एक देश एक साथ

लोभ और अन्य पापों में लिप्त हो सकता है क्योंकि उस जगह पर हज़ारों लोगों के पापमय चुनाव शामिल हैं; अतः एक शक्ति का कार्य एक जगह पर स्थापित हो जाता है। इसीलिए कई बार एक शहर को अश्लीलता की राजधानी कहा जाता है जबकि किसी अन्य शहर को काला जादू के लिए जाना जाता है या कोई अन्य शहर जुआ का केन्द्र होता है।

शक्ति के कार्य परिवारों में भी होते हैं जब परिवार खुद को पापों में लगा देते हैं। मसीह के प्रतिनिधि होने के बावजूद चर्च भी इन शक्तियों के केन्द्र हो सकते हैं। एक चर्च जिसके इतिहास में मतभेद और संघर्ष है वह इन्हीं दो पापों का केन्द्र बन जाता है। देश, शहर, समूह और लोग अकसर पाप के केन्द्र होते हैं कुछ मामलों में लोगों का संघर्ष हज़ारों वर्षों पूर्व इतिहास के फल स्वरूप होता है जब लोगों ने कोई पाप किया था।

आत्मिक संघर्ष में, परमेश्वर हमें किसी एक परिस्थिति में इन शक्तियों के स्वभाव के बारे में बता सकता है। घरों में, शहरों, देशों में परमेश्वर ने इस तरह की शक्तियों की ओर इशारा किया है और वह करेगा। परन्तु हमारे लिए यह काफी नहीं कि हम इनके बारे में जान लें और कुछ न करें। हमें कुछ कर दिखाना होगा। परमेश्वर केवल हमारी उत्सुकता को शांत नहीं करेगा।

<u>तीन बातें जो हमें करनी हैं:</u>

1. **हमें प्रभाव से बचना चाहिए**

   यदि मैं खुद को एक ऐसे घर में पाता हूँ जहाँ संघर्ष है, तो मुझे ध्यान रखना होगा कि मैं उस विवाद में न पड़ूँ। उसी तरह यही कारण है कि कई अच्छे विश्वासी यहोवा विटनेस के लोगों से बात करते वक्त विवाद में पड़े जाते हैं। वे सुसमाचार से आरंभ तो करते हैं परन्तु जल्द ही विवादी हो जाते हैं। विवाद कभी उन्हें मसीह के लिए नहीं जीत पाएगा क्योंकि इसी विवादी आत्मा से यह समूह अपना कार्य करते हैं। हमें सत्य को सच्चाई की आत्मा से ही बाँटना है।

2. **हमें विशेष रूप से आत्मिक शक्तियों के खिलाफ प्रार्थना करनी चाहिए**

   परमेश्वर हमें बताएगा कि किसी जगह या समूह की प्रभावशाली आत्मिक शक्ति कौन सी है ताकि हमारी प्रार्थनाएँ भी उसी ओर केन्द्रीत हों। तभी हम यीशु के नाम में इन शक्तियों को रोक पाएँगे और पवित्र आत्मा की सहायता माँग पाएँगे ताकि वह स्थिति को सुधार सके। हम लोग जितनी अधिक केन्द्रीत प्रार्थना करेंगे, हमारी प्रार्थना उतनी ही अधिक प्रभावशाली होगी। उदाहरण के लिए, जब हम पीढ़ियों से किसी परिवार में गुलामी को देखते हैं, तो हमें केवल उसे पहचानना है और प्रार्थनापूर्वक आदेश देना है कि वह यीशु के नाम में तोड़ी जा सके। यदि यह शक्ति किसी बड़ी जगह पर है, तब और अधिक लोगों की आवश्यकता होगी कि वे एकजुट होकर प्रार्थना करें।

3. **हमें उलटी आत्मा में जीवन जीना है**

   इसका यह अर्थ है कि किसी स्थिति में यदि हम लालच को देखें, तो हमें उदार होना होगा - परन्तु, निस्संदेह, अपने देने में परमेश्वर की अगुआई के अनुसार। इसका यह भी अर्थ है कि यदि हम निराशा का सामना करें, तो हम परमेश्वर की महिमा करें और हर बात में उसे धन्यवाद दें। इस तरह जब हम शक्ति के विरोध में जीवन जीते हैं, जो कि वचन के अनुसार है, तब हम उन शक्तियों के प्रभाव को तोड़ पाएँगे जो हमारा विरोध करती हैं। परमेश्वर हमें सिर्फ कुछ समय के लिए कमर कसने के लिए नहीं बुला रहा है, परन्तु हर दिन के लिए ताकि हमारा जीवन एक आत्मिक युद्ध बन सके। इस तरह का जीवन सदैव जीते रहने से हम अंधेरे की शक्तियों को तोड़ पाते हैं और लोगों के जीवन बदल पाते हैं।

   मैं अकसर प्रचारक समूह को संसार के कई भागों में लेकर जाता हूँ और हर जगह पर हम विरोधी शक्तियों के खिलाफ परमेश्वर के सामर्थ्य को स्थापित करने की चेष्ठा करते हैं। एक देश में पूरे संसार में सबसे अधिक आत्महत्याएँ होती हैं। वहाँ से कई मिश्नरी निराशा से घर लौटे हैं और रिकॉर्ड संख्या में हराए गए हैं। यहाँ यह समझना कठिन नहीं है कि निराशा की शक्तियों ने अपना घर वहाँ बना लिया है। इसी देश में एक अल्पसमय के आवास के दौरान कुछ लोग मेरे पास आकर कहने लगेः मैं बहुत निराश हूँ, हमें यहाँ कुछ नहीं मिल रहा, मैं किसी काम का नहीं हूँ।

   यदि हम एक स्थान पर विशेष शक्तियों को पहचान नहीं पाते तो हम उनके प्रभाव में आने के खतरे में हो जाते हैं।

   शैतान के तंत्र, उसके शासक, उसके अधिकारी और उसकी शक्तियों के बारे में एक चीज जिसे हमें समझना चाहिएः कि इन कार्यो का विभाजन एक सा नहीं होता। इसकी तुलना हम एक संस्था से कर सकते हैं जिसमें कई उपाध्यक्ष होते हैं जिनके पास अलग-अलग जिम्मेवारियाँ होती हैं। यही बात शासकों, अधिकारियों और शक्तियों पर भी लागू होती हैं। कई बार एक अधिकारी शासक भी हो सकता है जो मानवीय ढाँचे पर अपना शासन करता है। एक शक्ति अधिकारी हो सकता है जिस प्रकार रूमानिया में था। एक ही दुष्टात्मा के कई कार्य हो सकते हैं।

दुश्मन के कई कार्यकलाप आकाशीय शक्तियों को काटते हैं। यदि हम पवित्र आत्मा से पूछें, तो वह हमें बताएगा किस प्रकार शैतान किसी जगह या स्थान पर काम कर रहा है। तब हम प्रार्थना के द्वारा उसके खिलाफ जा सकते हैं। परमेश्वर हमारी अगुआई कर सकता है कि हम किसी देश में अधिकारी के खिलाफ प्रार्थना करें या परिवारों पर हमला कर रही आत्मा के खिलाफ या उस शैतान के खिलाफ जो नास्तिकता में लोगों को रख रहा है। जब हम ऐसा करते हैं तब हम पृथ्वी पर शैतान की योजनाओं को विफल करते हैं। प्रार्थना में साधारण आज्ञापालन आत्मिक संसार के अध्ययन करने से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है।

दूसरा कांटा: अन्धकार की शक्तियाँ

एक और तरीका जिसके द्वारा शैतान मानवता को परेशान करता है अंधेरे की शक्तियाँ हैं। बाइबल इन्हें अन्धकार के हाकिम (इफिसियों 6:12) कहती है। ये शक्तियाँ दो कार्य करती हैं: वे झूठ बोलतीं और सच को रोकती हैं।

झूठी आत्माएँ

हमें यह समझने की जरूरत है कि इस पृथ्वी पर शैतानी आत्माएँ भेजी गई हैं ताकि मनुष्यों का दिमाग गलत कार्यों में लगाएँ। यह आत्माएँ हमें धोखा देती हैं - छोटे मोटे झूठों से लेकर, इस्लाम और बौद्ध धर्म जैसे बड़े और पेचीदा झूठों तक। उदाहरण के लिए, एक झूठी आत्मा है मोरोनी दूत। यह शैतान जो साल्ट लेक सिटी में रहता है, पूरी पृथ्वी पर करोड़ों लोगों की आँख में धूल झोंक रहा है। इस झूठी आत्मा का नाम हमें इसलिए पता है क्योंकि वह मोरमोंस नामक पंथ के संस्थापक जोसफ स्मिथ को दिखाई दी थी। परन्तु मैं मानता हूँ कि कई अन्य आत्माएँ हैं जिन्हें हम नहीं जानते और जिन्हें हर मुख्य धर्म और पंथ की जिम्मेवारी सौंपी गई है। *और उन अविश्वासियों के लिए, जिनकी बुद्धि को इस संसार के ईश्वर ने अंधी कर दी है, ताकि मसीह जो परमेश्वर का प्रतिरूप है, उसके तेजोमय सुसमाचार का प्रकाश उन पर चमके।* (2 कुरिं. 4:4)
हम में से कई लोगों ने पहले कई ऐसी बातों पर भरोसा किया है जिन पर हम आज यकीन नहीं करते। हम अंधेरे में हैं। हमारा पूरा जीवन प्रकाश की खोज है - ताकि हम गलत कार्यों को बेनकाब होता देखें और परमेश्वर के वचन की सच्चाई को स्वीकार कर सकें। दुश्मन का काम है कि वह इस खोज को रोके, प्रकाश को ढाँप दे। हर एक व्यक्ति के मन में झूठों का निरन्तर हमला किया जाता है। ये आत्माएँ हम से झूठ बोलती हैं परमेश्वर के बारे में - कि वह है ही नहीं या वह प्रेमी नहीं है। वे हमें हमारे बारे में गलत धारणाएँ देती हैं जिससे हम स्वयं से नफरत करते हैं। यह सब अंधेरा है।

झूठों का षड्यंत्र

जैसा कि मैं ने पहले भी बताया, कई बार दुश्मन के झूठ कई विचारों का एक पेचीदा जाल होता है। पृथ्वी पर झूठे धर्म और धोखा देने वाले विचार कोई छोटी सी प्रक्रिया नहीं है इन धारणाओं की गहराई और पेचीदगी और उनके कई संगठन मिलकर एक धर्म में लीन हो जाते हैं, अपने आप में सबूत हैं कि यह षड्यंत्र कितना बड़ा है। इन झूठों का शक्तिशाली प्रभाव पूरे देशों और बड़े-बड़ समूहों में देखा गया है। 1 तीमुथियुस 4:1 में पौलुस ने इन भरमाने वाली आत्माओं और दुष्टात्माओं की शिक्षाओं के बारे में चेतावनी दी थी।
हर पंथ और गैर मसीही धर्म शैतान के पेचीदा जाल में से आता है। इस तंत्र को नरक में बनाया गया है और ध्यानपूर्वक मनों में डालने के लिए रचा गया है। हाल ही में हमें एक पश्चिम जैसा लगने वाला परन्तु पूर्वी विचार सुनने को मिला जिसका नाम है *द न्यू एज मूवमेंट* जो कुछ और नहीं परन्तु वही पुराना झूठ है जो वाटिका में हव्वा से बोला गया था: तुम ईश्वर हो सकते हो और अपनी खुद की वास्तविकता, खुद का सच और खुद की नैतिकता स्थापित कर सकते हो। नया जन्म लेने के लिए तुम्हें मरना आवश्यक नहीं। परमेश्वर व्यक्ति नहीं है परन्तु एक ऐसी शक्ति है जो सभी में मौजूद है तुम भी इस ईश्वरीय शक्ति को खोज सकते हो जब तुम स्वयं की गहराई में उतरोगे। यह तथाकथित ज्ञान वास्तव में पुराना अन्धकार है, और यह हर गलत धर्म और पंथ के पीछे है अब हम इसका संदेश हर समकालीन संगीत, लोकप्रिय टीवी कार्यक्रम, फिल्में, फैशन और सम्मेलनों में देख सकते हैं। इसने हॉलिवुड की हस्तियों, पेन्टागॉन के अधिकारियों को अपने वश में कर लिया है और यह कई देशों के स्थानीय स्कूलों तक भी पहुँच चुका है। हम मसीहियों को इसी झूठ को पहचान कर इसके प्रभाव से लड़ना होगा।

न राजनैतिक, न वैज्ञानिक

अन्य तंत्र आपस में जुड़े हुए नहीं लगते हैं परन्तु वे वास्तव में जुड़े हुए हैं। यह मुश्किल है कि आप साम्यवादिता या विकासवादिता का विरोध करें और आप को तुरन्त ही कट्टरवादी होने का इल्ज़ाम न मिले। परन्तु साम्यवादिता और विकासवादिता वास्तव में राजनीति और विज्ञान की पतली सी चादर से ढंके हैं। राजनैतिक और वैज्ञानिक जाल क नज़रअंदाज़ करते हुए, हमें उन्हें आत्मिक युद्ध की नज़र से देखना चाहिए। साम्यवादिता ने किसी भी अन्य तंत्र के मुकाबले सुसमाचार को दबाने की, चर्च को तोड़ने की, और लोगों में परमेश्वर की आशा पर से विश्वास हटाने की सदैव कोशिश की है। जब कोई दर्शन या विचारधारा परमेश्वर के विरोध में आती है, तो वह राजनैतिक न होकर एक आत्मिक मुद्दा बन जाती है।

विकासवादिता के वैज्ञानिक सबूत भी आत्मिक युद्ध के नज़रिए से इतने महत्त्वपूर्ण नहीं हैं। आँकड़ों या अवशेषों पर बहस करने के बजाए हमें विकासवादी सिद्धान्त के फल मनुष्यों के मनों और दिमागों में देखना चाहिए। विकासवादिता एक ऐसा तालाब है जिसमें से साम्यवादिता, मानववाद, अस्तित्ववाद और यहाँ तक कि नाज़ीवाद निकला है। यह ईश्वर विरोधी सिद्धान्त है जो गलत बयानों द्वारा साबित किया गया है और जिसे बहुत शातिर ढंग से विज्ञान का नाम दिया गया है। इस पृथ्वी पर विकासवाद से ज्यादा किसी सिद्धान्त ने आत्माओं को नहीं भरमाया है। नरक में से किसी भी प्रतिद्वंद्वी इस सिद्धान्त की कलात्मक धोखेबाजी तक नहीं पहुँचा है।

धर्म, सिद्धान्त और विश्वास वास्तव में मसीहियों के लिए आत्मिक युद्ध के मुद्दे होने चाहिए। आत्मिक सिपाही होने के नाते, हम इनसे प्रार्थनापूर्वक लड़ सकते हैं और आत्मिक मैदान में इनके खिलाफ खड़े हो सकते हैं। और हम इनका सामना सच्चाई के साथ निरन्तर कर सकते हैं। हमारी लड़ाई हर जगह के गलत कार्य से होनी चाहिए। मसीही सच्चाई के रखवाले और उद्‌घोषक हैं और वे हर कार्य मसीही की आत्मा में करते हैं (प्रेम की आत्मा - इफिसियों 4:15; 5:2)।

सच में रुकावट

यह शक्तियाँ केवल झूठ ही नहीं फैलातीं बल्कि सच्चाई में रुकावट भी डालती हैं। शायद हमें दिखाई न दें परन्तु ऐसी कई शैतानी शक्तियाँ हैं जो सुसमाचार के प्रचार में रुकावट डाल सकती हैं। वे आत्मिक सुसमाचार-विरोधी हैं जो विश्वासियों को सुसमाचार सुनाने और लोगों को उसे सुनने से रोकने के लिए अपनी हर सामर्थ्य लगा देंगीं।

हम में से कई लोग सुसमाचार की सेवकाई को अकसर हल्का जानते हैं और सोचते हैं कि हमें जब भी मौका मिलेगा हम करेंगे। कुछ लोग स्वीकार करेंगे, और कुछ नहीं। कई बार हमें इसे करने का मन नहीं करता, और कई बार करता है। हम जानते हैं कि सुसमाचार को सुनाना हमारी जिम्मेवारी है, परन्तु हम बहुत अधिक उत्साही नहीं होते। क्या आपने कभी सोचा है कि ऐसा क्यों है? सुसमाचार सुनाना अजीब क्यों लगता है? और क्यों अधिक लोग सुसमाचार को स्वीकार नहीं करते जब हम उनसे बात करते हैं? क्या ऐसा हो सकता है कि अंधकार की शक्तियाँ हमारी सोच और प्रयासों को रोक रही हैं? एक शैतानी तंत्र है जो हमें सुसमाचार से हटाने की कोशिश कर रहा है। ये लोग कहते हैं, तुम सुसमाचारक नहीं हो। तुम बड़े अजीब लगते हो। लोग तुम्हें अस्वीकार करेंगे। तुम्हें ऐसा क्यों लगता है कि तुम सही हो और वे गलत?

दो बातें जिनसे शैतान को नफरत है

प्रभावी मध्यस्थता के अलावा, दो ऐसी बातें हैं जो अंधकार की शक्तियाँ विश्वासियों में देखकर नफरत करती हैं: नम्रता और प्रभावशाली सुसमाचार प्रचार। उदारता उन लोगों के जीवनों में धोखे और घमंड की जड़ों को उखाड़ देती है जिनके जीवनों में शैतान रहता है। शैतान को मसीही ने क्रूस पर अपनी नम्रता से हराया। अंधकार की शक्तियाँ सुसमाचार से भी नफरत करती हैं क्योंकि यह उनके क्षेत्र को बरबाद करता है।

हमारे पास कई तरह की सभाएं, गीत संगीत और क्लब हो सकते हैं और शैतान को कोई फर्क नहीं पड़ेगा। परन्तु यदि हम उसके क्षेत्र में जाते हैं और आत्माओं को उसकी पकड़ से छुड़ाना आरंभ करते हैं तो हमें एक जबरदस्त युद्ध के लिए तैयार होना होगा। वह हम से हमारी ही क्षमताओं के बारे में झूठ बोलेगा। वह हमें भय की तरफ ले जाएगा। वह हमारे लिए आर्थिक समस्याएँ खड़ी करेगा या हमारे अवकाश को रोकेगा ताकि हम प्रचार के लिए कहीं और न जा सकें। वह हमें सुसमाचार को फैलाने से रोकने के लिए हर संभव प्रयास करेगा। हमें केवल वे अवसर नहीं लेने चाहिए जब वे हमारी झोली में गिरते हैं परन्तु हमें हमला भी करना होगा। हमें सुसमाचार का प्रचार करने के लिए कमर कसनी होगी। *पक्के खेत बहुत हैं; परन्तु मजदूर थोड़े हैं: इसलिए खेत के स्वामी से बिनती करो, कि वह अपने खेत काटने को मजदूर भेज दे।* लूका 10:2। हमें यह कभी नहीं सोचना चाहिए कि सुसमाचार सुनना ही काफी है। यह भी काफी नहीं कि हम केवल और अधिक लोगों को सुसमाचार प्रचार के लिए आगे ले आएँ। चाहे दुनिया के कितने भी विश्वासी परमेश्वर के बुलाहट को सुन लें, परन्तु अंधकार की शक्तियों के मुकाबले यह संख्या कम ही होगी। मजदूर तब तक कम हैं जब तक दुनिया में सिर्फ एक ही व्यक्ति अंधकार में हैं।

क्या इससे हमें हतोत्साहित होना चाहिए? नहीं, परन्तु हमें यह सीखना चाहिए: हम आत्मिक युद्ध को प्रचार से अलग नहीं कर सकते। हम क्या कर सकते हैं? केवल प्रार्थना करें और शैतान को डाँटें? यदि हम एक अंधेरे कमरे में हैं, तो हम सिर्फ अंधेरे को

डाँटते नहीं ? हम प्रकाश करते हैं। यदि हम अंधकार के संसार से बचना चाहते हैं, तो हमें यीशु मसीह का प्रकाश फैलाने के लिए अपनी हर सामर्थ्य लगा देनी चाहिए। हमें गाना चाहिए, प्रचार करना चाहिए, हमें नाटकीय रूप देना चाहिए। और हर वह काम करना चाहिए जिससे सुसमाचार का प्रचार हो। हमें कभी भी किसी तरीके का विरोध नहीं करना चाहिए जब तक वह सच्चाई दर्शाता है। और इन सब के बीच हमें अपने प्रचार के साथ-साथ आत्मिक युद्ध में भी रहना चाहिए।
सो हे मेरे प्रिय भाइयो, दृढ़ और अटल रहो और प्रभु के काम में सर्वदा बढ़ते जाओ, क्योंकि यह जानते हो, कि तुम्हारा परिश्रम प्रभु में व्यर्थ नहीं है। (1 कुरिं. 15:58)

तीसरा कांटाः व्यक्ति पर हमला

अंधेरे के राज्य का तीसरा हमला दुष्टात्माओं के द्वारा होता है। दुष्टात्माएँ भौगोलिक सीमाओं या किसी धर्म में रुचि नहीं रखतीं परन्तु व्यक्ति में। दुष्टात्माएँ व्यक्तिगत व्यवहार को प्रभावित करती हैं। यह शक्तियाँ व्यक्ति पर हमला करती हैं - विशेषकर मस्तिष्ट, मन और मुँह के द्वारा। प्रलोभन देनेवाली आत्माएँ पाप की ओर ले जाती हैं, और यदि वे सफल होती हैं तो लोगों को जकड़ लेती हैं। ऐसी आत्माओं की रुचि समूह में न होकर व्यक्तियों में होती है। यह संभव है कि एक शैतान को हम में से हर एक के लिए लगाया गया हो। इसमें हमें घबराना नहीं चाहिए, क्योंकि यदि हम विश्वासी हैं तो हमारी रक्षा परमेश्वर कर रहा है। (1 पतरस 2:3-5)। इसमें कोई शक नहीं कि शैतान की रुचि व्यक्ति में है।
दुष्टात्माएँ हमारे व्यवहार को प्रभावित करती हैं। हमें निरन्तर शैतान प्रलोभन देता है और हमारे विचारों, नज़रिया, भूख और इच्छा को प्रभावित करता है। परन्तु ध्यान दीजिए, यह एक प्रभाव है, कारण नहीं। साठ के दशक में एक लोकप्रिय नज़रिया था जिसका नाम था द डेविल मेड मी डू इट (शैतान ने मुझ से यह करवाया)। यह एक हँसने की बात हो सकती है परन्तु यह इस तरह से कार्य नहीं करता। लोग लाचार होने का दावा करते हैं परन्तु वे हैं नहीं। उदाहरण के लिए, चौर्योन्मादी (एक ऐसा व्यक्ति जिसे बार बार चोरी करने की इच्छा होती है) तब चोरी नहीं करता जब उसे कोई देख रहा है।

गुलामी की ओर जाना

हर गलत काम एक प्रभाव से आरंभ होता है। हमें प्रलोभन मिलता है। और हमें करने की इच्छा होती है। या तो हम परमेश्वर की करुणा माँग कर उसे ना कह सकते हैं या घुटने टेक देते हैं। यदि हम प्रभाव में पड़ जाते हैं, तो हमारी इच्छा पर एक बोझ आ जाता है। (1 कुरिं. 10:13)। उसी पाप को दुबारा करना आसान हो जाता है। हर एक दोहराव के साथ पाप करना आसान होता चला जाता है क्योंकि हम अपनी अंतरात्मा को कमजोर करते हैं। हम एक ऐसे मुकाम तक पहुँच जाते हैं जब पाप हमें गलत नहीं लगता। इसी तरह एक हत्यारा किसी को मारता है और फिर जाकर अपने भोजन का मजा लेता है। उस हत्या से उसे कोई फर्क नहीं पड़ता।
यदि हम गलत करते हैं तो हम पाप की आदत बना लेते हैं। आदतें ढीठ होती हैं। इस बिंदु पर दो गलतियाँ होती हैं। पहली, हम इस बात को मान लेते हैं कि यह मानवीय स्वभाव है, और इसे बदला नहीं जा सकता। दूसरी, हम यह सोचते हैं कि हम नियंत्रित हैं। यह सच नहीं है। हम तब भी नियंत्रित नहीं हैं। यह सिर्फ एक आदत है जो हमारे अंदर तक चली गई है जिस तरह हम कई कार्य बिना सोचे समझे करते हैं। उदाहरण के लिए जब मैं किसी राष्ट्रमण्डल देश में जाता हूँ तो पाता हूँ कि वहाँ कार चलाने का ढंग अलग है। वहाँ स्टीयरिंग व्हील बाँए के बजाए दाँई ओर होता है। जहाँ एक ओर मुझे दाँए ओर से व्हील पर ध्यान देना होता है वहीं दूसरी ओर मुझे यह याद रखना होता है कि मुझे बाँई ओर ही चलना है। ऐसा नहीं हो सकता कि मैं दाई ओर कार चलाऊँ और जब मुझे पुलिस पकड़े तो यह तर्क दूँ कि मैं क्या करूँ। आपको मेरी पृष्ठभूमि नहीं पता। दाई ओर चलना तो हमारे परिवार की परंपरा है। मैं पूरे जीवन भर दाई ओर ही चलता आया हूँ और मैं आखिर मनुष्य हूँ - मुझ में भी कमियाँ हैं। और मैं तुरन्त नहीं बदल सकता। क्या मैं थोड़ी दर बीच में नहीं चल सकता जब तक मुझे आदत न हो जाए? नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकता जब पहली बार मैं सड़क के बाई ओर चला तो मैं उस में उसमें सफल हुआ ऐसा नहीं था कि दाई ओर चलने वाला कोई शैतान था जिससे मुझे मुक्ति मिल गई हो। मैं ने सिर्फ सालों की आदत को बदला। आदतें गहरी हो सकती हैं परन्तु वे परमेश्वर के अनुग्रह और हमारे संयम के द्वारा बदली जा सकती हैं।
हालाँकि, यदि हम पाप की आदत में रहते हैं तो हम एक तरह की दासता को जन्म देते हैं। दासता का मतलब है कि हमारे व्यक्तित्व में कोई अलौकिक पहलू है। हमने प्रेत बाधा या प्रेत ग्रस्त मनुष्यों के बारे में पढ़ा है। परन्तु अब मैं ने यह शब्द उपयोग करना बंद कर दिया है क्योंकि इन्हें परिभाषित करना मुश्किल है। बाइबल ऐसे शब्दों का उपयोग नहीं करती। इसी को मैं दासता कहता हूँ।
यह संभव है कि हम ऐसी दासता में हों जो हमारे पूरे व्यक्तित्व या कामकाज को प्रभावित नहीं करती - परन्तु आपके व्यक्तित्व का एक छोटा सा हिस्सा दासता में हो। जो भी गुलामी हो और जितनी भी हो, यदि आप उसके दास हैं, तो आपको यीशु के नाम में मुक्त होने की आवश्यकता है।

आत्मिक युद्ध दो स्तरों में लड़ा जाता है - एक है बड़ा या सामूहिक स्तर और दूसरा है व्यक्तित्व स्तर। अंधेरे के राज्य से लड़ने के लिए, हम अधिकारियों, शासकों और शक्तियों के खिलाफ खड़े होते हैं जो देशों, लोगों और अधिकारियों ढाँचों में पाए जाते हैं। और इसके साथ ही हमें व्यक्तियों को प्रार्थना, मध्यस्थता और व्यक्तिगत सेवकाई के द्वारा गुलामी से मुक्त करना चाहिए। हमें उनके जीवनों और अपने जीवन में से गलत प्रभावों के खिलाफ खड़े होना चाहिए। हमें सुसमाचार सुनाने के लिए अपने प्रयासों को जारी रखना चाहिए और जहाँ कहीं भी अंधेरा है वहाँ रौशनी लानी चाहिए। यह कोई बहुत बड़ा काम नहीं है, यदि हम यह सीख लें कि हम प्रभु में मजबूत हो सकते हैं। हम परमेश्वर द्वारा तैयार किए गए पुरुष और स्त्री हो सकते हैं जो हर स्तर पर जीतते हैं।

आत्मिक विश्लेषण और सामाजिक विश्लेषणः कैसे करें!

अपने समाज का विश्लेषण

कई लोग यह पूछेंगेः यह मैं अपने शहर में कैसे करूँ? क्योंकि आज बहुत कम विश्वासी अगुवों के पास आत्मिक विश्लेषण की कोई पृष्ठभूमि होती है। इस सवाल का जवाब इतनी आसानी से नहीं मिलेगा। यह जरूरी है कि हम यह सोचकर फँदे में न फँसें कि यह किसी जादू की तरह काम करेगा यदि हम कुछ कार्य उसी तरह करें जैसे अन्य लोग करते हैं। आत्मिक विश्लेषण करने का कोई एक तरीका नहीं है।

यह कहने के बाद मैं मानता हूँ कि निर्देशों की आवश्यकता है। यह छोटा सा पाठ इन्हीं निर्देशों को बताएगा। यह सूची न तो आखिरी है और न ही पूर्ण है आप अन्य प्रश्न भी जोड़ना चाहेंगे। इन में से कुछ शायद आपकी परिस्थिति में बिलकुल भी काम के न हों। परन्तु यह एक शुरूआत है।

आत्मिक विश्लेषण के कई स्तर हैं। विश्लेषण आपके आस पड़ोस या शहर के किसी एक भाग में हो सकता है। आप पूरे शहर का विश्लेषण कर सकते हैं या शहर और उसके आस पास के इलाकों का, राज्य या राज्य के लिए या पूरे देश के लिए। कुछ लोग देशों का विश्लेषण करना चाहेंगे इसको और अधिक सरल बनाने के लिए, मैं यह फर्ज करूँगा कि हम एक शहर का विश्लेषण कर रहे हैं और मैं प्रश्न भी इसके अनुसार ही रखूँगा। परन्तु यही प्रश्न किसी भी भौगोलिक क्षेत्र में प्रासंगिक होंगे।

पहला कदमः सूचना इकट्ठी करना

पहला कदम है सूचना इकट्ठी करना; और दूसरा है उस सूचना पर अमल लाना। इससे मेरा यह मतलब नहीं है कि पहला कदम हमेशा दूसरे कदम से पहले हो। दोनों को साथ में ही चलना होगा। परन्तु प्रार्थना तभी अधिक प्रभावशाली होगी यदि वह पक्की सूचना पर आधारित होगी।

सूचना इकट्ठी करने की प्रक्रिया को हम तीन बागों में विभाजित कर सकते हैं:

(1) ऐतिहासिक शोध
(2) भौतिक शोध
(3) आत्मिक शोध

आप इसे तीन अलग-अलग टीमों में विभाजित करना चाहते हैं या नहीं यह आपके ऊपर है। परन्तु इसके अपने फायदे हैं यदि हमारे पास कार्यकर्त्ता उपलब्ध हैं।

<u>ऐतिहासिक शोध</u>

1 – शहर का इतिहास

अ) शहर की स्थापना

1. किन लोगों ने शहर की स्थापना की?
2. शहर की स्थापना करने के पीछे क्या व्यक्तिगत या व्यवसायिक उद्देश्य था? उनका क्या दर्शन या आस्थाएँ थीं? शहर के भविष्य के प्रति उनका क्या दर्शन था?
3. शहर के असली नाम का क्या महत्त्व है?
   - क्या नाम बदला गया है?
   - क्या इस शहर के अन्य नाम या लोकप्रिय संबोधन हैं?
   - क्या इन नामों का कोई अर्थ है? क्या वे किसी धर्म से सम्बंधित हैं? क्या वे शैतानी या पंथीय नामों से सम्बंधित हैं? क्या वे आशीषित नाम हैं? क्या वे शहर के उद्धार के दान को परिभाषित करते हैं? क्या वे शहर के लोगों के चरित्र के बारे में कुछ कहते हैं?

ब) शहर के बाद का इतिहास

1. शहर ने पूरे देश के जीवन और चरित्र में क्या भूमिका अदा की है ?
2. यदि शहर में कोई मुख्य नेता उभरे हैं, तो उनका शहर के लिए क्या दर्शन था ?
3. शहर के सरकारी या राजनैतिक पटल पर क्या बदलाव आए हैं ?
4. क्या शहर के आर्थिक जीवन में कुछ महत्त्वपूर्ण या आकस्मिक बदलाव आए हैं ? या कोई भुखमरी ? आर्थिक तंगी ? या तकनीकी बदलाव ? या औद्योगिक ? या प्राकृतिक संसाधनों या अविश्वास ?
5. कौन सा महत्त्वपूर्ण अप्रवास हुआ है ? क्या कभी शहर में किसी नई भाषा या संस्कृति को थोपा गया ?
6. अप्रवासियों या अल्पसंख्यकों के साथ कैसा व्यवहार हुआ है ? जातियों या गुटों ने एक दूसरे के साथ कैसा तालमेल बिठाया है ? क्या शहरीय कानून ने कभी किसी तरह के जातिवाद को प्रोत्साहित किया है ?
7. क्या शहर के नेताओं ने कभी संघियों अनुबंधों या प्रतिज्ञाओं को तोड़ा है ?
8. क्या कभी युद्धों ने शहर को सीधा प्रभावित किया है ? क्या कभी शहर में लड़ाइयाँ लड़ी गईं ? क्या कभी खून खराबा हुआ ?
9. शहर के गरीबों और लाचारों के साथ किस प्रकार व्यवहार किया है ? क्या शहर के नेता लालची थे ? क्या कभी राजनैतिक, आर्थिक या धार्मिक नेताओं और संस्थाओं में भ्रष्टाचार पाया गया है ?
10. किन प्राकृतिक आपदाओं ने शहर को प्रभावित किया है ?
11. क्या शहर में कभी कोई नारा या उद्देश्य रहा है ? उसका क्या अर्थ है ?
12. लोग किस तरह का संगीत पसन्द करते हैं ? वे उस संगीत से क्या संदेश लेते हैं ?
13. आज अपने शहर के बारे में लोग कौन से पांच शब्दों का उपयोग करते हैं ? और वे कौन से पाँच शब्द हैं जो शहर की बुराइयों को दर्शाते हैं ?

2 – शहर में धर्म का इतिहास

अ. गैर मसीही धर्म

1. शहर की स्थापना से पहले यहाँ रहने वाले लोगों के क्या धार्मिक विचार या मान्यताएँ थीं ?
2. क्या शहर की स्थापना में धार्मिक मान्याताएँ महत्त्वपूर्ण थीं ?
3. क्या कोई गैर मसीही धर्म शहर में आए हैं ?
4. कौन से गुप्त आदेश शहर में चलते हैं ?
5. क्या शहर में शैतानी पंथ या अन्य ऐसे समूह मौजूद हैं ?

ब) मसीहियत

1. कब मसीही धर्म ने शहर में प्रवेश किया ? और किन परिस्थितियों में ?
2. क्या कोई मसीही अगुवा कभी गुप्त संसद का सदस्य रहा है ?
3. शहर के जीवन में मसीही धर्म की क्या भूमिका है ? क्या इसमें कोई बदलाव आया है ?
4. शहर में मसीहियत बढ़ रही है, या घट रही है या वैसी ही है ?

स) सम्बंध

1. क्या शहर में धर्मो के बीच कोई लड़ाई हुई है ?
2. क्या मसीहियों के बीच कोई झगड़ा हुआ है ?
3. शहर में चर्च के विभाजन का क्या अतिहास है ?

भैतिक शोध

1. शहर के अलग-अलग, विशेषकर पुराने मानचित्रों को ढूँढिए ? शहर की भौतिक स्थिति में क्या बदलाव आए हैं ?
2. शहर की रूप रेखा बनाने वाले कौन थे ? क्या वे गुप्त संसद के सदस्य थे ?

3. क्या शहर के मूल मानचित्र, या योजना में कुछ महत्त्वपूर्ण चिन्ह पाए गए हैं ?
4. शहर की मुख्य इमारतों, विशेषकर राजनैतिक, आर्थिक, शैक्षणिक या धार्मिक की संरचना, स्थान निर्धारण का कोई महत्त्व है ? क्या किसी गुप्त संसद सदस्य ने किसी की नींव पर पत्थर रखा था ?
5. इनमें से किसी भी इमारत की जमीन पर क्या कोई ऐतिहासिक महत्त्व जुड़ा हुआ है ? पहले इस जमीन का मालिक कौन था ?
6. शहर के उद्यानों और सार्वजनिक स्थानों की क्या पृष्ठभूमि है ? उनके पीछे किस का पैसा लगा है ? उनके नामों का क्या महत्त्व है ?
7. शहर की मूर्तियों और स्मारकों की क्या पृष्ठभूमि और संभव महत्त्व है ? क्या इनमें से कोई भी शैतानी बातों या ईश्वर को छोड़ किसी अन्य शक्ति की महिमा करते हैं ?
8. शहर में विशेषकर सार्वजनिक इमारतों, संग्रहालयों या नाट्यशालाओं में किस तरह की कलाकृत्तियाँ हैं ? विशेषकर शैतानी या कामुक कलाएँ हैं ?
9. क्या शहर में कोई मुख्य पूरात्व स्थान हैं ? उनका क्या अर्थ हो सकता है ?
10. पाप के प्रत्यक्ष केन्द्र शहर में कहाँ हैं, जैसे गर्भपात क्लीनिक, अश्लील साहित्य की दुकानें, या नाट्यशालाएँ, वैश्यावृत्ति के इलाके, जुआ खेलने के स्थान या समलैंगिक केन्द्र ?
11. वे कौन से क्षेत्र हैं जहाँ लालच, शोषण, गरीबी, हिंसा, बीमारी या दुर्घटनाएँ अधिक हैं ?
12. हत्याकांड या युद्ध जैसी घटनाओं के पहले और अब के स्थान कहाँ हैं ?
13. क्या पेड़ों, पहाड़ों, पत्थरों या नदियों का कोई खास महत्त्व है ?
14. क्या कुछ सीमाचिन्हों के ऐसे नाम हैं जो परमेश्वर की महिमा नहीं करते हों ?
15. शहर का सबसे ऊँचा भौगोलिक बिंदु कौम सा है और वहाँ क्या स्थापित है ? यह किसी शक्ति या अधिकार का परिचायक हो सकता है।
16. आपके शहर के कौन से क्षेत्र या आसपास के इलाके कुछ अलग से हैं ? ऐसे क्षेत्रों का पता लगाइए जहाँ कुछ अलग आत्मिक महौल हो।

आत्मिक शोध

अ. गैर-मसीही

1. मुख्य देवताओं या प्रादेशिक आत्माओं का शहर के साथ पहले या अब क्या सम्बंध है ?
2. ऊँचे स्थानों, मंदिरों, स्मारकों या इमारतों जिनका संबंध काला जादू, भविष्यद्वाणी, शैतानियम, गुप्त संसद, जेहोवा विटनेस से संबंध हों, का स्थान कहाँ हैं ? इन्हें मानचित्र पर देखने से क्या कोई ढाँचा तो सामने नहीं आता ?
3. शहर के स्थापित होने से पहले अन्य जाति पूजा कहाँ करते थे ?
4. वे सारे सांस्कृतिक केन्द्र कहाँ पर स्थित हैं जिनमें कलाकृतियों हों जो अन्य जातियों से संबंधित हों ?
5. क्या किसी शहर के नेता ने जानबूझकर खुद को किसी देवता या शैतानी अधिकारी से संबंधित तो नहीं कर लिया है ?
6. क्या शहर की स्थापना करनेवालों या मौलिक रहवासियों द्वारा कोई श्राप दिए गए थे ?

ब. मसीही

1. शहर में परमेश्वर के दूतों को किस तरह लिया गया ?
2. सुसमाचार प्रचार आसान था या कठिन ?
3. चर्चे कहाँ पर स्थित हैं ? इन में से कौन सी ऐसी हैं जो जीवन दायक हैं ?
4. शहर की कलीसियाओं का क्या हाल है ?
5. वे कौन से मसीही अगुवे हैं जिन्हें शहर के बड़ों में गिना जाता है ?
6. क्या शहर के सभी क्षेत्रों में प्रार्थना करना आसान है ?
7. अलग-अलग वर्गो के मसीही नेताओं के बीच एकता की क्या स्थिति है ?
8. मसीही नैतिकता के प्रति शहर के नेताओं का क्या दृष्टिकोण है ?

स. रहस्योद्‌घाटन

1. शहर के ऐसे कौन से जाने माने परिपक्व मध्यस्थ हैं जो परमेश्वर की आज्ञा मानते हैं ?
2. शहर को नियंत्रित करने वाले मुख्य अधिकारियों की क्या पहचान है ?

कदम दोः सूचना पर अमल करना

प्रार्थना के द्वारा परमेश्वर एक-एक शहर के बारे में अगुवों को बताएगा कि किसी स्थिति में क्या सही कार्य हो सकता है। इस बीच, किसी भी शहर में सेवकाई करने के लिए नीति बनाकर आत्मिक युद्ध के द्वारा लड़ने के कुछ नियम हैं। (अधिक जानकारी के लिए, युद्ध की प्रार्थना [वॉरफैर प्रेयर] किताब को पढ़ें।) <u>यह पुस्तक छः नियमों को बताती है</u>:

पहला नियमः क्षेत्र
एक ऐसा क्षेत्र चुनें जिसका प्रबंधन संभव है और जिसमें आसानी से समझने वाली आत्मिक सीमाएँ हैं।

दूसरा नियमः पास्टर
इस क्षेत्र में पादरियों और अन्य मसीही अगुवों को एक कीजिए और साथ मिलकर निरन्तर प्रार्थना कीजिए।

तीसरा नियमः मसीह की देह
एक साफ प्रभाव डालने की कोशिश कीजिए ताकि आपकी गतिविधि केवल पेंटिकॉस्टल या करिश्माई लोगों की न होते हुए मसीह की पूरी देह की हो।

चौथा नियमः आत्मिक तैयारी
सहभागी अगुवों और अन्य मसीहियों को पश्चाताप, नम्रता और पवित्रता के द्वारा आत्मिक रूप से तैयार कीजिए। (ऊपर दिए गए सूचना को इकट्‌ठा करने की प्रक्रिया को पढ़िए।)

पाँचवाँ नियमः शोध
शहर को रूप देनेवाली आत्मिक शक्तियों को प्रकट करने के लिए, शहर के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का शोध करो। (ऊपर देखोः सूचना इकट्‌ठी करना)

छटा नियमः मध्यस्थ
परमेश्वर द्वारा चुने गए और बुलाए गए मध्यस्थों के साथ नीति बनाकर आत्मिक युद्ध लड़िए और परमेश्वर के प्रकटिकरण का इन्तज़ार कीजिएः

(अ) शहर के उद्धार के दान
(ब) शहर में शैतान के क्षेत्र
(स) शहर में प्रादेशिक देवता
(ड) शहर में पहले और अब के सामूहिक पाप जिनसे निपटा जाना चाहिए; और
(इ) हमले और समय की परमेश्वर की योजना

सोचने के लिए प्रश्नः

1. इस पाठ में आत्मिक विश्लेषण के लिए साठ प्रश्न हैं। क्या इन में से कुछ प्रश्न आपके शहर में प्रासंगिक नहीं हैं ? इन्हें हटा दीजिए।
2. बचे हुए प्रश्नों को अपने शहर पर विश्लेषण करने के लिए उपयोग कीजिए। एक या अधिक लोग इसे कर सकते हैं।

3. वास्तविक शहर के मानचित्र में पाए गए रहस्यों की योजना बनाइए। इन्हें अन्य मसीही अगुवों के साथ बैठ कर मिलाइए ताकि आपको अपनी सूचना का सही आंकलन मिल सके।
4. मध्यस्थता करनेवालों का एक समूह बनाइए और मानचित्र पर प्रार्थना कीजिए तथा उनके द्वारा खोजे गए तथ्यों को अन्य मसीही अगुवों के साथ बाँटिए।

आत्मिक विश्लेषण

इफिसियों अध्याय 6 के अनुसार - हमें अपनी लड़ाई निम्न के खिलाफ लड़नी है:

- अधिकारी
- अन्धकार के शासक
- शक्तियाँ
- अधिकार
- बड़े पदों पर आत्मिक दुष्टता
- अत्याचार के स्तंभ
- युद्ध के लिए चुनी गई जगहें
- नरक का द्वार / शहरपनाह (इतिहा का पता लगाएं या पढ़ें)

शैतान का आत्मिक ढाँचा इस प्रकार होता है:

शैतान या लूसिफर

बीलज़ीबूब
(शैतान का सेनापति)

अधिकारी

तांत्रिक विद्या	यौन लालसा	लत & व्यसन	हत्या	मृत्यु & बीमारी	मानसिक बीमारी	अकथनीय दुष्टात्मा (केवल मसीहियों को ही परेशान करता है)
झूठे धर्म	समलैंगिकता	गर्द	नफरत		उदासी	धार्मिक संतोष
लॉज	व्यभिचार	धुम्रपान	गर्भपात		आत्महत्या	प्राण विरोधी जीतना
पूर्वी धर्म	वेश्यवृत्ति	शराब	जलन		घबराहट	आत्मिक विरोधी वृद्धि
झूठे पंथ	अश्लीलता	हार्ड रॉक	ईर्ष्या			आर्थिक विरोधी सहयोग
प्रबुद्ध	हस्तमैथुन	कैफीन	युद्ध			

शक्तियाँ, जो
सरकारों, शहरों और कस्बों को नियंत्रित करती हैं

इन अनगिनत अशुद्ध आत्माओं के नियंत्रण में..............हर एक उसक सेनापति के कठोर नियंत्रण में

अधिकारी:

- ❖ एक भाग को बनाएँ
- ❖ फिर मंदिर की आकृतियाँ बनाएँ
- ❖ सरकारी दफ्तर
- ❖ कैथोलिक चर्च और अन्य धर्मों के मंदिर, मस्जिद, आदि
- ❖ साम्यवाद के केन्द्र
- ❖ पेड़ या पूजा के स्थान (उद्यान, मूर्तियाँ, आदि)
- ❖ नदियाँ
- ❖ हिंसा के लिए बदनाम स्थान
- ❖ वेश्यावृत्ति के स्थान
- ❖ स्टेडियम
- ❖ महत्त्वपूर्ण लोग
- ❖ ध्यान आकर्षित करनेवाले स्थान
- ❖ आप जितना अधिक लिख सकते हैं लिखिए
- ❖ विशेष आत्माओं के खिलाफ प्रार्थना कीजिए ताकि आपको उत्तर मिल सके।

अन्धकार के शासक

- ❖ शासक जो लोगों पर काम करते हैं
- ❖ वे अधिकारों को प्रभावित करते हैं
- ❖ दो स्थानों का पता लगाइए; वे कहाँ रहते हैं और कहाँ काम करते हैं
- ❖ सरकारी कार्यालयों का पता लगाइए
- ❖ मंत्रियों, न्यायाधीशों, राष्ट्रपति, न्यायालयों के स्थानों का पता लगाइए
- ❖ प्रार्थना समूहों को आत्मिक युद्ध लड़ने के लिए इन क्षेत्रों में भेजिए और अन्धकार की इन शक्तियों को पराजित कीजिए और उनके प्रभाव को नष्ट कीजिए।

शक्तियाँ (शैतान द्वारा भेजी गईं शक्तियाँ जो कुछ विशेष तरह के पापों के लिए जिम्मेदार हैं)

(वेश्यावृत्ति / मूर्तिपूजा / समलैंगिकता / ड्रग्स की लत)

- ❖ इनका पता लगाइए क्योंकि लोग यह पाप कर रहे हैं
- ❖ मुख्य स्थान जहाँ से ये पाप करवाए जाते हैं (जैसे वेश्यावृत्ति के क्षेत्र, गरीबी या बीमारी के इलाके)

प्रभुत्व (ताकतवर आत्माएँ जो कई लोगों पर कार्य कर रही हैं जो मन और इच्छाशक्ति पर प्रभुता करती हैं)

उदाहरण के लिए, साम्यवाद, जातिवाद आदि)

- ❖ ऐसे मंदिरों को रेखांकित कीजिए जो अपना धर्म फैलाते हैं और ऐसे कार्यालय जो जातिवाद आदि फैलाते हैं
- ❖ प्रार्थना समूहों को आत्मिक युद्ध के लिए उस क्षेत्र में भेजिए और इन आत्माओं के प्रभुत्व को नष्ट कीजिए।

आत्मिक दुष्टता (वे करते हैं जो शक्तियाँ कहती हैं)

- वे कई शैतानों की अगुआई करती हैं
- शक्तियों के स्थानों और मंदिरों में प्रार्थना कीजिए
- सेनाओं के खिलाफ प्रार्थना कीजिए

सम्राज्यों पर प्रभुता

- एशिया / भारत / मुम्बई के राजकुमार
- इनके संभागों के नाम पता लगाइए और उन्हें लिख लीजिए

प्रार्थना वीरों के लिए अनिवार्य

- एक जैसी सोच और समूह का एक समूह
- आपके परिवार का भी समूह हो सकता है
- उसे पवित्र होना जरूरी है
- निरन्तर परमेश्वर के सामने दीन रहें
- उन्हें घंटों प्रार्थनाओं में लगे रहना होगा
- रेखांकित जगहों पर जाकर प्रार्थना करनी होगी

दो बातें आत्माओं के बारे में सीखें

- उनके नाम जानिए
- उनके कार्य करने के क्षेत्र जानिए

किस तरह करें:

- रंगीन पेन और पेपर
- अलग-अलग विषयों के लिए अलग रंगों का उपयोग
- एक सड़क के किसी भाग को रेखांकित कीजिए
- उस भाग को एक पेपर पर बनाइए
- उन स्थानों को भी रंगिए और लिखिए जिन्हें आप नामों से जानते हो
- उन्हें एक गोलाकार के अंदर अंकित कीजिए
- इन सारे अंकों की एक सूची बनाइए और उसके अनुसार प्रार्थना कीजिए

दुष्टात्माओं को निकालना

दुष्टात्माओं के साथ मेरा साक्षात्कार बहुत पहले तब हुआ था जब मैं एक विद्यार्थी था। एक अव्यस्क और अधिक रूप से बच्चा होने के नाते, दुष्टात्माओं के बारे में मेरा ज्ञान बहुत ही कम था। हर शाम मैं मनन के लिए जंगल में जाता था। एक दिन मैं ने एक औरत को देखा जो नीचे पड़ी हुई थी और चिल्ला रही थी। मैं थोड़ा डर गया पर मैं ने हिम्मत की और यीशु के नाम से उस आत्मा को डाँटा। अगली शाम मैं ने उसी औरत को बेहद सहज और शांत देखा। उसने हाथ जोड़कर मेरा धन्यवाद किया। मैं ने उसे सुसमाचार दिया।

कुछ हफ्तों के बाद मेरे एक प्रार्थना सहयोगी ने बताया कि उसके पड़ोसी का परिवार काला जादू के श्राप में फँसा है। उस परिवार में सभी सदस्य अचानक अजीब तरह से हँसते थे और बन्दरों की तरह अपने शरीर खुजाते थे। कई रातों तक वे सोते नहीं थे। काफी प्रार्थना के बाद मैं और मेरा मित्र उस परिवार में गए। हम ने यीशु का प्रचार किया और दुष्टात्माओं को डाँटा। वे तुरन्त मुक्त किए गए और उसके बाद उन्हें अच्छी नींद आई।

अधिकार विरुद्ध शक्ति

इन दो घटनाओं ने मेरी रुचि जगाई कि मैं शैतानियम के बारे में बाइबल से जानूँ। मेरी पहली खोज यह थी: <u>शैतान के पास शक्ति है, परन्तु मसीह में विश्वासियों के पास अधिकार है। शक्ति अधिकार के द्वारा पराजित की जाती है। मैं ने तुम्हें शत्रु की सारी शक्ति पर अधिकार दिया है (लूका 10:19)।</u> एक नाटा सा पुलिस जवान एक शक्तिशाली गाड़ी को रोक सकता है क्योंकि उसके पास अधिकार है। एक छोटा सा स्टेशन मास्टर एक तेज चली आ रही रेल को सिर्फ एक लाल झंडे से रोक सकता है क्योंकि उसके पास अधिकार है। सबसे कमज़ोर सन्त भी शैतानों को भगा सकता है।

धर्मशास्त्र और शैतानियम

धर्मशास्त्र का अर्थ है परमेश्वर का ज्ञान। शैतानियम का अर्थ है शैतान और उसके दूतों का ज्ञान। चर्च ने शैतानों के अस्तिस्व को या तो नकारा है या उसकी अपेक्षा की है। ज्यादातर बाइबल सेमिनरियाँ धर्मशास्त्र पढ़ाती हैं, शैतानियम नहीं। इससे शैतान को बड़ा फायदा हुआ है और वह मसीह के शासन में खुले आम फिरता है। मनुष्य का पतन बताने से पहले ही बाइबल शैतान के स्वरूप को बताती है (उत्पत्ति 3:2)। प्रेरितों न कहा कि वे उसकी चालों से नावाकिफ नहीं थे (2 कुरिन्थियों 2:11) न हमें रहना चाहिए। हमें बाइबलीय अध्यायों ने शैतानों के बारे में जानने की जरूरत है।

<u>शैतान के बारे में कुछ मुख्य तथ्य:</u>

अ) शैतानों के पास अलौकिक ज्ञान और बुद्धि होती है। लूसिफर बुद्धि से भरपूर है (यहेजकेल 28:12)। शैतानों के पास मनुष्यों के साथ सदियों का अनुभव है। वे मनुष्यों के कमज़ोर पहलू को जानते हैं। चालाकी शैतान का मुख्य चरित्र है (उत्पत्ति 3:2)।

ब) शैतानों के पास अद्भुत शारीरिक सामर्थ्य होती है। एक व्यक्ति जिसमें बुरी आत्मा थी वह साँकलों को तोड़कर टुकड़े कर सकता था। कोई उसे नियंत्रित नहीं कर पाता था (मरकुस 5:1-4)। एक और व्यक्ति जिसमें बुरी आत्मा थी, ने सात जवानों को नियंत्रित कर लिया था और उन्हें घायल और नंगा कर भगाया था (प्रेरितों 19:14-16)।

स) शैतान अपने विनाशकारी कार्यों के लिए जाने जाते हैं। यीशु ने एक ऐसे शैतान के बारे में बताया जो केवल चोरी करने, मारने और विनाश करने के लिए आता है (यूहन्ना 10:10)। दुष्टात्माएँ गूँगापन (मत्ती 9:3233), अंधापन (मत्ती 12:22), अपंगापन (लूका 8:27) पैदा करती हैं। शैतान लोगों के मन में आत्महत्या का विचार लाते हैं (मरकुस 9:22)।

ड) शैतानों की बहुत ही सुव्यवस्थित नीति होती है। वे अधिकारियों, शक्तियों, शासकों, दूतों से बनी एक सेना है (इफिसियों 6:12)। उनका एक अविभाज्य राज्य है (मत्ती 12:26)।

ई) शैतानों के पास आश्चर्यकर्मों की भी शक्ति होती है। कुछ आत्माएँ भविष्य बताने में माहिर होती हैं (प्रेरितों 16:16)। पौलुस अन्त के दिनों में धर्मत्याग को लेकर बताता है, उस अधर्मी का आना शैतान के कार्य के अनुसार सब प्रकार की झूठी सामर्थ्य, और चिन्ह, और अद्भुत काम के साथ (2 थिस्स. 2:9)।

सुसमाचार प्रचार और आत्माएँ निकालना

आत्माओं को निकालना प्रचार का एक अहम हिस्सा है। बारह चेलों को बुलाते हुए यीशु ने उन्हें कहा कि वे उन्हें (अशुद्ध आत्माएँ) निकालें और सब प्रकार की बीमारियों और सब प्रकार की दुर्बलताओं को दूर करें (मत्ती 10:1-18)। उसने प्रचार में भी दुष्टात्माओं

को निकालना शामिल किया (मरकुस 16:13-17)। हम प्रेरितों के काम में पढ़ते हैं कि पत्रियों में वर्णित यीशु के उदाहरण को प्रेरितों और आरंभिक कलीसिया ने अपनाया।
प्रचार का अर्थ है राज्य के संदेश को सुनाना। जब भी दुष्टात्माओं को निकाला जाता है, तब-तब इस राज्य की सामर्थ्य प्रकट होती है। अपनी सेवकाई के बारे में यीशु ने कहा - परन्तु यदि मैं परमेश्वर की सामर्थ्य से दुष्टात्माओं को निकालता हूँ, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुँचा (लूका 11:20)। दुष्टात्मा के आने का अर्थ है: एक ऐसी स्थिति जिसमें एक या अधिक अशुद्ध आत्माएँ या शैतान किसी मनुष्य के शरीर में घुस जाएँ या उसे पूरी तरह नियंत्रित कर ले।
हम पूरा सुसमाचार नहीं सुना रहे हैं यदि हम पूरे मनुष्य की सेवकाई नहीं कर रहे हैं। जब तक अशुद्ध आत्मा बाहर नहीं आती, तब तक उससे ग्रस्त आदमी या औरत इस मानसिकता स्थिति में नहीं होंगे कि वे सुसमाचार को सुनें (मरकुस 5:15)।

आइए हम निम्नलिखित अनुच्छेदों में पढ़ें कि दुष्टात्माग्रस्त व्यक्ति को कैसे मुक्त करें:

1. आत्मा को समझें / मामले की जाँच करें

शैतान एक बहुत बड़ा जालसाज है। वह आसानी से खुद को नहीं दर्शाता है। वह उन सभी सेवकों के सामने खुद को छुपा लेता है जो लोगों को उससे छुड़ाने जाते हैं। वह स्वयं को रोशनी के दूत की तरह प्रदर्शित करता है और उसके दूतों को सच्चाई के दूत दर्शाता है।
अपनी ओर से हमें पता लगाने की कला को सीखने के लिए तीन चीजें करनी चाहिए:

अ. सबसे पहले उन सभी मामलों का अध्ययन करें जिन्हें यीशु और प्रेरितों ने निपटाया था। कुछ आयतें इन्हीं से जुड़ी हुई हैं: मत्ती 8:28-34; 9:32-34; 12:22-29; 17:14-20; मरकुस 1:21-28; 7:25-30; लूका 8:2; 11:14; 13:10-21; प्रेरितों 8:7; 16:16-18। यह घटनाएँ हमारे सीखने के लिए काफी विस्तार से दी गई हैं।

ब. उसके बाद बुद्धि और समझ के लिए प्रार्थना करें। दुष्टात्माओं को दूर करने की सेवकाई में "आत्माओं को समझना" सबसे मूल्यवान दान है। उसे दिल से परमेश्वर से माँगिए। पौलुस ने एक लड़की में भविष्यद्वाणी की आत्मा को देख लिया था, जो सच बताती थी (प्रेरितों 16:16-18)। प्रभु इस वरदान को अपने बच्चों को देना चाहता है। परन्तु हमें अपने मनन चिंतन में निरन्तर लगे रहना होगा यदि हम समझ में बढ़ना चाहते हैं। यीशु ने कहा, "प्रभु यहोवा ने मुझे सीखनेवालों की जीभ दी है कि मैं थके हुए को अपने वचन के द्वारा सम्भालना जानूँ। भोर को वह नित्त मुझे जगाता है और मेरा कान खोलता है कि मैं शिष्य के समान सुनूँ" (यशायाह 50:4)।

स. उन लोगों को देखें जो मुक्त कराने की सेवकाई में परमेश्वर की ओर से हैं। चेलों ने देखा किस प्रकार यीशु ने आत्माओं को निकाला। उन्होंने उससे प्रश्न पूछने के द्वारा शिक्षा ली (मत्ती 17:18-19)। पतरस और पौलुस को प्रभु ने अद्‌भुत ढंग से आत्माओं को निकालने में उपयोग किया (प्रेरितों 5:15-16, 19:11-12)। आज भी हमारे पास ऐसे सेवक हैं जिनसे हम व्यावहारिक ज्ञान अर्जित कर सकते हैं।

एक बार जाँच हो जाए, उसके बाद सीधे जाएँ -

2. शैतानों को भगाइए

अ) अधिकार से

जैसा कि पहले भी बताया गया, शैतान के खिलाफ हमारा मुख्य हथियार है मसीह में हमें दिया गया अधिकार। पिता ने अधिकार पुत्र को दिया (मत्ती 28:18; नरकुस 1:27)। मसीह ने इस अधिकार को पहले बारहों को दिया (मत्ती 10:1; मरकुस 6:7), फिर सत्तर को (लूका 10:1,19), और अन्त में सभी विश्वासियों को (मरकुस 16:17)। हमारे पास यह अधिकार प्रभु का दिया हुआ है। हमारे नाम स्वर्ग में लिखे गए हैं। इसलिए शैतान हमारी आज्ञा मानते हैं (लूका 10:18-20)। हम मसीह के प्रतिनिधि हैं। इसीलिए हारा हुआ शत्रु हमारे सामने झुकता है। (2 कुरिन्थियों 5:20)

परन्तु हमारा अधिकार व्यावहारिक उतना बनता है जितना अधिक हम यीशु के अधिकार के सामने झुकते हैं। इस तथ्य का खुलासा सबसे अच्छा उस घटना में होता है जिसमें सेनापति सेवक की चंगाई होती है। अपने अधिकार को सैनिकों के ऊपर बताते हुए, सेनापति ने दर्शाया कि किस प्रकार वह स्वयं भी किसी के अधीन है और फिर उसने पिता के अधिकार को भी स्वीकार किया (मत्ती 8:8-9)। चूँकि यीशु ने पूर्णतः पिता की आज्ञा मानी, शैतान ने पूरी तरह यीशु की आज्ञा मानी। निम्न आयतें इस अपरिवर्तित सिद्धान्त को दर्शाती हैः

"तुम्हारे आज्ञा मानने की चर्चा सब लोगों में फैल गई है.............शान्ति का परमेश्वर शैतान को तुम्हारे पाँवों से शीघ्र कुचलवा देगा।" (रोमियों 16:19-20)

"इसलिए परमेश्वर के अधीन हो जाओ, और शैतान का साम्हना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा।" (याकूब 4:7)

"यदि मेरी प्रजा मेरी सुने, यदि इस्राएल मेरे मार्गों पर चले, तो मैं क्षण भर में उनके शत्रुओं को दबाऊँ, और अपना हाथ उनके द्रोहियों के विरुद्ध चलाऊँ" (भजन 81:13-14)

हालाँकि हम दुष्टात्माओं को अपनी पवित्रता से नहीं निकालते परन्तु हमें यह ध्यान रखना होगा कि हम में उसका कुछ न हो (यूहन्ना 14:30)। अवज्ञाकारिता और गुप्त पाप में रहते हुए यदि हम शैतानों को निकालने का प्रयास करते हैं, तो हम स्वयं को बहुत बड़े खतरे में डाल रहे हैं जैसा कि स्क्किवा के बेटों के साथ हुआ। (प्रेरितों 19:14-16)। जब तक तम्बू में से श्रापित चीज हटाई नहीं जाती, आप शत्रु को नहीं भगा सकते चाहें वह कितना भी छोटा क्यों न हो। मन साफ रखना और यीशु के लहू से पल-पल में शुद्ध होनाः शैतान को हराने में हमारी गवाही को मजबूत करता है (प्रका 12:11)। सिर्फ यीशु का लहू या यीशु के नाम से बोलने से कुछ नहीं होता। हमें एक अच्छी आत्मा रखनी होगी (इब्रानियों 9:14)। यकीनन इसका अर्थ यह नहीं कि दुष्टात्माओं को निकालने से पहले हमें सम्पूर्ण होना होगा।

ब) <u>विश्वास से</u>

अधिकार के उपयोग के साथ आवश्यक है विश्वास। जो एक कारण यीशु ने बताया कि क्यों उसके चेले दुष्टात्माग्रस्त लड़के को मुक्त नहीं कर पाए, वह था अविश्वास (मत्ती 17:19-20)। उसने दुष्टात्मा निकालने की तुलना पहाड़ हिलाने से की। उन्होंने चेलों को पहाड़ से बात करना सिखाया। जी हाँ, हमें शैतान को सीधे आज्ञा देनी है। आप कुछ इस तरह आज्ञा दे सकते हैं: उस आदमी से बाहर निकल आ, दुष्टात्मा। मैं यीशु के नाम में तुझे आज्ञा देता हूँ कि तू बाहर निकल आ। (मरकुस 5:8; प्रेरितों 16:18)। <u>परमेश्वर हमें अधिकार देता है और हम निकालने का काम करते हैं। परमेश्वर से वह करने के लिए न कहें जो उसने आपको करने के लिए कहा है।</u>

विश्वास "प्रार्थना और उपवास" से मज़बूत होता है (मत्ती 17:20-21)। निरन्तर प्रार्थना और उपवास कीजिए यदि आप परमेश्वर की सामर्थ्य को देखना चाहते हैं। आत्मा से परिपूर्ण हो जाएँ। परमेश्वर के सामने प्रतीक्षा करते हुए अपने अभिषेक को नया बनाइए (प्रेरितों 10:38)। हर दिन परमेश्वर की उपस्थिति में समय बिताइए। जो परमप्रधान के छाए स्थान में बैठा रहे......तू सिंह और नाग को कुचलेगा, तू जवान सिंह और अजगर को लताड़ेगा (भजन 91:1,13)।

विश्वास अमल में लाने से बढ़ता है। यही यीशु ने अपने चेलों से कहा जब उन्होंने उससे उनके विश्वास को बढ़ाने की बात कही (लूका 17:5-6)। प्रभु हमें प्रोत्साहित करता है जब हम अमल करते हैं, उन सत्तर लोगों ने लौटकर कहा, "हे प्रभु, तेरे नाम से दुष्टात्मा भी हमारे वश में है" (लूका 10:17)। इसका अर्थ है कि उन्होंने वास्तव में ऐसी अपेक्षा नहीं की थी। परन्तु उन्होंने प्रयास किया। यहाँ पर एक राज की बात है।

विश्वास परमेश्वर के वचन में दी गई प्रतिज्ञाओं पर मनन करने से बढ़ता है। यीशु ने वचन के द्वारा दुष्टात्माओं को निकाला (मत्ती 8:16)। हम दुष्ट जन को हराने में तभी मज़बूत होंगे जब परमेश्वर का वचन हम में होगा (1 यूहन्ना 2:14)। वचन से भर जाइए। पवित्र आत्मा आपको सही आयत याद दिलाएगा जब आप दुश्मन का सामना करेंगे।

<u>दुष्टात्माओं को निकालने के लिए 'नहीं करने वाली बातें'</u>

अ) <u>डरो मत!</u>

चेलों को दुष्टात्माओं पर अधिकार देते हुए, यीशु ने उनसे प्रतिज्ञा की, "और किसी वस्तु से तुम्हें कुछ हानि न होगी" (लूका 10:19)। "जो हम में है वह उससे बड़ा है जो संसार में है" (1 यूहन्ना 4:4)। काले जादु के शिकार लोगों की मदद करते समय, गिनती 23:23 की प्रतिज्ञा याद रखें: निश्चय कोई मंत्र याकूब पर नहीं चलता। डरिए मत। घायल साँप आपको फ़न दिखा सकता है। परन्तु प्रभु का दूत आपके आस पास सुरक्षा करेगा। (भजन 34:7)

ब) दुष्टात्माओं से अधिक बातें न करें।

यीशु ने कुछ मामलों में केवल नाम पूछा और कुछ नहीं (मरकुस 5:9)। न ही उसने दुष्टात्माओं को बोलने की आज्ञा दी (लूका 4:41)। दुष्टात्माओं से इस तरह के वादे लेना बेकार है कि वे अब किसी व्यक्ति में दोबारा नहीं घुसेगी या वे किसी कुँए में चली जाएगी इत्यादि। वे हज़ारों वादे कर उसे भूल सकती हैं। क्योंकि आखिरकार उनका मालिक झूठों का बादशाह है (यूहन्ना 8:44)। उसके दूत झूठी आत्माओं के अलावा क्या हो सकते हैं ?

स) दुष्टात्माओं को श्राप मत दाजिए।

दुष्टात्माओं को डाँटिए मगर कभी श्राप मत दीजिए। हमें इसकी अनुमति नहीं है। यहाँ तक कि स्वर्गदूतों के प्रमुख मिकाएल और परमेश्वर के अन्य दूतों ने कभी भी शैतान व उसकी आत्माओं पर कोई गंभीर आरोप लगाने की हिम्मत नहीं की। (2 पतरस 2:11; यहूदा 9)। साथ ही बाइबल में विश्वासियों के लिए शैतान को बाँधने हेतु कोई आज्ञा नहीं है। यह कार्य सहस्त्राब्दी में एक दूत द्वारा किया जाना है (प्रकाशित. 20:1-2)। आइए हम केवल वह करें जो प्रभु के वचन ने हमें करने के लिए कहा है और सीमा पार न करें। शैतान तब बहुत खुश होगा जब हम वह करेंगे जो करने के लिए नहीं कहा गया है।

ड) पीड़ित के साथ रूखेपन से पेश न आएँ।

दुष्टात्माओं ने पीड़ित को पहले ही बहुत परेशान व घायल कर दिया है। उसकी पीड़ा को और न बढ़ाइए। बाल पकड़ना, मार-पीट करना, आँखों में तेल डालना, माथे पर हाथ रखकर उसे धक्का देना आदि काम न करें। बहुत शोर-शराबा करना भी हमेशा ठीक नहीं है। शैतान बहरा नहीं है।

ई) अकेले न जाएँ।

यीशु ने अपने चेलों को दो-दो करके भेजा। दो हमेशा एक से भले हैं। दुष्टात्माग्रस्त लोगों के बीच समूह में सेवकाई बहुत प्रभावशाली होती है। यीशु ने प्रतिज्ञा की थी - वे लोग दुष्टात्माओं को निकालेंगे (मत्ती 16:17)। अधोलोक के फाटक कभी कलीसिया पर प्रबल नहीं होंगे। (मत्ती 16:18)

फ) अन्यजाति कर्मकाण्डों को न करें।

पीड़ित को 'प्रार्थना किया पानी' पीने के लिए कहना, वही पानी दीवारों व जमीन पर छिड़कना आदि चीजें नहीं करना चाहिए। इनका आरम्भ अन्यजातियों में हुआ था।

एक बार जब पीड़ित मुक्त हो जाए, तब उसके प्रति हमारी सेवकाई का अगला महत्त्वपूर्ण कदम आरम्भ होता है -

3. उसे चेला बनाइए

मुक्त किए गए इंसान को वास्तव में पश्चाताप करना होगा। उसे मसीह में भरोसा रखना और उद्धार के आनंद को अनुभव करना सिखाना होगा। प्रेरितों ने दुष्टात्माओं को निकालने की सेवकाई में पश्चाताप को भी शामिल किया (मरकुस 6:12-13)। उसे व्यक्ति का बपतिस्मा कराइए।

मूर्तियों व तांत्रिक चीजें फेंक देना जरूरी है। कई जगहों पर बाइबल मूर्तियों को शैतान से सम्बंधित बताती है (भजन 106:36-38; 1 कुरिन्थियों 10:19-20)। इफिसियों में परिवर्तित हुए जादूगरों ने सरे-आम महंगी पुस्तकों को जला डाला था। (प्रेरितों 19:19)। प्रार्थना कीजिए कि मुक्त किया गया व्यक्ति पवित्र आत्मा से भर जाए। दुष्टात्मा के दुबारा प्रवेश को रोकिए (मत्ती 12:43-45)। केवल आत्मा की पूर्णता के द्वारा ही वह व्यक्ति आनंद और खुशी का जीवन बिता सकता है और डर व चिंता से दूर हो सकता है।

गरजने वाला सिंह उस व्यक्ति का फायदा उठाएगा जो अपनी चिन्ता प्रभु पर नहीं डालता (1 पतरस 5:7-9)। जब दुष्टात्मा के मामलों में छुटकारा मिल जाए, उसके बाद अच्छा होगा यदि मसीही मनोवैज्ञानिकों से उनके लिए और मदद लाई जाए।

उस व्यक्ति को सिखाएँ कि बाइबल पर कैसे चिंतन करें। यदि वे अनपढ़ हैं तो उसे याद करने में मदद करें, एक-एक करके वे आयतें जो उसकी स्थिति की बात करती हैं, साथ ही मसीह में विजय व परमेश्वर द्वारा सुरक्षा की प्रतिज्ञा दर्शाती हैं। उसे प्रशिक्षित करें किस प्रकार शत्रु के विरुद्ध आत्मा की तलवार उठाई जाए (इफिसियों 6:17)।

उसे विश्वासियों की संगति में ले जाइए। उसे अन्य विश्वासियों की संगति की आवश्यकता है। (सभोपदेशक 4:12)। एक अकेली भेड़ खतरनाक भेड़िए का सामना नहीं कर सकती।

उसे परमेश्वर की बातों में व्यस्त रखें। यीशु ने मुक्त किए गए व्यक्ति से कहा, "अपने घर जाकर अपने लोगों को बता कि तुझ पर दया करके प्रभु ने तेरे लिए कैसे बड़े काम किए हैं। और फिर वह व्यक्ति गया और दस शहरों को सुसमाचार सुनाया" (मरकुस 5:19-20)। मरियम मगदलीनी भी एक अच्छा उदाहरण है। यीशु ने उसमें से सात दुष्टात्माएँ निकालीं। वह बाद में यीशु के सुसमाचार समूह की जागरूक सदस्य बनी (लूका 8:1-2)। वह पुनःजीवित हुए प्रभु को देखने वाली और फिर दूसरों को बताने वाली पहली व्यक्ति बनी (मत्ती 16:1, 9-10)।

दुष्टात्माओं को किस तरह निकालें और श्रापों को तोड़ें

अध्याय 1 – दुष्टात्माएँ क्या हैं ?

दुष्टात्माएँ ऐसी आत्माएँ हैं जिनके पास शरीर नहीं होता जो रहने के लिए एक शरीर की खोज में रहती हैं। उन्हें इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे किसी इन्सान में रह रही हैं या किसी जानवर में परन्तु उन्हें एक ऐसे शरीर की आवश्यकता है जिसके द्वारा वे स्वयं को अभिव्यक्त कर सकें।

उनके आरंभ के बारे में अलग-अलग धारणाएँ हैं परन्तु इस अध्ययन के लिए यह आवश्यक नहीं। हालाँकि हम इन आत्माओं को नहीं देख सकते, परन्तु इनका अस्तित्व जरूर है। अन्यजातियों ने हमेशा उनके अस्तित्व को माना है परन्तु तथाकथित सभ्य पश्चिम समाज अधिकतर इन्हें नकारता आया है। कुछ मनोवैज्ञानिकों ने उन्हें "व्यक्तित्व के प्रकार" का नाम दिया है परन्तु उन्हें आत्मा मानने से इनकार किया है। यीशु मसीह को उनके अस्तित्व से कोई समस्या नहीं थी। सुसमाचार की पत्रियों में कई बार उन्हें आत्माओं को निकालते हुए दर्शाया गया है। यहाँ तक कि उन्होंने कहाः "और विश्वास करनेवालों में यह चिन्ह होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे।" (मरकुस 16:17)

अतः मसीहियों की एक जिम्मेवारी है दुष्टात्माओं को निकालना और इस अध्ययन का उद्देश्य है मसीहियों को प्रोत्साहित करना कि वे ऐसा कर पाएँ। हमें उन से डरने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि "जो तुम में है वह उससे जो संसार में है बड़ा है" (1 यूहन्ना 4:4)। मुझे विश्वास में आए थोड़ा ही समय हुआ था जब एक गंभीर रूप से पीड़ित व्यक्ति को मेरे पास लाया गया। प्रभु ने धीरे से मेरे कान में गर्भपात शब्द कहा, और जब मैं ने यह शब्द उस व्यक्ति से कहा जो स्वयं कभी विश्वासी था, तो वह जमीन पर गिर पड़ा और वह गर्भ के भ्रूण की तरह मुड़ गया और चिल्लाने लगा। आनेवाले हफ्तों में जब हम लोग उस व्यक्ति के बीच सेवकाई कर रहे थे, मैं ने दुष्टात्माओं के बारे में जानना आरंभ किया।

दुष्टात्माओं को एक शरीर में रहने की प्रबल इच्छा होती है। बाइबल में वर्णित वे दुष्टात्माएँ जो एक ऐसे व्यक्ति में रहती थीं जो कब्रस्तान में रहा करता था, ने यीशु से विनती की कि वह उन्हें सुअरों के शरीर में जाने दे। उन्होंने कहा कि हमें सूअरों में डाल दे, ताकि वे उस में प्रवेश कर सकें। दुष्टात्माओं की यही इच्छा रहती है कि वे एक शरीर ढूँढ़ें और उस में रहें और अपनी विशेषताएँ प्रकट करें।

दुष्टात्माओं का व्यक्तित्व होता है

बाइबल में देखने से हम पाते हैं कि दुष्टात्माओं में व्यक्तित्व के कुछ खास चिन्ह होते हैं:

1. **उनके पास ज्ञान होता है**

   आराधनालय में जिस व्यक्ति में दुष्टात्माएँ थीं, उसने यीशु से कहाः "हे यीशु नासरी, हमें तुझ से क्या काम? क्या तू हमें नाश करने आया है? मैं तुझे जानता हूँ, तू कौन है? परमेश्वर का पवित्र जन।" (मरकुस 1:24)। वे जानते थे कि यीशु मसीहा है।

2. **वे जानते हैं कि वे कौन हैं**

   कब्रस्तान से बाहर आए उस दुष्टात्माग्रस्त व्यक्ति से यीशु ने पूछाः "तेरा नाम क्या है?" और उसने जवाब दिया, "मेरा नाम सेना है; क्योंकि हम बहुत हैं" (मरकुस 5:9)। यह वह व्यक्ति नहीं बोल रहा था परन्तु उसके अंदर की आत्माएँ बोल रही थीं। वे जानती थीं कि वो कौन हैं। दुष्टात्माओं को स्वयं के बारे में ज्ञान होता है।

3. **उनके पास इच्छा होती है**

   यीशु ने कहाः "जब अशुद्ध आत्मा मनुष्य में से निकल जाती है, तो सूखी जगहों में विश्राम ढूँढ़ती फिरती है, और पाती नहीं। फिर वह कहता है, "मैं अपने उसी घर में जहाँ से निकली थी, लौट जाऊँगी।" (मत्ती 12:43-44)। जी हाँ, दुष्टात्माओं में इच्छाशक्ति होती है।

4. **दुष्टात्माओं में भावनाएँ होती हैं**

हमें वचन में कहा गया है: "तुझे विश्वास है कि एक ही परमेश्वर है। तू अच्छा करता है। दुष्टात्मा भी विश्वास रखते, और थरथराते हैं।" (याकूब 2:19)। कई बार मुक्त करने के दौरान हम देखते हैं कि दुष्टात्मा उस व्यक्ति में काँप रही है। उसका मन सुसमाचार नहीं सुन सकता। वचन हमें कहता है कि: "आनेवाले समयों में कितने लोग भरमाने वाली आत्माओं, और दुष्टात्माओं की शिक्षाओं पर मन लगाकर विश्वास से बहक जाएँगे। यह उन झूठे मनुष्यों के कपट के कारण होगा, जिनका विवेक मानों जलते हुए लोहे से दागा गया है।" (1 तीमुथियुस 4:1-2)। यूनानी भाषा यह स्पष्ट करती है कि यहाँ लोग नहीं वरन् दुष्टात्माएं बोलती हैं जो सुसमाचार नहीं सुन सकतीं क्योंकि उनकी अतंरात्मा झुलस चुकी है।

5. **वे बोल सकती हैं**

जैसा कि हम देख ही चुके हैं, दुष्टात्माएँ यीशु से बात करती थीं। "मैं जानती हूँ कि तू कौन है-परमेश्वर का पवित्र जन।"

दुष्टात्माएँ क्या-क्या करती हैं

1. वे परेशान करती हैं

दुष्टात्माओं की सबसे मुख्य गतिविधियों में से एक है परेशान करना, विशेषकर विश्वासियों को। वे शैतान के दूत हैं जो मसीहियों को उनकी चाल से भटकाने के लिए या यीशु की तरफ लोगों को मुड़ने से रोकने के लिए भेजे गए हैं। "क्योंकि हमारा यह मलयुद्ध, लोहू और मांस से नहीं, परन्तु प्रधानों और अधिकारियों, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं।" (इफिसियों 6:12)

2. वे दास बनाती हैं

हमें वचन कहता है कि हमें दुबारा दासता की आत्मा नहीं मिली ताकि हम भयभीत हों। "क्योंकि तुम को दासत्व की आत्मा नहीं मिली, कि फिर भयभीत हो परन्तु लेपालकपन की आत्मा मिली है जिससे हम हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारते हैं।" (रोमियों 8:15)

नहीं हमें दासत्व की आत्मा नहीं मिली परन्तु यीशु मसीह के द्वारा लेपालकपन की आत्मा मिली है। उसके अनुसार, शैतान शक्तियाँ जो लोगों के द्वारा काम करती हैं, वे उन्हें अपनी आदतों का गुलाम बनाती हैं, उदाहरण के लिए, उनकी बातचीत, खान-पान या अन्य आदतों में।

3. वे लुभाती हैं

"परन्तु प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा से खिंचकर, और फँसकर परीक्षा में पड़ता है। फिर अभिलाषा गर्भवति होकर पाप को जनती है और पाप जब बढ़ जाता है तो मृत्यु को उत्पन्न करता है।" (याकूब 1:14,15)। जब हम अपने शरीर को क्रूस पर नहीं चढ़ाते और अस्वच्छ गलत इच्छाओं से स्वयं की परीक्षा हने देते हैं, तब हम शैतानी शक्ति के लिए दरवाजा खोलते हैं और दुष्टात्माओं द्वारा बड़े पाप को करने के लिए प्रलोभित हो जाते हैं।

4. वे धोखा देती हैं

"परन्तु आत्मा स्पष्टता से कहता है, कि आनेवाले समयों में कितने लोग भरमाने वाली आत्माओं, और दुष्टात्माओं की शिक्षाओं पर मन लगाकर विश्वास से बहक जाएँगे। यह उन झूठे मनुष्यों के कपट के कारण होगा जिनका विवेक मानो जलते हुए लोहे से दागा गया है।" (1 तीमुथियुस 4:1-2)

जी हाँ, दुष्टात्माएँ हमें धोखा देतीं और झूठ बोलती हैं।

5. दुष्टात्माएँ यातनाएँ देती हैं

वचन यह स्पष्ट करता है कि परमेश्वर ने हमें डर या यातना की आत्मा नहीं परन्तु सामर्थ्य और प्रेम और संयम की आत्मा दी है। "क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नहीं पर सामर्थ्य और प्रेम और संयम की आत्मा दी है।" (2 तीमु. 1:7)। "...डर से कष्ट होता है" (1 यूहन्ना 4:18)। जो लोग पूरी तरह भय में हैं उन्हें अकसर शैतानी शक्तियाँ प्रताड़ित करती हैं।

6. वे प्रबल होतीं और विवश करती हैं

बाइबल में वर्णित एक दुष्टात्माग्रस्त व्यक्ति अकसर उस आत्मा द्वारा संचालित किया जाता था और वह उसे जंगल में ले जाया करती थी। "क्योंकि वह उस अशुद्ध आत्मा को उस मनुष्य में से निकलने की आज्ञा दे रहा था इसलिए वह उस पर बार-बार प्रबल होती थी; और यद्यपि लोग उसे बेड़ियों से बाँधते थे, तौभी वह बंधनों को तोड़ डालता था, और दुष्टात्मा उसे जंगल में भगाए फिरती थी।" (लूका 8:29)। यह दुष्टात्माओं की एक गतिविधि है कि वे व्यक्ति पर प्रबल हों और उसे जब भी मौका मिले विवश करे।

7. वे अपवित्र करती हैं

"शुद्ध लोगों के लिए सब वस्तु शुद्ध हैं, पर अशुद्ध और अविश्वासियों के लिए कुछ भी शुद्ध नहीं: वरन् उनकी बुद्धि और विवेक दोनों अशुद्ध हैं।" (तीतुस 1:15)। कई लोग जो दुष्टात्मा से ग्रस्त हैं, पाते हैं कि उनके मन और जीवन अपवित्र हो चुके हैं।

8. दुष्टात्माएँ लड़ती हैं

वे हमारे व्यक्तिगत सामंजस्य, हमारे मन की शांति, और हमारे शारीरिक स्वस्थता के विरुद्ध लड़ती हैं जिससे हमारे करीबी लोगों के साथ रिश्ते खराब होते हैं। उनका सबसे बड़ा चिन्ह है अशांति। वे हमें हमारी भावनाओं, व्यवहार और सम्बंधों को प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए, घृणा, डर या विद्रोह पैदा करती हैं। उसके साथ ही वे हमारे मन के विचारों को प्रभावित करती हैं और हमारे मन में शक, अविश्वास, अनिर्णय और विलंबकारी आत्मा डालती हैं।

वे हमारी जीभ का भी इस्तेमाल करती हैं, वे हमें झूठ बोलने, गाली बकने, गप्पे हाँकने और ईश निंदा के लिए प्रेरित करती हैं और यौन मामलों, विकृतियों, समलैंगिकता और हस्तमैथुन जैसे कामों के लिए प्रेरित करती हैं। साथ ही, वे हमें शराब खोरी, निकोटीन, चटोरापन और क्षुधा-अभाव के क्षेत्रों में प्रभावित करती हैं और शारीरिक दुर्बलताओं में वे हमें कैंसर, हृदय रोग, गठिया, एलर्जी और ऐंठन जैसी बीमारियों से तंग कर सकती हैं। अधिकतर व्यसन कुंठा की वजह से जन्म लेते हैं। झूठ बोलने वाली आत्मा को एक जीभ की जरूरत होती है, संदेह करने वाली आत्मा को संदेह करने के लिए एक दिमाग की जरूरत होती है और कामुकता की आत्मा को शरीर की जरूरत होती है।

यदि हम में पुनरावर्तक बुराइयाँ हैं, या भावनात्मक व्यवहार हैं जो हमें हमारी इच्छा के विपरीत ले जाते हैं, उदाहरण के लिए नफरत, डर, जलन और घमण्ड या अत्यधिक चिड़चिड़ापन जिसमें आदमी कई बार बहुत अधिक बातूनी हो जाता है तो कभी बहुत चुप या यदि उसमें अस्वाभाविक रूप से बातुनिपन है - तो ये चिन्ह शैतानी क्रिया कलाप हो सकते हैं।

अध्याय 2 - दुष्टात्माएँ कैसे प्रवेश करती हैं

1. हमारे अपने पाप के द्वारा

पिछले अध्याय में हम पहले ही वचन में वर्णित पापों की एक लम्बी सूची देख चुके हैं। मूर्तिपूजा, परमेश्वर से विद्रोह, अक्षमाशीलता, क्रोध, अस्वीकृति, घृणा, कटुता, अनैतिकता, समलैंगिकता, झूठ, कामुकता और इस तरह के पाप वह रास्ता तैयार करते हैं जिनके द्वारा दुष्टात्माएँ प्रवेश कर सकती हैं।

निम्न आयत काफी रोचक है। "मनुष्य की आत्मा यहोवा का दीपक है; वह मन की सब बातों की खोज करता है।" (नीतिवचन 20:27)

न्यू किंग जेम्स के अनुवाद संस्करण में मन का अर्थ बताया गया है पेट के कमरे। अतः हम कह सकते हैं कि हमारे मन में कई आत्मिक कमरे हैं। यदि इन में से किसी में पाप रहता है, तो वह शैतान क्रिया के लिए द्वार बन सकता है। यही वह कारण है कि क्यों विश्वासी भी दुष्टात्मा से परेशान हो सकते हैं।

2. हमारे पूर्वजों के पाप के द्वारा

मूर्तिपूजा जो तीसरी और चौथी पीढ़ी में परमेश्वर का श्राप ले आती है। "तब परमेश्वर ने यह सब वचन कहे, कि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूँ, जो तुझे दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश से निकाल लाया है। तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न

मानना। तू अपने लिए कोई मूर्ति खोदकर न बनाना, न किसी की प्रतिमा बनाना, जो आकाश में, वा पृथ्वी के जल में है। तू उनको दण्डवत् न करना, और न उनकी उपासना करना; क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखने वाला ईश्वर हूँ, और जो मुझ से बैर रखते हैं उनके बेटों, पोतों, और परपोतों को भी पितरों का दण्ड दिया करता हूँ।" (निर्गमन 20:1-5)

पूर्वजों के पापों के कुछ प्रभाव:

अस्वीकृति	कालाजादू और तांत्रिक विद्या
अस्वाभाविक डर	श्राप
कामुकता	सांस्कृतिक समस्याएँ
व्यसन	खंडित मनस्कता
विद्रोह	क्रोध

3. एक व्यक्ति द्वारा अन्य पर प्रभुत्व

ईजेबेल की आत्मा। वचन में ईजेबेल को एक व्यक्ति और एक आत्मा दोनों की तरह दर्शाया गया है। जो लोग ईजेबेल की तरह कहे जाते हैं उनमें ईजेबेल की आत्मा के कई गुण होते हैं। ईजेबेल उन तीन बलवन्तों में से थी जो अपवित्रता त्रिएकता का निमार्ण करते थे। यीशु ने कहा हमें बलवन्त को बाँधना चाहिए; "या क्योंकर कोई मनुष्य किसी बलवन्त के घर में घुस कर उसका माल लूट सकता है जब तक कि पहले उस बलवन्त को न बाँध ले ? और तब वह उसका घर लूट लेगा।" (मत्ती 12:29)
ईजेबेल को यशायाह में कसदियों की बेटी कहा गया है। "हे कसदियों की बेटी, चुपचाप बैठी रह और अंधियारे में जा; क्योंकि तू अब राज्य-राज्य की स्वामिन न कहलाएगी।" (यशायाह 47:5) इस वचन से स्पष्ट है कि बाबुल के पीछे शैतानी शक्ति थी।
यह बात कई लोगों के द्वारा स्पष्ट हुई है जैसे कि अहाब की पत्नी। "और ओमरी के पुत्र अहाब इन सबसे अधिक जो उससे पहले थे, वह कर्म किए जो यहोवा की दृष्टि में बुरे थे। उसने नबात के पुत्र योरोबाम के पापों में चलना हलकी सी बात जानकर, सिदोनियों के राजा एतबाल की बेटी ईजेबेल को ब्याह कर बाल देवता की उपासना और उसको दण्डवत् किया।।" (1 राजाओं 16:30-32)
ईजेबेल की आत्मा मूर्ति पूजा के लिए प्रेरित करती है। प्रकाशितवाक्य 2:18-23 में भी यीशु ने ईजेबेल औरत को थुआतीरा की कलीसिया में बताया है कि वह वहाँ उसके सेवकों को यौन अनैतिकता करने और मूर्तियों को चढ़ाई गई चीजों को खाने के लिए प्रेरित कर रही थी। (प्रका. 2:20)
ईजेबेल की आत्मा का अर्थ है: माँ-बालक धर्म। हम अकसर पाते हैं कि ईजेबेल की आत्मा किसी व्यक्ति को बाँध रही है परन्तु उस व्यक्ति के अन्दर एक छोटा सा बच्चा है जिसका नाम है आंतक। इस छोटे से बच्चे की आत्मा तब प्रकट होती है जब वह 6 या 7 साल का हो या किसी भी उम्र में, क्योंकि उस वक्त उस व्यक्ति के जीवन में बहुत बड़ा मानसिक आघात पहुँचा था और उस आंतक की आत्मा ने उसमें प्रवेश कर अनिश्चितता भर दी है।
ईजेबेल की आत्मा एक कमज़ोर व्यक्ति को ढूँढ़ती है कि वह अहाब की आत्मा के अधीन आ जाए। एक ऐसा व्यक्ति जो अन्य व्यक्ति पर प्रभुता करता है दरअसल शैतानी तरीके से ईजेबेल की आत्मा के अधीन हो जाता है जो वास्तव में काले जादू की आत्मा है।

4. हमारे दिमाग के द्वारा

हमारे विचारों का जीवन, हमारी कल्पनाओं के द्वारा उदाहरण के लिए यौन के बारे में कल्पना करना। साथ ही कुछ खेलों के द्वारा जैसे ड्रैगन और कारागार।

5. मृतकों को छूने के द्वारा

कभी-कभी आत्माएँ (मृतक की नहीं) जो उस मृतक के आसपास या उसमें थी, अपना नया घर ढूँढ़ती है और जब हम उस मृतक को दुख में छूते या प्यार करते हैं, तो शैतान अकसर प्रवेश कर जाता है।

6. सदमा

सदमे या मानसिक आघात के फलस्वरूप, शैतान अकसर हमला करता है और हमें उस आत्मा को बाहर निकालना पड़ता है।

7. दुख

अकसरबहुत लम्बे चलनेवाले दुख के फलस्वरूप, दुख की आत्मा प्रवेश कर सकती है और अपने साथ हर तरह की बीमारी ला सकती है।

8. दुर्घटनाएँ

किसी दुर्घटना के पल में, डर की आत्मा व्यक्ति में प्रवेश करती है और जब तक निकाली न जाए, वे निरन्तर बीमारी या दर्द देती है।

9. टूटी शादी

शादी के टूटने से पैदा हुए क्रोध और नफरत और घृणा मुख्यतः शैतान के प्रवेश का रास्ता बनते हैं।

10. आदतें / व्यसन

जैसे कि हस्तमैथुन, धूम्रपान, या व्यभिचार।

11. शैतानी आत्माओं से सम्बंध

यह भावनात्मक सम्बंध होते हैं जो उन लोगों के बीच होते हैं जो किसी गलत सम्बंध में पड़ जाते हैं। उदाहरण के लिए, व्यभिचार या ऐसे लोग जिनके साथ किसी अन्य ने व्यभिचार किया हो। साथ ही यदि किसी पालक ने अपने बच्चे के साथ उत्पीड़न किया हो।

12. स्थानंतरण

(अ) ऐसे लोगों के अधीन रहना जो विश्वासी नहीं हैं।
(ब) ऐसी फिल्में, टीवी, संगीत और पत्रिकाएँ जो हिंसा, अश्लीलता और कामुकता से भरे हों।
(स) शराबखोरी
(ड) चर्च में आत्माओं का स्थानंतरण
(ई) यौन सम्पर्क के द्वारा, उदाहरण के लिए, समलैंगिकों में समस्या की शुरूआत बचपन में उत्पीड़न के द्वारा होती है।
(फ) कालाजादू की आत्माएँ अकसर पैरों की तरफ से प्रवेश करती हैं जब बच्चा गर्भ में होता है।
(ज) अक्षमाशीलता। मत्ती 18 यह स्पष्ट करता है कि यदि हम क्षमा न करें तो परमेश्वर हमें शैतानों के हाथ छोड़ देगा। "और उसके स्वामी ने क्रोध में आकर उसे दण्ड देनेवालों के हाथ में सौंप दिया, कि जब तक वह सब कर्ज़ा भर न दे, तब तक उनके हाथ में रहे। इसी प्रकार यदि तुम में से हर एक अपने भाई को मन से क्षमा न करेगा, तो मेरा पिता जो स्वर्ग में है, तुम से भी वैसा ही करेगा।" (मत्ती 18:34-35)
(ह) अस्वीकृति
(इ) अधर्मी परम्परा, घमंड, पक्षपात और धर्म।

उदाहरण:
- सांप्रदायिकता
- सैंद्धान्तिक सनक
- विधिवादिता / कर्मकाँजवाद, रूढ़िवादिता और असहिष्णुता
- गलत काम के लिए चर्च के सिद्धान्त पर निर्भर होना
- कुछ खास आराधना के तरीकों के प्रति अधीनता और अन्यों को अस्वीकार करना
- व्यक्तिगत पक्षपात

(ज) तांत्रिक विद्या (इस अध्ययन के बाद के पृष्ठों पर तांत्रिक सूची देखिए)। हमें वचन तंत्र विद्या से आत्मिक सम्बंध बनाने के लिए मना करता है। "जब तू उस देश में पहुँचे जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है, तब वहाँ की जातियों के अनुसार घिनौना काम करने को न सीखना। तुझ में कोई ऐसा न हो जो अपने बेटे या बेटी को आग में होम करके चढ़ाने वाला वा भावी कहलानेवाला वा शुभ अशुभ मुहूर्तो का माननेवाला, वा टोनहा, वा तांत्रिक, वा बाज़ीगर, ओझों से पूछनेवाला, वा भूत साधनेवाला, वा भूतों का जगानेवाला हो। क्योंकि जितने ऐसे काम करते हैं वे सब यहोवा के सम्मुख घृणित हैं;

और इन्हीं घृणित कामों के कारण तेरा परमेश्वर यहोवा उनको तेरे सामने से निकालने पर है। तू अपने परमेश्वर यहोवा के सम्मुख सिद्ध बना रहना। वे जातियाँ जिनका अधिकारी तू होने पर है शुभ अशुभ के माननवालों और भावी कहनेवालों की सुनी करती हैं; परन्तु तुझको तेरे परमेश्वर ने ऐसा करने नहीं दिया।" व्यवस्थाविवरण 18:9-14)

(क) हमारे घर की चीजें - हमें अपने घर में वे सभी नक्काशियों, चीजों आदि को फेंक देना चाहिए जो तंत्रविद्या से सम्बंधित हैं। "और कोई घृणित वस्तु अपने घर में न ले आना, नहीं तो तू भी उसके समान नष्ट हो जाने की वस्तु ठहरेगा; उसे सत्यानाश की वस्तु जानकर उससे घृणा करना और उसे कदापि न चाहना; क्योंकि वह अशुद्ध वस्तु है।" (व्यवस्था. 7:26)

(ल) गैर ईसाई परम्पराएँ, संस्कृति और वातावरण, जैसे जापानी पूर्वज आराधना, धार्मिक आत्माएँ।

(म) झूठ धर्म। कई भी धर्म जो निम्न को इन्कार करता है:

1. परमेश्वर पिता के साथ सम्बंध केवल क्रूस पर चढ़ाए गए यीशु मसीह के द्वारा ही सम्भव है। "द्वार मैं हूँ। यदि कोई मेरे द्वारा भीतर प्रवेश करे तो उद्धार पाएगा और भीतर बाहर आया जाया करेगा और चारा पाएगा।" (यूहन्ना 10:9); यूहन्ना 14:6।
2. परमेश्वर का एक ही आत्मा है जिसका नाम है पवित्र आत्मा जो परमेश्वर की ओर से जाता है। "क्योंकि उसी ही के द्वारा हम दोनों की एक आत्मा में पिता के पास पहुँच होती है।" (इपिसियों 2:18)
3. कोई भी आत्मा जो यीशु मसीह को अस्वीकार करती है कि वह मनुष्य रूप में आया, वह परमेश्वर का पुत्र है, जिसने निष्पाप जीवन जीया, क्रूस पर मारा गया और तीसरे दिन मृतकों में से जी उठा - मसीह विरोधी आत्मा है। यह हमारे चर्च में आज बहुत होता है। "हे लड़कों यह अन्तिम समय है, और जैसा तुमने सुना है, कि मसीही का विरोधी आनेवाला है, उसके अनुसार अब भी बहुत से मसीही विरोधी उठे हैं, इससे हम जानते हैं, कि यह अंतिम समय है। वे निकले तो हम ही में से, पर हम में के थे नहीं; क्योंकि यदि हम में के होते, तो हमारे साथ रहते, पर निकल इसलिए गए कि यह प्रगट हो कि वे सब हम में के थे नहीं।" (1 यूहन्ना 2:18-19); 1 यूहन्ना 4:2।

(न) विधर्म, अर्थात् मसीही विश्वास से अलग होना।

"आनेवाले समयों में कितने लोग भरमानेवाली आत्माओं, और दुष्टात्माओं की शिक्षाओं पर मन लगाकर विश्वास से बहक जाएँगे। यह उन झूठे मनुष्यों के कपट के कारण होगा जिनका विवेक मानों जलते हुए लोहे से दागा गया है।" (1 तीमुतियुस 4-1-2)

इस समय भरमानेवाली आत्माएँ विश्वासियों को पाप की ओर ले जाएँगे। "जिस प्रकार उन लोगों में झूठे भविष्यद्वक्ता थे, उसी प्रकार तुम में भी झूठे उपदेशक होंगे, जो नाश करने वाले पाखंड का उत्घाटन छिप-छिपकर करेंगे। और उस स्वामी का जिसने उन्हें मोल लिया है इन्कार करेंगे, और अपने आप को शीघ्र विनाश में डाल देंगे।" (2 पतरस 2:1)

झूठे शिक्षक गलत धर्मो का प्रचार करेंगे। "हे प्रियो, हर एक आत्मा की प्रतीति न करो, वरन् आत्माओं को परखो कि वे परमेश्वर की ओर से हैं कि नहीं; क्योंकि बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता जगत में निकल खड़े हुए हैं। परमेश्वर का आत्मा तुम इस रीति से पहचान सकते हो; जो आत्मा मान लेती है कि यीशु मसीह शरीर में होकर आया है वह परमेश्वर की ओर से है, और जो आत्मा यीशु को नहीं मानती, वह परमेश्वर की ओर से नहीं; और वही तो मसीह विरोधी की आत्मा है, जिसकी चर्चा तुम सुन चुके हो कि वह आनेवाला है, और अब भी जगत में है।" (1 यूहन्ना 4:1-3)

यह मसीह विरोधी और उसकी आत्माओं का बढ़ता हुआ प्रभाव है।

अध्याय 3 - श्राप

1. श्राप दुष्टात्माओं के प्रवेश का एक मुख्य द्वार हो सकता है

"जैसे गौरैया घूमते-घूमते और सूपबेनी उड़ते-उड़ते नहीं बैठती, वैसे ही व्यर्थ श्राप नहीं पड़ता।" (नीतिवचन 26:2)

2. श्राप के लक्षण

(क) मानसिक, भावनात्मक और शारीरिक तनाव

(ख) निरन्तर बीमारी, विशेषकर वंशानुगत बीमारी

(ग) वैवाहिक टूटन और परिवारिक कलह
(घ) निरन्तर गरीबी
(ड) बार-बार दुर्घटना
(च) बांझपन और गर्भपात
(छ) परिवारों में बार-बार मृत्यु होना

3. श्रापों का प्रवेश बिन्दू

क) कुछ लगों में अधिकार जताने की आदत होती है जैसे कि पति को पत्नी पर, या माँ-बाप को बच्चों पर। उदाहरण, यह कहना कि तुम अच्छा खाना नहीं पकाती, तुम किसी काम के नहीं हो, तुम कभी कुछ अच्छा नहीं कर सकते।
ख) स्वयं को श्राप देना। जैसे मैं कभी कुछ नहीं कर सकता, मैं स्वयं को कभी माफ नहीं कर सकता, परमेश्वर मुझ से प्रेम नहीं रखता, आदि।
ग) श्राप जो बाइबल के विपरीत किसी प्रतिज्ञा के कारण होते हैं जैसे अविश्वासियों के साथ गहरे सम्बंध रखना। "अविश्वासियों के साथ असमान जूए में न जुतो, क्योंक धार्मिकता और अधर्म का क्या मेल जोल।" (2 कुरिन्थियों 6:14)
घ) शैतान के सेवकों द्वारा लाए गए श्राप, जैसे ओझा, नीम-हकीम, आदि।
ड) <u>परमेश्वर की निम्न आज्ञाओं को न मानने से उत्पन्न श्रापः</u>
- झूठे देवता रखना (निर्गमन 20:3-4; व्यवस्था 27:15)
- माँ-बाप के प्रति अनादर (व्यवस्था 27:16)
- पड़ोसी के विरुद्ध पाप
- कमज़ोर पर अन्याय (व्यवस्था 27:18-19)
- अवैध सम्बंध (व्यवस्था 27:20-23) (गलत यौन सम्बंध, विशेषकर विवाह के बाहर या परिवार के सम्बंधों के साथ)
- कूट साक्ष्य देना (व्यवस्था 27:25)
- चोरी (जकर्याह 5:1-4)
- परमेश्वर के साथ कंजूसी (मलाकी 3:9)
- सुसमाचार को बदलना (गलातियों 1:8-9)
- शरीर पर निर्भर होना (यिर्मयाह 16:5)। यहूदी विरोधी भावनाएँ (उत्पत्ति 12:3; 28:3-14)

अध्याय 4 - कैसे मुक्त हुआ जाए

1. स्वयं को दीन करें

वचन की सबसे पहली आवश्यकता यह है कि यदि हम प्रभु से कुछ स्वीकार करने जा रहे हैं, तो हमें दीन होना पड़ेगा। हमें पूर्णतः परमेश्वर और अन्यों के सामने दीन होना चाहिए।

2. पूर्णतः ईमानदार रहें

बिना ईमानदारी के, पूर्णतः पश्चाताप सम्भव नहीं है।

3. अपने पापों को मान लें

यह महत्त्वपूर्ण है कि हम दीनता से परमेश्वर के सम्मुख आएँ और अपने पापों का अंगीकार करें। हम उन्हें दूसरों के सामने भी स्वीकार कर सकते हैं इससे ढाढ़स और शांति मिलती है। "तुम आपस में एक दूसरे के सामने अपने-अपने पापों को मान लो, और एक दूसरे के लिए प्रार्थना करो, जिससे चंगे हो जाओ।" (याकूब 5:16)

4. पश्चाताप करने की आवश्यकता

पश्चाताप में यह निर्णय शामिल होता है कि आप वही कार्य दुबारा नहीं करेंगे। पापों के लिए पछतावा होना एक बात है। परन्तु जब हम पश्चाताप से प्रभु के सम्मुख आते हैं तो हमें अपने पापों से मन फिराना होता है और साथ ही हमें यह भी निर्णय लेना होता है कि हम उसी पाप को दुबारा नहीं करेंगे।

5. **क्षमा**

यह जरूरी है कि हम दूसरों को क्षमा करें। यदि हम अपने माँ-बाप को क्षमा कर उन्हें आदर दें तो सभी लोग हमारे साथ होंगे और हम पृथ्वी पर लम्बे समय तक रहेंगे। "कि तेरा भला हो, और तू धरती पर बहुत दिन जीवित रहे।" (इफिसियों 6:3)। यदि हम क्षमा नहीं करेंगे तो हमारा स्वर्गीय पिता भी हमें क्षमा नहीं करेगा। "और यदि तुम क्षमा न करो तो तुम्हारा पिता भी जो स्वर्ग में है, तुम्हारा अपराध क्षमा न करेगा।" (मरकुस 11:26)

6. **हमें मुक्ति के लिए प्रभु का नाम पुकारना चाहिए**

"जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा" (रोमियों 10:13)।

अध्याय 5 – प्रकटीकरण

हमें प्रकटीकरण से डरना नहीं चाहिए जो अकसर मुक्ति पाए जाने के दौरान होता है। प्रकटीकरण के लक्षण है सिसकार, थूक, खाँसी, चिल्लाना या मृत की तरह नीचे गिर जाना। यीशु ने जिस बच्चे में से आत्मा को निकाला था, उसके साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ था। "तब वह चिल्लाकर और उसे बहुत मरोड़कर, निकल आई; और बालक मरा हुआ सा हो गया, यहाँ तक कि लोग कहने लगे कि वह मर गया" (मरकुस 9:26)। जब लोग मृत की तरह नीचे गिर जाते हैं, तब वह मूर्छित कर देने वाली या सम्मोहन की आत्मा होती है। कई बार लोगों के मुँह से झाग निकलने लगता है और कई बार वे जानवरों की तरह चिल्लाते हैं। कुछ आत्माएँ रोकर या चिल्लाकर या दहाड़कर बाहर आती हैं परन्तु कुछ मामलों में यह प्रकटीकरण नहीं होते।

अध्याय 6 – परामर्श और छुटकारा

परामर्शः

1. व्यक्ति को आरामदेह जगह पर बैठाइए।
2. परामर्श से पहले व्यक्ति के साथ मिलकर पवित्र आत्मा की अगुआई के लिए प्रार्थना कीजिए।
3. जितना समय लगे उतना लीजिए।
4. उस व्यक्ति की समस्या को ध्यान से सुनिए ताकि पवित्र आत्मा आपकी अगुआई कर सके।
5. उनके साथ कार्य कीजिए जो प्रभु को सुनते हैं। पुरुषों को स्त्रियों का परामर्श और स्त्रियों को पुरुषों का परामर्श नहीं लेना चाहिए।
6. सेवकाई के बीच में अवकाश जरूर लीजिए।

याद रखिए कि छुटकारा देनेवाला पवित्र आत्मा है न कि आप। जब आप प्रभु को सुनते हैं तो वही छुटकारे का कार्य करेगा।

वास्तविक छुटकाराः

1. इस बात की पुष्टि कीजिए कि परामर्श लेनेवाले ने हर व्यक्ति को क्षमा कर दिया है, विशेषकर सगे सम्बंधी जैसे पति या पत्नी, माँ, बाप, पिता, भाई, बहन।
2. इस बात की भी पुष्टि कीजिए कि वह व्यक्ति इस बात को समझे कि उसे अपने माँ-बाप को क्षमा करना और आदर देना चाहिए ताकि उसके साथ सब अच्छा हो और उसे लम्बा जीवन मिले। "अपनी माता और पिता का आदर कर (यह पहली आज्ञा है जिसके साथ प्रतिज्ञा भी है) कि तेरा भला हो, और तू धरती पर बहुत दिन जीवित रहे।" (इफिसियों 6:2-3)। यदि वे उनके माता-पिता का आदर करने और क्षमा करने में कठिनाई महसूस करते हैं तब उन्हें याद होना चाहिए कि उनकी सहायता के लिए उनके अन्दर पवित्र आत्मा है।

3. निश्चित करो कि व्यक्ति ने सब श्रापों को जिन्हें उनके ऊपर दूसरे लोगों के शब्दों या उनके अपने शब्दों के द्वारा डाला गया हो या कोई श्राप जिसे किसी ओझा जैसे व्यक्ति ने डाला हो।
उदाहरण के लिए, लोग उनके अपने ऊपर इस प्रकार बोलते हुए श्राप डालते हैं, "मैं कभी अच्छा नहीं बन सकूँगा", "मैं कभी अपने को क्षमा नहीं करूँगा", "परमेश्वर मुझ से प्रेम नहीं करता।" मैं फलाने व्यक्ति से कभी बात नहीं करूँगा।"
सम्बंधित अधिकारों वाले लोग जैसे कि पति या माता-पिता उनकी पत्नियों या बच्चों पर ऐसा कहते हुए श्राप डालते हैं, "तुम बेकार हो", "तुम असफल हो", "तुम कभी अच्छा नहीं बन सकोगे", आदि।
हम पर या हमारे परिवारों पर श्राप डाले जा सकते हैं इन लोगों द्वारा जैसे कि ओझा, डायन, आदि।
4. निश्चित करो कि व्यक्ति का विश्वास पूरी तरह यीशु मसीह में है और उसने सब प्रकार की मूर्तिपूजा को त्याग दिया है।
5. निश्चित करो कि व्यक्ति ने उसके घर को सब प्रकार की शैतानी चीजों या मूरतों से साफ कर दिया है। "और कोई घृणित वस्तु अपने घर में न ले आना, नहीं तो तू भी उसके समान नष्ट हो जाने की वस्तु ठहरेगा; उसे सत्यानाश की वस्तु जानकर उससे घृणा करना और उसे कदापि न चाहना; क्योंकि यह अशुद्ध वस्तु है।" (व्यवस्था 7:26)
6. निश्चित करो कि व्यक्ति ने उसके पापों को मान लिया है और त्याग भी दिया है, यीशु के नाम में, विशेषकर इन पापों को, व्यभिचार, गर्भपात और गूढ़ विद्या में किसी प्रकार का उलझाव।
7. निश्चित करो कि व्यक्ति ने सब झूठे धर्मों और झूठी परम्पराओं या कहानियों को त्याग दिया है।
8. निश्चित करो कि एक बार जब व्यक्ति ने उसके माता-पिता को क्षमा और आदर किया है, उसके पूर्वजों के पापों को भी मान कर त्याग दिया है। गलातियों 3:13-14 को अपना बनाना जरूरी है जो हमें व्यवस्था के शाप से छुड़ाता है, विशेषकर वे शाप जिनका जिक्र निर्गमन 20:5 और व्यवस्थाविवरण 28:15-68 में है। "मसीह ने जो हमारे लिए शापित बना, हमें मोल लेकर व्यवस्था के शाप से छुड़ाया, क्योंकि लिखा है, 'जो कोई काठ पर लटकाया जाता है वह शापित है।' यह इसलिए हुआ कि अब्राहम की आशीष मसीह यीशु में अन्यजातियों तक पहुँचे, और हम विश्वास के द्वारा उस आत्मा को प्राप्त करें जिसकी प्रतिज्ञा हुई है।" (गलातियों 3:13-14)
जब हम अपने माता-पिता का आदर करते हैं और उन्हें क्षमा करते हैं और उनके बेटों के रूप में अपने पूर्वजों के पापों को त्यागते हैं, हम व्यवस्था के शाप से पूरा छुटकारा अपना बना सकते हैं। "तू उनको दण्डवत् न करना, और न उनकी उपासना करना; क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखने वाला परमेश्वर हूँ, और और जो मुझ से बैर रखते हैं, उनके बेटों, पोतों और परपोतों को भी पितरों को दिया करता हूँ।" (निर्गमन 20:5)
9. निश्चित करो कि व्यक्ति किसी प्रकार का तावीज या वैसी ही कोई चीज न पहने हुए है जो शैतानी कार्रवाही ला सकती है।
10. व्यक्ति को लहू वाले वचन जोर से बोलने को कहो, विशेषकर वे वचन जो हमारे शरीर से सम्बंधित है, क्योंकि हमारे शरीर पवित्र आत्मा के मंदिर हैं।
11. याद रहे कि छुटकारे का कर्त्ता पवित्र आत्मा है।
12. लोगों को आत्माओं को साँस बाहर निकालकर या खाँसकर निकालने को कहो, कुछ भी जो वे उनके भीतर उठता हुआ महसूस करते हैं।
13. व्यक्ति को जबकि छुटकारा हो रहा है यीशु का नाम लेने या अन्य भाषाओं में बोलने से मना करो क्योंकि इससे दुष्टात्माओं को निकलने में बाधा पड़ सकती है।

अध्याय 7 – छुटकारे के तरीके

1. हम जैसे व्यक्ति के लिए प्रार्थना कर रहे हैं हमारी प्रार्थना की भाषा इस्तेमाल कर सकते हैं। दुष्टात्माएँ इस भाषा से डरते हैं।
2. हम परमेश्वर के वचन बोल सकते हैं।
3. प्रार्थना करते समय तेल से अभिषेक करना प्रभावशाली हो सकता है।
4. व्यक्ति को परमेश्वर की स्तुति करने को कहो। जैसे वे यह कुछ एक बार करने लगेंगे, किसी प्रकार की भी उनमें दुष्टात्मा निकलने लगेगी। उन्हें "परमेश्वर की स्तुति हो, परमेश्वर की स्तुति हो" जैसे शब्द जोर से बोलना चाहिए।
5. हमें आत्माओं को निकलने के लिए परमेश्वर के वचन का अधिकार इस्तेमाल करना चाहिए।
6. हम जैसे प्रार्थना कर रहे हैं हमें पवित्र आत्मा को हमें अभिषेक करने को कहना चाहिए।

7. सुनो पवित्र आत्मा क्या कह रहा है जिससे पता चले प्रार्थना कैसे की जाए।
8. निश्चित करो कि व्यक्ति समझता है कि परमेश्वर उससे प्रेम करता और उसे स्वीकार करता है। "उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो, जिसे उसने हमें उस प्रिय में सेंत-मेंत दिया।"
9. कभी-कभार हमें उपवास करना होगा।
10. छुटकारा पाने आए व्यक्ति के लिए सब पापों और अविश्वास का त्यागा जाना भी होना चाहिए।
11. उन्हें यीशु के नाम को पुकारने के लिए उत्साहित करो। "जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा" (रोमियों 10:13)
12. हमें आत्मा को बाँधने और व्यक्ति को उससे छूड़ाने के लिए दूसरे व्यक्तियों के साथ सहमत होना चाहिए। "मैं तुम से सच सच कहता हूँ, जो कुछ तुम पृथ्वी पर बाँधोगे, वह स्वर्ग में बँधेगा और जो कुछ तुम पृथ्वी पर खोलोगे, वह स्वर्ग में खुलेगा। फिर मैं तुम से यह कहता हूँ, यदि तुम में से दो जन पृथ्वी पर किसी बात के लिए एक मन होकर उसे माँगें, तो वह मेरे पिता की ओर से जो स्वर्ग में है, उनके लिए हो जाएगी।" (मत्ती 18:18-19)
13. हमें यीशु मसीह के लहू से विनती करनी चाहिए, अर्थात् शैतान को याद दिलाना कि यीशु मसीह के लहू के द्वारा हम शुद्ध हुए, छुड़ाए गए, पवित्र किए गए और धर्मी ठहराए गए हैं।
14. व्यक्ति को उनकी इच्छाशक्ति को काम में लाना और शैतान का सामना करना चाहिए।
15. यदि हम छुटकारे के लिए एक समूह के साथ मिलकर काम कर रहे हैं, तब हमें छुटकारा शुरू करने से पहले हर व्यक्ति को उसके ऊपर यीशु का लहू लगाने को कहना चाहिए।

स्वयं अपना छुटकारा

बहुत से लोग अपना छुटकारा स्वयं करते हैं जो, मेरे विचार से, छुटकारे का एक उचित तरीका है। दूसरे शब्दों में, जब दमन या आक्रमण महसूस कर रहे हो, कोई कारण नहीं है कि आत्मा हमें छोड़ जाने के लिए क्यों आज्ञा नहीं दे सकते हैं। यह तब भी लागू होता है जब एक आत्मा हमारे अन्दर हो।

उदाहरण के लिए, बहुत बार, जब मैं खुद किसी प्रकार का आत्मिक दमन महसूस कर सकता हूँ और पवित्र आत्मा मुझे निर्देश देता है कि मैं अपने हाथ मेरी गर्दन या कंधों पर रखूँ और दमन की आत्मा को निकल जाने को कहूँ। कभी-कभार मैं ने अपने अन्दर बीमारी महसूस की है और पवित्र आत्मा ने बड़े स्पष्ट रूप से मुझे दिखाया है कि यह एक निर्बलता की आत्मा है और मैं ने इसे यीशु के नाम में निकल जाने को कहा है। मैं अपने शरीर के प्रभावित भाग पर हाथ रखता हूँ। मैं ने व्यक्तिगत बीमारियों के मामलों में इस तरीके को बड़ी सफलता के साथ इस्तेमाल किया है।

इस प्रकार के छुटकारे की सबसे बड़ी कमी यह हो सकती है कि हमें अपनी व्यक्तिगत हालत का ठीक-ठीक पता लगाने में कठिनाई हो। इसी कारण से आत्माओं के परख का वरदान कलीसिया को दिया गया है। इसका उद्देश्य दूसरे लोगों की, पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन में, पता लगाने में मदद करना है कि किस प्रकार की आत्मा हम पर आक्रमण कर रही है या क्या हम पर वाकई आक्रमण हो रहा है।

जबकि स्वयं का छुटकारा एक बहुत ही प्रभावशाली तरीका है, फिर भी, मसीह की देह से सहायता लेने के स्थान पर इसे ही नहीं इस्तेमाल करना चाहिए। इसलिए मैं स्वयं का छुटकारे का एक तरीके के रूप में सिफारिश करूँगा, परन्तु एकमात्र तरीके के रूप में नहीं। जब मैं स्वयं छुटकारे को इस्तेमाल करता हूँ, तब न केवल मैं आत्माओं को मुझे छोड़ जाने की आज्ञा देता हूँ बल्कि साँस बाहर लेकर या खाँसकर भी उन्हें निकालता हूँ, जैसे पवित्र आत्मा निर्देश देता है।

अपने छुटकारे को बनाए रखने के लिए, हमें:

1. अपने जीवन के हर क्षेत्र में यीशु मसीह में समर्पित हो जाओ, उसे हर क्षेत्र का प्रभु और उद्धारकर्त्ता बनाओ। इसमें हमारे विचार, हमारी भावानाएँ और हमारा प्रतिदिन का जीवन शामिल है।
2. हमें हमेशा पवित्र आत्मा से भरे रहना चाहिए। "दाखरस से मतवाले न बनो, क्योंकि इससे लुचपन होता है, पर आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ।" (इफिसियों 5:18)
3. हमें परमेश्वर के वचन में विश्वास होना और उस से जीवित रहना चाहिए। "यीशु ने उत्तर दिया, लिखा है, 'मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है, जीवित रहेगा।'" (मत्ती 4:4)
4. हमें परमेश्वर के सारे हथियार पहन लो। (इफिसियों 6:10-18)
5. हमें व्यक्ति को उत्साहित करना चाहिए कि उन लोगों के साथ रहे जो उसकी सहायता कर सकते हैं और अपनी पुरानी भीड़ के पास न चले जाएँ।

6. हमें उन्हें लोगों के साथ सही सम्बंध में रहने के लिए उत्साहित करना चाहिए, अर्थात् प्रेम और क्षमा का एक रवैया।
7. उन्हें यीशु मसीह को उनके जीवनों के हर भाग का केन्द्र बनाना चाहिए। "और मैं यदि पृथ्वी पर से ऊँचे पर चढ़ाया जाऊँगा, तो सबकोस अपने पास खींचूँगा।" (यूहन्ना 12:32)

   कभी-कभी हमें स्तुति के वस्त्र पहनने होंगे। "उनकी उदासी हटाकर यश का ओढ़ना चढ़ाऊँ" (यशायाह 61:3)। और उद्धार का टोप भी: "पर हम जो दिन के हैं, विश्वास और प्रेम की झिलम पहिनकर और उद्धार की आशा का टोप पहिनकर सावधान रहें।" (1 थिस्सलुनीकियों 5:8)।

तंत्र–मंत्र (गूह्यविद्या) की जाँच सूची - अपने को मुक्त करो

यदि आप निम्न में से किसी में भी लगे हुए थे, तब आपको उन्हें त्यागना चाहिए:

- ☐ निराकार कला (मतिभ्रम प्रेरणा में)
- ☐ एक्यूपंचर चिकित्सा
- ☐ तावीज़ (चीते का पंजा, शार्क का दाँत, दरवाजे पर घोड़े की नाल, शुभंकर, सोने की बाली (पुरुष), जन्तर)
- ☐ अंख (एक क्रूस जिसके ऊपर एक छल्ला होता है जिसे शैतानी विधियों में इस्तेमाल किया जाता है)
- ☐ प्रेत - तांत्रिक
- ☐ नक्षत्रीय यात्रा
- ☐ फलित-ज्योतिष
- ☐ शकुनविचारना (शकुनों का अर्थ बताना)
- ☐ जन्म संकेत
- ☐ अभिचार, वशीकरण
- ☐ काला जादू (बुरे परिणामों के लिए गुप्त शक्तियों का इस्तेमाल)
- ☐ काला मास
- ☐ लहू में हस्ताक्षर
- ☐ पत्र-ज्योतिष
- ☐ चेन लेटर्स
- ☐ सम्मोहन (आत्मा की शक्ति को इस्तेमाल करने की कोशिश)
- ☐ चीनी फलक-ज्योतिष
- ☐ अतीन्द्रिय श्रवण (अधिसामान्य तरीके से आवाजों और ध्वनियों को सुनने की योग्यता - कहने को मरे हुए लोगों की आवाजें सलाह या चेतावनी देती हुई)
- ☐ अतीन्द्रिय संवेदन (अलौकिक इंद्रिय बोध)
- ☐ अतीन्द्रिय दृष्टि (चीजों या घटनाओं को उनके दृष्टि के सामान्य पहुँच के परे देखने की योग्यता - दूसरी दृष्टि)
- ☐ कलर चिकित्सा
- ☐ कनसेप्ट चिकित्सा
- ☐ मन्त्रोच्चार द्वारा एक आत्मा को बुलाना
- ☐ डायनों का एक समूदाय
- ☐ क्रिस्टल बाल देखना
- ☐ क्रिस्टल
- ☐ मृत्यु जादू (बीमारी का नाम और एक लिखा हुआ मंत्र ताबूत या कबर में डालना)
- ☐ शैतानी आराधना
- ☐ देहमुक्त आत्माएँ
- ☐ शकुनक दण्ड या टहनी या लोलक
- ☐ पानी, धातुओं, भूमिगत चारों के लिए सगुनाना, अनजन्मे बच्चे का लिंग पता लगाना, शकुनक दण्ड इस्तेमाल करके
- ☐ स्वपन का अर्थ
- ☐ डंजियन्स एंड ड्रैगन्स
- ☐ पूर्वी मेडिटेशन / धर्म - गुरू, मंत्र, योगा, मंदिर, आदि
- ☐ ज्योतिर्मय निर्गम (एक ओझा के शरीर से एक अज्ञात चीज)
- ☐ मोहक

- ई.एस.पी. (अतिरिक्त इंद्रिय बोध)
- फाइंडहॉर्न समूदाय
- फ्लोटिंग तुरहियाँ
- भाग्य बताना
- गोथिक रॉक संगीत
- गुरू
- जिप्सी श्राप
- मतिभ्रम नशीली दवाएँ (कोकेन, हेरोइन, मारिज्वाना, सरेस सूँघना, आदि)
- हस्ताक्षर विश्लेषण (भाग्य बताने के लिए)
- हार्ड रॉक संगीत - किस - एसी/डीसी, गन्स और रोज़िज़ (सब हेव्वी रॉक हैं)
- हैरी पॉटर पुस्तकें, फिल्में, कार्यशालाएँ, आदि
- अर्थ के लिए कलेजे की जाँच
- हेक्स संकेत
- जन्मपत्री
- पानी पर चित्र देखकर शकुनविचारना
- सम्मोहन
- मूरतें
- जादू-टोना
- आँख की जाँच
- जापानी फूल प्रबंध (सूर्य की उपासना)
- जोनातन लिविंगस्टोन सीगल (अवतार, हिन्दुधर्म)
- कब्बाला (ऑकल्ट लोर)
- कर्मा
- आकाशगामिता
- लक्की तावीज़ या राशि या जन्मपत्थर
- जादू (हाथ का कौशल नहीं परन्तु अलौकिक शक्तियों का इस्तेमाल)
- मंत्र
- सामरिक कलाएँ (औकिडो, जूडो, कराटे, कुंग फू, ते क्वाँ डो, आदि)
- मैथ्यू मैनिंग
- ओझा
- मानसिक सुझाव
- मानसिक टेलीपैथी
- मानसिक चिकित्सा
- मूर्च्छन (सम्मोहन)
- अलौकिक संसार का अध्ययन
- मन का नियंत्रण
- मन की गतिविधियाँ
- मन की ओझागिरी
- मन पढ़ना
- मून-मेंसी
- मोटरस्कोपुआ (बीमारियों का पता लगाने के लिए यंत्रिकी लोलक)

- रहस्यवाद
- भूतसिद्धी
- संख्या-प्रतीकवाद
- संख्या-सगुनौती
- तांत्रिक खेल
- सुरक्षा के तांत्रिक पत्र
- तांत्रिक साहित्य, उदाहरण, बड़ा संसार, 6टा - 7वाँ एडगर केसी, एलिस्टर क्रोली, जीन डिक्सन, लेवी डौलिंग, आर्थर फोर्ड, जोहानन ग्रेबर, एड्रू जैकसन डोविस, एंटन ली वे, रुथ मोंटगोमरी, जॉन न्यीबरो, एरिक वॉन डेनिकन, डेनिस वीटली, हैरी पॉटर के कूट-मसीही काम। ऐसी पुस्तकों को, चाहे कितनी भी कीमती हों, जला दिया जाना चाहिए।
- ओइजा बोर्ड
- अन्यजाति पूजा की वस्तुएँ
- अन्यजाति धार्मिक चीजें
- अन्यजाति विधियाँ (वूडू, सिंग सिंग्स, कोरोबोरीस, आग पर चलना, उम्बाडा, माकुम्बा)
- हस्तरेखाशास्त्र
- पीके (पाराकीनेसिस - मन और इच्छाशक्ति की शक्ति से चीजों को वश में करना)
- परा-मनोविज्ञान (पीएस) - विशेषकर शैतानी गतिविधियों का अध्ययन
- लोलक जाँच
- कपाल-विज्ञान (खोपड़ी द्वारा शकुनविचारना)
- प्लैंशेट (शकुनविचारना)
- पूर्वज्ञान (घटनाओं के घटने का पूर्वज्ञान)
- मानसिक चंगाई
- मानसिक देखना
- साइकोग्राफी (हृदय के रूप का बोर्ड का इस्तेमाल)
- साइकोमेट्री (पूछनेवाले की किसी चीज को लेकर भाग्य बताना)
- पन्क रॉक संगीत
- पिरामिडों के नमूनों से सम्बंधित रहस्यमय शक्तियाँ
- पुनर्जन्म
- अवतार
- दण्ड-सगुनौती (शकुन विचारने के लिए छड़ियों को हवा में उछालना)
- शैतानवाद
- बैठक
- आत्म-सम्मोहन
- महत्त्वपूर्ण अन्यजाति दिन
- सिलवा माइंड कंट्रोल
- जादूटोना
- मंत्र-तंत्र
- आत्मा का खटखटाना
- तारों के संकेत
- स्टिकोमेन्सी (पुस्तकों में इधर-उधर से भाग्य बताना)
- क्षतचिन्ह - गूह्य (घाव जिनमें से लहू बहे या न बहे)
- अंधविश्वास (अपने या माता-पिता या दादा-दादी के)

- मेज तिरछी होना
- तारोत कार्ड (भाग्य बताने के लिए 22 चित्र कार्ड)
- चाय-पत्ती पढ़ना
- विचार अन्तरण
- टीके (टेलीकिनेसिस - चीजों कमरे में इधर-उधर धूमती हैं, वाद्य बजते हैं, इंजिन शुरू होते हैं...)
- टीएम (अनुभवातील मेडिटेशन)
- भाव-समाधि
- प्रवास
- प्राण की यात्रा
- यूएफओ निर्धारण
- ऊरी गेल्लर
- श्वेत जादू - ('भले कामों' के लिए गुप्त शक्तियों को बुलाना)
- जादूटोना
- योगा - किसी भी स्तर पर (पूर्वी शैतानी उपासन शामिल करता है)
- राशिचक्र तावीज़, जन्मदिन
- राशि

"जादू करनेवालों में से बहुतों ने अपनी-अपनी पोथियाँ इकट्ठी करके सब के सामने जला दीं, और जब उनका दाम जोड़ा गया, तो पचास हज़ार चाँदी के सिक्कों के बराबर निकला। (प्रेरितों 19:19)
"उनके देवताओं की खुदी हुई मूर्तियाँ तुम आग में जला देना; जो चाँदी या सोना उन पर मढ़ा हो उनका लालच करके न ले लेना, नहीं तो तू उनके कारण फन्दे में फँसेगा; क्योंकि ऐसी वस्तुएँ तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में घृणित हैं। और कोई घृणित वस्तु अपने घर में न ले आना, नहीं तो तू भी उसके समान नष्ट हो जाने की वस्तु ठहरेगा; उसे सत्यानाश की वस्तु जानकर उससे घृणा करना और उसे कदापि न चाहना; क्योंकि वह अशुद्ध वस्तु है।" (व्यवस्था 7:25-26)
"परन्तु आत्मा स्पष्टता से कहता है कि आने-वाले समयों में कितने लोग भरमानेवाली आत्माओं, और दुष्टात्माओं की शिक्षाओं पर मन लगाकर विश्वास से बहक जाएँगे।" (1 तीमुथियुस 4:1)

क्या एक मसीही दुष्टात्माग्रस्त हो सकता है?

1. क्या एक विश्वासी दुष्टात्माग्रस्त हो सकता है

अ. दुष्टात्माएँ अविश्वासियों में रहतीं या प्रवेश करती हैं के बारे में कोई प्रश्न नहीं है। हमारी चिन्ता इस विषय से नहीं है।

आ. हमारा ध्यान इस प्रश्न पर केन्द्रित है: "क्या एक विश्वासी दुष्टात्माग्रस्त हो सकता है?" आओ हम कुछ एक "उदाहरण अध्ययन" देखकर वचनों को हमें जानकारी देने दें।

इ. <u>पुराने नियम के उदाहरण:</u>

1. **उदाहरण # 1: शाऊल** (1 **शमू.** 10)

   अ. शाऊल एक विश्वासी था (1 शमू. 10:9)। परमेश्वर ने शाऊल का हृदय बदल दिया। यह तर्क देना कि शाऊल एक विश्वासी नहीं था, यह तर्क देना होगा कि परमेश्वर का आत्मा एक अविश्वासी को अभिषेक करेगा (10:1) और कि परमेश्वर एक अविश्वासी को उसकी मीरास पर शासन करने के लिए अभिषेक करेगा।

   आ. इसके अलावा, वह आत्मा से भर गया था और भविष्यद्वाणी भी की (10:9-13)। यह निश्चित रूप से एक विश्वासी की विशेषताएँ हैं।

   इ. बाद में, पाप करने के बाद, उसे प्रभु की ओर से एक दुष्ट आत्मा सताया करती थी (16:14)। किस कारण से शाऊल को एक दुष्ट आत्मा लग गई थी कहीं भी बताया नहीं गया है। लेकिन, हो सकता है यह परमेश्वर के ओर उसका विद्रोह था, जिसे शमूएल ने शकुनविचारने के समान बताया है (15:23), के कारण पहुँच मिली होगी।

   ई. आप ध्यान दोगे कि दाऊद के शाऊल की सेवा में आने के बाद, जब कभी वह अपनी वीणा बजाया करता था, शाभल राहत पाता और दुष्ट आत्मा उसे छोड़ जाती थी (16:23)।
   <u>आओ हम दुष्टात्माग्रस्त की परिभाषा देखें:</u>
   दुष्टात्माग्रस्त का अर्थ है: "....एक हालत जिसमें एक या अधिक दुष्टात्माएँ एक मनुष्य के शरीर में चली जाती हैं और अपनी इच्छा से उस पर पूरी नियंत्रण ले लेती हैं। उसकी चेतना को कुछ समय के लिए बंद करके, वे उसके द्वारा उनके एक दास या साधन के रूप में बोल सकतीं या कार्य कर सकती हैं। निवास करनेवाली दुष्टात्मा (या दुष्टात्माएँ) एक घर के मालिक के समान आती और जाती हैं जो कभी "घर पर" होता है और कभी नहीं होता है।" वह एक आक्रमण पैदा करता है। इन आक्रमणों में, पीड़ित व्यक्ति सामान्य हालत से, जिसमें वे दूसरे लोगों के जैसे करता है, एक असामान्य हालत में चला जाता है....।"

   उ. हो सकता है यही शाऊल के साथ हो रहा था।

   ऊ. शाऊल के दुष्टात्माग्रस्त होने की कुछ विशेषताएँ थीं:

      1) क्रोध (18:8)
      2) हत्या (18:10-11)
      3) डर (18:12, 29)
      4) जादू-टोना (28:1-25)
      5) आत्महत्या (31:4)

2. पुराने नियम के उदाहरण

   अ. विश्वासी

      1) आदम और हव्वा (उत्पत्ति 3)
      2) अय्यूब - परिवार और स्वास्थ्य की हानि (अय्यूब 1-2)
      3) भविष्यद्वक्ता जो झूठे भविष्यद्वक्ता (1 राजाओं 22)

   आ. अविश्वासी: अबीमेलेक (न्यायियों 9:22-24)

3. वही परिणाम एक विश्वासी में भी देखे जा सकते हैं जो एक अविश्वासी में दिखते हैं यदि वह वाचा को लगातार तोड़ता रहता है। इस आदती क्रिया के साथ, विश्वासी अपने आपको दुष्टात्माग्रस्त होने के लिए खोलता है। परिणाम और भी खराब होते जाएँगे यदि पश्चात्प नहीं होता है।

ई. नए नियम के उदाहरण

1. **उदाहरण # 2: अब्राहम की एक बेटी** (लूका 13:10-17)
   अ. यह अनाम स्त्री भी एक विश्वासी थी (13:16)। उसे "अब्राहम की बेटी" कहा गया है। लूका 19:9 संकेत देता है कि एक "अब्राहम के बेटे" ने उद्धार पाया था, जिसे यीशु ने स्वयं घोषित किया था, जबकि पौलुस गलातियों 3:7 में स्पष्ट करता है कि जो विश्वास करते हैं वे "अब्राहम की सन्तान" हैं।
   आ. वह अठारह वर्षों से दुष्टात्माग्रस्त थी, उसे एक दुर्बल करनेवाली दुष्टात्मा लगी थी, और वह कुबड़ी हो गई थी (आ. 11), शैतान ने बाँध रखा था (आ. 16)।
   इ. यीशु ने आलोचना के होते हुए भी उसे छुटकारा दिया (आ. 13) और उसे मुक्त कर दिया (आ. 12, 16)।

2. **उदाहरण # 3: चेले** (लूका 22:31-32)
   अ. लूका हमें अध्याय 22 के शुरू में बताता है कि शैतान यहूदा में घुस गया, यहूदा जो एक विश्वासी था (बारहों में से एक)। फिर हमें "अन्तिम भोज" की कहानी बताई गई है।
   आ. यीशु पतरस को कहता है कि शैतान ने "माँगा है" कि तुम लोगों को "गेहूँ के समान पटके"।
   इ. "माँगा है" शब्दों का अर्थ है: "समर्पण करवाने का दावा करना"। विचार की पृष्ठभूमि अवश्य ही अय्यूब 1:6 है।
   ई. गेहूँ के समान फटकने का विचार "अच्छे" गेहूँ को "खराब" दानों, पत्थरों, आदि से अलग करना है। शैतान पतरस और चेलों को फटकना चाहता था जिससे वह उनके निर्बल क्षेत्रों का पता लगा सके, उनके "समर्पण के बिन्दुओं" को। फटकने का उद्देश्य पहुँच द्वार का पता लगाना था। ये पहुँच द्वार मार्ग हैं। पतरस के लिए, पहुँच द्वार उसका "घमण्ड" हो सकता था (आ. 33) और उसका इन्कार करना उसके दुष्टात्माग्रस्त होने का परिणाम हो सकता था। (आ. 54-62)

3. **उदाहरण # 4: पतरस** (मत्ती 16:13-23)
   अ. मसीह के बारे में अंगीकार जिसे पतरस ने बोला था परमेश्वर ने उस पर प्रकट किया था (आ. 16-17)। मेरा विश्वास है यह ज्ञान का वचन था।
   आ. कुछ आयतों के बाद ही, मसीह पर यरूशलेम में घटने वाली घटनाओं के बारे में जानने के बाद, पतरस एक दूसरे स्रोत से बोलता है। (आ. 22-23)
   इ. मरकुस के विवरण में, हमें बताया गया है कि यीशु ने पतरस को "डाँटा" (मरकुस 8:33)। यह वही शब्द है जिसे यीशु ने दूसरी जगहों पर दुष्टात्माओं को चुप कराने के लिए इस्तेमाल किया था। यीशु ने पतरस के शब्दों का स्रोत देखा और उसके विरुद्ध बोला। क्षण भर में, बिना चेतावनी के, पतरस में शैतान घुस आया था और शैतानी बुद्धि की बातें बोली थीं (याकूब 3:15)।

4. **उदाहरण # 5: हनन्याह और सफीरा** (प्रेरितों 5:1-11)
   अ. हनन्याह और सफीरा "विश्वासियों" के समूह का भाग थे जिसका 4:32-35 में जिक्र है।
   आ. उनकी कहानी बरनबास की कहानी का उलटा है (4:36-37) और जबकि यह यहोशू में आकान की कहानी के जैसी है। दोनों मामलों में, छल का एक कार्य दिखाया गया था जिससे लगे कि यह परमेश्वर के लोगों की जयवन्त प्रगति है।
   इ. पवित्रशास्त्र हमें बताता है कि हनन्याह ने शैतान को उसके हृदय में यह बात "डालने" दी थी। यही शब्द इफिसियों 5:18 में पवित्र आत्मा से "परिपूर्ण" होने के लिए इस्तेमाल किया गया है, वहाँ अर्थ है "वश में होना"। यहाँ भी इसका यही अर्थ हो सकता है: शैतान ने एक विश्वासी, हनन्याह को वश में करके, उससे परमेश्वर से झूठ बुलवाया।

ई. पौलुस कलीसिया को सूचित करता है कि वे परमेश्वर का मंदिर हैं (1 कुरिं. 3:16), और कि जो इसे (कलीसिया को) नष्ट करेंगे, स्वयं नष्ट किए जाएँगे।

5. **उदाहरण # 6: शैतान को सौंप दो** (1 कुरिं. 5:1-5)
   अ. इन वचनों में दुष्टात्माग्रस्त होने की प्रक्रिया कौटुम्बिक व्यभिचार में लगे रहने के कारण थी।
   आ. पाँचवे वचन का जो भी अर्थ हो, प्रकट होता है कि छुटकारा पाने की इच्छा न होने के कारण दुष्टात्माग्रस्त की स्थिति शैतान के क्षेत्र में ले जाती है।

उ. सारांश

1. शैतान प्राण के क्षेत्र में विश्वासियों को दुष्टात्माग्रस्त कर सकता है और करता है, क्योंकि आत्मा तो परमेश्वर से दोबारा जन्मी हुई है। पतरस जैसा उसके साथ हुआ, उसके द्वारा इस घारणा की पुष्टि करता है। जब वह मसीही विश्वासियों को लिखता है (1 पतरस 5:8), वह उन्हें बताता है कि "तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह के समान इस खोज में रहता है कि किस को फाड़ खाए।"
2. शब्द "फाड़ खाए" का अर्थ है: निगल जाना। सिंह को बताया गया है कि वह भूखा है और किसी को निकलने के लिए खोज में है।
3. याद रहे, पतरस मसीहियों को लिख रहा है। उसके शब्द निम्न में से एक या दोनों के लिए हैं:
   अ. कुछ मसीही पहले ही निगले जा चुके हैं।
   आ. दूसरे उनके शत्रु द्वारा निगले जाने के लिए तैयार हैं और पतरस उनको इसकी चेतावनी दे रहा है।

2. एक विश्वासी दुष्टात्माग्रस्त कैसे होता है?

अ. दुष्टात्माग्रस्त होने की प्रक्रिया:

1. सम्पर्क का क्षेत्र हमारी इंद्रियाँ हैं। हम सब में इस क्षेत्र में कमजोरियाँ हैं और दुष्टात्माएँ हमें समझती हैं (प्रेरितों 19:13-16)।
   अ. आँख - साहित्य, शरीर की जानकारी
   आ. कान - संगीत, ध्वनियाँ
   इ. मुँह - नशीले पदार्थ, भोजन
   ई. नाक - इत्र, लोबान
   उ. स्पर्श - इसी स्थान पर व्यक्ति सम्पर्क को तोड़ सकता है और युद्ध जीता जा सकता है।

2. प्रवेश द्वार वे स्थान हैं जहाँ हम सम्पर्क बनाए रखते हैं:
   अ. क्रोध - शैतान के एक सम्भव पैर रखने के स्थान के रूप में जिक्र किया गया है, इफि. 4:26-27 में
   आ. क्षमा न करने के रवैये
   इ. कामुकता
   ई. कामविकृति
   उ. अश्लील साहित्य
   ऊ. ईर्ष्या
   ए. घृणा
   ऐ. शरीर के सारे काम (गलातियों 5:19-21)

3. कुछ विशिष्ठ सलाहकार निम्नलिखित को बताते हैं:
   अ. समकालीन विश्वासियों के समूहों में एक प्रमुख प्रश्न यह है कि क्या बाँधना या दुष्टात्मा निकालना कामुकता, लालच, और क्रोध के कारण आने वाली परीक्षाओं पर भी लागू किया जाना चाहिए कि नहीं।

बाइबल का प्रमाण एक नकारात्मक उत्तर देता है। उदाहरण के लिए, लूका 7 की स्त्री में से कामुकता की कोई दुष्टात्मा नहीं निकाली गई थी; या 1 कुरिन्थियों 5 के व्यभिचारी व्यक्ति में से। जक्कई में से कंजूसी की कोई दुष्टात्मा नहीं निकाली गई थी; पतरस का मसीह का तीन बार इन्कार के बाद कोई भी अविश्वासी की दुष्टात्मा नहीं निकाली गई थी। कुरिन्थुस के विश्वासियों या यूओदिया और सुन्तुखे (फिलि. 4) में से झगड़े की कोई दुष्टात्मा नहीं निकाली गई थी। इन में से हर उदाहरण में और अधिकाँश असंख्य उदाहरणों में जहाँ विश्वासी पापी व्यवहार में लगे हुए थे, केन्द्र व्यक्ति पर है कि वह उसके जीवन में पवित्र आत्मा के कार्यों के लिए समर्पित होकर परमेश्वर की सहायता से अपने आपको बदले, और न कि किसी बाहरी कर्त्ता को निकालने पर है। उन उदाहरणों में भी जहाँ परीक्षा का कुछ कारण दुष्ट शक्तियाँ भी थीं, मसीहियों को परीक्षा करनेवाले का सामना करने को कहा गया है, न कि उसे उनमें से निकालने पर।

आ. वे इनका सार इन तीन बिन्दुओं से निकालते हैं:

1) यह व्यक्ति के अपने पापीपन को पहचानने और मान लेने की जिम्मेवारी को दूर करता है। 1 कुरिन्थियों 13 स्पष्ट बताता है कि परमेश्वर विश्वासियों को उनकी शक्ति के बाहर परीक्षा में पड़ने नहीं देगा, जिसका अर्थ है कि जब हम पाप करेंगे भी, हम उसके लिए जिम्मेवार हैं। ये शब्द: "शैतान ने मुझ से यह करवाया" एक स्वीकार्य शिक्षा का रवैया नहीं है, बल्कि एक शैतानी प्रकार का जिम्मेवारी से दूर भागना है जिससे कि हमारे भीतर व्यक्तिगत पाप का सामना होने से बचा जाए।
2) अपने आपको एक युद्धक्षेत्र के रूप में देखना जिस पर, बिना अपने सांकल्पिक नियंत्रण के, भले और बुरे की शक्तियाँ बारी-बारी से आक्रमण करती है, हम में से सामर्थ्य को चुरा लेता है - हम अपने जीवन में आवश्यक परिवर्तन लाने में असफल रहेंगे क्योंकि हम विश्वास करते हैं कि ऐसे परिवर्तन हमारे नियंत्रण के बाहर हैं।
3) दुष्टात्माओं के भेस में अपनी उत्तेजनाओं को दबाने के द्वारा, न कि उनको पहचानने, मान लेने और उन में से काम करने के द्वारा, हम एक अस्वस्थ व्यक्तित्व का ढाँचा बनाते हैं। हमारे अपने काफी सारे भाग घुल-मिल जाने के बदले अलग रहते हैं।

4. एक दुष्टात्मा (या दुष्टात्माओं) को व्यक्ति के अन्दर तब ही पकड़ मिलती है जब उसे लगातार "हरी बत्ती मिलती रहती" है। यह हालाँकि असली है, फिर भी यह पकड़ अकसर एक छल है जिसमें दुष्टात्माग्रस्त व्यक्ति विश्वास करता है कि वह कभी भी बदल नहीं सकता है। वह अकसर आक्रमण की कुछ स्थितियों को आने देता, उनके बारे में बातें करता और पसन्द भी करता है।

आ. हम दुष्टात्माग्रस्त होने से कैसे बच सकते हैं ?

1. हमारा कार्य:
   अ. अपना मन नया करो (भजन 1:1-3; 119:9, 11, 97, 110; इफिसियों 6:13-18; रोमियों 8:37-39, 12:1-2)
   आ. अपने शत्रु का सामना करो (2 कुरिं. 10:2-6; याकूब 4:7; 1 पतरस 5:8)
   इ. गूह्य कामों से दूर रहने का निश्चय करो (व्यवस्था 7:25-26; 18:10-12)

2. हमारे बचाव:
   अ. वचन का ज्ञान।
      1) यीशु की परीक्षा (लूका 4)
      2) इफिसियों 4:14

   आ. शुद्धता (1 कुरिं. 9:27)
   इ. सामर्थ्य और अधिकार (मत्ती 28:19-20; इफिसियों 6:11-18)

इ. विश्वासियों को दुष्टात्माग्रस्त करने की शत्रु की नीतियाँ

1. वह परमेश्वर के वचन को अमान्य ठहराने की कोशिश करता है।
    - क. उत्पत्ति 3:1 "... क्या सच है कि परमेश्वर ने कहा..."
    - ख. क्या मैं चंगा हो सकता, क्षमा पा सकता, ठीक हो सकता, आदि हूँ ?
2. वह परमेश्वर के उद्देश्यों से हमारा ध्यान हटाता है।
    - क. दाऊद की जनगणना (1 इतिहास 21:1)
    - ख. हम दूसरी श्रेणी की चीजों पर ध्यान लगाएँ कोशिश करता है।
3. वह परमेश्वर के सामने हम पर दोष लगाता है।
    - क. परमेश्वर, अय्यूब को तेरी कोई परवाह नहीं है। (अय्यूब 1:11, 2:5)
    - ख. महा याजक की दाहिनी ओर खड़ा शैतान (जकर्याह 3:1)।
4. परीक्षा के तीन क्षेत्र (मत्ती 4:1-11)
    - क. सांसारिक मनुष्य (4:2-4) - (भूख)
    - ख. स्वाभाविक मनुष्य (4:8-10) - (अधिकार)
    - ग. आत्मिक मनुष्य (4:5-7) - (ढिठाई)
5. वह हमारी प्राथमिकताओं को विकृत करता है (मत्ती 16:21-23) - उसकी मृत्यु के बारे में उसकी भविष्यद्वाणी का सामना करने के लिए प्रभु पतरस को डाँटता है।)
6. वह हम से वचन को चुराकर हमारे प्रभाव को कम करता है। (मरकुस 4:15 - बीज, बोनेवाले, भूमि का दृष्टान्त)
7. वह शारीरिक बन्धन लाता है (लूका 13:10-13) - एक आत्मा ने अठारह वर्षों तक कुबड़ी कर रखा)
8. वह हमें हम से ही धोखे में डालता है (प्रेरितों 5-3-4 - हनन्याह और सफीरा)।
9. वह हमारे हृदयों में अ-क्षमा से लाभ उठाता है (2 कुरिं. 2:10-11)।
10. वह संकट, तकलीफ लाता है (2 कुरिं. 12:7 - शैतान का दूत - पौलुस का काँटा)।
11. वह परमेश्वर के सेवकों की यात्रा में विघ्न डालता है (1 थिस्स. 2:18 - पौलुस)।
12. वह झूठ और छल का सार है (2 थिस्स. 2:9-10 - नकली; 1 तीमु. 4:1)।
    - अ. वह दूसरों के बारे में हम से झूठ बोलता और हमारे बारे में दूसरों से झूठ बोलता है।
    - आ. वह मसीह में हमारे स्थान के बारे में झूठ बोलता है।
    - इ. वह अपने बारे में झूठ बोलता है।
    - ई. वह परमेश्वर के बारे में झूठ बोलता है (झूठे चित्र)।

ई. नहेम्याहः आत्मिक युद्ध की एक प्रकार (नहेम्याह 4:1 - 6:16)

(मैं नहेम्याह की पुस्तक की ऐतिहासिकता को समझता और स्वीकार करता हूँ। इसमें इसके अलावा और भी संदेश है जिसका हम यहाँ सुझाव दे रहे हैं। लेकिन, मैं नहेम्याह और उसके शत्रुओं के बीच झड़प में एक नमूना देखता हूँ जो शत्रु के साथ हमारी अपनी लड़ाई है।)

1. शत्रु का आक्रमण
    - अ. वह अपना ध्यान काम करनेवालों की कमजोरियों पर लगाता है (नहेम्याह 4:2)।
    - आ. वह अपना ध्यान काम की कमजोरी पर लगाता है (नहे. 4:3)।
    - इ. वह उनकी प्रगति से क्रोधित होता है (नहे 4:7)।
    - ई. वह गड़बड़ फैलाने का षड्यंत्र रचता है (नहे 4:8)। (हम शत्रु के चोंच मारने के क्रम में ऊपर बढ़ रहे हैं।)
    - उ. वह एक डर का वातावरण पैदा करने की कोशिश करता है। (नहे 4:12, 14)
        1. धमकियाँ देकर
        2. सुझाव देकर कि उसे हम पर जितनी असल में उसे है उससे अधिक शक्ति मिली है

ऊ. वह परमेश्वर के लोगों को सुरक्षा की एक झूठी भावना में बहका के लाने की कोशिश करता है। (नहे 6:1-2)

ए. वह ध्यान भटकाने की कोशिश करता है। (नहे 6:3) (नहेम्याह के उत्तर पर ध्यान दो: "...वह काम क्यों बंद हो...")

ऐ. वह हम पर झूठा दोष लगाता है (अगुवों, काम करनेवालों, और का, नहे 6:4-8))।

ओ. वह निराशा लाने की कोशिश करता है (नहे 6:9)।

औ. वह संदेह पैदा करने के लिए उन्हें इस्तेमाल करता है जो हमारे निकट हैं (नहे 6:10)।

अं. शत्रु विश्वास खो देता है जब परमेश्वर के लोग दृढ़ रहते हैं (नहे 6:15-16)।

2. नहेम्याह का उत्तर

अ. वह युद्ध प्रभु के पास ले जाता है (नहे 4:4-5)।

आ. दृढ़ता, एकानिष्ठा (नहे 4:6)।

इ. प्रार्थना (नहे 4:9)।

ई. उसने लोगों को दिशा दी (नहे 4:13)।

उ. उसने लोगों को प्रोत्साहन दिया (नहे 4:14)।

ऊ. उसने काम को बाँट दिया (नहे 4:15-18)।

1. आधों ने काम किया।
2. आधों ने शत्रु पर निगाह रखी।

ए. उसने लोगों को इकट्ठा किया (नहे 4:19-20)।

ऐ. उसने लोगों का ध्यान प्रभु की ओर लाया (नहे 4:20)।

ओ. उसने उनको दिखाया वे निरन्तर युद्ध में हैं (नहे 5:9)।

औ. उसने लोगों में बुद्धि इस्तेमाल की (नहे 5:1-19)।

अं. उसने ध्यान भटकने से इन्कार किया (नहे 6:3)।

अः. उसने शत्रु की चालाकी का पता लगाया (नहे 6:8,12)।

क. वह युद्ध को लगातार प्रभु की ओर करता रहा (नहे 6:14)।

ख. उसने डरने से इन्कार किया (नहे 6:11)।

ग. वह अन्त तक दृढ़ रहा (नहे 6:15)।

3. मैं एक विश्वासी के रूप में कैसे छुटकारा बनाए रख सकता हूँ? (भजन 91)

अ. हमें समस्या का पता लगा है। अब आओ हम समाधान को देखें जो पवित्रशास्त्र हमें भजन 91 में देता है।

आ. इस भजन का विषय आत्मिक युद्ध है। एक विद्वान् ने टिप्पणी की कि भजन 91 "दुष्टात्माओं के आक्रमण को व्यर्थ करने के लिए, इस्तेमाल किए गए साधनों के विरुद्ध भक्ति के रूप में विवाद" है।

इ. दो बातें हैं जो इस निष्कर्ष को दिखाते हैं:

1. भजन 91 में संघर्ष गूँजन है: ठिकाना (आ. 1); शरणस्थान और गढ़ (आ. 2); ढाल और झिलम (आ. 4); भय और तीर (आ. 5); महारोग (आ. 6); हज़ारों गिरते हैं (आ. 7); शरणस्थान (आ. 9); रक्षा के लिए दूत (आ. 11); छुड़ाना (आ. 14)। आपको लगेगा कि आप युद्ध क्षेत्र में हैं।
2. शत्रु एक आत्मिक शत्रु लगता है जिसके पास विश्वासी को गिराने के लिए अलौकिक शक्ति है: जाल (आ. 3); लगातार युद्ध (आ. 5); न विपत्ति न दुख (आ. 11); और कुंजी - दूतों की सहायता (आ. 11)।

ई. अब हमें भजन 91 के मूल-पाठ को देखने की जरूरत है।

उ. बुराई: मध्य में सुरक्षा।

1. जिस नींव पर सारा भजन बना हुआ है पहली आयत में है। शत्रु से बचने के लिए, विश्वासी को परमप्रधान के छाए हुए स्थान में "बैठे रहना" है। बैठे रहने का यहाँ अर्थ है: "स्थाई निवास बनाना; अपनी जड़ें गहराई में डालना।"
2. आ. 1 में "ठिकाना" का अर्थ है: "ठहरना" या "रात बिताना।"
   इस प्रकार, जो प्रमप्रधान में "बैठता" है, बिना किसी हानि के खतरे की रातें बिता सकता है। आयत हमें बताती है कि निवासी ईश्वरीय सुरक्षा पाते हैं। सारे भजन की कुंजी आयत एक है। <u>यह "निवासियों" को सम्भोदित किया गया है।</u>
3. ध्यान दो कि आयतें एक और दो हमें परमेश्वर कौन है के बारे में बताती हैं। वह परमप्रधान, सर्वशक्तिमान, प्रभु, शरण, और गढ़ है। परमेश्वर के इनमें से कोई भी विवरण कोई लाभ का नहीं यदि व्यक्ति परमेश्वर में निवास नहीं करता।
4. अब भजनकार हमारा ध्यान परमेश्वर क्या करता है पर लाता है।
   - अ. वह हमें "बहेलिए के जाल" से बचाता है। एक "जाल" पक्षी के लिए फँदा होता है। इसमें छीन कर ले जाने का विचार है। जिस तरीके से एक पक्षी फँसाया जाता है जरूरी नहीं वही तरीका है जिससे दूसरा पक्षी भी फँसाया जाए। शैतान जानता है हमारा जाल कैसे इस्तेमाल करे। उसने हमारे जैसों को सदियों से देखा है। "निवासी" को प्रतिज्ञा है कि परमेश्वर उसे शत्रु के जाल से बचाएगा।
   - आ. दूसरी चीज जिसे परमेश्वर करता है वह भी एक चित्र शब्द में प्रस्तुत की गई है। हमें बताया गया है कि परमेश्वर हमें उसके "पंखों" से ढँक लेगा, और उसके "परों" के नीचे निवासी शरण पाएगा। एक उकाब का चित्र है जो उसके बच्चों को ढाँपे हुए, उनकी रक्षा कर रहा है। इस काव्य समान्तर का दूसरा पद भी वही चीज बता रहा है, अर्थात् ईश्वरीय सुरक्षा।

ऊ. बुराई: की ओर रवैये

1. शैतान का एक प्रमुख छल डर है। वह चाहता है हम डर में विश्वास करें। परन्तु, एक विश्वासी के लिए जो एक निवासी है, भजनकार बताता है "तू न डरेगा...।"
   - अ. "रात का भय": सम्भव है कि यह रात की दुष्टात्मा, लीलीत (यशा 4:14, रात्री की भयानक डायन) की ओर संकेत है।
   - आ. "तीर जो दिन को उड़ता है"। यह उन शक्तियों के बारे में बात हो सकती है जो बीमारी लाती हैं जैसे कि धूप आघात। दोपहर और आधीरात दोनों को दिन का सबसे खतरनाक समय माना जाता था जब विनाशक प्रभाव और शक्तियाँ काम कर रही होती हैं।
   - इ. "मरी जो अंधेरे में फैलती है"। यह दुष्टात्मा के लिए एक और चित्र शब्द है। यह शायह बेबिलोन के जन्तु-दुष्टामा की बात कर रहा है।
   - ई. "महारोग जो दिन-दुपहरी में उजाड़ता है": "महामारियाँ" का अर्थ बहुत संभव है जन्तुओं की महामारी है और वही बात कहती है जो ऊपर "इ" में कही है।
2. प्रतिज्ञा यह है कि डर के बदले, हम विश्वास रख सकते हैं कि हमारे आत्मिक शत्रु गिरेंगे। हमारे विरोधियों की संख्या के बावजूद, "निवासी" छुटकारा पाएगा (आ. 7)। आयत 8 बताती है कि यह निश्चित रूप से होगा।

ए. बुराई: के विरुद्ध सहायता

1. आयत 9 में एक शर्त है, "तू ने जो परमप्रधान को अपना धाम मान लिया है" "इसलिए..." (आ. 10), हमारी रक्षा करने के लिए स्वर्गदूत होंगे (आ. 11)। आयत 12 बताती है कि हमें विशेष मामलों के लिए विशेष सुरक्षा मिली हुई है। व्यंगपूर्ण रूप से, इसी वचन को शैतान ने यीशु पर इस्तेमाल किया था जब उसने जंगल में उसकी परीक्षा की थी (मत्ती 4:6)।
2. निवासी के रूप में हमें अपने शत्रु से निपटने के लिए विश्वास चाहिए (आ. 13)।

ऐ. बुराई: हमारा छुटकारा

1. क्योंकि निवासी स्नेह रखता है (आ. 14), परमेश्वर कहता है: वह उसे छुड़ाएगा और उसकी रक्षा करेगा।

2. जब निवासी परमेश्वर को पुकारता है, वह उसे उत्तर देगा; संकट में उसके साथ रहेगा; उसको बचाकर उसकी महिमा करूँगा।
3. अन्त में, परमेश्वर उसे लम्बा जीवन देगा और तृप्त करेगा (अक्षरशः गट-गट करके पीएगा) और उसका उद्धार, अर्थात् छुटकारा दिखाएगा (अक्षरशः उसे अनुभव करने देगा)।

ओ. हमारा छुटकारा हमाने निवास करने पर निर्भर है। मेरा प्रोत्साहन निरन्तर "परमप्रधान के छाए हुए स्थान में बैठे" रहने में है।

छुटकारा कार्यशाला नोट्सः (आत्मिक युद्ध, शाप, छुटकारा)

होशे 4:6 कहता है, "मेरे ज्ञान के न होने से मेरी प्रजा नष्ट हो गई।"
हमें शैतान / दुष्ट आत्माओं और अन्धकार की शक्तियों के काम के बारे में जानकारी होनी चाहिए।
कलीसिया ने सामर्थ्य के साथ जाने और शत्रु पर जय पाने के बदले काफी समय से एक निष्क्रिय भूमिका बना रखी है। हमें जानने की आवश्यकता है कि उन शक्तियों के विरुद्ध युद्ध कैसे करें जो हमारे देशों, शहरों, कस्बों, गाँवों, परिवारों, और कलीसियाओं को नष्ट कर रही हैं। शत्रु के प्रभावों को देखने के लिए हमें केवल अपने चारों ओर नज़र डालनी है। लोग झूठे धर्मों में फँसे हुए हैं / सारे देश गरीबी के शाप में हैं / अनैतिकता और उलझन / गूह्य क्रियाएँ बढ़ रही हैं / गर्भपात और यौन अनैतिकता बढ़ रही हैं / नशीले पदार्थ और शराब / विवाह और परिवार अस्थिरता और टूटना आदि बढ़ रहा है।
प्रकट है कि शत्रु लोगों को नष्ट करने में वचनबद्ध है और मसीही इस आक्रमण के प्रमुख लक्ष्य हैं।
परन्तु यीशु शत्रु के कामों को नष्ट करने आया था। (1 यूहन्ना 3:8)
इसे प्रभावशाली तरीके से करने के लिए हम शत्रु की युक्तियों से अनजान नहीं रह सकते।

हमें जानना है: शत्रु कौन है - वह कैसे काम करता है - यीशु मसीह की कलीसिया के रूप में हमारा काम क्या है - जो क्षेत्र शैतान और उसे दुष्ट दूतों ने हम से ले लिया है उसे कैसे वापस लेना है।

हम इस अध्ययन में शैतान और उसके दुष्ट दूतों से निपटने के 3 पहलू संक्षेप में देखेंगे। इन में से हर एक के लिए एक पूरी श्रृंखला लगेगी लेकिन यहाँ हम कुछ मूल बातें देख लेंगे।

1. **आत्मिक युद्ध**

2. **पैतृक शाप**

3. **असली छुटकारे की सेवकाई** या दुष्टात्माओं को निकालना जो एक व्यक्ति में घुस आई हैं और उन्हें बन्धन में रखा और सता रही हैं।

आत्मिक युद्ध

परमेश्वर ने एक सिद्ध सृष्टि की रचना की लेकिन किसी समय लूसीफर (एक रचा गया महादूत) ने परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह किया और, उन स्वर्गदूतों के साथ जिन्होंने उसके साथ विद्रोह किया, स्वर्ग से निकाल दिया गया था। यह विद्रोह घमण्ड के कारण था (यशा. 14:12-15)। उन्हें नरक में नहीं फेंका गया था लेकिन उन्हें पृथ्वी पर और पृथ्वी के चारों ओर के वातावरण में गिरा दिया गया था। यहीं पर से शैतान और उसके सहयोगी प्रभावित करते और उनका गंदा काम करते हैं।
पढ़ो: इफिसियों 6:10-12। उस विवरण में हमें बताया गया है कि हमारा यह मलयुद्ध लहू और मांस से नहीं, परन्तु प्रधानों से, और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं।
इस पवित्रशास्त्र में हमें युद्ध करने को कहा गया है (सब कुछ जो हमारे मार्ग में आता है उसे यह सोचकर स्वीकार नहीं करना कि यह परमेश्वर से है या हमारा भाग्य है) परन्तु हमें लोगों से नहीं / अपने पतियों से नहीं, अपनी पत्नियों से नहीं / कलीसिया के एल्डरों से नहीं युद्ध करना है, परन्तु अन्धकार की शक्तियों से युद्ध करना है जो तबाही लाने की कोशिश कर रही हैं।
शैतानी शक्तियों के अलग-अलग पद होते हैं। जैसे सेना में है। (दानिय्येल 19:13 और 20 पढ़ो)। ये बलवान पुरुष विभिन्न क्षेत्रों पर नियुक्त किए गए होते हैं, जैसे कि: देश, कस्बे, शहर, गाँव, कलीसियाएँ, परिवार, सेवकाइयाँ, और व्यक्ति।
पढ़ो: मत्ती 12:29, "या कैसे कोई मनुष्य किसी बलवन्त के घर में घुसकर उसका माल लूट सकता है जब तक कि पहले वह उस बलवन्त को न बांध ले? तब वह उसका घर लूट लेगा।" जब पवित्रशास्त्र बलवन्त को बांधने की बात करता है - हमारा विश्वास है वह प्रार्थना करने की और प्रभु को दिखाने की माँग कर रहा है कि क्या प्रधानताएँ, अधिकार या शासक कस्बों, देशों, व्यक्तियों

आदि पर हैं - ताकि तब हम उस शक्ति को बाँधें - और तब जाएँ और, बिना परेशानी - इन बलवन्त पुरुषों की रुकावट के बिना - सेवा करें: उद्धार, चंगाई, छुटकारा या जिसकी भी सेवा करने की आवश्यकता है।
उस आत्मिक युद्ध को किए बिना हमारी सेवकाई सीमित रहेगी और प्रभावशाली न होगी।
हमें ठीक-ठीक सिखाया गया है कि हम जाएँ और सुसमाचार सुनाएँ / लोगों को उद्धार में लाएँ / स्तुति और आराधना करें / चंगाई और चमत्कारों के लिए प्रार्थना करें / लेकिन बहुत सारे लोगों को पहले "गढ़ों को ढा देने" (2 कुरिं. 10:4) या शैतान का सामना करने का या प्रधानों, अधिकारियों, शासकों या अन्धकारों के साथ मलयुद्ध करने का पता नहीं है।
<u>शैतान ने बहुत प्रगति की है। क्यों ? क्योंकि मसीही उस सामर्थ्य और अधिकार को लेकर उठे नहीं हैं जिसे यीशु ने उन्हें दिया है और जिसके फलस्वरूप लोग, जगहें, देश अभी भी बन्धन में हैं।</u> यह सच नहीं कि शैतान में कोई शक्ति नहीं। उसमें बहुत शक्ति है। अपने चारों ओर देखो। लेकिन यीशु ने हमें उस पर और उसके दुष्ट दूतों पर अधिकार दिया है। परन्तु यह अपने आप नहीं होता। हमें उस अधिकार को इस्तेमाल करना और शत्रु के काम को निहत्था करना है। हालाँकि शैतान क्रूस पर हराया गया था - हमें जाना और देश को अधिकार में लेना है।

<u>पैतृक शाप</u>

यह क्या है ? असल में यह कैसी आवाज है। शाप जो एक पीढ़ी से दूसरे में आए हैं और उनको तोड़ा नहीं गया है।

अ. पाप के परिणाम के रूप में एक व्यक्ति या व्यक्तियों से आए होंगे - या किसी ने एक शाप एक परिवार पर डाला होगा।

आ. एक विशेष जाति का भाग होने के कारण एक परिवार का वंश एक शाप में होगा और उस वंश से सम्बंधित पाप और शाप।

उदाहरण: जब हम अमरीकी आदिवासियों के लिए प्रार्थना करते हैं तब हम अपने आप गरीबी और शराब के शापों को तोड़ते हैं क्योंकि ये शाप आधिवासियों में इतने भारी जो हैं।
इस प्रकार परिवारिक शापों का पता लगाने और तोड़ने से हम ने व्यक्तियों और परिवारों में बहुत बड़े परिणाम और स्वतंत्रता देखी है। व्यक्तिगत छुटकारे के पहले पैतृक शापों को तोड़ा गया है। बहुत बार दुष्टात्माएं अपने को प्रकट करेंगी और छुटकारा होगा।
पढ़ो: गिनती 14:18 - "यहोवा कोप करने में धीरजवन्त और अति करुणामय है, और अधर्म और अपराध का क्षमा करनेवाला है, परन्तु वह दोषी को किसी प्रकार से निर्दोष न ठहराएगा, और पूर्वजों के अधर्म का दण्ड उनके बेटों, और पोतों, और परपोतों को देता है।"

<u>शाप क्या है?</u>

यह दुख-तकलीफ / महामारी / पीड़ा / बीमारी / हाय है। बाइबल में एक शाप के परिणाम शारीरिक बीमारी, मानसिक समस्याएँ, गरीबी, परिवारों का टूटना / परमेश्वर की कृपा नहीं / असफलता / दमन / परेशानी और निराशा है।
स्वाभाविक में भी आप शापों के परिणाम देख सकते हो। -- निरन्तर आर्थिक कठिनाई / निरन्तर स्वास्थ्य समस्याएँ / अज्ञात बीमारी / परिवार में तलाक / जल्दी मृत्यु / दुर्घटनाएं होना / हिंसक मृत्यु / मानसिक समस्याएँ / परिवार में आत्महत्या / आदि।

<u>शाप के उदाहरण:</u>
हम ने एक स्त्री के लिए प्रार्थना की जिसकी टाँगें बचपन से मुड़ी हुई थीं। उसकी चंगाई के लिए अनेक बार प्रार्थना की गई थी परन्तु कोई फायद नहीं हुआ था। जब हम ने प्रार्थना की हम ने उसके परिवार में एक "निर्बलता के शाप" का पता लगाया। जब हम ने इसे तोड़ा, उसकी टाँगें जोर-जोर से हिलने लगीं। शाप तोड़ने के कुछ मिनटों के अन्दर उसकी टाँगें बिलकुल ठीक हो गईं। यह वर्षों पहले हुआ था और वह आज भी सौ प्रतिशत चंगी है।
हम ने इसे सेवकाई में असंख्य बार देखा है। बहुत सारे लोगों के चंगा न होने या उनके जीवनों में कुछ चीजों के न बदलने का कारण यह है कि शापों का पता नहीं लगाया गया और न तोड़ा गया है।
यह कहने का अर्थ यह नहीं कि हर समस्या जिसका हम सामना करते हैं एक शाप के कारण से है। परन्तु यह एक क्षेत्र है जिसके बारे में हम ने पाया है कि सिखाया जाना और इस्तेमाल किया जाना चाहिए, यदि हम, हमारे परिवार वाले, कलीसिया के सदस्य, और दूसरे जिनकी हम सेवा करते हैं उनको पूरी स्वतंत्रता में - अधूरी स्वतंत्रता में नहीं - लाना है।
यीशु की योजना लोगों के लिए केवल उद्धार में ही नहीं – बल्कि सम्पूर्णता में लाना है।

उद्धार के बाद, लोगों के जीवनों में बहुत प्रार्थना, शापों को तोड़ना, छुटकारा, बाइबल की बुनियादें बनाने की आवश्यकता होती है। यदि यह नहीं किया जाता है तब - लोग मसीही बनेंगे - लेकिन आपकी कलीसिया घायल लोगों से भरी हुई होगी। और घायल लोग दूसरे लोगों को घायल करते हैं। और न ही वे फलवन्त होंगे।

पढ़ें: कुलुस्सियों 1:28-29। हमारा उद्देश्य लोगों को केवल प्रभु में लाना ही नहीं है, परन्तु हर पुरुष, स्त्री को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करना है।

पढ़ोः व्यवस्थाविवरण अध्याय 27 - 28 आशीषों और शापों के बारे में। लैव्यव्यवस्था में भी पढ़ो। उस पुस्तक में शापों की सूची है। एक परिवार पर शापों के आने के कई कारण दिए गए हैं, जैसे कि : मूर्तिपूजा / कौटुम्बिक व्यभिचार (लैव्य. 20:17), तंत्रमंत्र वाले काम (लैव्य 20:6) / पाशविकता (लैव्य 20:15-16), व्यभिचार / लौंगिक अनैतिकता / समलैंगिकता (लैव्य 20:13) / चोरी, अवज्ञा, ये कुछ ही हैं।

एक अच्छे मसीही पृष्ठभूमि वाले लोगों के परिवारों में भी शाप हो सकते हैं। धर्म / विधिवादिता / घमण्ड / परम्परा, आदि कुछ ऐसे हैं जिनको पाया गया है।

न केवल लोग और परिवार एक शाप में हो सकते हैं बल्कि चीजें, घर, ईमारतें, जगहें भी शापित हो सकती हैं!!

पढ़ोः व्यवस्था 7:25-26, "उनके देवताओं की खुदी हुई मूर्तियाँ तुम आग में जला देना; जो चाँदी या सोना उन पर मढ़ा हो उसका लालच करके न ले लेना, नहीं तो तू उसके कारण फँदे में फँसेगा; क्योंकि ऐसी वस्तुएँ तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में घृणित हैं। और कोई घृणित वस्तु अपने घर में न ले आना, नहीं तो तू भी उसके समान नाश हो जाने की वस्तु ठहरेगा (शाप); उसे सत्यानाश की वस्तु जानकर उससे घृणा करना और उसे कदापि न चाहना; क्योंकि वह अशुद्ध वस्तु है।"

उपयोगः हम ने गठिया रोग वाली एक स्त्री के लिए प्रार्थना की। उसकी अँगुलियों में विदेश की कुछ अँगूठियाँ थीं जिन्हें किसी ने उसे दिया था। हम ने प्रार्थना की और प्रभु से महसूस किया कि उन पर एक शाप डाला गया है। इसलिए हम ने उसे निकालने को कहा। उसने किया, हम ने उस पर से शाप तोड़ा और उसे उसके रोग से चंगाई मिली।

देश भी एक शाप में हो सकता है। गरीबी के शाप, आदि।

जगहें या घर शाप में हो सकते हैं। पॉल्टॅगाइस्ट या "शोर करनेवाला भूत" एक घर के भूत का उदाहरण है जो एक तंत्रमंत्र के शाप में है।

बोले गए शाप या अपने ऊपर डाले गए शाप हो सकते हैं जो परिवारों या व्यक्तियों से आते हैं जिन्हें तोड़ा जाना जरूरी है। "हमारे परिवार वाले जल्दी मर जाते हैं", या "सब स्त्रियों को गठिया रोग हो जाता है", या "इससे कुछ भी बन नहीं पड़ेगा।"

शाप और छुटकारे की आवश्यकता शैतानी प्रभावों से आ सकती है – पंथों या तंत्रमंत्र में भाग लेना से।

व्यवस्था. 18:9-14, "जब तू इस देश में पहुँचे जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है, तब वहाँ की जातियों के अनुसार धिनौना काम करना न सीखना। तुझ में कोई ऐसा न हो जो अपने बेटे या बेटी को आग में होम करके चढ़ानेवाला, या भावी कहनेवाला, या शुभ-अशुभ मुहूर्तों का माननेवाला, या टोन्हा, या तान्त्रिक, या बाजीगर, या ओझों से पूछनेवाला, या भूत साधनेवाला, या भूतों का जगानेवाला हो। क्योंकि जितने ऐसे ऐसे काम करते हैं वे सब यहोवा के सम्मुख घृणित हैं; और इन्हीं घृणित कामों के कारण तेरा परमेश्वर यहोवा उनको तेरे सामने से निकालने पर है...।"

गूप्त विद्या दूसरे देवताओं की आराधना है। यह मूर्तिपूजा है। "गुप्त" शब्द का अर्थ है: "जिसका अर्थ है गुप्त।" लोग अलौकिक की खोज करते हैं लेकिन इसे गुप्त रूप से खोजते हैं जो दुष्ट शक्तियों के लिए द्वार खोल देते हैं। दुष्टात्माएँ अलौकिक कार्य कर सकती और लोगों को धोखा दे सकती और उन्हें बन्धन में ला सकती हैं। गुप्त विद्या के क्षेत्र में हाथ डालने की भारी कीमत चुकानी पड़ सकती है।

गुप्त विद्या में व्यक्तिगत या परिवारिक उलझाव के कुछ सम्भव परिणाम हो सकते हैं:

1. शारीरिक - बीमारी / रोग / बाँझपन / अपंग / विकृत / बारम्बार गर्भस्त्राव, आदि।
2. मानसिक - उदासी / मानसिक बीमारी / उलझन / पढ़ाई में कठिनाई, आदि।

3. भावनात्मक - आत्महत्या की प्रवृत्तियाँ / हद से अदिक डर / हिंसा / दुर्व्यवहार, आदि।
4. आत्मिक - उद्धार के लिए खुले होने में, पवित्र आत्मा के बपतिस्मा में, अन्यभाषाओं में, स्तुति-आराधना में बाधाएँ। बाइबल पढ़ने, प्रार्थना, आदि में बाधाएँ।

इसका अर्थ यह नहीं कि ये चीजें अकसर शाप लाती हैं, लेकिन वे ला सकती हैं।

लोग पूछेंगे: "क्या ये शाप, जो यीशु ने क्रूस पर किया था के कारण टूटे नहीं हैं ?"
गलातियों 3:13 "मसीह ने जो हमारे लिए शापित बना, हमें मोल लेकर व्यवस्था के शाप से छुड़ाया, क्योंकि लिखा है, 'जो कोई काठ पर लटकाया जाता है वह शापित है।' यह इसलिए हुआ कि अब्राहम की आशीष मसीह यीशु में अन्यजातियों तक पहुँचे, और हम विश्वास के द्वारा उस आत्मा को प्राप्त करें जिसकी प्रतिज्ञा हुई है।"
उत्तर: जैसा उद्धार में होता है, पवित्र आत्मा का बपतिस्मा, दुष्टात्माओं से चंगाई या छुटकारा - इन्हें भी विश्वास से अपना बनाना होता है। यह अपने आप नहीं होता। दूसरे शब्दों में, शाप से छुटकारा क्रूस पर यीशु के प्रायश्चित के काम के द्वारा उपलब्ध किया गया है - अब हमें इसे अपनी सेवकाई में भी अपनाना चाहिए।

छुटकारे की सेवकाई

मत्ती 10:1 कहता है, "फिर उसने अपने बारह चेलों को पास बुलाकर, उन्हें अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार दिया कि उन्हें निकालें और सब प्रकार की बीमारियों और सब प्रकार की दुर्बलताओं को दूर करें।" मत्ती 10:8 कहता है, "बीमारों को चंगा करो, मरे हुओं को जिलाओ, कोढ़ियों को शुद्ध करो, दुष्टात्माओं को निकालो। तुम ने सेंतमेंत पाया है, सेंतमेंत दो।" इन वचनों में हम पाते हैं कि यीशु ने हमें दुष्टात्माओं को निकालने का सामर्थ्य और अधिकार दिया है। यीशु ने अपने सेवा का ज्यादा समय लोगों को दुष्टात्माओं के बन्धन से छुड़ाने में बिताया था।
हमारी कलीसिया में जैसे हम लोगों की सेवा करते हैं जिन्होंने उद्धार और पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया है, सम्भवतः हमारी सेवकाई का आधा से अधिक भाग छुटकारे के क्षेत्र में सेवा करने में लगता है। इन आत्माओं में से अधिकतर उनके मसीही बनने के पहले आईं थीं। यह विश्वास करना तो अदभुत होगा कि हर व्यक्ति अपने आप उस समय छुटकारा पा लेता है जिस समय उसने यीशु को उद्धारकर्त्ता ग्रहण किया था - परन्तु ऐसा होता नहीं है। बहुत से लोग उस समय नाटकीय रूप से छुटकारा पाते हैं - परन्तु बहुत सारों को अभी भी उनके जीवनों में बन्धनों से छुटकारा पाने की आवश्यकता होती है ताकि वे वह व्यक्ति बन सकें जो परमेश्वर चाहता है वे बनें।
दुर्भाग्यवश, क्योंकि छुटकारा बहुत सारी कलीसियाओं की काउन्सलिंग और पुनःस्थापना की प्रक्रिया का एक सामान्य भाग नहीं है - बहुत से मसीही वर्षों भर उनके जीवनों में संघर्ष करते रहते हैं - दोषी और निन्दित महसूस करते रहते हैं - और उनको बताया जाता रहता है कि उनकी सारी समस्याएँ "शरीर को क्रूसित करने" या "पुराने मनुष्य को मृत्यु देने" की आवश्यकता के कारण है।
<u>छुटकारा इन चीजों की जगह नहीं ले सकता है - न ही यह क्षमा का या मन फिराने का या संयम का स्थान ले सकता है - न ही हम बताने का प्रयास कर रहे हैं कि व्यक्ति की सारी समस्याएँ दुष्टात्माओं की लाई हुई हैं। परन्तु, हम ने देखा है कि एक व्यक्ति के जीवन में परेशानी के बहुत सारे क्षेत्र जो दूसरी प्रकार की सेवाओं (अनुसासन / उपवास / प्रार्थना / काउन्सलिंग / आदि) से नहीं बदलते हैं संकेत दे सकते हैं कि व्यक्ति को छुटकारे की आवश्यकता है।</u>

हम ने लोगों के जीवनों में दुष्टात्माओं से छुटकारा पाने के बाद रचनात्मक परिवर्तन देखे हैं। यह कलीसिया के जीवन का एक सामान्य भाग होना चाहिए।

<u>लोगों के जीवनों में कुछ क्षेत्र जो छुटकारे की आवश्यकता का संकेत दे सकते हैं, वे हैं:</u>

भावनात्मक समस्याएँ / मानसिक समस्याएँ / लैंगिक समस्याएँ / व्यसन / शारीरिक समस्याएँ जो चंगाई की प्रार्थना से दूर नहीं होती हैं / असामान्य बाध्यकरण, डर, आदि।

<u>छुटकारे में कुछ अतिरिक्त सहायतें:</u>

1) इस क्षेत्र में परिपक्व, वरदान पाए सेवकों के लिए प्रार्थना करो।
2) इससे पहले आप यह सोचते हुए बाहर भागने लगो कि आपकी एक छुटकारे की सेवकाई है, निश्चित कर लो कि आप एक स्थानीय कलीसिया के आवरण और सुरक्षा में हो और कि आपका पास्टर आपकी सेवकाई के साथ सहमति में है।
3) कलीसिया में इस आवश्यक कलीसिया के लिए प्रार्थना करो।
4) आत्माओं की परख के वरदान के लिए प्रार्थना करो (इसकी कलीसिया में बहुत ही आवश्यकता है, निम्न करने के लिए:
   क) दुष्टात्माओं का पता लगा - निकाल सकने के लिए।
   ख) एक शरीर में एक भ्रम या एक व्यक्ति में एक अधर्मी अभिप्राय का पता लगा सकने के लिए।
   ग) एक छुटकारे के समय अपना व्यवहार ऐसा रखो जो सुसमाचार के सेवक के लिए सही हो। आपको लोगों के सिरों पर मारना या उन पर चिल्लाना या उन पर आक्रमण नहीं करना है। आपको आत्माओं को यीशु के नाम में निकल जाने को कहना है। सच है, दुष्टात्माआएँ ढोंग कर सकती हैं, लेकिन हम नियंत्रण में रह सकते हैं।

याद रहेः हम शत्रु के कामों के बारे में विवेकी बनना चाहते हैं - परन्तु उसके या उसके तरीकों में लगना नहीं चाहते हैं। दुष्टात्माओं के साथ या उनके बारे में बातें करने आदि की सनक में मत पड़ो। अपने विचार यीशु पर रखो और पवित्र आत्मा में चलो ताकि जब आपका सामना दुष्टात्मा की गतिविधियों से हो आप उससे आत्मा के सामर्थ्य में निपट सको। यदि आप ऐसा करोगे तब हमारी एक सन्तुलित सेवा होगी जो परमेश्वर को महिमा लाएगी। (प्रेरितों 10:38 देखो)

पूर्वजों के पापों को स्वीकार करना जिससे कि शापों से स्वतंत्र हो सको

1. परिचय

तीन मुख्य क्षेत्र हैं जो लोगों को परेशान करते हैं और जिनसे काउन्सलिंग के दौरान निपटा जाना चाहिए:

1. पाप, खुद किए हुए।
2. जीवन की परिस्थितियों की ओर गलत, पापी प्रतिक्रियाएँ (हमारी जिम्मेवारी के बाहर)।
3. पूर्वजों के पाप।

इस अध्ययन में हम पूर्वजों के पापों के बारे में बात करेंगे। मैं ने परमेश्वर को बड़े काम करते देखा है जब लोग उनके पूर्वजों के पाप स्वीकार करते हैं। परन्तु, जब एक व्यक्ति को यह करने की आवश्यकता होती है, तब उसे पहले खुद किए पापों से एक बाइबल के तरीके से निपटना चाहिए।

2. हमारे पाप भावी पीढ़ियों को प्रभावित करते हैं

अ) निर्गमन 20:1-6। आयतें 5-6: "क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखने वाला परमेश्वर हूँ, और जो मुझ से बैर रखते हैं, उनके बेटों, पोतों, और परपोतों को भी पितरों का दण्ड दिया करता हूँ, और जो मुझ से प्रेम रखते और मेरी आज्ञाओं को मानते हैं, उन हज़ारों पर करुणा किया करता हूँ।" (निर्गमन 34:7,14 और गिनती 14:18 भी देखो)।

यह तथ्य कि हमारे पाप भावी पीढ़ियों को प्रभावित करते हैं एक बारम्बार पाया जाने वाला विषय है जो पूरे पवित्रशास्त्र में पाया जाता है। पहले तो यह घोषणा "उनके बेटों, पोतों, और परपोतों को भी पितरों का दण्ड दिया करता हूँ" लगेगा कि जैसे परमेश्वर कह रहा है: "यदि मैं तुम्हारे पापों के कारण तुम्हें नहीं पकड़ सका तो मैं तुम्हारे बेटों को पकडूँगा।" परन्तु, यह निस्संदेह सच्चाई से दूर है। परमेश्वर का चरित्र प्रेम है, और जो वह करता है सदा उसके चरित्र के साथ मेल खाएगा।

व्यवस्था का दिया जाना उतना ही बड़ा प्रेम का कार्य था जितना परमेश्वर ने कभी कुछ किया है। मनुष्य उस सुन्दर स्थान से गिर पड़ा था जहाँ परमेश्वर ने उसे रखा था, और पाप के द्वारा शैतान को अब मनुष्य को नष्ट करने का खुला द्वार मिला था। तो परमेश्वर अब पतित मनुष्य को यह कह रहा है: "तू गिरा है क्योंकि तू ने मेरी आज्ञा नहीं मानी, इसलिए तू अब चीजों को सही दृष्टिकोण से नहीं देख रहा है। पाप ने तुझे नष्ट करना शुरू किया है और तुझे इस सब की गम्भीरता का पता भी नहीं है। क्योंकि मैं तुझ से बहुत प्रेम करता हूँ मैं तुझे ये सब आज्ञाएँ तेरी रक्षा के लिए दे रहा हूँ। इन नियमों का पालन कर, और वे तुझे और गहराई में गिरने और मुझ से और दूर होने से रोकेंगे। ये नियम चिकित्सीय (स्वास्थ्य लाते हैं) हैं; वे रक्षा करते हैं।" व्यवस्था मुख्य रूप से परमेश्वर की सनक पूरी करने के लिए नहीं हैं, परन्तु वे हमारे अपने भले के लिए हैं।

आ) व्यवस्था 4:40 "तू उसकी विधियों और आज्ञाओं को जो मैं आज तुझे सुनाता हूँ मानना, इसलिए कि तेरा और तेरे पीछे तेरे वंश का भी भला हो, और जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है उसमें तेरे दिन बहुत वरन् सदा के लिए हों।"

इ) व्यवस्था 6:18 "और जो काम यहोवा की दृष्टि में ठीक और सुहावना है वही किया करना, जिससे कि तेरा भला हो, और जिस उत्तम देश के विषय में यहोवा ने तेरे पूर्वजों से शपथ खाई उसमें तू प्रवेश करके उसका अधिकारी हो जाए।"

ई) व्यवस्ता 6:24 "और यहोवा ने हमें ये सब विधियाँ पालन करने की आज्ञा दी, इसलिए कि हम अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानें, और इस रीति सदैव हमारा भला हो, और वह हम को जीवित रखे, जैसा कि आज के दिन है।"

उ) व्यवस्था 10:13 "और यहोवा की जो जो आज्ञा और विधि मैं आज तुझे सुनाता हूँ उनको ग्रहण करे, जिससे तेरा भला हो।" परमेश्वर की आज्ञाएँ मानने से हमारा और हमारे वंश का भला होगा। परमेश्वर की आज्ञाओं को न मानने से हमारे जीवनों में, और हमारे वंश के जीवनों में संकट आएगा। तो परमेश्वर कहता है, "इन नियमों का पालन कर, क्योंकि यदि तू नहीं करेगा, तू और तेरा वंश प्रभावित होगा। पाप शैतान के लिए खुला द्वार है (इफि 4:27), और पाप के द्वारा उस पाप के बीज का कुछ तुम्हारे बच्चे पा लेंगे, और उस शाप का भी जो तब आती है जब तुम मेरी आज्ञाएँ तोड़ते हो।"

3. शाप क्या है?

शाप की परिभाषा है: परमेश्वर की आशीष और सुरक्षा की अनुपस्थिति, लगातार शत्रु के सताव के लिए खुले रहना, और फिर उस स्थान में पहुँचना जहाँ हम अन्धकार की शक्तियों के बन्धन में पड़ जाते हैं।

बाइबल यह भी सिखाती है कि शाप बिना कारण नहीं आता है। इसे हमेशा एक खुला द्वार मिला है। नीतिवचन 26:2 "जैसे गोरैया घूमते-घूमते और सूपबेनी उड़ते-उड़ते नहीं बैठती, वैसे ही व्यर्थ शाप नहीं पड़ता।"
यह साफ है: शाप बिना कारण नहीं आता है। हमेशा एक कारण, एक खुला द्वार होता है, जिसके द्वारा यह अन्दर आकर व्यक्ति को पकड़ में ले लेता है।

4. **व्यवस्थाविवरण** 28 **और लैव्यव्यवस्था** 26

यह समझने के लिए कि शाप कैसे आता है, और यह क्या है, व्यक्ति को इन दो वचनों का ध्यानपूर्वक अध्ययन करना चाहिए:

अ) व्यवस्था 28:1-14 आशीष की प्रतिज्ञा के बारे में है। लेकिन वहाँ से लेकर अन्त तक यह शाप की बात करता है।

निम्नलिखित कुछ शाप है जो एक व्यक्ति और उसके वंश पर परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन न करने के कारण आ सकते हैं।

आ. 20: उलझन
आ. 21: मरी (कोई भी घातक महामारी)
आ. 22: क्षयरोग - ज्वर - जलन - झुलस (मलेरिया) - गेरूई (अंगमारी) - फफूँदी
आ. 24: सूखा (बिलकुल उलटा भी एक शाप हो सकता है)
आ. 27: फोड़े (अय्यूब को भी शैतान ने फोड़े दिए थे) - चमड़ी का रोग। स्कर्वी - फल और सब्जियों की कमी के कारण से आया रोग
आ. 28: पागनपन - अंधापन - घबराहट
आ. 33: निरन्तर परेशान और शापित
आ. 35: असाध्य फोड़े (जो चंगे नहीं होते)
आ. 41: बच्चे होना, लेकिन उनका आनन्द न ले पाना
आ. 45-48: आज्ञा न मानना, कोई खुशी नहीं, शाप
आ. 59: आबागा और पुराने रोग
आ. 60: मिस्र के रोग
आ. 61: हर बीमारी और महामारी
आ. 62: थोड़े की मनुष्य रह जाएँगे
आ. 63: मिटा दिए जाओगे

आ) लैव्यव्यवस्था 26:1-13 में उनके लिए आशीष की प्रतिज्ञा है जो व्यवस्था का पालन करते और परमेश्वर के साथ चलते हैं। आयत 14 से लेकर अन्त तक यह शाप की बात करता है, परन्तु कुछ दिलचस्प बातें जोड़ता है जो व्यवस्था. 28 में नहीं हैं:

आ. 14-17: पहले शाप का जिक्र
आ. 18-20: यदि पाप में लगे रहोगे, परमेश्वर "सातगुणी ताड़ना और देगा"
आ. 21-22: यदि फिर भी पाप करते रहोगे, "और सातगुणा संकट डालूँगा"
आ. 23-26: यदि फिर भी पाप करते रहोगे, "और सातगुणा मारूँगा"

आ. 7-39: यदि यह सब कुछ होने के बावजूद भी, अभी भी पाप में बने रहेंगे, तब परमेश्वर "सातगुणा ताड़ना और भी देगा", और परिणाम यह होगा कि उन्हें उनके बेटे और बेटियों का मांस खाना पड़ेगा। यह इस्राएल के साथ हुआ भी था (2 राजाओं 6)। लेकिन क्योंकि परमेश्वर का नियम सृष्टि में है, क्या ऐसा हो सकता है कि तथाकथित "आदिम संस्कृतियाँ", जिन्होंने नरभक्षण किया हुआ है, असलीयत में ऐसी संस्कृतियाँ हैं जो सबसे खराब प्रकार के शाप में आए हैं? क्या ऐसा हो सकता है कि ऐसी संस्कृतियों ने पहले प्रकाश देखा था, परन्तु किसी प्रकार इससे दूर हो गए, और सबसे बड़े अन्धकार और शाप में आ गए? बाइबल के दृष्टिकोण से, ऐसा विश्वास करने का हर कारण है:

परन्तु परमेश्वर ने शाप में से निकलने का मार्ग दिया है, जो दो गुणा है:

➢ शायद पश्चाताप और निस्संदेह राष्ट्रीय पश्चाताप। व्यवस्था. 30:2-6 भी देखो।
➢ पूर्वजों के पापों को स्वीकार करना।

जब ये दो ईश्वरीय माँगों को पूरा किया जाता है, परमेश्वर दो गुणा आशीष की प्रतिज्ञा करता है:
प्रभु वाचा को स्मरण करेगा।
प्रभु देश को ज्यों का त्यों कर देगा।

5. पूर्वजों के पापों को स्वीकार करना क्या है?

हम अपने पूर्वजों के पापों के लिए जिम्मेवार नहीं हैं। पवित्रशास्त्र इसे बहुत अच्छी तरह सिखाता है। व्यवस्था. 24:6; अय्यूब 35:6-8; नीतिवचन 1:31; 5:22-23; यिर्मयाह 31:29-30; यहेजकेल 14:14; 18:1-32 (4ब "इसलिए जो प्राणी पाप करे वही मर जाएगा।"), रोमियों 14:12; 2 कुरिन्थियों 5:10; आदि। **पूर्वजों के पापों को स्वीकार कर लेने से वह कानूनी आधार निकल जाता है जिसने पूर्वजों के पापों के कारण मिले खुले द्वार से प्रवेश किया था।** जिस प्रकार व्यक्तिगत पश्चाताप से वह आधार निकल जाता है जिसे हम ने स्वयं शत्रु को दिया था, तो पूर्वजों के पापों को स्वीकार करने से वह आधार निकल जाता है जिसे शत्रु ने खुले द्वार के द्वारा पाया था, और जिस खुले द्वार के द्वारा वह अब वंश में काम करता है। अपने पूर्वजों के पापों को स्वीकार करने से हम परमेश्वर के सामने मानते हैं कि हम समझते हैं कि क्यों कुछ समस्याएँ हमारे जीवनों और हमारे परिवार में आई हैं, आदि।
निर्गमन 20:5 में, परमेश्वर ने कहा कि हमारे पाप हमारे वंश को तीसरी और चौथी पीढ़ी तक प्रभावित करते हैं। मेरे पहले चार पीढ़ियाँ, मेरे माता और पिता, उनके माता और पिता, आदि, 30 लोग होते हैं जिनसे मेरे व्यक्तिगत जीवन में निवेश मिलता है। वे किस प्रकार के लोग थे? उन्होंने किस प्रकार के पाप किए थे? क्या उन्होंने मन फिराया था? आदि, आदि। निस्संदेह हम नहीं जानते, लेकिन यह देखना कठिन नहीं कि इन चार पीढ़ियों के द्वारा हमारे जीवनों में कितना प्रभाव आया होगा, और शत्रु को कितने खुले द्वार मिले होंगे।

मेरे पहले चार पीढ़ियाँ, जो 30 लोग होते हैं जिन सब ने मेरे व्यक्तिगत जीवन में निवेश छोड़ा है

6. परिवारों पर शाप के उदाहरण

अ) गिनती 16। कोरह, दातान और अबिराम के पापों ने उनके वंश को भी प्रभावित किया था।
आ) निर्गमन से गिनती तक। इस्राएल को लोगों को दुख सहना पड़ा क्योंकि उनके पिताओं ने परमेश्वर के विरुद्ध पाप और विद्रोह किया था।
इ) व्यवस्था। (29:26-27। देश शापित हुआ क्योंकि उन्होंने पराए देवताओं की उपासना की।
ई) 2 शमूएल 3:28-29। एक शाप योआब के परिवार पर (हत्या के लिए) आया था जिसका परिणाम, कोढ़, प्रमेह, बैसाखी का लगानेवाला, तलवार से मारा जानेवाला, भूखों मरनेवाला था।
उ) 1 राजाओं 21:1-2। शाऊल के पाप के कारण देश में अकाल।
ऊ) 1 राजाओं 11:9-40, 12:24। सुलेमान के पापों के कारण न्याय उसके वर्षों बाद आया था। परन्तु, उसके जीवन काल में भी उसके शत्रु खड़े हो गए थे।
ए) 1 राजाओं 13:34; 14:1-18, 25। राजा यारोबाम के पापों के कारण देश का न्याय हुआ था। (1 राजाओं 15:27-29; 16:10-13 भी देखो)
ऐ) 1 राजाओं 17। राजा और उसकी पत्नी के पापों के कारण सारे देश पर एक भारी अकाल पड़ा था। (1 राजाओं 18:1; 20:4-43; 21:27-29 भी देखो)
ओ) 1 राजाओं 21:10-12; 2 राजाओं 23:26-27; 2 इतिहास 33:10-13; 34:22-28। हालाँकि दुष्ट राजा मनश्शे पश्चाताप है, फिर भी न्याय उसके बाद के दिनों में आएगा।
औ) 2 राजाओं 5:26-27। नामान का कोढ़ गेहजी और उसके वंश को लग गया।

अं) 2 इतिहास 34:21। व्यवस्था की पुस्तक राजा योशिय्याह के सामने पढ़ी गई, जिसे एहसास हुआ कि परमेश्वर पूर्वजों के पापों के कारण क्रोधित है।

अ:) भजन 109:8-9। पाप के कारण एक परिवार पर शाप आता है।

क) विलापगीत 5:7। "हमारे पुरखाओं ने पाप किया, और मर मिटे हैं, परन्तु उनके अधर्म के कामों का भार हम को उठाना पड़ा है।"

ख) मरकुस 8:22-26; मत्ती 11:21। बैतसैदा पर एक शाप था।
बाइबल ऐसे उदहरणों से भरी पड़ी है जहाँ लोगों के पापों का प्रभाव उनकी आनेवाली पीढ़ियों पर पड़ा था। परमेश्वर देश के अगुवों और परिवारों के पिताओं को जिम्मेवार ठहराता है। जब निर्गमन 20:5 में जहाँ परमेश्वर तीसरी और चौथी पीढ़ी पर अपराधों का प्रभाव पड़ेगा कहता है, उसने यह विशेषकर मूर्तिपूजा के संदर्भ में कहा था, जिसमें तंत्र-मंत्र वाले पाप भी शामिल हैं।

ग) व्यवस्था. 7:25-26। अपने घर में एक शापित वस्तु को लाना, जो हमें भी उस शापित वस्तु के समान शापित बना देता है।

घ) व्यवस्था. 27:15। मूर्तियाँ बनाना एक भारी शाप लाता लगता है। (आयतें 16-26 भी देखो)।

7. बाइबल के उदाहरण

अ) एज्रा जो एक अगुवा था जब इस्राएल के लोग उनकी बन्धुआई से लौटे थे।
एज्रा 9:7, "अपने पुरखाओं के दिनों से लेकर आज के दिन तक हम बड़े दोषी हैं, और अपने अधर्म के कामों के कारण हम अपने राजाओं और याजकों समेत देश देश के राजाओं के हाथ में किए गए कि तलवार, दासत्व, लूटे जाने, और मुँह काला हो जाने की विपत्तियों में पड़ें, जैसे कि आज हमारी दशा है।"

आ) नहेम्याह, जो भी बन्धुआई से लौटने के समय एक अगुवा था।
नहेम्याह 1:6। नहेम्याह ने स्वयं पूर्वजों के पापों को स्वीकार किया था। कोई संदेह नहीं कि यह एक बड़े सुधार में नहेम्याह के शामिल होने की यह शुरूआत थी।
नहेम्याह 9। आयतें 1-2 दिखाते हैं लोग उनके पूर्वजों के पापों को स्वीकार करने के लिए इकट्ठे होते हैं।

इ) दानिय्येल, बेबिलोन की बन्धुआई के दौरान।
दानि. 9:1-19। दानिय्येल उसके व्यक्तिगत पापों और पूर्वजों के पापों को स्वीकार करता है।
आ. 5: "हम लोगों ने तो पाप किया है।"
आ. 11: "इस कारण शाप हम पर घट गया।" व्यवस्था. 28:15 को बोलता है।
आ. 13: "हम न तो अपने अधर्म के कामों से फिरे, और न तेरी सत्य बातों पर ध्यान दिया।"
आ. 16: "हमारे पुरखाओं के अधर्म के कामों के कारण, यरूशलेम की नामधराई हुई है।"
निस्संदेह, दानिय्येल का व्यक्तिगत पाप स्वीकार और पूर्वजों के पाप स्वीकार की प्रार्थना का इस्राएल के लोगों का बन्धुआई में लौटने में बहुत बड़ा हाथ था।

8. पूर्वजों के पाप – मत्ती 23 और 27

अ) मत्ती 23:29-36। यीशु ने इस्राएल के आत्मिक अगुवों पर दोष लगाया कि उन्होंने उनके पूर्वजों के पापों को अंगीकार नहीं किया था, और इसीलिए वे अभी भी उनके पापों में भागी थे। आत्मिक अगुवों ने निस्संदेह "अपने बापदादों के पापों का घड़ा पूरी तरह भर" दिया (आ. 32), जब उन्होंने प्रतिज्ञात मसीहा, यीशु को क्रूस पर चढ़ा दिया।

आ) मत्ती 27:25। "इसका लहू हम पर और हमारी सन्तानों पर हो।" क्या हो सकता है कि इस्राएल पूरे उद्धार को तब ही जान सकेगा जब वह यीशु को मारने के पाप को अंगीकार करेगा? (जकर्याह 12:10)

9. प्रभु यीशु शाप बन गया

अ) उत्पत्ति 1:21-22। परमेश्वर ने उसकी सृष्टि को आशीष दी।
उत्पत्ति 1:7-28। परमेश्वर ने उसकी सबसे बड़ी सृष्टि मनुष्य को आशीष दी।
उत्पत्ति 3:17-18। पाप के कारण शाप आया - काँटे और ऊँटकटारे।

आ) रोमियों 8:19-23। शाप के कारण सारी सृष्टि कराहती है।

इ) मत्ती 27:29। जब यीशु क्रूसित किया गया था, उसने काँटों का ताज पहना था - उसे शाप पहनाया गया था, हमारे लिए।

ई) गलातियों 3:13। "मसीह ने जो हमारे लिए शापित बना, हमें मोल लेकर व्यवस्था के शाप से छुड़ाया, क्योंकि लिका है, जो कोई काठ पर लटकाया जाता है वह शापित है।"
सारे शाप जिनके बारे में व्यवस्था ने कहा था हम पर और हमारे वंश पर आएँगे, यीशु मसीह पर आए हैं। इसलिए उसका लहू हमें बचाता है।

उ) 1 पतरस 1:18-19। "क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हारा निकम्मा चाल-चलन जो बापदादों से चला आता है, उससे तुम्हारा छुटकारा चाँदी-सोने अर्थात् नाशवान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ; पर निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने, अर्थात् मसीह के बहुमूल्य लहू के द्वारा हुआ।"
जब व्यक्ति को खुद किए गए पापों से शुद्ध होने की जरूरत पड़ती है, तब इन्हें स्वीकार किया जाना, और विश्वास से क्षमा ली जानी चाहिए। उसी प्रकार, जब पूर्वजों के पापों के प्रभाव से छुटकारा पाना हो, तब भी व्यक्ति पापों को स्वीकार करे और विश्वास से पूर्वजों के पापों से सम्पूर्ण छुटकारा स्वीकार करे। यीशु का लहू हमें व्यक्तिगत पापों से मुक्त करता है, और उन पापों से भी जिन्हें हम ने अपने पूर्वजों से पाया है।

10. **निष्कर्ष**

<u>अपने पूर्वजों के पापों के प्रभाव से मुक्त होने का तरीका है:</u>

अ) हमें किसी भी गलत और पापी प्रथा से जो हमारे पूर्वजों से आई है पूरी तरह नाता तोड़ना चाहिए (जैसे कि पूर्तिपूजा, आदि)। कुरिन्थुस की कलीसिया ने पूर्तिपूजा से पूरी तरह नाता नहीं तोड़ा था और उनको समस्या हो रही थी (2 कुरिं. 6:14-18), जबकि इफिसुस की कलीसिया ने पूरी तरह तोड़ दिया था और बड़ी आत्मिक स्वतंत्रता अनुभव कर रहे थे। (प्रेरितों 19:18-20)

आ) हर चीज को जो आप जानते हो शापित हो सकती है नष्ट कर दो।

इ) हर व्यक्तिगत पाप जिसे आप जानते हो स्वीकार करो। (1 यूहन्ना 1:9)

ई) प्रार्थना में परमेश्वर के सामने, पूर्वजों के हर पाप को जिसके बारे में आप जानते हो स्वीकार करो। यदि निश्चित पता न हो तब सामान्य रूप से स्वीकार करो।

उ) यीशु के नाम में एक आज्ञा बोलकर, अपने जीवन में से किसी भी बन्धन को, जो पूर्वजों के पापों के कारण आया होगा, अपने को मुक्त करो और दूसरों को भी आप को मुक्त करने दो। (लूका 13:10-17, अब्राहम की एक बेटी, वह स्त्री, जो पुराने नियम की परमेश्वर के वाचा की एक सदस्य भी थी, को अन्धकार की शक्तियों से मुक्त किए जाने की आवश्यकता थी।)

ऊ) अपनी स्वतंत्रता के लिए प्रभु का धन्यवाद करो। आप एक नई सृष्टि और परमेश्वर में एक नया वंश हो।

ए) अपने वंश को एक भक्त प्रभाव देने का निश्चय करो। (निर्गमन 20:6)

पीढ़ियों से चले आ रहे शापों का प्रारंभ और शापों को तोड़ना

क्या आप ने कभी सोचा है कि क्यों कुछ परिवार खास प्रकार के शापों में फँसे होते हैं ? क्यों, एक पीढ़ी से अगली पीढ़ी में, वही गंदी आदतें/चीजें दिखाई देती रहती हैं ?
हम यहाँ सीखेंगे जाँच करते हुए कि वे कहाँ से आते हैं और उन शैतानी शक्तियों को कैसे उखाड़ना है जो एक परिवार के वंश के साथ अपने आप को जोड़ लेते हैं।
कुछ समय पहले, कुछ मसीही एक जवान पुरुष को सुसमाचार सुना रहे थे जो उद्धार पाना चाहता था। परन्तु, यह एक संघर्ष था क्योंकि उसकी आँटी - एक डायन थी जिसने उस पर एक शाप डाला हुआ था, जो उसे नया जन्म पाने से रोक रहा था। जैसे मसीही लोगों ने शाप का सामना किया, शैतान गुस्सा हो गया और इस जवान पुरुष में से बोला, "मैं ने दादी को मार डाला है, और मैं ने माँ को भी इस परिवार में मारा है। अब मैं इस लड़के को भी मारने वाला हूँ।" दुष्टात्मा ने समय भी बताया जब वह उसे मारने वाला था। मसीही शाप के विरुद्ध खड़े रहे। उन्होंने घड़ी पर नज़र रखी, परमेश्वर के वचन को बोला और प्रार्थना की। उस घड़ी जब लड़के को मरना था, शाप तोड़ा गया, और उसने यीशु को अपना उद्धारकर्त्ता ग्रहण किया।
एक दादी के जादूटोना में भाग लेने के कारण एक शाप कैसे एक पीढ़ी से अगली पीढ़ी में चला जाता है? हम इसका उत्तर व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में पाते हैं। व्यवस्थाविवरण एक विधि का वर्णन करती है जहाँ इस्राएली वाचा को नया करते हैं जिसे उन्होंने परमेश्वर के साथ सीनै पर्वत पर बाँधा था। लोगों को अपने निर्देश में, मूसा लोगों को याद दिलाता है कि परमेश्वर ने कहा था कि बच्चे, पोते-पोतियाँ, परपोते-पोतियाँ उनके माता-पिता द्वारा किए पापों का दुख उठाएँगे। (व्यवस्था. 5:9; निर्गमन 20:5)
इस वाचा के नियमों में, आज्ञापालन आशीषें लाएगा, और आज्ञोल्लंघन शाप लाएगा (व्यवस्था. अध्याय 27-28)। शापों का नाम लेने के बीच, मूसा परमेश्वर के लोगों को चेतावनी देता है, "तू जो अपने परमेश्वर यहोवा की दी हुई आज्ञाओं और विधियों के मानने को उसकी न सुनेगा, इस कारण ये सब शाप तुझ पर आ पड़ेंगे, और तेरे पीछे पड़े रहेंगे, और तुझ को पकड़ेंगे, और अन्त में तू नष्ट हो जाएगा।" (व्यवस्था. 28:45-46)। तो सब प्रकार के शापों की भविष्यद्वाणी उनके लिए की गई थी जो परमेश्वर की आज्ञाओं को न मानेंगे - और उनके बच्चों के लिए भी। परिणामस्वरूप, मेरा विश्वास है कि बहुत सारी चीजें जो आज परिवारों को सताती हैं उनके पूर्वजों के पाप और आज्ञोल्लंघन का परिणाम हैं।
जब एक माता और पिता एक पापी काम में लगते हैं, उनके बच्चों की भी उसमें लगने की सम्भावना है। तब शैतान आता है और बच्चों को लुभाता है, और वे भी उनके माता-पिता के उन्हीं बुरे कामों में पड़कर फँस जाते हैं। जैसे पाप एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में जाता रहता है, तो यह इसकी प्रकृति में और अधिक घृणित हो जाता और इसके परिणामों में और अधिक भयानक हो जाता है। परन्तु हम हमारे पूर्वजों द्वारा किए हुए पापों के कारण दुख उठाने वाले नहीं हैं! कोई भी जो परमेश्वर की ओर फिरता है पिछली पीढ़ियों के पापों से बच सकता है (यहोजकेल 18)! और मेरा विश्वास है मत्ती का सुसमाचार पीढ़ियों के शाप से छुटकारा पाने की एक कुंजी देता है। प्रश्नों के उत्तर में कि वह कैसे दुष्टात्माओं को निकाल पाता है, यीशु ने कहा शैतान का आत्मिक रूप से विरोध किया और वश में किया जाना होता है। "परन्तु कोई मनुष्य किसी बलवन्त के घर में घुसकर उसका माल नहीं लूट सकता, जब तक कि वह पहले उस बलवन्त को बाँध नहीं ले; और तब उसके घर को लूट लेगा।" (मरकुस 3:27)
पिछली पीढ़ियों के शापों - उनकी आदतें, पाप और शारीरिक निर्बलताएँ - को तोड़ने के लिए हमें उस बलवन्त को बाँधना है जो पीढ़ियों से शाप लाता रहा है। उस अधिकार को इस्तेमाल करके जिसे मसीह ने हमें दिया है, हम "घर" - या इस मामले में, पीढ़ी - को उससे छीन लेते हैं। स्वतंत्र रहने के लिए, हमें शायद शैतान को बारम्बार "चला जा" कहते रहना पड़ेगा। एक बार जब एक दुष्टात्मा को निकाला जाता है तब, यीशु ने कहा, "तो सूखी जगहों में विश्राम ढूँढ़ती फिरती है, और पाती नहीं। तब कहती है, मैं अपने उसी घर में जहाँ से निकली थी, लौट जाऊँगी।" (मत्ती 12:43-44)। परन्तु हमें विश्वास में दृढ़ खड़े रहना चाहिए, क्योंकि यदि एक निकाली हुई आत्मा को लौटने दिया जाएगा, तो हालत पहले से खराब हो जाएगी: "तब वह जाकर अपने से और बुरी सात आत्माओं को अपने साथ ले जाती है, और वे उसमें पैठकर वहाँ वास करती हैं और उस मनुष्य की पिछली दशा पहले से भी बुरी हो जाती है।" (मत्ती 12:45)
शैतान हमारे और हमारे बच्चे के पीछे पड़ा है, लेकिन हमें डरने की जरूरत नहीं यदि हम परमेश्वर के वचन पर खड़े रहते हैं। हम अब शैतान के नहीं हैं। हम परमेश्वर के हैं (रोमियों 14:8; 1 कुरिं. 6:19-20)। यीशु हमें मुक्त करने आया था, और उसी वाचा की आशीषें और दया की प्रतिज्ञा हज़ार पीढ़ियों के लिए की गई है। (व्यवस्था. 7:9)। शैतान का हम पर अधिकार नहीं है, "क्योंकि जो तुम में है वह उस से जो संसार में है, बड़ा है" (1 यूहन्ना 4:4)। यदि आप अपने जीवन में पाप देखते हो जो एक पिछली पीढ़ी से चला आया है, तो इससे हमेशा के लिए मन फिराओ। और अपने जीवन के उस पाप को अपने बच्चे को मत लेने दो।

सब शापों को तोड़ दो

मैं ने यीशु को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्त्ता बहुत पहले स्वीकार किया था और मेरा जीवन पूरी तरह बदल गया था। मैं एक नया मनुष्य बन गया - अन्दर से और बाहर से। मैं ने जान लिया कि मेरे अतीत के सारे पाप क्षमा हो गए थे और इस ज्ञान ने मुझे यीशु और क्रूस पर उसकी मृत्यु के बारे में बताने का उत्साह दिया जिससे हम नया जन्म पा सकते हैं, जैसे कि हमारा अतीत है ही नहीं। जैसे मैं ने अपने पास्टर की सहायता से बाइबल का अगले कुछ दिनों में अध्ययन किया, मुझे स्पष्ट पता चला कि मेरा अतीत यीशु के लहू के नीचे दबा है, सब पापों का पूरा पूरा मूल्य चुकाया गया है, और मेरा हिसाब साफ है। केवल यीशु ही यह कर सकता था। हालेलुया।

बाद में मैं एक सेवक बन गया और काफी सफर करने लगा। हर जगह लोग मेरे पास उनकी समस्याओं को लेकर काउन्सलिंग के लिए आए। जब लोगों ने मुझे उनकी समस्याएँ बताईं, मैं अपनी बाइबल की शिक्षा पर पुन:विचार करने लगा। मैं विश्वास करता था कि जब एक व्यक्ति यीशु को उसका उद्धारकर्त्ता ग्रहण करता है, उसके सारे पाप क्षमा हो जाते हैं। परन्तु जब मैं पवित्र आत्मा के भरने के लिए प्रार्थना कर रहा था, या उसके साथ घनिष्ठ जीवन की माँग कर रहा था, प्रभु कुछ पापों को दिखाने लगा जिन्हें मैं ने अतीत में किया था। तब मैं कुछ नया देखने लगा। मेरे पाप क्षमा हो गए थे परन्तु कुछ जो उलझा हुआ या बंधा हुआ था, या जिसने एक शाप पाया था, अभी भी वहीं था। पाप चले गए और साफ हो गए हैं, लेकिन शाप तुरन्त और अपने आप नहीं जाते हैं। तब मैं वही बन्धन उन कुछ के जीवनों में देखने लगा जो मेरे पास काउँसलिंग के लिए आते थे। उनके सब पाप क्षमा हो गए थे लेकिन बन्धन, परिवारिक शाप, या माता-पिता के कामों से आए शाप थे। उद्धार अतीत में पाए शापों को नहीं मिटाता है। हर एक से एक-एक करके निपटा जाना, त्यागा जाना, तोड़ा और क्षमा पायी जानी चाहिए।

एक मनुष्य मेरे पास आया जब मैं प्रचार कर रहा था। उसे असहनीय सिरदर्द होता था। मैं ने प्रार्थना की और कुछ नहीं हुआ। तो मैं उसे यह पता लगाने के लिए कि क्या उसकी बीमारी का कोई मूल कारण है प्रश्न पूछने लगा, जो एक शाप या आक्रमण हो सकता था। उसने मुझे बताया कि वह एक व्यक्ति से नाराज़ था जिसके पहले उसकी पत्नी के साथ प्रेमसम्बंध थे। उसने उसकी पत्नी को क्षमा कर दिया था लेकिन उस व्यक्ति को क्षमा नहीं कर पाया था। मैं ने इस मनुष्य और उसकी पत्नी से बात की और बताया कि उसे उस व्यक्ति को क्षमा करने की आवश्यकता भी है, जिससे कि परमेश्वर उसे चंगाई दे सके - जिससे कि चंगाई में आ रही बाधा निकल जाए। पहले तो इसने इन्कार किया, लेकिन बाद में वह मान गया, क्योंकि उसे छुटकारा चाहिए था। उसने प्रार्थना की और प्रार्थना में उसने कहा वह उस व्यक्ति को क्षमा कर रहा है। वो शब्द एक प्रेशर कुक्कर में से भाव के समान निकलते हुए आए। और उसने तुरन्त राहत और चंगाई पाई।

एक बार और मैं एक दूसरे स्थान पर एक लडक़ी से बात कर रहा था। उसकी एक अँगुली पर कई वर्षों से एक चमड़े का रोग था। उसने बहुत से डॉक्टरों को दिखाया था, परन्तु कुछ नहीं हुआ था। मैं ने प्रार्थना की फिर भी कुछ नहीं हुआ। जब वह अगली बार मेरे पास आई तो मैं ने उसे पता लगाने के लिए प्रश्न पूछे कि क्या शैतान को पैर रखने के लिए एक जगह तो नहीं मिली हुई है जिससे कि चंगाई रुक रही है। अन्त में मैं ने पता लगाया कि वह अपनी जेठानी से नाराज़ है, क्योंकि विवाह के बाद जेठानी ने उसके साथ एक नौकर के समान दुर्व्यवहार किया था और बुरा बर्ताव किया था। जब मैं ने उसे बताया कि उसे अपनी जेठानी को क्षमा करना होगा, हालाँकि पहले तो वह तैयार नहीं हुई, परन्तु वह अन्त में सहमत हो गई। मेरे साथ वहाँ बैठे उसने प्रार्थना की और प्रभु को कहा कि वह उसकी बहन को क्षमा कर रही है। वह घर गई और, जैसे मैं ने उसे सलाह दी थी, उसने अपनी जेठानी को फोन किया और दुर्भाव रखने के लिए क्षमा माँगी। तीसरे दिन वह मुझ से दोबारा मिली और मुझे अपनी अँगुली दिखाई - पूरी तरह चंगी। (मैं यहाँ एक बात बताना चाहता हूँ। हालाँकि कि व्यक्ति को क्षमा करना चाहिए, फिर भी उस व्यक्ति से दूर रहना अच्छा होगा जिन्होंने आपकी हानि की थी ताकि वही घटना दोहराई न जाए। उदाहरण के लिए मैं ने उस व्यक्ति को कहा जिसका मैं ने ऊपर जिक्र किया है कि वह उस व्यक्ति से दूर रहे जिसका उसकी पत्नी के साथ प्रेमसम्बंध था। मैं ने इस लड़की को भी कहा कि वह उसकी जेठानी के बहुत निकट न जाए, क्योंकि इस लड़की की निन्दा करना और सबके साथ दुर्व्यवहार करना उस स्त्री का स्वभाव था।) मैं चकित हुआ हूँ और मेरी बाइबल की शिक्षा के विपरीत, मुझे लोगों से पता चला है कि जो काउँस्लिंग के लिए आए थे कि ऐसे लोग हैं जो पीढ़ियों से चले आ रहे शापों के अधीन होते हैं। क्योंकि परिवार में दादा या किसी दूसरे ने कुछ ऐसा किया था जिस पर बाइबल के अनुसार शाप आना चाहिए था, तो वह शाप पीढ़ियों से परिवार में चला आ रहा है। एक परिवार में दो पीढ़ियों से हर नर सदस्य 30 की उम्र में मर जाता था। एक दूसरे परिवार में, क्योंकि एक मनुष्य ने शाप दिया, "मेरे साथ की गई बुराई के कारण तेरे बेटे दुख सहेंगे,"किसी भी बच्चे का न तो विवाह हो रहा था और न ही नौकरी मिल रही थी हालाँकि वे धनी थे और सब अत्यधिक शिक्षित थे। एक दूसरे परिवार में, उन्होंने बतलाया कि उनके पिता के, जो एक कलीसिया का पास्टर था, कलीसिया से कुछ चुराने के कारण, परिवार में मृत्यु बिना किसी कारण के बारम्बार हो रही थी। मैं ने उन सब की मूल कारण का

पता लगाने में, उनके पिताओं के पापों से निपटने में सहायता की, क्योंकि मैं जानता था कि पीढ़ियों के शाप तीसरी और चौथी पीढ़ी तक चलते हैं। (निर्गमन 34:6-7)

जैसे पिता की आशीषें उसके बच्चों और उनके बच्चों तक जाएँगीं, वैसे ही एक शाप भी पीढ़ियों तक चलता रहेगा। मैं संकट में था। मैं जानता था कि यह सच्चाई है। लेकिन कलीसिया इस शिक्षा को स्वीकार करने के लिए इच्छुक नहीं थी, हालाँकि हर सेवक मुझ से सहमत था कि पिताओं या पूर्वजों द्वारा किए गए पापों का प्रभाव उनके बच्चों और बच्चों के बच्चों पर पड़ता है। तब ऐसा क्यों है कि कलीसिया ऐसा नहीं कहती? लेकिन मैं ने फैसला किया कि मैं वह कहूँगा जो मैं ने सीखा था। "पाप क्षमा होते हैं - सब - उसी क्षण जब एक व्यक्ति यीशु और उनके पापों की कीमत के रूप में क्रूस पर उसकी बलिदान सम्बंदी मृत्यु को अंगीकार करता है, यीशु के लहू के कारण। लेकिन शाप, या पाप जिन्होंने शाप लाया है, उसके अपने जीवन में प्रकट होंगे और अगली पीढ़ी के जीवनों में भी।

मेरे पास बाँटने के लिए शुभ संदेश है। हर विश्वासी एक जयवन्त जीवन जी सकता है। शैतान को उसे लात मारते नहीं रहना है, परिस्थितियों को उन्हें वश में नहीं करना है, और उसे उसके अपने अतीत और उसके पूर्वजों के अतीत के कारण दुख नहीं सहना है। तकलीफ के कारण का पता लगाओ और छुटकारा पाओ।

जो करने की मैं आपको सलाह देता हूँ:

(1) परिवार के सदस्यों की एक सभा बुलाओ। पीढ़ियों के शापों, और आशीषों और शापों की इस सच्चाई के बारे में उनको सिखाओ। तब परिवार का मुखिया उन सब के सिरों पर तेल लगाए और प्रार्थना करे - पीढ़ियों के शापों को तोड़े और फिर उन पर आशीषें उँडेले।

जिस प्रकार याकूब ने उसके बच्चों को उत्पत्ति 49 में आशीष दी थी उसे पढ़ो। पीढ़ियों के शापों को तोड़ने के बाद उसी प्रकार अपने बच्चों को भी आशीष दो। उसके बाद प्रभु भोज मनाओ और भाग लेते हुए इस सम्पूर्ण छुटकारे को दृढ़ करो।

(2) हर एक पर यीशु का लहू लगाते हुए अपने परिवार वालों के लिए प्रार्थना करो, कम से कम दिन में एक बार।

गुप्तविद्याः इसके मूल को और इसकी शक्ति को कैसे हराना है समझना

भाग्य बताना या शकुन-विचारना

भाग्य या भविष्य बताने या शकुन विचारने में बहुत से विविध व्यवहार शामिल हैं जो सब किसी न किसी प्रकार से अलौकिक साधनों द्वारा भविष्य बताने की कोशिश करते हैं। कभी-कभार यह नीमहकीमी से कुछ अधिक नहीं है। लेकिन असली भाग्य बताने का सीधा सम्बंध शैतानी प्रभावों से जुड़ा है जो असंदेही लोगों को उनके जीवनों के लिए परमेश्वर की प्रेमी दिशा से भटकाने और बहकाने की कोशिश करता है। जो लोग भाग्य बतानेवालों के पास जाते हैं उनके प्रभाव में आ जाते हैं और उनसे डरते हैं। भविष्य हमारे वश में नहीं बल्कि परमेश्वर के वश में है, और परमेश्वर से अलग भविष्य को जानने का कोई भी प्रयास हमें शैतानी प्रभावों में ले जाता है (व्यवस्था 29:29)। व्यवस्थाविवरण 18:10, "तुझ में कोई ऐसा न हो जो अपने बेटे या बेटी को आग में होम करके चढ़ानेवाला, या भावी कहनेवाला, या शुभ-अशुभ मुहूर्तो का माननेवाला, या टोन्हा, या तान्त्रिक, बाजीगर, या ओझों से पूछनेवाला, या भूत साधनेवाला, या भूतों का जगानेवाला हो।" (लैव्य. 19:26 भी देखो)। शुभ-अशुभ मुहूर्तो को मानना हर संस्कृति में जाना जाता है - भावी घटनाओं को कुछ शकुनों द्वारा बताना, उदाहरण, सड़क पर एक काली बिल्ली, 13 शुक्रवार, आदि। प्रेरितों 16-16-19 बताता है कि जो शकुन विचारते हैं ऐसा उनके भीतर रहनेवाली आत्माओं के द्वारा करते हैं।
भाग्य बताने की एक और प्रसिद्ध प्रकार हैः ज्योतिषविद्या - तारों को देखकर भविष्य बताना। इस चीज को आज मुख्य रूप से जनमपत्री कहते हैं, जिसकी बाइबल में कठोर मनाही है (यशायाह 47:13-14अ)। भविष्य बताना या शकुन विचारना के अनेक प्रकार हो सकते हैं, लेकिन पवित्रशास्त्र हमें किसी संदेह में नहीं रखता कि यह हमारा सीधा सम्पर्क शैतानी शक्तियों से कराता है, जो वैसे भी हमारे जीवनों को अपने वश में करने के लिए तैयार बैठे हैं।

जादू

गुप्त जादू में शामिल हैं मंत्र, तंत्र और दूसरे तरीके जिनका उद्देश्य लोगों पर या प्रकृत्ति पर अलौकिक साधनों द्वारा नियंत्रण पाना है। अलौकिक घटना जो होती है अकसर व्यक्ति की पाँच इन्द्रियों को समझ नहीं आती और प्रकृत्ति के नियमों के परे होती हैं। परन्तु, इनके करनेवाले (कभी-कभी अनजाने में) उनके परिणाम पाने के लिए शैतानी शक्तियों से मिलकर करते हैं। हालाँकि गुप्त जादू के विभिन्न प्रकार हैं, बाइबल किसी भी प्रकार में इनको करने की भारी निन्दा करती है (व्यवस्था 18:10-14; यशायाह 47:1-15)।
नोटः गुप्त जादू को कौतुक-व्यवसाय से उलझाना नहीं है, जिसे अकसर मनोरंजन के लिए इस्तेमाल किया जाता है, जो भ्रम की एक निर्दोष क्रिया है। लेकिन गुप्त जादू को 'चालबाजी' कहकर अनदेखा नहीं किया जा सकता है। इसमें अलौकिक शक्ति इस्तेमाल होती है। मूसा का सामना जादूगरों से हुआ था, लेकिन परमेश्वर का सामर्थ्य बड़ा था (निर्गमन 7:7-14)। पहली कलीसिया का भी अकसर खुलेआम जादूगरों से सामना होता था (प्रेरितों 8:1-24; 13:4-12; 14:8-12; 16:16-18; 19:11-20)।
जादू में बहुत से 'काला जादू' और 'सफेद जादू' में अन्तर करते हैं। काला जादू दूसरों को हानि पहुँचाने के लिए अलौकिक शक्तियाँ को इस्तेमाल करना है (कभी-कभी बिना जाने) जबकि सफेद जादू तावीजों को इस्तेमाल करता है दुष्ट शक्तियों से अपनी रक्षा के लिए। परन्तु, अकसर बिना जाने, इन चीजों के द्वारा, ये लोग रक्षा के लिए शैतानी शक्तियों को पुकारते हैं। जैसे एक मूर्ति सम्पर्क की एक चीज बन जाती है जिनके द्वारा शैतानी शक्तियों से सम्पर्क किया जाता है, वैसे ही तावीज भी दुष्टात्माओं के साथ सम्पर्क की चीजें बनती हैं। इसलिए इसकी भी निन्दा की गई है (1 कुरिन्थियों 10:19-20)।
दूसरे व्यक्ति में अपने विचार डालना, बोली या गति का विश्लेषण, जादू के प्रकार जो माना जाता है चुम्बकीय शक्ति और सम्मोहन (मानसिक सुझाव) इस्तेमाल करते हैं ऐसे व्यवहार ये सब जादू के प्रकार हैं जो हानिकारक परिणाम ला सकते हैं, क्योंकि वे ऐसा करने के लिए शैतानी शक्तियों को इस्तेमाल करते हैं।

तंत्र-मंत्र

हालाँकि कोई संदेह नहीं कि जादू, जादूटोना और भावी कहना एक दूसरे के स्थान पर इस्तेमाल होते हैं, सॉरसरी मुख्य रूप से उन चीजों के द्वारा काम करती है जो शारीरिक प्रभाव और परिणाम पैदा करते हैं। यह अकसर तावीज, कंगन, अँगूठी, काला धागा, कुछ प्रकार का प्रेरित संगीत और नाच, आदि इस्तेमाल करता है। ये सब लोगों के लिए एक असली बन्धन बन जाते हैं। लोग तब तक स्वतंत्रता नहीं पाएँगे जब तक ये चीजें नष्ट नहीं की जातीं और गुप्त सम्बंध तोड़े नहीं जाते।

जादूटोना

जादूटोना अलौकिक शक्तियों को गैर-बाइबल वाले परिणाम पाने के लिए इस्तेमाल करना है। यह शैतान की उपासना और विधिवाद से करीब से जुड़ा है जो पृथ्वी पर बुराई फैलाने के लिए समर्पित है। बहुत सारे लोग जो जादूटोना के विभिन्न प्रकारों में लगे होते हैं, अपने को या तो शैतान को समर्पित करते हैं या किसी दूसरी आत्मा को। इसलिए जादूटोना की असली शक्ति सीधी शैतानी शक्तियों से पाई जाती है। हालाँकि जाटूटोना का बाहरी रूप अलग-अलग संस्कृतियों में अलग हो सकता है, मूल सिद्धान्त एक ही है। पश्चिमी देशों में आजकल ऐसी चीजें हैं जैसे कि शैतान की कलीसिया, शैतान द्वारा प्रेरित संगीत, फिल्में (डरावनी, भूत, आत्माएँ, आदि), कॉर्टून, खेल (ऊजा बोर्ड, डन्जियन्स और ड्रैगन्स), आदि। कुछ त्योहार जैसे कि हॉलोवीन भी प्रारंभ में शैतानी ही हैं। लेकिन लोकप्रिय मॉर्शल आर्ट्स और योगा, जो दिखने में निर्दोष लगते हैं, प्रकृति और प्रारंभ में गुप्त हैं। विशेषकर जब कोई गहराई में जाने लगता है तब शैतानी प्रभाव बढ़ने लगते हैं। ये सब चीजें परमेश्वर के सामने पाप हैं, और परमेश्वर का वचन इस मामले में कोई संदेह नहीं छोड़ता।

व्यवस्थाविवरण 13:10-12, " तुझ में कोई ऐसा न हो जो... भावी कहनेवाला, या शुभ-अशुभ मुहूर्तों का माननेवाला, या टोन्हा, या तान्त्रिक, बाजीगर, या ओझों से पूछनेवाला, या भूत साधनेवाला, या भूतों का जगानेवाला हो। क्योंकि जितने ऐसे काम करते हैं वे सब यहोवा के सम्मुख घृणित हैं।" गलातियों 5: 19-21, "शरीर के काम तो प्रकट हैं... टोना... कि ऐसे ऐसे काम करने वाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे।"

1 शमूएल 15:23, "देख, बलवा करना और भावी कहनेवालों से पूछना एक ही समान पाप है।" इसलिए यदि कोई जादूटोना के अलावा किसी दूसरे साधन के द्वारा वश में करना या छलयोजना द्वारा प्रेरित करना चाहता है, तो अन्त में ये सब वही बात हो जाती है - शैतान की शक्ति को दूसरों पर छलयोजना चलाने और अपनी इच्छा दूसरे पर थोपने (अकसर बुराई के लिए) के लिए इस्तेमाल करना। रानी ईजेबेल ने सबको अधिकार में रखने के लिए जादूटोना (शासन में व्यक्त होता है) इस्तेमाल किया था, जिसमें उसका पति, राजा भी शामिल था। प्रकाशितवाक्य 2:20-23 एक स्त्री की बात करता है जो दूसरे मसीहियों को छलयोजना द्वारा पाप में ले जाती थी। यह कभी भी परमेश्वर की इच्छा नहीं है कि एक व्यक्ति दूसरे को अधिकार में रखे, और जब ऐसा होता है, तो इसके पीछे अकसर जादूटोना की शक्ति काम कर रही होती है। परमेश्वर की दृष्टि में विद्रोह जादूटोना के बराबर ही है (2 राजा 9:22)।

गुप्त पापों में शामिल होने के कुछ परिणाम

गुप्त पापों के परिणाम बहुत सारे हैं, लेकिन उन में से जो मसीही / विश्वासी बने हैं और जिन्होंने गुप्त पापों से सचमुच मन नहीं फिराया है, परिणाम अकसर ऐसी चीजें होता है, जैसे कि : परमेश्वर के वचन को पढ़ने और उसका आनन्द लेने में अयोग्यता; पवित्र आत्मा के कामों में संकट और विरोध भी; स्वस्थ्य मसीही विकास की कमी; अशुद्ध विचारों के साथ समस्या, और बहुत से दूसरे। इन में से कोई भी लक्षण होने पर सलाहकार को संदेह हो जाना चाहिए कि सलाह लेने आए व्यक्ति को नहीं निपटे गुप्त पापों के साथ समस्या हो सकती है।

कुरिन्थुस और इफिसुस के विश्वासी

कुरिन्थुस और इफिसुस की दोनों कलीसियाओं को पौलुस ने स्थापित किया था। फिर भी वे बहुत भिन्न थीं। कुरिन्थुस मिश्रण और बहुत सारी समस्याओं की एक कलीसिया थी, जबकि इफिसुस की कलीसिया एक मज़बूत और बढ़ रही कलीसिया थी। अन्तर था जिस प्रकार उन्होंने मूर्तिपूजा, गुप्त और अनैतिकता के पापों से निपटा था जो कितनी बार इनसे जुड़े होते हैं। कुरिन्थुस के विश्वासियों ने असल में कभी भी मूर्तिपूजा और गुप्त के पुराने जीवन से न तो मन फिराया था, और न सम्बंध तोड़ा था, जबकि इफिसुस के विश्वासियों ने किया था (2 कुरिन्थियों 6:14-18; 12:21; प्रेरितों 19:18-20)।

गुप्त पापों से कैसे छुटकारा पाया जाता है:

1. सब गुप्त पापों से मन फिराना, गुप्त के साथ शामिल होने से सम्पूर्ण त्याग। (2 राजाओं 23:24-25; 2 इतिहास 33:12-16; प्रेरितों 8:9-25; 19:18-20; 2 कुरिन्थियों 6:14-18)।

2. यीशु को अपने जीवन का पूरा प्रभु बनाओ। व्यक्ति के जीवन का हर क्षेत्र यीशु मसीह के प्रभुत्व के अधीन लाया जाना चाहिए। दूसरे सब पापों को भी मन फिराकर सच्चाई से निपटा जाना चाहिए नहीं तो वे शैतान के दोबारा आक्रमण के लिए एक खुला द्वार देंगे। (इफिसियों 4:27; फिलिप्पियों 2:9-11)

3. यदि आवश्यक हो, पूर्वजों के पापों को स्वीकार किया जाना चाहिए।

4. आपके पास की सब गुप्त चीजों को नष्ट किया जाए और गुप्त और गुप्त लोगों से सारा सम्बंध तोड़ डाला जाए। (व्यवस्थाविवरण 7:25-26; प्रेरितों 19:19; 2 कुरिन्थियों 6:17-18)

5. दुष्टात्माओं को निकालना। जो लोग गुप्त पापों में गहराई से फँसे हुए होते हैं, सब गुप्त पापों को स्वीकार करने और मन फिराने के बाद, उनको अकसर दुष्टात्माओं से छुटकारे की आवश्यकता होती है। (मरकुस 16:17; प्रेरितों 16:16-19)

निष्कर्ष

गुप्त एक साधन है जिसे शैतान पुरुषों और स्त्रियों के मनों को अंधा करने के लिए इस्तेमाल करता है, जिससे कि वे यीशु मसीह का सुसमाचार स्वीकार नहीं कर सकें (2 कुरिन्थियों 4:4)। यह एक सम्भावित विनाशक क्षेत्र है, जो बड़ी मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक समस्याएँ लाता है, जिनके कभी-कभी शारीरिक परिणाम भी होते हैं, उनके लिए जो इसमें लगे होते हैं, और अकसर उनके वंश वालों के लिए भी (निर्गमन 20:5; यूहन्ना 10:10)। गुप्त क्षेत्र एक द्वार है, जो शैतानी प्रभाव, छलयोजना और दुष्टात्माग्रस्त होने के निषेद क्षेत्र में जाता है। मसीही और गैर-मसीही अच्छा हो कि 1 यूहन्ना 5:21 में दी गई यूहन्ना की सलाह को सुनें, "हे बालको, अपने आप को मूरतों (जिसमें गुप्त क्षेत्र और इसके साथ सम्बंधित सब कुछ शामिल है) से बचाए रखो।"

आशीषें और शाप – परमेश्वर के वचन से एक विश्लेषण

मसीही को मानना सीखना है - अर्थात् आशीषों और शापों को। दोनों मिलकर एक प्रमुख बाइबल का विषय हैं। 'आशीष' या 'आशीष देने' के लिए शब्द पवित्रसास्त्र में 410 बार पाए जाते हैं और शाप के लिए विभिन्न शब्द लगभग 230 बार मिलते हैं। यह कुल मिलाकार 640 बाइबल के संदर्भ होते हैं।

"**<u>आशीष या शाप हैं</u>**: आत्मिक अधिकार द्वारा बोले गए शब्द, भले या बुरे, जो घटनाओं या हालातों को शुरू करते हैं जो पीढ़ी से पीढ़ी चलते रहते हैं।" ये उच्चारण अलौकिक शक्ति के लिए साधन हैं और परमेश्वर के स्वभाव के दो भिन्न पहलुओं को दर्शाते हैं: उसकी कृपा और उसकी कड़ाई (रोमियों 11:22)।

बाइबल का सम्पूर्ण परीक्षण हमें दिखाएगा कि कौन से रवैये और व्यवहार परमेश्वर आशीष देने की प्रतिज्ञा करता है और किन के बारे में वह चेतावनी देता है वह शाप देगा। इन विषयों की एक बाइबल की समय हमारी एक के लाभ का आनन्द लेने और दूसरे के हानिकारक प्रभावों से बचने में सहायता करेंगे।

1. आशीष का प्रमुख साधन

परमेश्वर से आशीष का प्रमुख साधन परमेश्वर के वचन में व्यक्तिगत विश्वास और प्रभु की ओर आज्ञापालन का एक दीन रवैया है। बाइबल ऐसे कहती है: "इसलिए परमेश्वर के अधीन हो जाओ; और शैतान का सामना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा।" (याकूब 4:7)। ध्यान दो कि प्रतिज्ञा केवल "शैतान का सामना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा" नहीं कहती। नहीं! शैतान पर विजय का पहला कदम "परमेश्वर के अधीन हो जाओ" है। यदि हम ने पहला कदम (परमेश्वर के अधीन होना) नहीं लिया है, तो दूसरे कदम (शैतान का सामना करो) में कोई सामर्थ्य नहीं होगा।

व्यवस्थाविवरण हमें मूल सच्चाई बताती है: "यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा की सब आज्ञाएँ, जो मैं आज तुझे सुनाता हूँ, चौकसी से पूरी करने को चित्त लगाकर उसकी सुने, तो वह तुझे पृथ्वी की सब जातियों में श्रेष्ठ करेगा। फिर अपने परमेश्वर यहोवा की सुनने के कारण ये सब आशीर्वाद तुझ पर पूरे होंगे।" (व्यवस्था 28:1-2)। अगली तेरह आयतें उनसे अदभुत आशीषों की प्रतिज्ञा करती हैं जो परमेश्वर का आदर करते और उसके वचन का पालन करते हैं।

2. शापों का प्रमुख साधन

आज्ञोल्लंघन की प्रमुख प्रकार जो परमेश्वर के शाप को उत्तेजित करती है झूठे देवताओं को मानना और उनकी उपासना करना है। निर्गमन 20:3-5 कहता है: "तू अपने लिए कोई मूर्ति खोदकर न बनाना, न किसी की प्रतिमा बनाना, जो आकाश में, या पृथ्वी पर, या पृथ्वी के जल में है। तू उनको दण्डवत् न करना, और न उनकी उपासना करना; क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखने वाला परमेश्वर हूँ, और जो मुझ से बैर रखते हैं, उनके बेटों, पोतों, और परपोतों को भी पितरों का दण्ड दिया करता हूँ, और जो मुझ से प्रेम रखते और मेरी आज्ञाओं को मानते हैं, उन हज़ारों पर करुणा किया करता हूँ।" <u>यह मायने रखता है हम किसकी उपासना करते हैं और यह मायने रखता है हमारे पूर्वज किसी की उपासना किया करते थे।</u>

...बाइबल इसे बिलकुल स्पष्ट करती है: परमेश्वर मूरतों से घृणा करता है!!! हमें मूरतों के साथ किसी भी प्रकार के सम्पर्क और झूठे देवताओं की उपासना को पहचानना, मन फिराना, और त्याग देना है। परमेश्वर झूठे देवताओं के इस मामले के बारे में इतना भावुक इसलिए है क्योंकि वह हम से इतना प्रेम जो करता है। जब एक पुरुष एक स्त्री से प्रेम करता और उसे अपना हृदय दे देता है, तब उसे आश्वासन चाहिए कि उसने दूसरे सब मनुष्यों को त्याग दिया है जो उसके लिए पहले कोई मायने रखते होंगे। प्रभु चाहता है कि वह ही हमारा एकमात्र प्रेम और हमारे जीवनों का परमेश्वर हो।

2 कुरिन्थियों 11:2 मसीह की ओर वाचा के प्रेम और व्यक्तिगत शुद्धता के सम्बंध में पौलुस के सच्चे उत्साह के बारे में प्रकट करता है: "क्योंकि मैं तुम्हारे विषय में ईश्वरीय धुन लगाए रहता हूँ, इसलिए कि मैं ने एक ही पुरुष से तुम्हारी बात लगाई है कि तुम्हें पवित्र कुँवारी के समान मसीह को सौंप दूँ।" सारे अनन्तकाल भर मसीह की दुलहिन होने की आशा दूसरे सब देवताओं को त्याग देने के लिए एक शक्तिशाली प्रेरणा है।

जबकि मसीही समूह के सदस्य दूसरे समूहों द्वारा पूजे जाने वाले देवताओं या मूरतों के बारे में जानते ही होंगे, लेकिन हमें अपने कंधे उचकाकर यह नहीं कहना है: "यह मेरे लिए नहीं है।" मूरत की परिभाषा है: "उपासना या भक्ति के लक्ष्य के रूप में एक प्रतिमा।" सच्चे मसीहियों को ऐसे मूरतों की उपासना से सम्बंधित परमेश्वर की आज्ञा के विषय में कोई कठिनाई

नहीं होनी चाहिए। "तू अपने लिए कोई मूर्ति खोदकर न बनाना...।" पूजा करने का अर्थ है: "एक मूरत की ओर श्रद्धा रखना, प्रेम करना।"

इसलिए, हर विश्वासी और मसीही को अपना हृदय जाँचना चाहिए और अपने जीवन में किसी भी चीज का पता लगाना चाहिए जिसे वह इतना महत्त्वपूर्ण समझता है कि उससे अत्यधिक प्रेम करता और श्रद्धा और आदर की भावना से देखता है। मसीही, समाज में स्थान या प्रतिष्ठा को, शिक्षा को मूरत बनाने के दोषी, पैसे की उपासना करने, परिवारों और नौकरी-धंधे में अधिकार को मूरत बनाने के दोषी पाए जा सकते हैं। मसीही दूसरे मनुष्य को, जैसे कि एक बच्चे को मूरत बनाने, या किसी धन-सम्पत्ति को मूरत बनाने के योग्य हैं। ये सब चीजें, और कुछ और भी उस स्थान को ले सकती हैं जिसे परमेश्वर आपके जीवन में लेना चाहता है। असल में, एक मूरत कोई भी चीज हो सकती है जो हमारे हृदयों और जीवनों में पहला स्थान और प्राथमिकता लेती है जो केवल प्रभु यीशु के लिए आरक्षित है। इसी स्थान पर मसीही विश्वासी को उसके जीवन की जाँच करनी चाहिए, पता लगाने के लिए कि परमेश्वर के साथ उसके सम्बंध से अधिक महत्त्वपूर्ण उसके लिए क्या है। साहस के साथ और निश्चित रूप से उस चीज को पिता को दे दो, इसे स्वीकार करो और परमेश्वर की आशीष में चलो।

3. शापों के दूसरे साधन

इसके अतिरिक्त, पुराना नियम आज्ञोल्लंघन के दूसरे कुछ साधन बताता है जिन पर परमेश्वर ने एक शाप डाला हुआ है। व्यवस्थाविवरण 27:15-26 में, मूसा बारह नैतिक पापों का नाम लेता है, जिन में से सब परमेश्वर के शाप लाते हैं। जिनमें शामिल हैं: माता-पिता के अनादर का पाप, निर्बल और बेसहारा का अनुचित लाभ उठाने का पाप, और सब प्रकार के अवैध और / या अस्वाभाविक लैंगिक सम्बंध।

4. शाप कैसे डाले जा सकते हैं

अ. सम्बंधी

उत्पत्ती 31 में याकूब और उसके परिवार की लाबान से भागने की कहानी बताई गई है। लाबान याकूब का मामा होने के अलावा, उसका ससुर और मालिक था। जब लाबान को पता चला कि याकूब और उसकी बटियाँ उनके सारे पशुओं और सामान के साथ भाग गए हैं, वह उनके पीछे गया और माँग की कि उसक ग्रहदेवताओं को लौटा दिया जाए। राहेल ने मूरतों को चुराया था और क्योंकि वह देना नहीं चाहती थी इसलिए झूठ बोल दिया।

जब याकूब पर कनान के झूठे देवताओं को चुराने का दोष लगाया गया, तब उसने कहा: "जाओ और मेरे सारे तम्बुओं की खोज करो। यदि तुम्हें किसी के पास ग्रहदेवता मिलते हैं तब वह जीवित नहीं रहेगा।" याकूब को पता नहीं था कि राहेल सबको धोखा दे रही थी और उसके पास की मूरतें थीं। उसने अनजाने में अपनी पत्नी पर शाप डाल दिया था। केवल चार अध्यायों के बाद, उत्पत्ति 35:19 में, राहेल ने अपने एक बेटे को जन्म देने के समय लगभग छोटी उम्र में ही दम तोड़ दिया। इस प्रकार हम देख सकते हैं कि उनके शब्दों में जो हम पर अधिकार रखते हैं बड़ी शक्ति होती है। इसलिए आवश्यक है कि हम अपने सारे सम्बंधों में सच्चे हों, लेकिन विशेषकर अपने अधिकारियों के साथ सच्ची बातचीत बनाए रखें।

ब. स्वगृहीत (खुद अपने ऊपर डाले गए)

उत्पत्ति 27:11-13 में, रिबका, छलयोजना बनानेवाली माँ उसके बेटे याकूब से आग्रह करती है कि वह उसके पिता इसहाक को धोखा दे, और उसके भाई, एसाव की आशीषें चुरा ले। जब याकूब ने कहा कि उसके पिता को धोखा देकर आशीषें पाने के चक्कर में कहीं शाप न मिल जाए, तब रिबका ने कहा: "शाप मुझ पर पड़े।" यह घोषणा कितनी बुद्धिहीन थी, क्योंकि रिबका ने अपने आपको शाप दिया और दोबारा अपने बेटे को कभी न देख सकी। उनके छलयोजना के षड्यन्त्र ने एसाव में एक गहरा रोष और भाइयों में एक लम्बे समय का अलगाव भर दिया, जिसके कारण याकूब को निर्वासन में रहना पड़ा। जब वह, बहुत वर्षों बाद लौटा, उसके दोनों माँ-बाप मर चुके थे।

स. शैतानी प्रभाव

अन्त में, शाप शैतानी प्रभाव के कारण भी आ सकते हैं। लोग, जब उनके पापी स्वभाव उत्तेजित होते हैं और वे क्रोध महसूस करते हैं हमें शाप दे सकते हैं। हम सब, निस्संदेह, अपने जीवनों में इस प्रकार का भावात्मक क्रोध महसूस करेंगे। जब हमें शाप दिया जाता है, तब रोमियों 12:21 हमारा आदर्शवाक्य होना चाहिए: "भलाई से बुराई को जीत लो।" और, 1

पतरस 3:9 विशेषकर हमें कहता है "बुराई के बदले बुराई मत करो" पर इसके विपरीत आशीष ही दो। यह मसीहियों के लिए एक निष्क्रिय रवैया नहीं, बल्कि एक सक्रीय रवैया है। दमन मत करो, आशीष दो।

5. ईश्वरीय हथियार की परमेश्वर की प्रतिज्ञा

हमें कभी नहीं भूलना है कि परमेश्वर ने हमारे लिए हमारे प्राण के शत्रु के हर एक "जलते हुए तारों" का सामना करने के लिए एक शक्तिशाली प्रबंध किया है। यीशु मसीह की प्रायश्चित की मृत्यु और पुनरुत्थान हमारे लिए एक अलौकिक हथियार प्रदान करता है जिसे हम जीवन में पहने रह सकते हैं (इफिसियों 6:11-18)। ये अद्भुत वचन हमारे जीवन के हर क्षेत्र की रक्षा की प्रतिज्ञा करते हैं। हमारे उद्धार के टोप से लेकर, जो हमारे विचारों का बचाव करता है, धार्मिकता की "झिलम", जो हमारे हृदय के हर अभिप्राय और भावनाओं को छिपाती है, पाँवों में "सुसमाचार की तैयारी के जूते", जो हमारी परमेश्वर द्वारा निश्चित मार्ग में चलने में सहायता करते हैं, हम नरक के हर शाप और युक्ति या योजना के विरुद्ध पवित्र आत्मा की उपस्थिति द्वारा दृढ़ किए गए हैं। इफिसियों के अध्याय 6 के इन वचनों का आयत 13 में निष्कर्ष इस प्रकार है: "...कि तुम बुरे दिन में सामना कर सको, और सब कुछ पूरा करके स्थिर रह सको।"

तो क्या हम खड़े हैं या क्या हमें हमारे मसीही गवाही को एक भक्त और जयवन्त जीवन के सामर्थ्य में बनाए रखने में कठिनाई हो रही है? आओ हम एक बार फिर व्यवस्थाविवरण के महत्त्वपूर्ण अठाइसवें अध्याय को देखें और इसे हमारे जीवनों को जाँचने के लिए इस्तेमाल करें। क्या हम आज्ञाकारी हैं या अवज्ञाकारी हैं? क्या हम परमेश्वर की आशीष में जी रहे हैं या क्या हम एक शाप में परिश्रम कर रहे हैं? व्यवस्था 28:1-14 परमेश्वर की आशीष का विवरण देती है: स्वास्थ्य, उत्पादकता, समृद्धि, विजय, परमेश्वर की कृपा। इसके विपरीत, व्यवस्था 18:15-68 शाप का वर्णन इस प्रकार करता है: अपमान, मानसिक और शारीरिक रोग, परिवार का टूटना, गरीबी, हार, सताव, असफलता, और परमेश्वर की घृणा।

प्यार मित्र, हो सकता है आप एक शाप में परिश्रम कर रहे हैं जिसे आप ने या आपके पूर्वजों ने लाया होगा। लेकिन आप स्वतंत्र हो सकते हो। परमेश्वर के पास एक इलाज़ है जो उतना ही निकट है जितना उसके वचन की प्रतिज्ञा है। हिम्मत रखो और प्रभु की ओर देखो। परमेश्वर के पास हमारे जीवनों में शापों का एक इलाज़ है - क्रूस, जहाँ यीशु मसीह मरा था जो सब बुराइयों और शापों से हमारी मुक्ति को सम्भव करता है।

6. उसके लोगों पर शापों के लिए परमेश्वर का उत्तर

गिनती 21:6-9 में, मूसा और परमेश्वर के लोगों की जहरीले साँपों में फँसे होने की एक स्पष्ट तस्वीर है। इन साँपों के घातक डँक से छुटकारे का कोई उपाय नज़र नहीं आ रहा था। मूसा ने परमेश्वर को खोजा और उसे इलाज़ दिया गया: "एक साँप बना और उसे एक खम्भे पर लटका दे। कोई भी साँप का काटा हुआ इसे देख लेगा तो बच जाएगा।" यह हमारे प्रभु यीशु का क्रूस पर लटके होने का पूर्व संकेत देता है। उसके बड़े प्रेम के बारे में सोचो.....वह असल में आपके शापों से शापित हो गया। जब यीशु मरा, आपका शाप मर गया और साँप का सिर उसके पैरों के नीचे कुचला गया। उसकी ओर देखो और जीओ। क्रूस को देखो।

7. एक शाप से छुटकारा पाने के व्यक्तिगत कदम

(1) मसीह में अपने विश्वास और आपके लिए उसकी मृत्यु को स्वीकार करो।
(2) अपने सब विद्रोह और अपने पाप से मन फिराओ।
(3) सब पापों की क्षमा लो, जिसमें आपकी पिछली पीढ़ियों के पाप भी शामिल हैं (विशेषकर मूर्तिपूजा और / या तंत्र-मंत्र के पापों की)।
(4) दूसरे सब लोगों को क्षमा करो जिन्होंने आपको कभी हानि पहुँचाई या आपके साथ बुरा किया होगा।
(याद रहे, क्षमा करना मुख्य रूप से एक भावना नहीं बल्कि एक फैसला है)
(5) किसी भी तंत्र-मंत्र या शैतानी चीज से सब सम्पर्क तोड़ दो। इसमें शामिल है कि आप मूरती जैसी हर चीज को नष्ट कर दो।
(6) एक शाप तोड़ने के लिए इस प्रार्थना को करो:
"प्रभु यीशु, मेरा विश्वास है कि क्रूस पर तू ने अपने ऊपर हर शाप को ले लिया जो कभी मेरे ऊपर आ सकता था। मैं अपने आप को तेरे अधीन करता हूँ और मेरे पापों से और हर एक तरीकों से मन फिराता हूँ जिनके द्वारा मैं ने किसी

तंत्र-मंत्र या किसी ऐसी चीज में भाग लिया होगा जो तुझे अप्रसन्न करती है। मैं अब तुझ से माँगता हूँ कि मुझे मेरे जीवन के हर शाप से मुक्त कर दे। तेरे नाम में, प्रभु यीशु मसीह। विश्वास से, अब मैं अपना छुटकारा लेता हूँ, और मैं इसके लिए तेरा धन्यवाद करता हूँ। आमीन।"
अब विश्वास करो कि आपको मिल गया है, और परमेश्वर की आशीष में जाओ।

8. ईश्वरीय आदान-प्रदान

क्रूस पर सब बुराई जो हम पर आनी चाहिए थी हमारे पापों और विद्रोह के कारण यीशु मसीह पर आई। हमारे उद्धारकर्त्ता के बलिदान पर विश्वास के द्वारा उसके सिद्ध आज्ञापालन के कारण हर भली चीज जो यीशु मसीह की है अब हमारी है। हम एक यशस्वी, ईश्वरीय आदान-प्रदान कर सकते हैं। गलातियों 3:13-14 पर मनन करो, "मसीह ने जो हमारे लिए शापित बना, हमें मोल लेकर व्यवस्था के शाप से छुड़ाया, क्योंकि लिखा है, "जो कोई काठ पर लटकाया जाता है वह शापित है।" यह इसलिए हुआ कि अब्राहम की आशीष मसीह यीशु में अन्यजातियों तक पहुँचे, और हम विश्वास के द्वारा उस आत्मा को प्राप्त करें जिसकी प्रतिज्ञा हुई है।" आओ आनन्द मनाएँ कि उसकी शाप की जगह - उसका क्रूस - हमारे इलाज़ की जगह और उसकी आशीष पाने की जगह बन गई है। हालेलुया। हम राजा के धन्य सन्तान के रूप में साहस के साथ आगे बढ़ सकते हैं।

कब्र के वस्त्र (गुप्त के बन्धनों और कार्यो का पता लगाने के लिए विस्तारित, व्याख्या की हुई व्यक्तिगत जाँच-सूची जिनमें शायद आप लगे हुए होंगे, ताकि आप मन फिरा सको, त्याग सको और यीशु मसीह हमारे प्रभु के द्वारा उनके प्रभाव और परिणामों से मुक्त हो सको)

<u>क्या आपने कभी निम्नलिखित में से किसी से भी मार्गदर्शन या जानकारी पाने की कोशिश की है? (चाहे केवल थोड़ी सी या चाहे केवल 'मजे के लिए' ही)</u>

<u>श्रृँखला पत्र।</u> पूर्तिपूजा का पाप। परमेश्वर हमारा स्रोत। परमेश्वर हमें धन बनाने की सामर्थ्य देता है। जरूरतों के लिए किसी दूसरे स्रोत की ओर देखना एक शाप लाता है। किसी भी पत्र को जो आपने पाया होगा छोटे छोटे टुकड़ों में फाड़ दो और अपने ऊपर पर से इसके अधिकार को त्याग दो। शाप से डरो मत। नीतिवचन 26:2; गिनती 23:8

बैठक। (प्रेतात्मवाद)। प्रेतात्मवादी उनके दावों के समर्थन के लिए शाऊल और शमूएल की कहानी को इस्तेमाल करते हैं। आओ हम 1 शमूएल 28 में इस कहानी पर एक करीब से नज़र डालें। सबसे पहले, इस स्त्री ने आत्माओं को भूमि में से आते देखा जिन्हें उसने "देवता" कहा। हम सब जानते हैं कि परमेश्वर स्वर्ग में है, नीचे भूमि में नहीं है, और उस देवता का रूप शमूएल जैसा था। यह बहुत असंभावित है कि शमूएल जैसा परमेश्वर का भक्त दुष्ट आत्माओं के पीछे चलेगा। तब हम शाऊल को बोलते सुनते हैं कि परमेश्वर उसे उत्तर नहीं देता, न तो भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा?....और न सपनों के (आ. 15)। तो इस तथाकथित शमूएल से पूछने का क्या लाभ था। यदि परमेश्वर जीवंत भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा उत्तर नहीं दे रहा था, तो ऐसा संभव लगता नहीं कि वह एक मरे हुए भविष्यद्वक्ता के द्वारा उत्तर देगा। परमेश्वर ने उसके वचन में कहा है कि जो मरे हुओं से सलाह लेते हैं परमेश्वर और मनुष्यों में से अलग किए जाएँगे। यशायाह 8:22। यह तथाकथित शमूएल शाऊल से कहता है, "और तू अपने बेटों समेत कल मेरे साथ होगा।" (बड़ी संभावना है कि स्वर्ग में तो नहीं!)

<u>हाथ के रेखाएं पढ़नेवाले</u>। जो वे आपके हाथ में पढ़ सकते हैं "तुम्हारे देवता का तारा" की योजना ही है, जो नाम बाइबल ओमोस 5:26 में आपके तारे या राशि का चिन्ह को देती है, जिसे उसने आपके जीवन के लिए तैयार किया है। शैतान झूठा है।

<u>चाय के पत्ते।</u> आज भी किया जाता है, वैसे ही जैसे ओझा हड्डियाँ फेंकता है।

क्रिस्टल बॉल। आजकल इसे करने का अधिक वैज्ञानिक तरीका है किसी को अपनी आँखों में झाँकने देना और भविष्यद्वाणी करना कि कौन सी बीमारी आपको अभी भी है और कौन सी बीमारी आप को हुई थी।

टैरोत कार्ड। ओझाओं और भावी कहनेवालों द्वारा इस्तेमाल किए जाते हैं जो आपका भविष्य बताते हैं।

ऊजा बोर्ड। एक बोर्ड के माध्यम से दुष्ट आत्माओं के साथ सम्पर्क साधना, जिसमें एक लकड़ी का टुकड़ा बोर्ड पर अक्षरों की ओर संकेत करता है।

ग्लासी ग्लासी। एक काँच एक मेज पर रखा जाता है और लोग उनकी अँगुलियाँ काँच पर रखते हैं। दुष्ट आत्माएँ काँच को हिलाती हैं, मेज के चारों ओर सजाए अक्षरों की ओर संकेत करके, फिर पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देती हैं।

लिखावट विश्लेषण - लिपि-विज्ञान। जब लोगों का नया जन्म होता है और उनका चरित्र बदल जाता है लेकिन उनकी लिखावट वैसी ही रहती है। शैतान झूठा है।

लाइफ रीडिंग मेड। Life Reading Made। जैसे रीशि के भाग में बताया गया है।

जन्मकुण्डली। जैसे राशि के भाग में दिया गया है।

भाग्य के बिस्कुट। चीनी होटेल वाले देते हैं, और उनके बिस्कुटों के अन्दर एक कागज का टुकड़ा होता है जिस पर आपका भाग्य क्या होगा लिखा होता है।

वजन मशीन कार्ड। जब आप एक सार्वजनिक वजन मशीन पर अपना वजन देखते हो, तो यह आपको छोटा कार्ड देती है जिस पर आपका वजन और आपका भाग्य लिखा होता है।

स्वचालित लिखना। व्यक्ति बैठ जाता है, उसके सामने एक कागज का टुकड़ा, पेन्सिल, और मन शून्य होता है। दुष्ट आत्मा मन को अधिकार में ले लेती है और आपको लिखने या पेन्ट करने के लिए प्रेरित करती है। 2 तीमु 3:16 कहता है कि परमेश्वर का वचन हमें परमेश्वर की प्रेरणा से दिया गया है, मन के नियंत्रण के द्वारा नहीं जैसा स्वाचालित लिखने के साथ होता है। एक स्पष्ट जाली चीज।

राशि। पहले बताया गया है। क्या आप जानते हो कि जब आप लोगों से मिलते हो आप अभी भी उनके राशि के अनुसार उनका भविष्य बताने की कोशिश करते हो ? आपको इन पिछली बातों से अपने मन को शुद्ध करने की आवस्यकता है।

यू एफ ओ। विश्वास किया जाता है कि ये लोगों को परमेश्वर से दूर खींचने के लिए दुष्ट आत्माओं के प्रदर्शन हैं। किसी विश्वासी के उनको देखने की कोई रिपोर्ट नहीं मिली है।

सपनों की व्याख्या। व्यवस्थाविवरण 13:1-3 में, "यदि तेरे बीच कोई भविष्यद्वक्ता या स्वपन देखनेवाला प्रगट होकर तुझे कोई चिन्ह या चमत्कार दिखाए, और जिस चिन्ह या चमत्कार को प्रमाण ठहराकर वह तुझ से कहे, 'आओ हम पराए देवताओं के अनुयायी होकर, जिनसे तुम अब तक आनजाने रहे, उनकी पूजा करें,' तब तुम उस भविष्यद्वक्ता या स्वपन देखनेवाले के वचन पर कभी कान न धरना।" लोग सपनों को लक्षणों द्वारा समझाने की कोशिश करेंगे।
सच्चे विश्वासियों के लिए आत्मिक सपने हैं। अय्यूब 33 इसका जिक्र करता है और प्रेरितों 2:17 में भी, जहाँ परमेश्वर कहता है कि पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के बाद, विश्वासी सपने देखेंगे। कभी-कभी ऐसे सपने होते हैं जहाँ पवित्र आत्मा आपको आत्मिक युद्ध सिखाता है। अय्यूब 33 में, लिखा है कि परमेश्वर एक मनुष्य से दो या तीन बार बात करता है और यदि वह नहीं सुनता है तब वह मृत्यु के द्वार के निकट आएगा और फिर उस मनुष्य के लिए आशा और पुनःस्थापना होगी जब वहाँ हज़ारों के बीच एक

ऐसा मनुष्य होगा जो इस मनुष्य को बता सकता है कि परमेश्वर के साथ सही सम्बंध में कैसे आना है...। दानिय्येल 2:28 में, परमेश्वर को भेदों का प्रकट करनेवाला कहा गया है। दानिय्येल और यूसूफ दोनों ने कहा कि सपनों का अर्थ प्रभु के पास है। परमेश्वर कभी भी हमें मध्य हवा में लटकने नहीं देता। दानिय्येल और यूसुफ दोनों के सपनों के साथ बुद्धि का शब्द भी आया था कि सपनों के बारे में क्या करना है। यदि आपका सपना परमेश्वर से है तब वह उसके वचन की पुष्टि करेगा जो आपके पास उस सपने में आया था। (यिर्म. 23:28-29)।
यदि आपने अपने उद्धार के पहले सपनों का अर्थ बताने का काम किया है तब आपको इसे त्यागना है और पिछले सारे चिन्ह आपके मन में से यीशु के लहू के द्वारा निकाल देना है।
यदि आपको एक आत्मिक सपना मिलता है, परमेश्वर से उसका अर्थ पूछो और वह आपको दे देगा, बहुत बार उसके वचन के द्वारा।

ओझा। कभी-कभी एक पतित मनुष्य की आत्मा उसके प्राण और देह से अधिक शक्तिशाली हो सकती है और उसके सारे व्यक्तित्व पर अधिकार ले सकती है। ऐसे लोग "आत्मिक" है जैसे अधिकतर लोग मुख्य रूप से प्राण के या शारीरिक होते हैं, क्योंकि उनकी आत्माएँ सामान्य लोगों से अधिक बड़ी होती हैं। ये लोग तांत्रिक और डायनें या ओझा होते हैं। वे सचमुच आत्मिक क्षेत्र से सम्पर्क बनाए रखते हैं; लेकिन वे ऐसा दुष्ट आत्माओं के द्वार करते हैं, पवित्र आत्मा के द्वारा नहीं।

एक बुलावे के साथ जन्मा। कुछ बच्चे जब जन्म लेते हैं झिल्ली अभी भी उनके सिरों या चेहरे पर लिपटी होती है। धारणा यह है कि ऐसे बच्चा एक बुलावे के साथ पैदा हुआ है, आत्मिक क्षेत्र में देखने की योग्यता के साथ। असल में क्या होता है कि यह प्रकृति की एक तरंग है और इसका अर्थ बिलकुल कुछ भी नहीं है। परन्तु, जब माता-पिता या दाई घोषणा करती है कि बच्चा "एक बुलावे के साथ" जन्मा है, तो उस क्षण जबकि यह बच्चा एक ऐसे संसार में जन्मा है जो अभी भी दुष्ट के शासन में है, आत्माएँ इस बच्चे पर अधिकार जताती हैं ताकि उसे इस्तेमाल कर सकें। (1 यूहन्ना 5:19)। इसे त्यागा जाना चाहिए और अनेक बार झिल्ली सुखाई और रखी जाती है और नष्ट की जानी चाहिए। यह शैतान का जाली बुलावा है।

क्या आपने कभी निम्नलिखित में भाग लिया या उन्हें टीवी पर देखा है? (जब आप टीवी पर या एक फिल्म में कुछ देखते हो, तब आपका दिमाग जो परदे पर होता है उस में भाग लेता है, जैसे कि आप असल में वहाँ हो।)

जादू। यह आपके बच्चों के मनों को दुष्ट शक्तियों के और अलौकिक प्रदर्शनों के लिए अनुकूल बना देता है।

हाथ की सफाई। बुराई के सब रूपों से बचो।

आकाशगामिता (हवा में उठ जाना)। हवा में उठाना और घुमाना, अक्सर दुष्ट शक्तियों के इस्तेमाल से।

सूक्ष्म यात्रा। यह पवित्र आत्मा द्वारा परिवहन की नकल है। (यहेजकेल 8:3 और प्रेरितों 8:39)।

पेटीबोली। अपनी आवाज को दूसरी चीज के द्वारा निकलने देना। जैसे प्रकाशित 13:5 में, "बड़े बोल बोलने और निन्दा करने के लिए उसे एक मुँह दिया गया - यह योग्यता उसे अजगर ने दी थी।" यह गिनती 22:28 की नकल है।

पानी द्वारा भावी कहना। परमेश्वर का वरदान नहीं है। वेश्यवृत्ति की आत्मा (होशे 4:12)। ज्ञान के वचन की नकल जैसा हाजिरा को दिया गया था, उत्प 21:19। यह पानी के साथ एक शाप लाता है। परमेश्वर हमें बता सकता है कि पानी कहाँ है जब हम प्रार्थना करते और पवित्र आत्मा पर निर्भर होते हैं।

अतीन्द्रिय दृष्टि। दूसरा का मन पढ़ना। पवित्र आत्मा के प्रकटिकरण वाले वरदानों की नकल।

डे जा वू। "मैं ने इसे पहले देखा है", या "मैं वहाँ पहले गया हूँ।" पवित्र आत्मा के प्रकटीकरण वाले वरदानों की एक नकल। इस प्रदर्शन को शैतान लोगों को निश्चय दिलाने के लिए इस्तेमाल करता है कि उनके पहले ही एक से अधिक जीवन हैं। उनको अवतार पर विश्वास दिलाता है।

मनोमिति। विचारों की प्रक्रिया द्वारा शारीरिक चीजों या घटनाओं को प्रभावित करने की योग्यता।

मानसिक दूरसंवेदन (टेलीपैथी)। विचारों के द्वारा मनों के बीच संचार करने की योग्यता।

दूसरों पर मंत्र डालना। क्या आप जानते हो मसीही भी किसी से नाराज़ होकर जादूटोना करते हैं, तुम जिस से नाराज हो उसे बाँधते हो।
वूडू मंत्र।

छलयोजना - जादूटोना। वश में करने की आत्मा से सावधान रहो।

सफेद जादू। फूँक कर मस्सा निकालना, मुर्गी के लहू को छिड़क कर लोगों को चंगा करना।

क्या आप ने भाग लिया है या अधीन हुए हो:

सम्मोहन। दूसरों को आपको अर्ध-चेतना में की स्थिति में लाने देना।

मानसिक चंगाई।

योगा। "मैं केवल व्यायाम करता हूँ।" योगा हिन्दु धर्म और दर्शन का एक भाग है। 1 कुरि. 10:18 "क्या बलिदानों के खाने वाले वेदी के सहभागी नहीं?" आयत 22, "क्या हम प्रभु को क्रोध दिलाते हैं?"

कराटे। एक खूनी आत्मा का वाहन। एक धर्म भी।

अक्यूपन्कचर। पवित्र आत्मा के सामर्थ्य की नकल, पवित्र आत्मा जो हमारे शरीर की हर नस को स्पर्ष करता है।

गैर-मसीही झाड़-फूँक। पवित्र आत्मा के अलावा, दुष्टात्माओं को अधिक शक्तिशाली आत्माओं द्वारा निकालने का प्रयास।

ई.एस.पी. अतिरिक्त संवेदी बोधः उन चीजों को जानना जिन्हें शरीर की पाँच इन्द्रियों द्वारा जाना या देखा नहीं जा सकता है।

टी.एम. अनुभवातीत मनन एक शालीन हिन्दु धर्म है, दूसरों को धोखा देने के लिए प्रकृति में धर्म।

क्या आपने निम्नलिखित में कभी विश्वास किया था या को इस्तेमाल किया था?

भाग्य (लॅक) "लूसीफर" से आता है। मसीही धन्य हैं (नीतिवचन 10:22)। एक गिरते हुए तारे के समय कामना करना; जन्मदिन की बत्तियों को बुझाना और एक कामना करना। एक फ़रकुला (विशबोन) तोड़ना। अपने कंधे के पीछे नमक फेंकना। आइना टूटने पर बुरे भाग्य में विश्वास करना। शुक्रवार तेरह तारीख। अच्छा भाग्य लाने वाले तावीज।

परमेश्वर एक जलनशील परमेश्वर है। जब आप किसी से प्रेम करते हो, क्या आपको बुरा नहीं लगेगा जब जिसे आप प्रेम करते हो उसके गले में, या उनकी दीवार पर किसी दूसरे व्यक्ति का एक चित्र लटका रहे? आपको कैसा लगेगा यदि आपका बच्चा सुरक्षा के लिए किसी दूसरे के पास जाए? अभक्त चीजों को फेंक दो।

क्या आप किसी अन्यजाति मंदिर में गए हो, जैसे कि:

हिन्दु मंदिर, मुस्लिम मस्जिद (यरूशलेम की डोम आफ दॅ रॉक भी) और जापान, कोरिया, यूनान, मेक्सिको के दूसरे मंदिर, मोरमोन मण्डप, भारतीय त्याहोर, नाच या कब्रिस्तान। क्या आप ने किसी फायरवॉकिंग उत्सव में भाग लिया है या अपने बच्चों को मोलेक को अर्पित किया है, जो आग का देवता है, अपने बच्चों को इन फायरवॉकरों में से एक की बाँहों में आग में से निकालना। (लैव्यव्यवस्था 20:3-4 के समय से कुछ नहीं बदला है)।

क्या आप ने पुस्तकें पढ़ीं या फिल्में देखीं हैं या किसी भी चीज में भाग लिया है जो शैतानी या तंत्रमंत्र की चीजें सिखाती हैं या जो शैतानी चीजों की महिमा करती हैं। जैसे कि:

एम्पायर स्ट्राइक्स बैक, दॅ ओमेन, एक्ज़ारसिस्ट, रोज़मेरी की देह, स्टॉर वॉर्स (दॅ फोर्स = शैतानी), स्टॉरट्रैक (मैं बच्चों के बारे में जानता हूँ जिनको इस धारावाहिक से बुरे सपने आते थे और डर की आत्मा से छुटकारा देना पड़ा था), ई.टी., अपने बच्चों का बाहरी आकाश के इस प्यारे से प्राणी से परिचय कराने का एक सूक्ष्म तरीका जिसे परमेश्वर ने नहीं बनाया है और जो दूरसंवेदन (टेलीपैथी) से काम करता है। किसी दिन जब एक दुष्ट आत्मा आपके बच्चे के पास आए और उसे भटकाने की कोशिश करे, तब उसे लगेगा कि जिसे वह देख रहा है बाहरी आकाश का एक प्यारा सा आंगतुक है, जिससे डरने की कोई जरूरत नहीं और उसके निर्देश मानने चाहिए। हैरी पॉटर फिल्में।

रॉक संगीत। यह संगीत परमेश्वर से अभिषिक्त संगीत की एक नकल है। बाइबल दाऊद के नियम, सदा के नियम के बारे में बताती है। उसे पवित्र आत्मा द्वारा निर्देश मिला था कि कुछ लोगों को अलग करे जो परमेश्वर द्वारा अभिषिक्त थे, गीत में भविष्यद्वाणी करने के लिए और जब कभी ये गायक गीत गाने लगते थे परमेश्वर की उपस्थिति नीचे उतरती थी। 1 इतिहास 5:12-14; 2 इतिहास 20:21-22। जब दाऊद को शाऊल के पास लाया गया था जिसे एक दुष्ट आत्मा सताया करती थी, बाइबल हमें बताती है कि जब वह वीणा बताता था दुष्ट आत्मा शाऊल को छोड़ जाती थी। जब परमेश्वर का संगीत उसकी उपस्थिति लाती है, तब आपको क्या लगता है रॉक संगीत किसी की उपस्थिति लाता है।

क्या आपने कभी पढ़ा है:

जीन डिक्सन के लेख। प्रेतात्मावाद या अवतार पर पुस्तकें, जोनाथन लिंविंगस्टोन सीगल (भातरीय विचारों से भरा हुआ)। जोएल गोल्डस्मिथ की पुस्तकें (आपके शेल्फ में मसीही पुस्तकों के बीच!!)। चंगा करनेवालों की कोई भी पुस्तक जो यीशु के नाम को ऊँचा नहीं करते, लेकिन दावा करते हैं कि उनके पास एक विशेष वरदान है, अट्लाँटिस। हैरी पॉटर पुस्तकें।

तत्त्वमीमांसा की पुस्तकें (आत्मा के बदले मन द्वारा परमेश्वर से सम्पर्क करना):

मसीही विज्ञान, रोज़ा क्रूसियनिज़म, साइन्टोलोजी, सत्य का स्कूल (इन प्रतिदिन पढ़ने वाली छोटी छोटी पुस्तकों से सावधान रहो जिन्हें यहाँ बाँटा जाता है, उनके पीछे देखो कि क्या वे स्कूल आफ ट्रुथ के होने का दावा करती हैं; बहुत सारे लोगों को जो इनको पढ़ते थे छुटकारा देना पड़ा था) सन्त मत, धार्मिक विज्ञान, हरी क्रिश्ना, एडगर केसी (मनोविज्ञान हीलर), मूनीज़, कहबला।

पंथों की पुस्तकें:

मोरमोनिज़्म, जहोवाज़ विटनेस, ब्रह्म कुमारीज़, दँ वे, बहाई, बौद्ध, दूसरे। बाइबल व्यवस्थाविवरण 12:29-30 में हमें चेतावनी देती है, "जब तेरा परमेश्वर यहोवा उन जातियों को जिनकी अधिकारी होने को तू जा रहा है तेरे आगे से नष्ट करे, और तू उनका अधिकारी होकर उनके देश में बस जाए, तब सावधान रहना, कहीं ऐसा न हो कि उनका सत्यनाश होने के बाद तू भी उनके समान फँस जाए, अर्थात् यह कहकर उनके देवताओं के सम्बंध में यह पूछताछ न करना, कि उन जातियों के लोग अपने देवताओं की उपासना किस रीति से करते हैं ? - मैं भी वैसे ही करूँगा।"

क्या आपने अपने आपको कभी एक सीक्रेट सोसाइटी (रहस्यवादी समूदाय) को समर्पित किया है ?

फ्रीमेसन्स, मैसोनिक आर्डर। हम सचमुच किसी को जानते हैं जो फ्रीमेसनरी को छोड़ना नहीं चाहता था और शाप उसके पीछे लगा हुआ था। वह अन्य भाषाओं में न बोल सका, गरीबी, बेरोजगारी, आदि उसका भाग थे।

क्या आपने अश्लील साहित्य को इसके अनेक प्रकारों में देखा है ?

चित्र, उपन्यास, टीवी शो, एक्स-रेटिड फिल्में, इन्टरनेट अश्लील साइट्स।

आपकी राशि।

मैं आपकी राशि के बारे में आपको कुछ बताता हूँ। सबसे पहले हम जानते हैं 1 यूहन्ना 5:19 के अनुसार कि यह संसार दुष्ट के अधिकार में है। यीशु ने शैतान को इस संसार का सरदार कहा था। पौलुस इफिसियों 2:2 में उसे आकाश के अधिकार का हाकिम कहता है। यीशु के जैसे उसकी भी एक सेना है, जिनमें अलग-अलग पद हैं और मेरा विश्वास है कि इफिसियों 6:12 में जिन प्रधानों और अधिकारों का वर्णन है, उनके 12 कप्तान हैं, जिन में से हर एक वर्ष के एक-एक महिने पर शासन करता है। हम देखते हैं 2 राजाओं 23:5 में राजा योशिय्याह ने उन मूर्तिपूजक याजकों को निकाला था जो बाल देवता को, सूर्य को, चाँद को धूप जलाया करते थे, बल्कि उनको भी जो राशिचक्र और आकाश के तारागण को धूप जलाया करते थे। तो अब जब आपका जन्म होता है, मान लो कि अक्टूबर के महिने में, तो अक्यूबर के महिने पर शासन करने वाला यह कप्तान लिब्रा कहता है: यह मेरा बच्चा है, और हर माता-पिता के समान वह भी आपको उसके सदृश बनाना चाहता है। वह कैसे करता है ? हाँ यह शुरू हो सकता है शायद आपकी माँ, जो उसकी एक प्रिय पत्रिका में लिब्रा के चरित्र के बारे में लेख पढ़ती है और फिर आपको देखती है जैसे आप बड़े होते जा रहे हो और वह बोलने और विश्वास करने लगती है कि आप एक लिब्रा के समान व्यवहार करोगे और हो सकता है वह आपको जन्मदिन का पत्थर भी देगी और आपको लिब्रा के प्रिय रंग के कपड़े और शायद आपकी राशि के चिन्ह वाला एक पेन्डेंट भी पहनाएगी, आपको याद दिलाने के लिए कि आपको किसके समान दिखना चाहिए और किसके समान बनना चाहिए, और जैसे ही आप खुद पढ़ने योग्य हो जाएँगे, निस्संदेह आप अपने चरित्र के बारे में जानना और किससे विवाह करेंगे और आज का दिन कैसा हो सकता है जानना चाहेंगे। यह सब आपके कम्प्यूटर, आपकी अवचेतना, आपकी यादाश्त में बैठ जाता है। आप इस सब में विश्वास करते और अपने मुँह से बोलने लगते और, धीरे धीरे लेकिन निश्चित रूप से आप एक लिब्रा बनते जा रहे हो। आपकी जन्मपत्री उस दिन आपको बताएगी उस दिन के लिए आपके लिए शैतान की योजना क्या है और आप उसमें चलने लगोगे। और हो सकता है आपका कप्तान आपको अपने एक सेवक और भाग्य बतानेवाले के पास ला जाए जो आपको आपके लिए शैतान की योजना बताएगा। हो सकता है उसने फैसला किया है आप की मृत्यु जल्दी हो जाए। जो आपने सब कुछ सुना है, उसके कारण जो डर है सब प्रकार की बुराई आपके पास खींचता है और फिर आपको मार डालता है। निस्संदेह लिब्रा क्योंकि एक दुष्टात्मा है, उसने कोई अधिक मित्र नहीं हैं। मेरा विश्वास है आत्मिक क्षेत्रों में दुष्टात्माओं के बीच निरन्तर ईर्ष्या है और इसीलिए कुछ ही कप्तान हैं जिनके साथ लिब्रा की बनती है, तो हो सकता है आप उसके एक मित्र के बच्चे से विवाह करें और वह पक्का कर लेता है आपको पता चले वह कौन सा है।

निस्संदेह जब आप प्रभु को ग्रहण करते हो उस पर आपको खोने का खतरा है, लेकिन यदि वह आपको सच्चाई से बाँधे रख सके तब वह अभी भी आप पर नियंत्रण रख सकेगा, जब तक आपको पता न हो कि यीशु अब आपके उद्धार का कप्तान है (इब्रानियों 2:10)। और यीशु के लहू ने आपके कम्प्यूटर में से प्रोग्राम नहीं मिटाया है जिसे लिब्रा ने वहाँ डाला था और आप ने यह वचन पढ़ा नहीं और विश्वास नहीं किया है जो रोमियों 8:29 में कहता है कि पिता हमें, जिस दिन से हमारा नया जन्म हुआ था, हमें उसके प्रिय पुत्र के स्वरूप में बना रहा है। परमेश्वर के सन्तान आपको अपनी जन्मपत्री पढ़ने का कोई अधिकार नहीं है, मजाक में भी नहीं।

क्या आपको पता नहीं जो कुछ भी आप पढ़ते हो आपके मन में अंकित हो जाता है ?! आपको वचन के पानी से धोने के द्वारा अपने मन को नया करना है। नहीं, तुम अब लिब्रा नहीं हो लेकिन आप एक नई सृष्टि हो, (2 कुरिं. 5:17), परमेश्वर की एक सन्तान। आप ज्योति के राज्य के हो (कुलु. 1:13)। परमेश्वर का वचन आपकी अगुआई करेगा (भजन 119:105) और यदि परमेश्वर आपको आपके भविष्य के बारे में कुछ बताना चाहता है, वह आपको पवित्र आत्मा के द्वारा बताएगा। यह बहाना नहीं चलेगा कि आपने इसे मजाक के लिए किया था। क्या मजे के लिए जलते हुए स्टोव पर अपना हाथ रखा जा सकता है। आपका हाथ जल जाएगा। तब भी जब आप देख नहीं सकते या विश्वास नहीं करते कि स्टोव आपको जला सकता है।

क्या आपने कभी निम्नलिकित लैंगिक बदचलन में भाग लिया है ?

मौखिक सेक्स, व्यभिचार, सेक्स कल्पना, समलिंगकामुकता, स्त्रीसमलिंगकामुकता, बाध्यता हस्तमैथुन, कौटुम्बिक व्यभिचार, पाशविकता, शैतानी सेक्स, बच्चों से छेड़छाड़, बलात्कार, अविवाहित स्त्री/पुरुष से व्यभिचार।

क्या आपने नशीले पदार्थों का सेवन किया है ? क्या आप कभी दवाइयों पर निर्भर रहे हो ?

डग्गा, कोकेन, स्पीड, अप्पर्स, डाऊनर्स, शराब, एल.एस.डी., मतिभ्रम करने वाली दवाइयाँ जो दर्शन आदि पैदा करती हैं। आपरेशन के कारण कड़ी दवाइयाँ, दूसरे।

क्या आपने कभी तंत्रमंत्र वाले गहने पहने हैं या क्या आपके घर में मूरतें हैं या देवी-देवताओं के चित्र हैं ?

पुराने नियम में आपने गृहदेवताओं के विषय में पढ़ा है। आपके घर के दरवाजे पर जो घोड़े का पैर है उसके बारे में क्या ? या वह अफ्रीकी कलाकृति, वह ओझा का नकाब या वे ढोल जिन्हें आत्माओं को बुलाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है या ढालें जिन्हें आत्माओं को दूर रखने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। आपको पता नहीं है उन्हें किसने बनाया है। यदि शंका हो तो उन्हें निकाल फेंक दो। क्या आप सुरक्षा के लिए सन्त क्रिस्टोफर, राशि चिन्ह, शान्ति चिन्ह, जननक्षमता चिन्ह, अर्द्धचंद्र चिन्ह, चाँद और तारा (मुस्लिम टेढ़ा छड़ी चिन्ह), बुद्धा तावीज पहनते हो, क्या आप अपने पर्स में शुभ सिक्का रखते हो ? शैतानों की पूजा करने वालों का वह षट्भुज, बहुत कुछ यह यहूदियों के झंडे जैसा दिखता है। आपकी दीवार पर जापानी मंदिर या बाघ देवता या पवित्र पर्वत फिजि (उनका राष्ट्रीय देवता) की सुन्दर तस्वीर ? पता करलो जो कमीज आप खरीदने वाले हो उस पर लिखे जापानी अक्षरों का अर्थ क्या है। शैतान आधुनिक फैशन को इस्तेमाल करके जवानों को फँसाने के चक्कर में है। याद है जब अपनी कमीज पर एक बाघ होना फैशन था। यह चीन के बाघ के वर्ष में था (उस वर्ष के लिए उनका राशि चिन्ह)। क्या यह हो सकता है कि पशु का चिन्ह आधुनिक फैसन के रूप में इस्तेमाल किया जाने लगे ?

अब प्रार्थना में चलेंगे

त्याग की प्रार्थना:

बाइबल कहती है कि यदि हम अपने हृदय से क्षमा नहीं करेंगे तब हमारा स्वर्गीय पिता भी हमें क्षमा नहीं करेगा। तो आओ पहले हम उन्हें क्षमा करें जिनके प्रति हम में कुछ है।

प्यारे पिता, मैं तेरे पास यीशु के नाम में आता हूँ और मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि यीशु मेरे लिए क्रूस पर मरा और कि उसका लहू मुझे छिपाता है और मुझे सब अधार्मिकता से शुद्ध करता है, जैसे मैं अपने पाप 1 यूहन्ना 1:9 के अनुसार मान लेता हूँ। पिता तू ने प्रतिज्ञा की है कि तू उन "राष्ट्रों" को निकाल देगा जो अनुचित तरीके से मेरे आशीष के देश पर अधिकार जमाए बैठे हैं और आज मैं उन्हें यीशु के नाम में निकाल दूँगा, तेरे वचन की तलवार से जिसे मुझे इसी अवसर के लिए दिया गया है, गलातियों 3:13 में। मसीह ने मुझे व्यवस्था के शाप से छुड़ा लिया है क्योंकि वह मेरे लिए एक शाप बन गया था। धन्यवाद यीशु, कि तू ने मेरा उद्धार किया है। पिता मैं मानता हूँ कि मैं ने अपने हृदय में दूसरे लोगों के प्रति अक्षमा रखी है। मैं माँगता हूँ यीशु के नाम में और पवित्र आत्मा के सामर्थ्य से कि तू मेरे जीवन पर से परदा हटा ले और मुझे दिखा दे कि किसे मुझे अभी भी क्षमा करना है।

(यहाँ रुको और कुछ समय के लिए प्रभु का इन्तज़ार करो। पवित्र आत्मा आपको याद दिलाएगा कि किसे आपको क्षमा करना है। आप शायद एक व्यक्ति को अपने मन में देखें। जैसे आप उस व्यक्ति को देखो, आप जोर से बोलकर कहोः "मैं तुझे यीशु के नाम में क्षमा करता हूँ।" आपको उसका नाम लेने की आवश्यकता नहीं है। वह चित्र तब चला जाएगा और पवित्र आत्मा आपको कोई दूसरा दिखाएगा और आप वैसा ही करो जब तक चित्र गायब नहीं हो जाता। जो लोग मर गए हैं उन्हें भी क्षमा करने की आवश्यकता है क्योंकि आप उनके साथ और जो उन्होंने किया था उसके साथ बंधे हुए हो।)

अब प्रार्थना करोः पिता, मैं धन्यवाद देता हूँ कि तू ने मुझे दिखाया कि किसे मुझे क्षमा करना है। अब मैं माँगता हूँ तू उन्हें भी क्षमा कर और उन्हें मेरे न्याय और नाराज़गी से छुड़ा दे यीशु के नाम में। यदि उनमें से कोई तेरी ओर प्रतिक्रिया नहीं दिखा पा रहा था, क्योंकि मेरी नाराज़गी ने उन्हें बाँध रखा था और उन्हें प्रकाश देखने से रोक रखा था, मैं अब माँगता हूँ उनका उद्धार कर और यदि वे बीमार हैं, तो कृपया उन्हें चंगा कर। और क्षमा करने के बाद, मैं माँगता हूँ मुझे भी क्षमा कर।
यदि मैं ने हे पिता तेरी ओर नाराज़गी रखी थी, मैं उससे मन फिराता हूँ और अन्त में मैं अपने को किए गए पापों के लिए क्षमा करता हूँ, या कोई गलतियों के लिए। 1 यूहन्ना 1:9 में तेरे वचन के अनुसार, मैं तेरी क्षमा स्वीकारता हूँ और विश्वास करता हूँ कि तू ने मुझे सब अधार्मिकता से शुद्ध कर दिया है। मैं अब तेरे सामने मानता हूँ कि अतीत में मैं ने गुप्त पापों में भाग लिया है और मैं उन्हें त्याग देता हूँ। और मेरे और / या मेरे पूर्वजों के गुप्त में भाग लेने के कारण, मैं और मेरा परिवार आज बन्धन में है। (अब अपनी सूची लो और जो लिखा है उसे जोर से बोलकर पढ़ो। इसका आत्मिक क्षेत्र में हाजिरी लेने जैसा प्रभाव होता है और इन गुप्त पापों से सम्बंधित आत्माओं को निकल जाने को कहता है।)

अब प्रार्थना करोः पिता, मैं अब हर गुप्त पाप के लिए जिसका जिक्र किया है तेरी क्षमा स्वीकार करता हूँ और तेरे वचन के अनुसार मैं अब यीशु के लहू से सब अधार्मिकता से शुद्ध किया गया हूँ।
(अब अपनी राशि से शुरू करके इन गुप्त शक्तियों से बोलो)। उस चिन्ह का नाम लो...यीशु के नाम में मैं अपने ऊपर से तेरा अधिकार त्यागता हूँ। मैं स्वीकार करता हूँ कि यीशु अब मेरे उद्धार का कप्तान है और पिता मुझे यीशु के स्वरूप में बना रहा है, और जब मैं उसे देखूँगा मैं उसके जैसा हो जाऊँगा और इसलिए तेरे चरित्र का मेरे जीवन पर कोई शासन नहीं है, मेरा पुराना मनुष्यत्व क्रूस पर चढ़ाया गया है और अब मैं जीवित नहीं हूँ, लेकिन मसीह मेरे अन्दर और मेरे द्वारा जीवित है। मैं मेरे जीवन के लिए तेरी योजना और जन्मपत्री त्यागता हूँ और स्वीकार करता हूँ कि परमेश्वर का वचन मेरे मार्ग के लिए उजियाला है और मैं उस पर रात और दिन मनन करता हूँ। मैं जिक्र किया गया हर गुप्त पाप त्यागता हूँ, मैं अपने पूर्वजों के साथ लहू के वंश को तोड़ता हूँ और उनके गुप्त में भाग लेने को त्यागता हूँ पीछे चौथी पीढ़ी तक। इस शक्ति का अब मेरे ऊपर या मेरी पत्नी और बच्चों पर कोई प्रभाव नहीं है। 1 कुरिं. 7:14 के अनुसार, मेरा परिवार मेरे द्वारा पवित्र है और हर गुप्त शक्ति को बाँधता हूँ जो उन्हें प्रभावित कर रहा होगा और अन्धकार की शक्तियों को पीछे रहने की आज्ञा देता हूँ ताकि मसीह का प्रकाश चमक सके। और मैं अपनी भावी पीढ़ियों को भी किसी भी गुप्त शक्ति से छुड़ाता हूँ। और मैं अब अपना पैर उस भूमि के टुकड़े पर रखता हूँ जो मेरा है और उन गुप्त शक्तियों को और उनके साथ आनेवाले शापों को निकालता हूँ और मैं द्वार बंद करता हूँ। हाँ, मैं अपने को स्वतंत्र घोषित करता हूँ यीशु के नाम में, आमीन।

पुराने नियम की पुस्तकें: अध्ययन रूपरेखा

पुस्तक:

1. उत्पत्ति	प्रारंभ
2. निर्गमन	उद्धार
3. लैव्यव्यवस्था	पहुँच
4. गिनती	भटकना
5. व्यवस्थाविवरण	यादें
6. यहोशू	विजय
7. न्यायियों	समझौते के कारण असफलता
8. रूत	अनुग्रह
9. 1 शमूएल	परिवर्तन
10. 2 शमूएल	राजा
11. 1 राजाओं	रुकावट
12. 2 राजाओं	छितराव
13. 1 इतिहास	परमेश्वर का शासन
14. 2 इतिहास	पुन:पतन और सुधार
15. एज्रा	पुन:स्थापना
16. नहेम्याह	पुन:निर्माण
17. एस्तेर	पूर्वप्रबंध
18. अय्यूब	दुखों के द्वारा आशीष
19. भजनसंहिता	प्रार्थना और स्तुति
20. नीतिवचन	बुद्धि
21. सभोपदेशक	मानवीय बुद्धि
22. श्रेष्ठ गीत	प्रेम
23. यशायाह	उद्धार
24. यिर्मयाह	पतित
25. विलापगीत	शोक
26. यहेजकेल	दर्शन
27. दानिय्येल	राज्य
28. होशे	व्यवस्था और प्रेम
29. योएल	प्रभु का दिन
30. आमोस	दण्ड
31. ओबद्याह	प्रतिफल
32. योना	अन्यजातियों पर कृपा
33. मीका	पाप का एहसास
34. नहूम	बदला
35. हबक्कूक	विश्वास
36. सपन्याह	प्रकोप का दिन
37. हाग्गै	मंदिर का पुन:निर्माण
38. जकर्याह	मसीह के बारे में दर्शन
39. मलाकी	प्रभु का दूत

व्यवस्था	**इतिहास** 17	**पंचग्रंथ**	**एतिहासिक पंचग्रंथ**	उत्पत्ति निर्गमन लैव्यव्यवस्था गिनती व्यवस्थाविवरण
		एतिहसिक पुस्तकें 12	**पूर्व-निर्वासन का इतिहास** 9	यहोशू न्यायियों 1 शमूएल 2 शमूएल 1 राजाओं 2 राजाओं 1 इतिहास 2 इतिहास
			निर्वसन बाद का इतिहास	एज्रा नहेम्याह एस्तेर
भजनसंहिता	**कविता** 5	**कविता की पुस्तकें** 5	**कविता (हृदय)** 5	अय्यूब भजनसंहिता नीतिवचन सभोपदेशक श्रेष्ठगीत
भविष्यद्वक्ता	**भविष्यद्वाणी** 17	**प्रमुख भविष्यद्वक्ता** 5	**भविष्यसूचक पंचग्रंथ** 5	यशायाह यिर्मयाह विलापगीत यहेजकेल दानिय्येल
		छोटे भविष्यद्वक्ता 12	**पूर्व-निर्वासन भविष्यद्वक्ता** 9	होशे योएल आमोस ओबद्याह योना मीका नहूम हबक्कूक सपन्याह
			निर्वासन के बाद की भविष्यद्वाणी 3	हाग्गै जकर्याह मलाकी

उत्पत्ति

1. नामः

अ. उत्पत्ति = आदि में, प्रारंभ, जन्म

आ. आरंभ की पुस्तक।

2. लेखकः

मूसा द्वारा लिखी गई, जिसने निर्गमन, लैव्यव्यवस्था, गिनती और व्यवस्थाविवरण भी लिखी थीं। इन पाँच पुस्तकों को पंचग्रँथ भी करते हैं, नए नियम में "मूसा की व्यवस्था" या "मूसा की पुस्तक" भी कहा गया है (लूका 24:27, 44; प्रेरितों 28:33)।

3. तारीखः

अ. आदम से लेकर यूसुफ तक 2400 वर्षों का वर्णन है।

आ. 1440 ई.पू. लिखी गई थी।

4. मूल शब्दः

अ. उत्पन्न हुआ..67

आ. सन्तान...58

इ. वंश..21

ई. आरम्भ...12

5. मूल आयतेंः 1:1; 3:5

6. उद्देश्यः

अ. सब चीजों के आरम्भ का ब्योरा देना।

आ. परमेश्वर सृष्टि और उद्धार का आरंभक है दिखाना।

इ. सब देशों का आरंभ और इब्रानी देश का परमेश्वर के निजि लोगों के रूप में दिखाना जिनमें से मसीहा आएगा।

7. संदेशः

अ. मनुष्य के लिए, इससे पहले वह परमेश्वर को स्वेच्छा से चुने, असफलता के द्वारा उसकी कमज़ोरियों और अपर्याप्तता को जानना आवश्यक है।

आ. हर स्थिति में मनुष्य की असफलता परमेश्वर के उद्धार से पूरी होती है।

8. रूपरेखाः

1. विश्व और मनुष्य का आरम्भ...........................अध्याय 1-11
   चार विशिष्ट घटनाएँः
   सृष्टि / पतन / बाढ़ / बेबिलोन...............सब देश।
2. इब्रानी देश का आरम्भ......................................अध्याय 12-50
   चार विशिष्ठ व्यक्तिः
   अब्राहम / इसहाक / याकूब / यूसुफ..........चुना हुआ देश।

9. सारांशः

उत्पत्ति सारी पुस्तक की बीज-पुस्तक है, सब सत्य की धाराओं का स्रोत जो सारी बाइबल में फैला हुआ है और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में पूर्णता तक पहुँचता है। उत्पत्ति और प्रकाशितवाक्य सृष्टि और उद्धार से सम्बंधित सब चीजों का आरम्भ और अन्त हैं। उत्पत्ति हमेंः विश्व (1:1), मनुष्य (1:26-27), विवाह (2:21-24), पाप (3:1-7), लहू का बलिदान (3:21; 4:1-7), देश (10:32), इब्रानी देश (12:2), और उद्धार की वाचाओं (3:15; 17:7) का आरम्भ देता है।

10. मसीह देखा गया:

मसीह को सृष्टिकर्त्ता (उत्पत्ति 1; कुलु. 1:16), आदि (प्रकाशित. 1:8), "स्त्री का वंश" (उत्प. 3:15; मत्ती 1:23), उद्धार का जहाज (उत्प. 6-8; लूका 2:30), हमारा इसहाक; एकलौता पुत्र (यूहन्ना 3:16), और हमारा यूसुफ; प्रिय पुत्र (मत्ती 3:17) के रूप में देखा गया है। मसीह को सारी पुस्तक में असंख्य दूसरे प्रतीकों में भी देखा गया है।

निर्गमन

1. नाम:

अ. निर्गमन = बाहर जाना, प्रस्थान

आ. "नाम हैं" .. इब्रानी नाम है (1:1)

इ. उद्धार की पुस्तक

2. लेखक:

मूसा द्वारा लिखी गई (उत्पत्ति को देखो)।

3. तारीख:

अ. याकूब के परिवार का मिस्र जाने से लेकर सिनै पर्वत पर व्यवस्था दिए जाने तक, लगभग 215 वर्षों का इतिहास है।

आ. 1440 और 1400 ई.पू. के बीच लिखी गई थी।

4. मूल शब्द:

अ. मूसा..........290

आ. हारून........116

इ. तम्बू...........91

ई. आज्ञा.....................60

उ. उद्धार.....................10

ऊ. व्यवस्था....................7

5. मूल आयतें: 3:8; 19:3-6

6. उद्देश्य:

अ. अब्राहम की वाचा की पूर्ति का आरम्भ दिखाना।

आ. मिस्र में से इब्रानी देश का उद्धार दिखाना।

इ. मूसा की वाचा, इसके नैतिक, सामाजिक और धार्मिक नियमों के साथ, का दिया जाना।

7. संदेश:

अ. परमेश्वर के उद्धार का अनुग्रह उनके लिए प्रकट होता है जो विश्वास और आज्ञापालन करते हैं।

आ. परमेश्वर उसके उद्धार पाए लोगों के बीच वास करना चाहता है, परन्तु वह ऐसा उसकी शर्तों पर ही कर सकता है।

8. रूपरेखा:

अ. निर्गमन...............परमेश्वर का सामर्थ्य..................अ. 1-18 (एतिहासिक)

आ. व्यवस्था.............परमेश्वर की पवित्रता..................अ. 19-24 (नैतिक / सामाजिक)

इ. तम्बू.................परमेश्वर की बुद्धि.......................अ. 25-40 (धार्मिक)

9. सारांश:

उत्पत्ति और निर्गमन के बीच इस्राएल मिस्र में रहते हुए एक देश बन गया था। पुस्तक इस्राएल की मिस्र में गुलामी (अ. 1) और मूसा की उनके छुड़ानेवाले और मध्यस्थ होने के लिए तैयारी (अ. 2-4) के साथ आरम्भ होती है। फिर पुस्तक में मिस्र पर विपत्तियों द्वारा परमेश्वर के अलौकिक दण्ड और इस्राएल का फसह के मेमने के लहू द्वारा उद्धार का जिक्र है (अ.

5-12)। फिर जैसे वे प्रतिज्ञा के प्रदेश (अब्राहम की वाचा) की ओर जाने लगे तो उन्हें सिनै पर्वत पर, मूसा की व्यवस्था (मूसा की वाचा) मिली जिसमें दस आज्ञाएं, सामाजिक नियम और धार्मिक नियम सम्मिलित थे (अ. 13-24)। धार्मिक नियमों में तम्बू, याजकपन और बलिदान सम्मिलित थे। पुस्तक परमेश्वर की महिमा का उद्धार पाए लोगों के बीच निवास करने आने के साथ समाप्त होती है (अय. 25-40)।

10. मसीह देखा गया:

मसीह को हमारे छुड़ानेवाले (प्रेरितों 5:31), मध्यस्थ (इब्रा. 8:6) और व्यवस्था देनेवाले (इब्रा. 8:10).... (मूसा); हमारे महायाजक (इब्रा. 2:17)....(हारून), हमारे फसह का मेमना (निर्ग. 12; 1 कुरिं. 5:7), मनुष्यों के साथ परमेश्वर के तम्बू (निर्ग. 25-40; यूहन्ना 1:14) के रूप में देखा गया।

लैव्यव्यवस्था

1. नाम:

अ. लैव्यव्यवस्था = जिसका लेवी से सम्बंध है
आ. "और उसने बुलाकर कहा" .. इब्रानी नाम है (1:1)
इ. "लेवियों की पुस्तक" - पुराने नियम का यूनानी अनुवाद में नाम
ई. आराधना की पुस्तक
उ. पहुँचमार्ग की पुस्तक

2. लेखक:

मूसा द्वारा लिखी गई (उत्पत्ति को देखो)।

3. तारीख:

अ. लगभग एक महिने का इतिहास है; इस्राएल के मिस्र में से निकलने के दूसरे वर्ष का पहला महिना।
आ. 1439 ई.पू. में लिखी गई थी।

4. मूल शब्द:

अ. भेंट (293), बलिदान (45), अर्पण (10)........348
आ. याजक..194
इ. शुद्ध (46), शुद्ध (129)............................175
ई. पवित्र (94), पवित्र करना (23), पवित्र स्थान (12), पवित्र करना (8)......137 (एक ही इब्रानी मूल)
उ. लहू.....................88
उ. प्रायश्चित..............49
ऊ. छुड़ाना.................30

5. मूल आयतें: 19:2

6. उद्देश्य:

अ. इस्राएल को परमेश्वर के पास जाने का उचित पहुँचमार्ग देना।
आ. याजकों को बलिदान और अपर्ण चढ़ाने की उनकी सेवा से सम्बंधिक निर्देश देना।
इ. शुद्ध और अशुद्ध के बीच अन्तर बताना।

7. संदेश:

अ. परमेश्वर पवित्र है।
आ. परमेश्वर तक पहुँच केवल एक मध्यस्थता करनेवाले याजक जो प्रायश्चित के लिए लहू का बलिदान चढ़ाता है, के द्वारा ही है।

8. रूपरेखा:

अ. बलिदान द्वारा परमेश्वर तक पहुँच................................अ. 1-16
भेंटें / याजकपन / शुद्धीकरण

आ. अलग होने के द्वारा परमेश्वर के साथ जीवन...................अ. 17-27
लोग / याजक / पर्व / देश

9. सारांशः

<u>उत्पत्ति में हम मनुष्य को नष्ट हुआ देखते हैं, निर्गमन में हम मनुष्य को छुड़ाया हुआ देखते हैं, और लैव्यव्यवस्था में हम मनुष्य को आराधना करते देखते हैं। उत्पत्ति में हम आराधना का मनुष्य देखते हैं, निर्गमन में हम आराधना का स्थान देखते हैं, और लैव्यव्यवस्था में हम आराधना का तरीका देखते हैं।</u> निर्गमन में तम्बू का वर्णन किया गया है और बनाया गया है जबकि लैव्यव्यवस्था में निर्धारित भेंटें और याजक की सेवा का परिचय और रूपरेखा दी है (लैव्य. 1-10)। आगे लोगों और याजकों के जीवन के हर क्षेत्र को नियंत्रित करने के लिए नियम और विनियम दिए हैं। ये नियम उनके आत्मिक, नैतिक, शारीरिक, और धर्मानुष्ठान के जीवन से सम्बंधित थे (लैव्य. 11-22)। पुस्तक के अन्त में उनके धार्मिक अनुपालन जैसे कि फसह, पिन्तेकुस्त, तम्बू, सब्त, और जुबली वर्ष, और मन्नत, दशमाँश, और दान से सम्बंधित नियम दिए हैं (लैव्य. 23-27)।

10. मसीह देखा गयाः

मसीह को बलिदान औक समर्पण (इब्रा. 10-12), हमारा पवित्र महायाजक (इब्रा. 7:26), हमारे पापों के लिए उसके लहू से प्रायश्चित्त करनेवाला (इब्रा. 9:14), और इस प्रकार परमेश्वर तक हमारा पहुँचमार्ग होने के रूप में देखा गया है।

गिनती

1. नामः

अ. गिनती = लोगों को गिनना
आ. "जंगल में" .. इब्रानी नाम (1:1)
इ. <u>भ्रमण की पुस्तक</u>

2. लेखकः

मूसा द्वारा लिखी गई (उत्पत्ति को देखो)।

3. तारीखः

अ. सिनै पर्वत से लेकर यरदन तक, 40 वर्ष से कुछ कम का इतिहास है।
आ. 1401 ई.पू. में लिखी गई थी।

4. मूल शब्दः

अ. भेंट.................................278
आ. तम्बू................................107
इ. पड़ाव डालना.......................49
ई. जंगल................................45
उ. पवित्र स्थान....................32
ऊ. प्रस्थान...........................21
ए. निकाला...........................23
ऐ. तम्बू गाड़ना....................18

5. मूल आयतें: 14:28-34

6. उद्देश्यः

अ. इस्राएल का जंगल में 40 वर्ष घूमने का ब्योरा देना।
आ. 40 वर्षों के आरम्भ और अन्त में दो पीढ़ियों की जनगणना ब्योरा देना।

7. संदेशः

अ. परमेश्वर के लोगों को सेवा के लिए छुड़ाया गया है।
आ. जब परमेश्वर के लोग परमेश्वर के प्रतिज्ञात विश्राम में प्रवेश नहीं करते तो यह अविश्वास और अवज्ञा के कारण है।
इ. परमेश्वर उसकी वाचा की प्रतिज्ञाओं को पाने के लिए एक विश्वासी पीढ़ी को सदा खड़ा करेगा।

8. रूपरेखाः

अ. पुरानी पीढ़ी - सिनै से कादेश................................अ. 1-14
पहली जनगणना
आ. भ्रम - जंगल में...अ. 15-20
रुपान्तरण
इ. नई पीढ़ी - कादेश से यरदन.................................अ. 21-36
दूसरी जनगणना

9. सारांशः

व्यवस्था पाने के बाद, जैसा निर्गमन और लैव्यव्यवस्था में देखा है, सिनै पर्वत पर गिनती किए जाने पर, पुरानी पीढ़ी प्रतिज्ञा के प्रदेश के द्वार, कादेशबर्ने पर पहुँची। वहाँ उन्होंने अविश्वास के कारण उस प्रतिज्ञा के प्रदेश को ठुकरा दिया जिसे अब्राहम की वाचा में उन्हें दिया गया था। उनके अविश्वास के पाप के कारण उन्हें जंगल में भटकना पड़ा और वे वहाँ नष्ट हो गए, इस प्रकार उन्होंने परमेश्वर की प्रतिज्ञा के उल्लंघन को जाना। अपनी वाचा की विश्वासयोग्यता में, परमेश्वर ने एक नई विश्वासी पीढ़ी को खड़ा किया और उन्हें प्रदेश में प्रवेश के लिए तैयार किया।

10. मसीह देखा गयाः

मसीह को तम्बू (यूहन्ना 1:14), जंगल में हमारा पवित्र स्थान (यहेजकेल 11:16), नाज़ीर (इब्रा. 7:26), पीतल के साँप के रूप में उठाया गया मनुष्य का पुत्र (यूहन्ना 3:14), चट्टान जिसे छड़ी से पीटा (1 कुरिं. 10:4), और "याकूब में से तारा" (मत्ती 2:2) के रूप में देखा गया।

व्यवस्थाविवरण

1. नामः

अ. व्यवस्थाविवरण = दूसरा नियम
आ. "बातें ये हैं" .. इब्रानी नाम (1:1)
इ. "दूसरा नियम" - पुराने नियम का यूनानी भाषा में अनुवाद का नाम
ई. <u>यादगार की पुस्तक</u>

2. लेखकः

मूसा द्वारा लिखी गई (1:1; 31:9, 22, 24-27) (उत्पत्ति को देखो)।

3. तारीखः

अ. लगभग दो महिनों का इतिहास है (व्यवस्था. 1:3; 34:5, 8; यहोशू 4:19)। इसमें सारे भ्रमण का पुनरीक्षण भी है।
आ. 1400 ई.पू. में लिखी गई थी।

4. मूल शब्दः

अ. करो, मानो, पालन करो (दो इब्रानी शब्द).....................................164
आ. सुनो...69

इ.	हृदय..49
ई.	प्रेम..22
उ.	याद करो...16

5. मूल आयतें: 10:12-13

6. उद्देश्य:

अ. इस्राएल को वाचा की ओर, जिसे परमेश्वर ने उनसे बाँधी थी, विश्वासयोग्य होने की उनकी आवश्यकता याद दिलाना।

आ. इस्राएल को प्रतिज्ञा के प्रदेश में प्रवेश करने, जीतने और कब्ज़ा करने के लिए तैयार करना।

7. संदेश:

अ. परमेश्वर के लिए प्रेम उसके नियमों का पालन करने की सही प्रेरणा है।

आ. परमेश्वर चाहता है उसके बच्चे उसकी आज्ञाओं को सुनें और पालन दोनों करें।

इ. जो आज्ञापालन करते हैं आशीष पाएँगे परन्तु जो नहीं मानते शाप पाएँगे।

8. रूपरेखा:

अ. अब्राहम की वाचा का अस्वीकरण................................अ. 1-4 (एतिहासिक)
आ. मूसा की वाचा का पुनरीक्षण.......................................अ. 4-26 (कानूनी)
नैतिक नियम..अ. 4-11
धर्मानुष्ठान के नियम...अ. 12-16
सामाजिक नियम..अ. 17-26
इ. पलिश्तीनी वाचा की माँगे...अ. 27-34 (भविष्यसूचक)

9. सारांश:

व्यवस्थाविवरण भविष्य को नज़र में रखते हुए अतीत का पुनरीक्षण है। इसमें इस्राएल का अब्राहम, मूसा, और पलिश्तीनी वाचा के साथ सम्बंध सम्मिलित है। जो पीढ़ी मिस्र में से आई थी उसने अब्राहम की वाचा में प्रतिज्ञात देश को अस्वीकार किया था, और जंगल में मर गई थी। अब जंगल में से आ रही नई पीढ़ी जो प्रतिज्ञा के प्रदेश में जाएगी, उसे मूसा और पलिश्तीनी वाचा के अधीन उसे पाने और बनाए रखने की शर्तें दी जा रही हैं।

10. मसीह देखा गया:

मसीह को सच्चे भविष्यद्वक्ता (व्यवस्था. 18:15-19; प्रेरितों 3:22), और हमारी चट्टान (व्यवस्था. 32:4, 18, 31; 1 कुरिं. 10:4) के रूप में देखा गया है।

यहोशू

1. नाम:

अ. यहोशू = यहोवा उद्धार है

आ. <u>विजय की पुस्तक</u>

2. लेखक:

यहोशू द्वारा लिखी गई (18:9; 24:25-26)।

3. तारीख:

अ. मूसा की मृत्यु से लेकर यहोशू की मृत्यु तक, लगभग 30 वर्षों का इतिहास है।

आ. 1390 और 1370 ई.पू. के बीच लिखी गई थी।

4. मूल शब्दः

अ. उत्तराधिकार (में ले लो)....................................164

आ. कब्ज़ा करो...69

5. मूल आयतेंः 11:23; 21:43-45

6. उद्देश्यः

अ. इस्राएल को प्रतिज्ञा का प्रदेश देकर, परमेश्वर की प्रतिज्ञा की पूर्ति दिखाना (23:14)।

आ. इस्राएल प्रदेश पर पूरी तरह कब्ज़ा करने में असफल रहा दिखाना (18:3)।

7. संदेशः

अ. परमेश्वर "वंश" को "भूमि" देकर अपनी वाचा (अब्राहम की वाचा) रखने में विश्वासयोग्य है।

आ. जो विश्वास रखते हैं उन्हें उस सब में प्रवेश करने के लिए जो परमेश्वर देता है परिश्रम करना है (इब्रा. 4)।

8. रूपरेखाः

अ. प्रदेश में प्रवेश...अ. 1-5

आ. प्रदेश पर विजय..अ. 6-12

इ. प्रदेश के भाग करना..अ. 13-22

ई. विदाई और भूमि में गाड़ा जाना.....................................अ. 23-24

9. सारांशः

इस पुस्तक का केन्द्र बिन्दु स्पष्ट रूप से प्रतिज्ञा का प्रदेश है। इसमें इस्राएल का कनान में प्रवेश करने, जीतने और बाँटने का विवरण है। यह मुख्य रूप से विजय और प्रतिज्ञाओं की पूर्ति की पुस्तक है। जबकि पंचग्रँथ प्रदेश के किनारे तक की घटनाएँ बताता है, यहोशू प्रदेश में प्रवेश करने की घटनाएँ दिखाता है। नीचे पहली छः पुस्तकों का सारांश दिया गया है जैसे उनका प्रदेश से सम्बंध है।

उत्पत्ति..............................देश की प्रतिज्ञा।

निर्गमन..............................देश के लिए चलने।

लैव्यव्यवस्था......................देश में रहने के लिए नियम।

गिनती..............................देश के बाहर भ्रमण (पुरानी पीढ़ी)।

व्यवस्थाविवरण..................देश के लिए तैयारी (नई पीढ़ी)।

10. मसीह देखा गयाः

मसीह को हमारे यहोशू (इब्रा. 4:8), हमारे उद्धार के कप्तान (इब्रा. 2:10), आत्मा की तलवार लिए हुए, जो परमेश्वर का वचन है (यहोशू 5:13-15; इफि. 6:12-18), और नए नियम के इस्राएल को उत्तराधिकार में ले जाते हुए देखा गया है।

न्यायियों

1. नामः

अ. न्यायियों = छुड़ानेवाले, उद्धारकर्त्ता (नहेम्याह 9:27)

आ. समझौते के द्वारा असफलता की पुस्तक

2. लेखकः

अज्ञात, परन्तु अकसर शमूएल को श्रेय दिया जाता है।

3. तारीखः

अ. यहोशू की मृत्यु से लेकर शिमशोन की मृत्यु तक, लगभग 400 वर्षों का इतिहास है।

आ. 1050 और 970 ई.पू. के बीच लिखी गई थी।

4. मूल शब्दः

अ. न्याय..21

आ. बुराई...14

5. मूल वाक्यांशः

अ. "यहोवा का आत्मा बल से उतरा............"........................6

आ. "इस्राएल का कोई राजा न था; जिसको जो ठीक जान पड़ता था वही वह करता था".........4

6. मूल आयतेंः 2:10; 21:25

7. उद्देश्यः

अ. इस्राएल के कनान में आत्मिक भ्रमण को दिखाना।

आ. इस्राएल के समझौते ने कैसे इस्राएल का असफलता लाई दिखाना।

8. संदेशः

अ. पाप के कारण मनुष्य परमेश्वर से सदा भटकता रहता है।

आ. परमेश्वर से दूर जाने से गुलामी और उत्पीड़ना मिलती है।

इ. परमेश्वर अपना अनुग्रह मनुष्य को अपने पास वापस लाने के लिए एक उद्धारकर्त्ता खड़ा करके दिखाता है।

9. रूपरेखाः

अ. विजय में समझौता (परिचय)...अ. 1-5
देश का विश्वासघात

आ. प्रभु को छोड़ देना (इतिहास)..अ. 6-12
देश की गुलामीः (1) दोबारा पतित हो जाना; (2) परिणाम; (3) पुनर्लाभ

इ. अन्तिम परिणाम, अराजकता (परिशिष्ट)..................................अ. 13-22
देश भ्रष्टता

10. सारांशः

यह पुस्तक इस्राएल को कनान में और जो विशेष समस्याएं जिनका वे सामना करते हैं दिखाती है। यह मिश्रण की पुस्तक है जिसमें हम विजय और हार, अच्छा और बुरा, बेदारी और धर्मत्याग, एकता और अराजकता दोनों देखते हैं। एक घटनाचक्र है जो पुस्तक में सात बार दोहराया गया है जिसका न्यायियों 2:11-19 में अच्छा सारांश पाया जाता हैः

प्रभु के दूर जाना
शत्रु की गुलामी
प्रभु से विनती
छुड़ानेवाला / न्यायी का खड़ा किया जाना
प्रभु के पास लौटना

हालाँकि पुस्तक इस्राएल के इतिहास के 400 वर्षों का विवरण है, केवल 111 वर्ष ही असल में गुलामी में बीते थे। हालाँकि असफलता की पुस्तक है, न्यायियों की सेवा में विश्वास पाया जाता है (इब्रा. 11:32-34)। नोटः न्यायियों की पुस्तक कड़ी तैथिक क्रम में नहीं लिखी गई है, परन्तु घटनाओं को उनके आत्मिक महत्त्व के अनुसार एकत्र किया गया है।

11. मसीह देखा गयाः

मसीह को हमारे न्यायी-छुड़ानेवाले-उद्धारकर्त्ता के रूप में जिस पर "प्रभु का उतरा था" देखा गया है, जिसने पाप और शैतान की गुलामी से छुटकारा लाया है।

रूत

1. नामः

अ. रूत = रचना, चारुता, सुन्दरता।

आ. अनुग्रह की पुस्तक

2. लेखकः

अज्ञात, परन्तु अकसर शमूएल को श्रेय दिया जाता है।

3. तारीखः

अ. लगभग 11 वर्षों का इतिहास है, "जिन दिनों में न्यायी लोग न्याय करते थे" (1:1)।

आ. 1030 और 970 ई.पू. के बीच लिखी गई थी।

4. मूल शब्दः

अ. कुटुम्बी..................................14

आ. छुड़ाना....................................9

इ. अनुग्रह, कृपा.............................3

ई. विश्राम.....................................3

5. मूल आयतः 3:13

6. उद्देश्यः

अ. न्यायियों के दिनों में से अनुग्रह की एक सकारात्मक तस्वीर निकालना।

आ. दाऊद की वंशावली स्थापित करना।

इ. अन्यजातियों के बुलावे का पूर्वाभास देना।

7. संदेशः

अ. छुड़ानेवाला कुटुम्बी अनुग्रह से खोई हुई मिरास को विश्राम दे रहा, पुनःस्थापित कर रहा है।

आ. शुद्ध प्रेम सब कठिनाइयों को पार लेगा।

8. रूपरेखाः

अ. विश्राम त्याग दिया..अ. 1:1-5

आ. विश्राम की इच्छा की.....................................अ. 1:6-22

इ. विश्राम खोजा..अ. 2-3

ई. विश्राम पाया..अ. 4

9. सारांशः

बाइबल की दो पुस्तकों के नाम स्त्रियों के नाम हैं: रूत और एस्तेर। रूत अन्यजाति थी जिसने यहूदी से विवाह किया, और एस्तेर यहूदी थी जिसने अन्यजाति से विवाह किया। रूत की पुस्तक एक मात्र ऐसी पुस्तक है जो एक स्त्री के इतिहास के लिए दी गई है। अध्याय एक में पृष्ठभूमि दी गई है। एलीमेलेक, नाओमी और उनके दो पुत्र अकाल के कारण बैतलहम, यहूदा छोड़ते हैं और मोआब के देश में रहने जाते हैं (लूत के मूर्तिपूजक वंश)। दोनों पुत्रों ने दो मोआबी स्त्रियों: ओर्पा और रूत से विवाह कर लिया। दस वर्षों के बाद पिता और दोनों पुत्र मर जाते हैं और नाओमी बैतलहम

लौटने का फैसला करती है। ओर्पा पीछे रह गई परन्तु रूत उसके साथ गई। दूसरे अध्याय में हमारा परिचय यरीहो के राहाब के पुत्र बोअज़ से होता है (मत्ती 1:5)। वह नाओमी और रूत का कुटुम्बी होने के कारण, उसके खेत में काम कर रही रूत पर उसका ध्यान जाता है और वह उसके साथ भलाई से पेश आता है। अध्याय तीन और चार में हम बोअज़ को एएलीमेलेक और उसके पुत्रों की मीरास को खरीदकर और रूत से विवाह करके छुड़ानेवाले कुटुम्बी की भूमिका अदा करते पाते हैं। पुस्तक दाऊद की वंशावली में रूत और बोअज़ की भूमिका के साथ अन्त होती है। यह दिखाता है कि परमेश्वर ने चुने हुए देश के भीतर चुने हुए वंश को बनाने के लिए अन्यजाति लहू इस्तेमाल किया जिसमें से सब देशों का मसीहा निकला। रूत हमारे लिए कलीसिया की एक सुन्दर तस्वीर देती है। कलीसिया, एक अन्यजाति, वाचाओं की प्रतिज्ञाओं के लिए अजनबी और विदेशी थी, जिसे छुड़ानेवाले-कुटुम्बी के अनुग्रह द्वारा इस्राएल के राष्ट्रमण्डल में लाया गया है (इफिसियों 2:11-13)।

10. मसीह देखा गयाः

मसीह को एक बड़ा पुरुष (2:1), फसल का प्रभु (2:4-17), और हमारे छुड़ानेवाले-कुटुम्बी के रूप में, अपने साथ अनुग्रह के द्वारा संयोग में लाते हुए, देखा गया है।

1 शमूएल

1. नामः

अ. शमूएल = परमेश्वर से माँगा।

आ. "राजाओं की पहली पुस्तक" .... पुराने नियम का यूनानी भाषा में अनुवाद का नाम।
नोटः यूनानी अनुवाद में 1 और 2 शमूएल = 1 और 2 राजा; 1 और 2 राजा = 3 और 4 राजा।

इ. राजतन्त्र की पुस्तक।

ई. <u>परिवर्तन की पुस्तक</u>

2. लेखकः

सम्भवतः शमूएल ने लिखी, और नातान और गाद ने समाप्त की (1 शमूएल 10:25; 1 इतिहास 29:29)।

3. तारीखः

अ. शमूएल के जन्म से लेकर शाऊल की मृत्यु तक, लगभग 115 वर्षों का इतिहास है।

आ. सम्भवतः 1060 और 900 ई.पू. के बीच लिखी गई थी।

4. मूल शब्दः

अ.	शाऊल.............296	ई.	राजा............88	ए.	अभिषेक...........19
आ.	दाऊद...............291	उ.	याजक..........33	ऐ.	प्रार्थना...............9
इ.	शमूएल.............131	ऊ.	भविष्यद्वाणी....24	ओ.	ठुकराया.............8

5. मूल आयतः 12:23

6. उद्देश्यः

अ. इस्राएल के संयुक्त राज्य को स्थापित करना।

आ. दाऊद पर यहूदा का राजदण्ड स्थापित करना, जिससे मसीहा तक भक्त वंश बना रह सके।

इ. हमें अच्छे और बुरे चरित्र के उदाहरण देने के लिए (उदाहरण, एली, शमूएल, शाऊल और दाऊद)।

7. संदेशः

अ. आज्ञोल्लंघन अभिषिक्त का अस्वीकरण लाएगा (उदाहरण, अभिषिक्त याजक, एली और अभिषिक्त राजा शाऊल आज्ञोल्लंघन के कारण अस्वीकार किए गए)।

आ. परमेश्वर का जन प्रार्थना का जन होगा, जो लोगों की आवश्यकताओं के लिए निरन्तर प्रार्थना करता रहेगा।

8. रूपरेखाः

अ. शमूएलः ईशतन्त्र से राजतन्त्र..अ. 1-7

आ. शाऊलः चुनाव से अस्वीकरण.......................................अ. 8-15

इ. दाऊदः अभिषेक से मानभंग..अ. 16-31

9. सारांशः

पुस्तक तीन मुख्य चरित्रों के आधार पर तीन भागों में बाँटी गई है (शमूएल, शाऊल, और दाऊद)। यह जीवनी की पुस्तक है। इस्राएल के इतिहास के इस समय में शमूएल सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति है। वह एक याजक, आखिरी न्यायी, पहला नबी है, और पहले राजा को अभिषेक करता है। इस प्रकार इस्राएल की सरकार ईशतन्त्र (निर्गमन से यहोशू) से अराजकता की अवधि (न्यायियों), और अब 1 शमूएल में राजतन्त्र में जाती है।

नोटः शमूएल को "प्रार्थना का नबी" कहा जाता है (1 शमू. 12:23; यिर्म. 15:1)।

10. मसीह देखा गयाः

मसीह को हमारे अभिषिक्त नबी, याजक, राजा और मध्यस्थ के रूप में देखा गया है। उसे यहूदा के राजदण्ड, दाऊद के सिंहासन और इस्राएल के अनन्त राज्य के एक मात्र दावेदार के रूप में देखा गया है।

2 शमूएल

1. नामः

अ. शमूएल = परमेश्वर से माँगा।

आ. "राजाओं की दूसरी पुस्तक" .... पुराने नियम का यूनानी भाषा में अनुवाद का नाम।

इ. राजतन्त्र की पुस्तक।

ई. राजा की पुस्तक

2. लेखकः

सम्भवतः नातान और गाद ने लिखी (1 शमूएल 10:25; 1 इतिहास 29:29)।

3. तारीखः

अ. दाऊद के सिंहासन पर बैठने से लेकर उसकी मृत्यु से कुछ पहले तक, लगभग 40 वर्षों का इतिहास है।

आ. सम्भवतः 970 और 900 ई.पू. के बीच लिखी गई थी।

4. मूल शब्दः

अ. राजा................................290

आ. दाऊद..............................286

मूल वाक्यांशः

अ. "यहोवा के सम्मुख"................10

आ. "यहोवा से पूछा"......................4

5. मूल आयतः 5:12

6. उद्देश्यः

अ. दाऊद की वाचा, वंश, सिंहासन और राज्य को स्थापित करने के लिए।

आ. दाऊद के शासन को, उसकी विजयों और उसकी परीक्षाओं समेत, स्थापित करना।

7. संदेशः

अ. परमेश्वर की प्रतीज्ञाओं के पूरा होने के लिए, उस पर धैर्य और निर्भरता आवश्यक हैं। (मानभंग [1 शमू.] से प्रतिष्ठा [2 शमूएल] तक दाऊद की राजा होने की तैयारी में दिखता है)।

आ. आज्ञापालन उनके लिए आशीष लाता है जो परमेश्वर के साथ वाचा के सम्बंध में हैं। (दाऊद के शासन के पहले 20 वर्षों से दिखता है)।

8. रूपरेखाः

अ. दाऊद की विजयेंः आशीष के 20 वर्ष...अ. 1-10
   1. दाऊदः यहूदा पर राजा (7 वर्ष)..अ. 1-4
   2. दाऊदः सारे इस्राएल पर राजा (33 वर्ष)................................अ. 5-10

आ. दाऊद की परीक्षाएँः न्याय के 20 वर्ष..अ. 11-24
   1. दाऊद का पतनः क्षमा और दण्ड..अ. 11-21
   2. अन्त के दृश्य..अ. 22-24

9. सारांशः

यह पुस्तक मूल रूप से दाऊद की जीवनी है जो उसे एक अभिषिक्त राजनीतिक और धार्मिक राजा के रूप में पेश करती है। दाऊद "परमेश्वर के मन के अनुसार" था (1 शमूएल 13:14), और इस प्रकार उसने दाऊद का तम्बू और आराधना का क्रम जैसा भजनसंहिता में दिया है, स्थापित किया (2 शमूएल 23:1-2)। उसने वाचा का पालन किया और वह निरन्तर "प्रभु से पूछा करता" था। परन्तु, यह एक मात्र पुस्तक है जो दाऊद के पतन और संकटपूर्ण परिणामों का ब्योरा देती है।

10. मसीह देखा गयाः

"दाऊद के पुत्र", मसीह को "बड़ा राजा दाऊद" के रूप में देखा गया है जो नए नियम की आराधना के क्रम को स्थापित करता है। दाऊद की वाचा विश्व के अन्तिम राजनीतिक (राजा) और धार्मिक (याजक) शासक के रूप में मसीहा की वाचा है।

1 राजा

1. नामः

अ. "राजाओं की तीसरी पुस्तक" .... पुराने नियम का यूनानी भाषा में अनुवाद का नाम।

आ. राजतन्त्र की पुस्तक।

इ. भंग की पुस्तक

2. लेखकः

परम्परा के अनुसार यिर्मयाह को श्रेय दिया जाता है, जिसने सम्भवतः नातान और गाद द्वारा लिखे लेखों को उपयोग किया होगा (1 इतिहास 29:29)।

3. तारीखः

अ. दाऊद की मृत्यु से लेकर यहोशापात की मृत्यु तक, लगभग 120 वर्षों का इतिहास है।

आ. सम्भवतः 600 और 580 ई.पू. के बीच लिखी गई थी।

4. मूल शब्दः

अ. राजा..310

आ. घराना..173

इ. भविष्यद्वक्ता...................................50

मूल वाक्यांशः

अ. "यहोवा का वचन"................................33

आ. "मूलपुरुष दाऊद के समान"......................9

इ. "यारोबाम के पाप (मार्ग)"...........................8

5. मूल आयतः 22:10, 19

6. उद्देश्यः

अ. संयुक्त राज्य की स्थापना और महिमा का इतिहास देने के लिए।

आ. राज्य के दो घरानों, दो राज्यों और दो वंशों में भंग होने का इतिहास देने के लिए।

7. संदेशः

अ. परमेश्वर का सिंहासन सारे पृथ्वी के सिंहासनों के ऊपर है।

आ. राजा स्वर्गीय सिंहासन के साथ उनके सम्बंध और भविष्यद्वक्ताओं की सेवा के द्वारा प्रभु की ओर उनकी प्रतिक्रिया के अनुसार सफल या असफल होते हैं।

8. रूपरेखाः

अ. संयुक्त राज्य..अ. 1-11 एक घराना - एक राजा
1. राज्य की स्थापना......................................अ. 1-2
2. राज्य की महिमा..अ. 3-11

आ. विभाजित राज्य..अ. 12-22 दो घराने - दो राज्य
1. राज्य का भंग...अ. 12
2. राज्य का पतन...अ. 13-22

9. सारांशः

1 राजा की पुस्तक में सुलेमान के महिमायुक्त शासन, उसकी मृत्यु के बाद राज्य का विभाजन, विभाजित राज्य का उत्तर (इस्राएल) में आहाब के शासन तक और दक्षिण (यहूदा) में यहोशापात तक इतिहास का वर्णन है। इस्राएल और यहूदा के सारे राजा दो "आदर्श पुरुषों" के नीचे खड़े होते हैं, भक्त राजा दाऊद और अभक्त राजा यारोबाम।

10. मसीह देखा गयाः

मसीह को शान्ति और महिमा का राजा, परमेश्वर की बुद्धि (1 कुरिं. 1:30), परमेश्वर के मन्दिर का निर्माणता (इफि. 2:20-22), "सुलेमान से बड़ा" (मत्ती 12:42) और परमेश्वर का भविष्यद्वक्ता....शरीर बना वचन (यूहन्ना 1:14) के रूप में देखा गया है। उसका सिंहासन सब सिंहासनों के ऊपर हैः राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु (प्रकाशित. 19:16)।

2 राजा

1. नामः

अ. "राजाओं की चौथी पुस्तक" .... पुराने नियम का यूनानी भाषा में अनुवाद का नाम।
आ. राजतन्त्र के विध्वंस की पुस्तक।
इ. छितराव की पुस्तक

2. लेखकः

परम्परा के अनुसार यिर्मयाह को श्रेय दिया गया है।

3. तारीखः

अ. यहूदा के राजा यहोशापात और इस्राएल के राजा अहज्याह से लेकर अश्शूरी और बेबीलोनी बन्धुआई तक, लगभग 300 वर्षों का इतिहास है।
आ. सम्भवतः 600 और 580 ई.पू. के बीच लिखी गई थी।

4. मूल शब्दः

अ. राजा..382
आ. घराना...134
इ. भविष्यद्वक्ता..................................33

मूल वाक्यांशः

अ. "परमेश्वर का भक्त"...36
आ. "यहोवा का यह वचन"...16
इ. "वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था"..........................20
ई. "वह किया जो यहोवा की दृष्टि में ठीक था"............................6

5. मूल आयतः 17:13-14

6. उद्देश्यः

इस्राएल के राज्य और यहूदा के राज्य का, उनकी अपनी-अपनी बन्धुआइयों तक (इस्राएल - अश्शूर की बन्धुआई, यहूदा - बेबीलोन की भन्धुआई) समकालीन इतिहास देना।

7. संदेशः

अ. परमेश्वर के भविष्यद्वक्ताओं द्वारा दिए वचन को ठुकराना और मूर्तिपूजा और धर्मत्याग में लौट जाना, अस्वीकरण और बन्धुआई लाएगा। (2 राजा 17:13-23)
आ. मनुष्य अपने पर सफलतापूर्वक नियंत्रण नहीं कर सकता है।

8. रूपरेखाः

अ. इस्राएल का इतिहास (उत्तरी राज्य)..अ. 1-10
इस्राएल के दसवें राजा, येहू की मृत्यु के साथ समाप्त
आ. इस्राएल और यहूदा का इतिहास (अदल-बदल कर)...........................अ. 11-17
इस्राएल की अश्शूर की बन्धुआई के साथ समाप्त
इ. यहूदा का इतिहास (दक्षिणी राज्य)..अ. 18-25
यहूदा की बेबीलोन की बन्धुआई के साथ समाप्त

9. सारांशः

इब्रानी पवित्रशास्त्र में 1 और 2 राजा एक पुस्तक हैं। इनको ऐसे देखने से इस्राएल का इतिहास इस प्रकार है: यह दाऊद के सिंहासन के पहले उत्तराधिकारी, सुलेमान के साथ आरम्भ होता है, और मन्दिर का निर्माण होता है। यह दाऊद के सिंहासन पर अन्तिम राजा, सिदकिय्याह के साथ समाप्त होता है, सिदकिय्याह मारा जाता है और मन्दिर नष्ट हो जाता है। यह हमें यरूशलेम के राजा दाऊद की मृत्यु से बेबीलोन के राजा नबूकदनेस्सर की मृत्यु तक ले जाता है। 2 राजा भी

वहीं से आरम्भ करता है जहाँ 1 राजा छोड़ता है और इस्राएल और यहूदा के दोनों राज्यों का ब्योरा इस्राएल की अश्शूर की बन्धुआई और लगभग एक सौ वर्ष बाद यहूदा की बेबीलोन की बन्धुआई तक जारी रखता है।

10. मसीह देखा गयाः

मसीह को धर्मी राजा, परमेश्वर के भक्त और प्रभु के वचन के रूप में देखा गया है (2 राजा 3:12; यूहन्ना 1:14)।

1 इतिहास

1. नामः

अ. इतिहास = "दिनों के शब्द" .... इब्रानी नाम।

आ. "अतिरिक्त"... पुराने नियम का यूनानी भाषा में अनुवाद का नाम ।

इ. "छोड़ी हुई चीजें" ... यूनानी अनुवादकों का दिया नाम।

ई. <u>ईशतन्त्र की पुस्तक</u>

2. लेखकः

सम्भवतः एज्रा ने लिखी है।

3. तारीखः

अ. शाऊल की मृत्यु से लेकर सुलेमान के शासन के आरम्भ तक, लगभग 40 वर्षों का इतिहास है।

आ. सम्भवतः 450 ई.पू. में लिखी गई थी।

4. मूल शब्दः

अ. दाऊद..189

आ. घराना...106

इ. उत्पन्न हुआ....................................86

ई. राजा..76

5. मूल आयतः

अ. 29:26..."दाऊद ने सारे इस्राएल के ऊपर राज्य किया"

आ. 29:12..."तू सभों के ऊपर प्रभुता करता है"

6. उद्देश्यः

अ. दाऊद के सिंहासन और याजकों की सेवा की वंशावलियों को देना।

आ. राजा दाऊद के शासन का एक इतिहास देना।

इ. दाऊद के तम्बू में स्थापित आराधना के क्रम, और सुलेमान के अधीन बनने वाले मन्दिर की तैयारियों का विवरण देना।

7. संदेशः

अ. परमेश्वर प्रभु है।

आ. मनुष्य परमेश्वर के अधिकार के अधीन होकर अपना अधिकार पाता है।

8. रूपरेखाः

अ. वंशावलियाँ..अ. 1-9

1. पूर्वज..अ. 1-2

2. राजकीय..अ. 3-5
3. याजकीय...अ. 6-9

आ. ईशतन्त्र का इतिहास..अ. 10-21
1. शाऊल की मृत्यु..अ. 10
2. दाऊद का शासन..अ. 11-21

इ. मन्दिर..अ. 22-29
1. प्रकाशन और तैयारी.....................................अ. 22-27
2. दाऊद का सुलेमान को आदेश और मृत्यु...........अ. 28-29

9. सारांशः

राजा दाऊद इस पुस्तक में जैसे वह 2 शमूएल में था, केन्द्रीय व्यक्ति है। उसे दाऊद के तम्बू में आराधना का क्रम स्थापित करते, मन्दिर का प्रकाशन पाते, इसके निमार्ण की तैयारी करते और काम सुलेमान के हाथ में देते देखा जा सकता है।

10. मसीह देखा गयाः

मसीह को "बड़ा राजा दाऊद" के रूप में देखा गया है जो पवित्र आत्मा (सुलेमान) की सेवा के अधीन, अपनी मृत्यु से पहले प्रकाशन पाता है और आत्मिक मन्दिर (कलीसिया - इफि. 2:20-21) के निर्माण की तैयारी करता है।

2 इतिहास

1. नामः

अ. इतिहास = "दिनों के शब्द" .... इब्रानी नाम।

आ. "अतिरिक्त"... पुराने नियम का यूनानी भाषा में अनुवाद का नाम ।

इ. "छोड़ी हुई चीजें" ... यूनानी अनुवादकों का दिया नाम।

ई. पुनःपतन और सुधार की पुस्तक

2. लेखकः

सम्भवतः एज्रा ने लिखी है।

3. तारीखः

अ. सुलेमान के शासन के आरम्भ से लेकर राजा कुस्रू के यरुशलेम के पुनःनिर्माण के आदेश तक, लगभग 400 वर्षों का इतिहास है।

आ. सम्भवतः 450 ई.पू. में लिखी गई थी।

4. मूल शब्दः

अ. राजा...289

आ. भवन (मन्दिर का जिक्र करने में)..................................203

इ. यरूशलेम..127

ई. याजक...90

ई. भविष्यद्वक्ता..26

मूल वाक्यांशः

अ. "परमेश्वर की खोज"...13

5. मूल आयतः 7:14, 15-24

6. उद्देश्यः

अ. मन्दिर के निर्माता, सुलेमान से लेकर यहूदा के अन्तिम राजा, सिदकिय्याह के अधीन मन्दिर के विनाश, और बेबिलोन की बन्धुआई तक यहूदा के राजाओं का इतिहास देना।

आ. सिंहासन पर बैठे राजाओं का मन्दिर के साथ सम्बंध दिखाना। (मन्दिर बनाम सिंहासन)

7. संदेशः

अ. परमेश्वर उन्हें मिलेगा जो उसे खोजते और उसकी सेवा करते हैं, परन्तु जो उसे अस्वीकार करते वह उन्हें स्वीकार करेगा।

आ. आत्मिक विजय इस बात से निर्धारित होगी कि किसी ने "अपने मन को परमेश्वर की खोज में लगाया है। (11:16; 12:14; 19:3; 30:19)

8. रूपरेखाः

अ. सुलेमान का शासन..अ. 1-9
- 1. सुलेमान का राज्य...अ. 1, 8, 9
- 2. सुलेमान का मन्दिर...अ. 2-7

आ. यहूदा के राजा..अ. 10-36
- 1. पुनःपतन..अ. 10-13, 21-23, 25-28, 33, 36
- 2. सुधार..अ. 14-20, 29-32, 34, 35

9. सारांशः

अ. राज्य की अवधि के तीन दृष्टिकोणः

1. 1 और 2 राजा की पुस्तकें सिंहासन पर बल देते हुए एक राजकीय दृष्टिकोण से लिखी गई हैं।
2. 1 और 2 इतिहास की पुस्तकें मन्दिर पर बल देते हुए एक याजकीय दृष्टिकोण से लिखी गई हैं।
3. भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकें सिंहासन और मन्दिर के बीच ईश्वरीय सम्बंध पर बल देते हुए एक भविष्यसूचक दृष्टिकोण से लिखी गई हैं।

आ. 2 इतिहास की पुस्तक न्यायियों की पुस्तक के समान है क्योंकि यह भी पुनःपतन और सुधार के समय को दिखाती है।

10. मसीह देखा गयाः

मसीह को हमारे भविष्यद्वक्ता, याजक और राजा के रूप में; मन्दिर को शुद्ध करनेवाले के रूप में जो पुनःपतन के समयों के बाद सुधार के समय लाता है, देखा गया है। (इब्रा. 9:10-11)

एज्रा

1. नामः

अ. एज्रा = सहायता, सहायक।

आ. बचे हुओं की पुस्तक।

इ. <u>सुधार की पुस्तक</u>

2. लेखकः

एज्रा ने लिखी है। तीसरी सदी तक एज्रा और नहेम्याह की पुस्तक एक पुस्तक थी, जिससे संकेत मिलता है कि सम्भवतः एज्रा और नहेम्याह ने एक दूसरे के सहयोग से इन्हें लिखा था।

3. तारीखः

अ. राजा कुस्रू के यरुशलेम के पुनःनिर्माण के आदेश से लेकर एज्रा के यरूशलेम पहुँचने के तुरन्त बाद तक, लगभग 40 वर्षों का इतिहास है।

आ. सम्भवतः 440 से 400 ई.पू. में लिखी गई थी।

4. मूल शब्दः

अ. यरूशलेम...48

आ. व्यवस्था (8), आज्ञा (2), वचन (1)...11

मूल वाक्यांशः

अ. "चढ़ना", "चढ़ा"

5. मूल आयतः 2:1, 6:14

6. उद्देश्यः

अ. बेबिलोन की बन्धुआई से लेकर बचे हुओं का जरूब्बाबेल और एज्रा के अधीन लौटना दिखाना।

आ. यिर्मयाह और यशायाह द्वारा कहे बेबिलोन के पतन और यरूशलेम और यहूदा के पुनःस्थापना के विषय में परमेश्वर के वचन की पूर्ति दिखाना। (यिर्म. 25:8-14; यशायाह 44:26-45:1)

7. संदेशः

अ. परमेश्वर अन्यजाति देशों को उसके उद्देश्यों के लिए उत्तेजित करता है (ईश्वरीय प्रभुसत्ता)।

आ. परमेश्वर का उद्देश्य मनुष्यों के द्वारा पूरा हो सकता है (मानवीय जिम्मेवारी)।

8. रूपरेखाः

अ. जरूब्बाबेल के अधीन बचे हुओं का पहला दल लौटता है........................अ. 1-6
(अ. 6 और 7 के बीत 63 वर्षों का समय बीतता है)

आ. एज्रा के अधीन बचे हुओं का दूसरा दल लौटता है....................................अ. 7-10

9. सारांशः

एज्रा की पुस्तक में, हम जरूब्बाबेल को 50,000 यहूदियों के साथ मन्दिर के कुछ पवित्र पात्रों को वापस लाते, मन्दिर के पुनःनिर्माण का आरम्भ होते देखते हैं। तब हम याजक शास्त्री, एज्रा को लगभग 2000 यहूदियों को मन्दिर के अतिरिक्त पवित्र पात्रों को वापस लाते देखते हैं, और धार्मिक, सामाजिक और सामाजिक सुधार होने लगते हैं।

नोटः यहूदा की पुनःस्थापना और मन्दिर का पुनःनिर्माण न केवल भविष्यद्वाणी के वचन की पूर्ति थे, बल्कि दानिय्येल की भविष्यद्वाणी के अनुसार मसीह के आने तक यहूदियों को उनके देश में रखना भी था (दानि. 9:24-27)।

10. मसीह देखा गयाः

मसीह को हमारे गवर्नर (जरूब्बाबेल) और हमारे याजक, शास्त्री और धार्मिक, सामाजिक और नागरिक व्यवस्था के सुधारक (एज्रा) के रूप में देखा गया है।

नहेम्याह

1. नामः

अ. नहेम्याह = सान्त्वना, प्रभु शान्ति है।

आ. पुनःस्थापना की पुस्तक।

इ. पुनःनिर्माण की पुस्तक

2. लेखकः

नहेम्याह ने लिखी है। यह मुख्य रूप से उसकी जीवनी है।

3. तारीखः

अ. एज्रा की समाप्ती के 12 वर्षों के बाद से आरम्भ होकर, लगभग 16 वर्षों का इतिहास है।

आ. सम्भवतः 440 से 400 ई.पू. में लिखी गई थी। यह पुराने नियम की आखिरी एतिहासिक पुस्तक है जो लिखी गई थी।

4. मूल शब्दः

अ. द्वार...41

आ. दीवार..36

इ. मरम्मत की..35

ई. बनाया..24

उ. काम..23

ऊ. प्रार्थना करो...8

5. मूल आयतः 4:6, 9

6. उद्देश्यः

अ. यह दिखाना कि कैसे नहेम्याह के अधीन, यरूशलेम की दीवारों और 12 द्वारों की मरम्मात की गई और बनाए गए, और लोग पुनःजीवित हुए।

आ. कलीसिया को पुनःस्थापना का सिद्धान्त देना।

7. संदेशः

अ. परमेश्वर का उद्देश्य जो खोया हुआ है उसे पुनःस्थापित करना और जो टूट गया है उसे पुनःनिर्माण करना है।

आ. परमेश्वर के लिए सफल काम की शर्तें हैं प्रार्थना, पीड़ा और अध्यवसाय।

8. रूपरेखाः

अ. दीवारों का पुनःनिर्माण................................अ. 1-7

आ. धर्म की बेदारी..अ. 8-12

इ. लोगों का सुधार.......................................अ. 13

9. सारांशः

नहेम्याह हमारे सामने एक भक्त चरित्र और अगुआई का उदाहरण पेश करता है। परमेश्वर के बुलावे पर उसने कड़ी-मेहनत, जोखिम, विपत्ति, और अन्दर से झूठे भाइयों और बाहर से शत्रुओं के विरोध के जीवन के लिए महल का भोग-विलास और ऊँचे पद के जीवन को त्याग कर दिया। वह विश्वास, बुद्धि, साहस, और अध्यवसाय का पुरुष; प्रार्थना और शक्ति का पुरुष था, और अपने साथ दूसरों को भी मेहनत करने के लिए प्रेरित करने योग्य था।

नोटः एज्रा और नहेम्याह मिलकर दानिय्येल को बेबिलोन में मिली "सत्तर सप्ताह की भविष्यद्वाणी" की कुछ पूर्ति दिखाते हैं। "यरूशलेम को फिर बसाने की आज्ञा के निकलने से लेकर अभिषिक्त प्रदान के समय तक सात सप्ताह बीतेंगे। फिर बासठ सप्ताहों के बीतने पर चौक और खाई समेत वह नगर कष्ट के समय में फिर बसाया जाएगा।" (दानि. 9:25)

10. मसीह देखा गयाः

मसीह को यरूशलेम की आत्मिक पुनःस्थापना में यहूदा का गवर्नर (मत्ती 2:6) के रूप में देखा गया है जिसने स्वर्ग के महल को छोड़ा (भजन 45:8), और प्रार्थना और काम के पुरुष (यूहन्ना 17; मत्ती 16:18) के रूप में प्रकट होता है।

एस्तेर

1. नामः

अ. एस्तेर = तारा, रहस्य, गुप्त।

आ. <u>परमेश्वर के विधान की पुस्तक</u>

2. लेखकः

सम्भवतः मोर्दकै ने लिखी है (9:20)।

3. तारीखः

अ. क्षयर्ष के शासन के तीसरे वर्ष (1:3) से लेकर उसके शासन के बारहवें वर्ष (3:7) तक लगभग 10 वर्षों का इतिहास है। कालक्रमानुसार यह एज्रा के छटे और सातवें अध्याय के बीच आता है।

आ. सम्भवतः 450 से 420 ई.पू. में लिखी गई थी।

4. मूल शब्दः

अ. राजा..196

आ. यहूदी...53

इ. रानी..27

5. मूल आयतः 4:14

6. उद्देश्यः

अ. यहूदियों के लिए, जो पहले दल के साथ नहीं लौटे थे, परमेश्वर का विधान चित्रित करना।

आ. यहूदियों के पूरीम के पर्व का आरम्भ बताना (3:6-7; 9:26-28)।

7. संदेशः

अ. हालाँकि अदृश्य है, परमेश्वर के विधान का हाथ मनुष्यों के कार्यों में, के द्वारा और ऊपर मार्गदर्शन करता, रक्षा करता और रद्द करता है, और अपने चुने हुओं पर निगरानी रखता और बनाए रखता पाया जाता है।

आ. जो परमेश्वर के लोगों को नष्ट करने का प्रयास करते हैं, खुद नष्ट हो जाएंगे।

8. रूपरेखाः

अ. क्षयर्ष का भोज...अ. 1-2

आ. एस्तेर का भोज..अ. 3-7

इ. पूरीम का भोज...अ. 8-10

9. सारांशः

इस पुस्तक में हम फारस के राजा क्षयर्ष को रानी वशती को छोड़ देते हुए देखते हैं (क्षयर्ष का भोज)। फिर एस्तेर, जिसे दुल्हिन-रानी होने के लिए चुना गया था, को लाया गया और मौर्दकै और हेगे की सेवाओं द्वारा तैयार की गई (एस्तेर का भाोज)। तब जब अगागी हमान यहूदियों के विरुद्ध उठ खड़ा हुआ, एस्तेर ने देश भर में उपवास का ऐलान करवाया और अपनी जान खतरे में डालकर यहूदी लोगों को बचा लिया। तब पूरीम के पर्व को हमान की मृत्यु (उसी ऊँचे फाँसी के खम्बे पर लटकाया गया जिसे उसमे मोर्दकै के लिए बनवाया था) और यहूदियों के छुटकारे और बचाव का स्मरणोत्सव के रूप में हर वर्ष मनाने के लिए प्रारंभ किया गया। एस्तेर बन्धुआई के बाद की तीन में से अन्तिम एतिहासिक पुस्तक हैः

एज्रा....................मन्दिर की पुनःस्थापना...धार्मिक

नहेम्याह................शहर की दीवारों का पुनःनिर्माण...............................राजनीतिक

एस्तेर.................यहूदा के धराने का बचाव.....................................राष्ट्रीय

नोटः परमेश्वर का नाम एस्तेर की पुस्तक में एक बार भी नहीं पाया जाता है परन्तु पुस्तक में इब्रानी परिवर्ती काव्य में चार बार छिपा हुआ है।

10. मसीह देखा गयाः

मसीह को राजा के रूप में देखा गया है जिसके लिए कलीसिया (एस्तेर) विवाह के लिए वचन (मोर्दकै) और आत्मा (हेगे) की सेवा के द्वारा तैयार की जा रही है।

अय्यूब

1. नामः

अ. अय्यूब = सताया हुआ, वह जो रोता, बोलता, या एक खोखले स्थान में से पुकारता है, दुखी, जो परमेश्वर की ओर फिरता है।

आ. दुख उठाने के रहस्य की पुस्तक।

इ. <u>दुख उठाने के द्वारा आशीष की पुस्तक</u>

2. लेखकः

सम्भवतः अय्यूब ने स्वयं लिखी थी (19:23-24), क्योंकि वह इन घटनाओं के बाद 140 वर्ष तक जीवित रहा था (42:16)। कुछ ने मूसा या एलीहू का सम्भव लेखकों के रूप में सुझाव दिया है।

3. तारीखः

अ. केवल कुछ हफ्तों या सम्भवतः कुछ महिनों का ही इतिहास है।

आ. सम्भवतः पूर्वजों के समय में लिखी गई थी। अधिकाँश मानते हैं कि यह बाइबल की सबसे पहली लिखी गई पुस्तक है।

4. मूल शब्दः

अ. दुष्ट..38

आ. सही (धर्मी, धामिर्कता)..32

इ. क्यों..16

ई. पीड़ित (हुआ)..11

मूल वाक्यांशः

अ. "ने कहा"..21

5. मूल आयतः 1:9 (शैतान); 2:3 (परमेश्वर); 13:15 (अय्यूब); 42:5

6. उद्देश्यः

अ. भक्त के दुख को परमेश्वर के न्याय और प्रेम से मिलाने की समस्या से निपटना।

आ. दुख में धैर्य के परमेश्वर के उदाहरण के रूप में अय्यूब को आगे रखना। (याकूब 5:11)

7. संदेशः

अ. धर्मी की पीड़ा का कारण और उद्देश्य अकसर दुखी के लिए रहस्य रहते हैं।

आ. परमेश्वर दुख के द्वारा चरित्र प्रकट करता और कमज़ोरी के क्षेत्रों को प्रकट करता है जिनसे उसे निपटने की आवश्यकता है।

इ. परमेश्वर प्रभु है और शैतान वही कर सकता है जो परमेश्वर उसे करने देता है।

8. रूपरेखाः

अ. प्रस्तावना...अ. 1-2

1.पृथ्वी के दृश्य (1:1-5, 13-22; 2:7-13)

2. स्वर्ग के दृश्य (1:6-12; 2:1-6)

आ. संवाद...अ. 3-41

1. प्रवचन के तीन त्रिक.......................................अ. 4:37

2. परमेश्वर का अन्तशेष हस्तक्षेप..........................अ. 38-41

इ. उपसंहार..अ. 42

9. सारांशः

अय्यूब जो एक भक्त पुरुष था, अपनी धन-सम्पत्ति, परिवार और स्वस्थ्य की हानि उठाता है। वह अपनी पीड़ा से चकरा गया, जानता न था कि वह परमेश्वर और शैतान के बीच झगड़े का निशाना था। एलीपज, बिलदाद और सोपर, उसके तीन मित्रों ने उसे यह मनवाकर सान्त्वना देने का प्रयत्न किया कि उसका दुख उसके व्यक्तिगत पाप पर परमेश्वर के दण्ड के कारण है। एलीहू, जिसे आंशिक ज्ञान था, अय्यूब के दुख के विषय में बताता है कि यह अय्यूब को शुद्ध करने के लिए परमेश्वर की ताड़ना है। अन्त में, परमेश्वर बोलता है और अय्यूब और दूसरों को उनके स्थान पर रखता है। सबसे पहले, अय्यूब का दुख एक परख के रूप में बनाया गया था जिसमें अय्यूब शैतान के विरुद्ध खुद को प्रमाणित कर सकता था, परन्तु क्योंकि अय्यूब परख में से बिना दोष नहीं निकल सका, इसने उसे शुद्ध करने का भी काम किया। अन्त में, अय्यूब को जो उसके पास पहले था उसका दुगुने भाग की आशीष मिली। नोटः अय्यूब में बहुत अच्छी मसीहा से सम्बंधिक भविष्यद्वाणियाँ हैं (9:32, 33; 19:25-27)।

नोटः इस पुस्तक में से काउन्सलिंग के अनेक सिद्धान्त निकाले जा सकते हैं।

10. मसीह देखा गयाः

मसीह को धर्मी के रूप में देखा गया है जिसके धैर्यवान दुखों को शैतान लाया था परन्तु परमेश्वर ने विचारा था।

भजन संहिता

1. नामः

अ. भजन = स्तुति का एक गीत (एक वाद्य के साथ)।

आ. "स्तुति के गीत"....इब्रानी नाम।

इ. <u>प्रार्थना और स्तुति की पुस्तक</u>

2. लेखकः

ज्ञात लेखक हैं:

अ. दाऊद के भजन..........................73

आ. आसाप के भजन.........................12

इ. कोरहवंशियों के भजन................10

ई. मूसा के भजन......................1

उ. हेमान का भजन....................1

ऊ. एतान का भजन....................1

3. तारीखः

लेखकों की विविधता के कारण अवधि मूसा से एज्रा तक की है।

4. मूल शब्दः

अ. स्तुति.............................189

आ. हृदय..............................132

इ. धर्मी...............................132

ई. गाओ, गीत......................122

उ. दुष्ट.................................109

ऊ. आशीष.............................102

ए. बुरा, अच्छा.........................102

ऐ. पाप, अपराध.........................88

ओ. प्रार्थना................................39

5. मूल आयतः 150:1-6

6. उद्देश्यः

अ. परमेश्वर और मनुष्य के मूल सिद्धान्तों, और सृष्टि और उद्धार में उनके सम्बंध को काव्यमय रूप में बनाए रखना।

आ. धर्मी की उसकी परमेश्वर की स्तुति और आराधना में आशीषित स्थिति और अधर्मी का न्याय जो परमेश्वर को अस्वीकार करते हैं दिखाना।

इ. परमेश्वर की आराधना को जो आत्मा और सच्चाई में है उचित रवैये और तरीके से प्रस्तुत करना।

7. संदेशः

केवल धर्मी और अच्छे लोग ही जिन्होंने पाप और अपराध को त्याग किया है आशीषित हैं और उनके हृदयों से प्रभु की स्तुति और आराधना कर सकते हैं।

8. रूपरेखाः

प्रचीन इब्रानी कहावतः "मूसा ने इस्राएल को व्यवस्था की पाँच पुस्तकें दीं और इनके अनुकूल, दाऊद ने इस्राएल को भजनसंहिता की पाँच पुस्तकें दीं।"

अ. मनुष्य से सम्बंधित उत्पत्ति की पुस्तक..भजन 1-41

आ. इस्राएल से सम्बंधित निर्गमन की पुस्तर.......................................भजन 42-72

इ. पवित्र स्थान से सम्बंधित लैव्यव्यवस्था की पुस्तक..........................भजन 73-89

इ. पृथ्वी और देशों से सम्बंधित गिनती की पुस्तक............................भजन 90-106

ई. परमेश्वर के वचन से सम्बंधित व्यवस्थाविवरण की पुस्तक..............भजन 107-150

9. सारांशः

भजन संहिता अपने आप में एक सम्पूर्ण पुस्तक है। सम्भवतः हर विषय जो सृष्टि और उद्धार में परमेश्वर और मनुष्य से सम्बंधित है बड़ी विस्तार से उल्लेख पाता है। अधिकाँश भजन नीचे दिए एक श्रेणी में सूचिबद्ध किए जा सकते हैं: मसीहा-सम्बंधित, पश्चातापी, कोसनेवाले, परिवर्णी काव्य, प्रभु की स्तुति हो, श्रेणी के भजन, एतिहासिक, भक्तिपूर्ण, आराधना, और शिक्षात्मक। मनुष्य के हृदय और जीवन में हर अवसर, चाह, इच्छा, भावना, और अभिव्यक्ति के लिए एक भजन है; भजन संहिता की पुस्तक बाइबल का हृदय है। नोटः मसीहा से सम्बंधित भजन उसके पूर्वभाव से लेकर उसके अनन्त सिंहासन तक मसीहा की सारी जीवन कहानी चित्रित करते हैं।

10. मसीह देखा गयाः

मसीह को परमेश्वर के "प्रिय" के रूप में देखा गया है जो कलीसिया के मध्य में परमेश्वर की स्तुति गाता है (इब्रा. 2:12)।

नीतिवचन

1. नामः

अ. नीतिवचन = तुलना।

आ. शिक्षा की पुस्तक।

इ. <u>बुद्धि की पुस्तक</u>

2. लेखकः

सुलेमान द्वारा, सम्भवतः अन्तिम दो अध्यायों के अलावा, लिखी और संग्रह की गई। (1 राजा 4:32; सभोपदेशक 12:8)

3. तारीख:

अधिकतर सुलेमान (लगभग 950 ई.पू.) ने लिखी थी परन्तु हिजकिय्याह के समय (लगभग 715 ई.पू.; 25:1) तक समाप्त नहीं की गई थी।

4. मूल शब्द:

अ. बुद्धिमान, बुद्धि........................124
आ. मूर्ख, मूर्खता............................97
इ. हृदय......................................85
ई. समझो....................................66
उ. ज्ञान...............................42
ऊ. शिक्षा.............................27
ए. न्याय..............................18

मूल वाक्यांश:

अ. "प्रभु का भय"......................................21

5. मूल आयत: 1:7, 9-10

6. उद्देश्य:

अ. पुस्तक का उद्देश्य स्पष्ट रूप से 1:2-6 में दिया गया है।
आ. इस बुरे संसार में ईश्वरीय बुद्धि का प्रतिदिन के जीवन के हर पहलू में उपयोग दिखाना।
इ. बुद्धि और मूर्खता को निश्चित करना और तुलना करना।

7. संदेश:

अ. भक्ति अत्यन्त व्यावहारिक है।
आ. बुद्धि के अन्तिम परिणाम मूर्खता के बुरे अन्त से बहुत ही श्रेष्ठ हैं।
इ. परमेश्वर प्रभु है और शैतान वही कर सकता है जो परमेश्वर उसे करने देता है।

8. रूपरेखा:

अ. परिचय...उद्देश्य..अ. 1:1-7
आ. "मेरे पुत्र" के लिए बुद्धि के शब्द (15 शिक्षात्मक कविताओं का संग्रह).............अ. 1:8-9:18
इ. सुलेमान के नीतिवचन (375 एक-आयत नीतिवचनों का संग्रह)......................अ. 10:22:16
    अ. विरोधात्मक नीतिवचन.................................अ. 10-15
    आ. सम्पूरक और तुलनात्मक नीतिवचन..................अ. 16-22:16
ई. बुद्धिमानों के वचन (35 नीतिवचन & संक्षिप्त कविताएँ).....अ. 22:17-24:34
उ. हिजकिय्याह द्वारा संग्रहित नीतिवचन..............................अ. 25-29
ऊ. आगूर के वचन...अ. 30
ए. लमूएल के वचन...अ. 31:1-9
ऐ. आदर्श पत्नि परिवर्णी काव्य...अ. 31:1-31

9. सारांश:

कहा गया है कि, "जो भजन संहिता भक्ति के जीवन के लिए है, वह नीतिवचन व्यावहारिक जीवन के लिए है।" इस पुस्तक में कोई भविष्यद्वाणी नहीं है और कम ही सिद्धान्त है, परन्तु बदले में एक शिक्षात्मक पुस्तक में, परमेश्वर की बुद्धि प्रतिदिन के जीवन में प्रयोग करती है। यह इस प्रकार की चीजों के विरुद्ध चेतावनी देती है, जैसे, बुरी संगति, अशुद्धता, असंयम, झगड़ा, झूठ बोलना, व्यवसाय में धोखा, और घूस लेना। यह आसलपन, सुस्ती, घमण्ड और कंजूसी की निन्दा करती है। यह जरूरतमंदों की ओर उदारता की आज्ञा देती है। यह प्रभु का भय, बच्चों का माता-पिता का आज्ञापालन, उनके बच्चों को उचित रूप से प्रशिक्षण देने की माता-पिता की जिम्मेवारी, और घर में स्त्री की भूमिका सिखाती है। इसमें नौजवान के लिए भी निर्देश हैं जो संसार में जा रहा है।

10. मसीह देखा गया:

मसीह को "परमेश्वर की बुद्धि" (1 कुरिं. 1:24, 30) के रूप में देखा गया है, "उसमें बुद्धि और ज्ञान के सारे भम्डार छिपे हुए हैं" (कुलु. 2:3)। उन वचनों पर विशेष ध्यान दो जहाँ बुद्धि साकार होकर बात करती है (1:20-33; 8:1-36)।

सभोपदेशक

1. नाम:

अ. सभोपदेशक = उपदेशक।

आ. व्यर्थता की पुस्तक।

इ. <u>मानव बुद्धि की पुस्तक</u>

2. लेखक:

उपदेशक द्वारा लिखी गई जिसका संकेत सुलेमान की ओर हो सकता है।

3. तारीख:

सम्भवत: सुलेमान की वृद्धावस्था में 935 ई.पू. के आसपास लिखी गई थी।

4. मूल शब्द:

अ. बुद्धिमान, बुद्धि....................................54

आ. हृदय...40

इ. व्यर्थता (झूठ).....................................37

ई. मूर्ख, मूर्खता.....................................32

मूल वाक्यांश:

अ. "सूर्य (स्वर्ग) के नीचे"..............................31

आ. "मन का कुढ़ना".....................................10

5. मूल आयत: 1:13-14; 12:13-14

6. उद्देश्य:

अ. किसी दूसरे में भरोसा घटाने के द्वारा परमेश्वर में भरोसा माँगना।

आ. संसार की सब चीजों की व्यर्थता दिखाकर, उनका मोह-भंग करना जो इस संसार की चीजों में उनका भरोसा डालते हैं।

इ. भक्तों को, यह दिखा कर कि जीवन की कठिनाइयों का सामना कैसे करें, सान्त्वना देना।

7. संदेश:

अ. परमेश्वर के अलावा, जीवन थकावट और निराशा से भरा हुआ है।

आ. जो पुरुष सब चीजों की व्यर्थता को जानते हैं उदास समयों की परीक्षाओं के लिए अच्छी तरह तैयार होते हैं।

इ. मनुष्य का सम्पूर्ण कर्तव्य परमेश्वर का भय मानना और उसकी आज्ञाओं का पालन करना है (12:13)।

8. रूपरेखा:

अ. परिचय...अ. 1:1-11

आ. सब चीजों की व्यर्थता.................................अ. 1:12-6:12

इ. बुद्धि से सम्बंधित सम्मति............................अ. 7:1-12:7

ई. निष्कर्ष..अ. 12:8-14

9. सारांश:

राजा सुलेमान, जो अपनी हर इच्छा तृप्त करने की स्थिति में था, उसने ऐसा भौतिक, कामुक, भावात्मक, और बौद्धिक रूप से करने का प्रयत्न किया। उसे शीघ्र ही पता चल गया परमेश्वर के भय के बिना जीवन खाली और व्यर्थ है। चाहे सुलेमान ने इस पुस्तक को लिखा या किसी दूसरे ने उसके अनुभवों को इस्तेमाल करके लिखा था, संदेश बिलकुल स्पष्ट है कि मनुष्य का सम्पूर्ण कर्तव्य परमेश्वर का भय मानना और उसकी आज्ञाओं का पालन करना है (12:13)। "उपदेशक" ने अपना संदेश अच्छी तरह बनाया है, पहले उसने दिखाया कि "सूर्य के नीचे" (पृथ्वी पर) सब चीजें व्यर्थ हैं और कि ईश्वरीय बुद्धि के बिना मनुष्य की बुद्धि मूर्खता है। फिर वह हमें यह निष्कर्ष देता है कि केवल परमेश्वर ही पूर्ति ला सकता है और इसलिए हमारी आशा और भरोसा केवल उसी में होना चाहिए।

10. मसीह देखा गया:

मसीह को उपदेशक, दाऊद के पुत्र, परमेश्वर की बुद्धि, और "ऊपर के" यरूशलेम के राजा के रूप में देखा गया है (सभोपदेशक 1:1; 1 कुरिं. 1:24; गला. 4:26)।

श्रेष्ठगीत

1. नाम:

अ. भजन = लैटिन नाम।

आ. श्रेष्ठगीत - (1:1 और 1 राजा 4:32)।

इ. प्रेम की पुस्तक

2. लेखक:

सुलेमान ने लिखी है (1:1)

3. तारीख:

लगभग 970 ई.पू. में लिखी गई थी।

4. मूल शब्द:

अ. प्रिय..33

आ. प्रेम...33

इ. सुन्दर......................................14

मूल वाक्यांश:

अ. "हे यरूशलेम की पुत्रियो"..............................7

5. मूल आयत:

प्रेम के तीन चरण:

अ. 2:16 "मेरा प्रिय मेरा है, और मैं उसकी हूँ"

आ. 6:3 "मैं अपने प्रेमी की हूँ, और मेरा प्रेमी मेरा है"

इ. 7:10 "मैं अपने प्रेमी की हूँ, और उसकी लालसा मेरी ओर नित्य बनी रहती है"

6. उद्देश्य:

अ. अक्षरक्षः : विवाह और विवाहिक प्रेम को महिमा देना।

आ. रहस्यवादीः यहोवा का इस्राएल के लिए प्रेम चित्रित करना। (होशे 2:19-20 यहूदी विद्याथियों ने आरम्भ से पहचाना है)।

इ. भविष्यसूचकः मसीह और कलीसिया के प्रेम को चित्रित करना। (2 कुरिं. 11:2; इफि. 5:22-33; प्रकाशित. 19:7-9)।

ई. भक्तिपूर्णः मसीह और विश्वासी का प्रेम चित्रित करना।

7. संदेशः

अ. मसीह के साथ हमारा प्रेम एक बढ़ता हुआ प्रेम का सम्बंध होना चाहिए।

आ. सच्चा प्रेम शक्तिशाली और चिरस्थाई है (8:7)।

8. रूपरेखाः

अ. पहला गीत......................आरम्भिक प्रेम......................अ. 1:1-2:7

आ. दूसरा गीता.....................लड़खड़ाता प्रेम.....................अ. 2:8-3:5

इ. तीसरा गीत.....................बढ़ रहा प्रेम.........................अ. 3:6-5:1

ई. चौठा गीत.......................रूपान्तर हो रहा प्रेम...............अ. 5:2-8:5

उ. पाँचवाँ गीत....................परिपक्व प्रेम.........................अ. 8:6-14

9. सारांशः

सुलेमान ने एक हजार गीत लिखे थे (1 राजा 4:32) और सब गीतों में से यह, श्रेष्ठ गीत सबसे श्रेष्ठ था। यह वास्तव में पाँच गीतों से बना है जो एक दुल्हा और एक दुल्हिन के बीच प्रेम के सम्बंध का प्रगतीशील विकास दिखाता है। यह उन अनेक बाधाओं का भी वर्णन करता है जिन्हें एक दुल्हिन को अपने प्रेमी से सत्य में जुड़ने के लिए पार करना पड़ता है। इस गीत में जो दो मुख्य चरित्र बात करते हैं वे हैं दुल्हा, जो अपनी दुल्हिन को उसका "प्रेम" कहता है, और दुल्हिन, जो अपने दुल्हे को अपना "प्रिय" कहती है। यरूशलेम की पुत्रियों का एक दल भी है जो सारे गीत में सुनाई देता है और प्रेक्षकों का एक समूह भी है जो तीसरे अध्याय में सुनाई पड़ता है।

10. मसीह देखा गयाः

मसीह को शान्ति का राजा (सुलेमान) और कलीसिया, जो "सर्वांग सुन्दरी और (जिसमें) कोई दोष नहीं" है, के प्रिय दुल्हे के रूप में देखा गया है। (शूलेम्मिन का अर्थ है "शान्तिप्रिय", "पूर्ण")। यह एक बड़ा रहस्य है;परन्तु मैं मसीह और कलीसिया के विषय में कहता हूँ।" (इफि. 5:32)

यशायाह

1. नामः

अ. यशायाह = यहोवा का उद्धार या याह सहायक है।

आ. "यशायाह के अनुसार सुसमाचार" की पुस्तक।

इ. <u>उद्धार की पुस्तक</u>

2. लेखकः

उद्धार के भविष्यद्वक्ता, यशायाह ने लिखी है, जिसने इस्राएल के घराने के विषय में भविष्यद्वाणी की, परन्तु उसकी सेवा मुख्य रूप से यहूदा के धराने को थी।

3. तारीखः

अ. यशायाह की सेवा लगभग 50 वर्षों (740 - 690 ई.पू.) में फैली हुई थी, उज्जियाह के शासन के बाद के वर्षों में होकर योताम और आहाज के शासनकाल में जारी रही, और हिजकिय्याह के शासनकाल में समाप्त हुई थी (1:1)।

आ. 740 और 690 ई.पू. के बीत लिखी गई थी।

4. मूल शब्दः

अ. धर्मी, धामिकता.........................64

आ. उद्धार, उद्धारकर्त्ता.......................55

इ. न्याय......................................52

ई. छुटकारा..........................32

उ. शान्ति............................18

मूल वाक्यांशः

अ. "इस्राएल का पवित्र"...............................30

5. मूल आयतः 12:6; 56:1; 61:1-3

6. उद्देश्यः

अ. यह दिखाना कि हालाँकि यहूदा का "भक्ति का एक रूप" था, परन्तु यह नैतिक, धार्मिक, और राजनीतिक रूप से भ्रष्ट था।

आ. अन्यजाति देशों की नियति बताना।

इ. मसीहा के जीवन और सेवा का एक विशालदर्शी भविष्यसूचक चित्र देना।

7. संदेशः

अ. न्याय के द्वारा, इस्राएल का पवित्र उद्धार, धार्मिकता, और शान्ति लाता है।

आ. केवल मसीहा के द्वारा ही सारे देशों में उद्धार आएगा।

8. रूपरेखाः

अ. न्याय की पुस्तक (भविष्यसूचक)......................................अ. 1-35
(यहूदा, इस्राएल, और अन्यजाति)
न्याय (1-12), बोझ (13-27), हाय (28-35)

आ. छुटकारे की पुस्तक..अ. 36-39
(अश्शूर, यहूदा, और हिजकिय्याह)

इ. शान्ति की पुस्तक (मसीहा-संबंधि).................................अ. 40-66
(यहोवा, मसीहा, और राज्य)

9. सारांशः

यशायाह की भविष्यद्वाणियाँ न केवल न्याय में यहूदा, इस्राएल और अन्यजाति देशों के लिए थीं परन्तु मसीहा और कलीसिया के द्वारा सब देशों की आशीष के लिए भी थीं। यशायाह सब भविष्यद्वाणी की पुस्तकों में से "प्रभु का उद्धार", मसीहा की सबसे व्यापक जीवन-कहानी देता है। वह मसीहा, उसके राज्य, और अन्यजातियों के आने की बात दूसरे सब भविष्यद्वक्ताओं को मिलाकर भी अधिक करता है।

10. मसीह देखा गयाः

मसीह को उसकी मसीहा की महिमा में इस्राएल के पवित्र (मरकुस 1:24), हमारे उद्धार (मत्ती 1:21), हमारी धार्मिकता (1 कुरिं. 1:30), और शान्ति (यूहन्ना 14:16, 18) के रूप में देखा गया है। सारा न्याय उसी को सौंपा गया है।

यिर्मयाह

1. नामः

अ. यिर्मयाह = यहोवा का प्रतिष्ठित किया हुआ, या यहोवा का नियुक्त किया हुआ।

आ. "धर्मत्यागियों को लिखी पुस्तक"

2. लेखकः

न्याय के भविष्यद्वक्ता, यिर्मयाह ने लिखी है, जिसने यहूदा के घराने के विषय में भविष्यद्वाणी की। उसने विलापगीत भी लिखी थी।

3. तारीखः

अ. यिर्मयाह की सेवा लगभग 66 वर्षों (626 - 560 ई.पू.) में फैली हुई थी, योशिय्याह के शासनकाल में आरम्भ होकर, यहोआहाज, यहोयाकीम, यहोयाकीन के शासनकाल में जारी रही, और यहूदा के अन्तिम राजा, सिदकिय्याह के शासनकाल में समाप्त हुई थी।

आ. 620 और 560 ई.पू. के बीच लिखी गई थी।

4. मूल शब्दः

अ. यहूदा..................................181

आ. बेबिलोन...............................60

इ. यरूशलेम............................108

ई. बुराई..................................100

उ. लौटो, फिरो..........................95

ऊ. हृदय...................................62

ए. पाप, अपराध.......................52

ऐ. न्याय...............................27

ओ. छोड़ दो...........................24

औ. धर्म-त्याग.......................13

अं. बन्धुआ...........................64

मूल वाक्यांशः

अ. "यहोवा का वचन मेरे पास पहुँचा"..............................70

आ. "सेनाओं का परमेश्वर यहोवा"...................................35

इ. "उठा ले गए"..25

5. मूल आयतः 2:9; 3:22; 13:19

6. उद्देश्यः

अ. एतिहासिकः यहूदा के घराने के अन्तिम पाँच राजाओं, मन्दिर के विनाश, शगर के उजाड़, और देश का बेबिलोन की बन्धुआई में जाने का इतिहास देना।

आ. आत्मिकः एक धर्म-त्यागी देश को प्रभु के पास वापस लौटने के लिए बुलाने में परमेश्वर का अनुग्रह और दया दिखाना।

इ. भविष्यसूचकः चुने हुए देश और आन्यजाति देशों की नियति बताना।

7. संदेशः

अ. प्रभु का वचन धर्म-त्यागियों को उनके अपराधों को छोड़ने और प्रभु के पास लौट आने को बुलाता है।

आ. सब बुराई का बन्धुआई द्वारा न्याय किया आएगा।

इ. उनको पश्चाताप के लिए बुलाने के बाद, परमेश्वर उनको छोड़ देगा जो उसे छोड़ेगें।

8. रूपरेखाः

अ. यिर्मयाह का बुलावा और नियुक्त.................................अ. 1

आ. बन्धुआई से पहले भविष्यद्वाणियाँ..................................अ. 2-38

इ. यहूदा की बन्धुआई...अ. 39, 52

ई. बन्धुआई के बाद की भविष्यद्वाणियाँ.............................अ. 40-51

9. सारांशः

विनाश के आने से पहले, यिर्मयाह को प्रभु से यहूदा के लिए अन्तिम आग्रह करने के नियुक्त किया गया था (7:27)। उसे उस अनिवार्य विनाश की घोषणा करनी थी जो बेबिलोन के राजा, नबुकदनेस्सर के हाथ से यहूदा, यरूशलेम, और मन्दिर पर आने वाली थी (21:1-10)। यिर्मयाह ने ही बेबिलोन की 70 वर्षों की बन्धुआई की अवधि तय की थी (15:11; 29:10)। उसके पास अन्यजाति देशों पर न्याय का संदेश भी था (46-51) और महिमायुक्त नई वाचा के आने की भविष्यद्वाणी की थी (31:31-34)।

10. मसीह देखा गयाः

मसीह को यरूशलेम का नियुक्त भविष्यद्वक्ता के रूप में देखा गया है, उसके अपने देश के हाथों, देश के लिए और देश के साथ दुख उठाता है। वह धर्मी डाली, राजा, हमारी धार्मिकता का प्रभु, और नई वाचा का बनानेवाला है (अ. 23, 31)।

विलापगीत

1. नामः

अ. विलापगीत = शोक, विलाप, रोना।

आ. "शोक की पुस्तक"

2. लेखकः

"रोता भविष्यद्वक्ता", यिर्मयाह ने लिखी है, जिसने यहूदा के घराने के विषय में भविष्यद्वाणी की। उसने विलापगीत भी लिखी थी।

3. तारीखः

अ. यिर्मयाह की सेवा लगभग 66 वर्षों (626 - 560 ई.पू.) में फैली हुई थी, योशिय्याह के शासनकाल में आरम्भ होकर, यहोआहाज, यहोयाकीम, यहोयाकीन के शासनकाल में जारी रही, और यहूदा के अन्तिम राजा, सिदकिय्याह के शासनकाल में समाप्त हुई थी।

आ. यरूशलेम के गिरने से थोड़े ही बाद, 586 ई.पू. के लगभग लिखी गई थी।

4. मूल शब्दः

अ. सिय्योन...15

आ. पीड़ित होना.....................................9

इ. यरूशलेम.......................................7

ई. उजाड़...7

मूल वाक्यांशः

अ. "यहोवा ने"....................................14

5. मूल आयतः 1:12; 2:17

6. उद्देश्यः

अ. भविष्यद्वक्ता के द्वारा यरूशलेम पर परमेश्वर के हृदय का दुख विलापगीतों की एक श्रँखला के द्वारा व्यक्त करना।

आ. यरूशलेम की पीड़ा और उजाड़ का ब्योरा देना।

7. संदेशः

अ. परमेश्वर के नियमों के उल्लंघन का पाप, परमेश्वर के अपने लोगों पर भी, विनाश और परमेश्वर का प्रकोप लाता है।

आ. हालाँकि परमेश्वर अपने लोगों से प्रेम करता है, और उन पर तरस खाता है, फिर भी वह उन्हें दण्ड देगा जो जानबूझकर हठी और अवज्ञाकारी हैं।

8. रूपरेखाः

अ.	पहली कविताः	यरूशलेम की दुर्दशा.................अ. 1	शहर
आ.	दूसरी कविताः	यहोवा का क्रोध........................अ. 2	पवित्र स्थान
इ.	तीसरी कविताः	यिर्मयाह का दुख.......................अ. 3	भविष्यद्वक्ता
ई.	चौठी कविताः	यहोवा का क्रोध........................अ. 4	लोग
उ.	पाँचवीं कविता	यिर्मयाह की प्रार्थना...................अ. 5	प्रार्थना

9. सारांशः

विलापगीत पाँच कविताओं से बना है। अध्याय 1 से 4 परिवर्णी काव्य हैं; हर आयत इब्रानी शब्दावली के 2 में से एक शब्द से लगातार आरम्भ होती है। इन में से हर कविता विनाश की, परमेश्वर के न्याय और दुख की बात करती है, और विनती की प्रार्थना से समाप्त होती है (चौथी के अलावा)। पाँचवीं कविता पूरी तरह मध्यस्थता की प्रार्थना है। यिर्मयाह का विलापगीत इन चार चीजों के विषय में है:

अ. यहूदा के लोग

आ. सुलेमान का मन्दिर

इ. यरूशलेम का शहर

ई. पलिश्तीनी की भूमि

10. मसीह देखा गयाः

मसीह को मध्यस्थता करते हुए, रोते हुए, "दुखों के मनुष्य" के रूप में देखा गया है जो यहूदा, यरूशलेम, मन्दिर, और देश के उजाड़ की बात बताते हुए विलाप कर रहा है (लूका 19:41-44; लूका 21:20-24; मत्ती 23:37-38; मत्ती 24:1-4)।

यहेजकेल

1. नामः

अ. यहेजकेल = परमेश्वर शक्ति देगा, परमेश्वर की शक्ति।

आ. मनुष्य के सन्तान की पुस्तक"

इ. दर्शनों की पुस्तक

2. लेखकः

दर्शन के भविष्यद्वक्ता याजक, यहेजकेल ने लिखी है, जिसने यहूदा के घराने की सेवा की, परन्तु इस्राएल के घराने के विषय में भविष्यद्वाणी की थी।

3. तारीखः

अ. यिर्मयाह की सेवा लगभग 30 वर्षो (593 - 563 ई.पू.) में फैली हुई थी, यहूदा के अन्तिम राजा, सिदकिय्याह के शासनकाल में आरम्भ होकर, बेबिलोन की बन्धुआई में जारी रही थी।

आ. 593 और 563 ई.पू. के बीच लिखी गई थी।

4. मूल शब्दः

अ.	लहू...56
आ.	उजाड़.......................................47
इ.	पवित्र स्थान.................................34
ई.	आत्मा.......................................26
उ.	दर्शन.......................................18

मूल वाक्यांश:

अ.	"यहोवा का वचन मेरे पास पहुँचा"..............................209
आ.	"मनुष्य के सन्तान"..93
इ.	"वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ"..................................63
ई.	"यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा"........................50
उ.	"इस्राएल के परमेश्वर का तेज".................................16

5. मूल आयत: 10:4, 18; 36; 24-28; 43:2

6. उद्देश्य:

अ.	यहूदा के अविश्वासी घराने को बताना कि एक बार जब "प्रभु का तेज" उठ जाएगा तब मन्दिर और शहर नष्ट कर दिए जाएँगे।
आ.	अन्यजाति देशों को उनका अनिवार्य न्याय दिखाना।
इ.	"प्रभु के तेज" का नए मन्दिर में लौटने की भविष्यद्वाणी करना।

7. संदेश:

अ.	जब एक देश "प्रभु के तेज" से उठा जाता है तब "प्रभु का तेज" वहाँ से उठ जाता है।
आ.	सब देश परमेश्वर के सामने उत्तदायी हैं और वह उनका न्याय करेगा।
	परमेश्वर न्याय करने में धर्मी और पुनःस्थापित करने में दयालु है।

8. रूपरेखा:

अ.	यहूदा और यरूशलेम का न्याय (आक्रमण से पहले)................................अ. 1-24
	(पुराने मन्दिर से महिमा उठ जाती है)
आ.	अन्यजाति देशों का न्याय (आक्रमण के दौरान)......................................अ. 25-32, 35
	मसीहा के अधीन पुनःस्थापना (आक्रमण के बाद)..................................अ. 33-48
इ.	(नए मन्दिर में तेज लौटता है)

9. सारांश:

यहेजकेल जो एक याजक था, अपनी भविष्यद्वाणी मन्दिर और महिमा के उठने और लौटने के दर्शनों के साथ आरम्भ करता और समाप्त करता है। यहेजकेल ही वह भविष्यद्वक्ता है जो मिस्र में इस्राएल की मूर्तिपूजा और उन्हें नष्ट करने के परमेश्वर के विचार की बात करता है (20:1-9)। वह ही मात्र भविष्यद्वक्ता है जो लूसीफर की उसके पतन से पहले की स्थिति सोर के राजा के संदर्भ में बताता है (28:11-19)। पुस्तक के अन्तिम भाग में नई वाचा में मसीहा के समयों और पुनःस्थापना की भी भविष्यद्वाणियाँ हैं। नोटः यहेजकेल और प्रकाशितवाक्य के दर्शनों में काफी कुछ अनुकूल है।

10. मसीह देखा गया:

मसीह को "मनुष्य की सन्तान" के रूप में देखा गया है, जिसे यहूदा के बलवा करने वाले घराने के पास भेजा गया था (2:1; यूहन्ना 1:11), और जो विश्वासयोग्य बचे हुओं की अपनी सेवा खुले स्वर्ग के साथ 30 वर्ष की आयु में आरम्भ करता है (1:1; लूका 3:21-23)। उसने यरूशलेम में हाथों से बने मन्दिर में से महिमा के उठ जाने और इसके विनाश की भविष्यद्वाणी की (मत्ती 24:1-2), और नए मन्दिर, कलीसिया में महिमा के लौटने की बात की।

दानिय्येल

1. नामः

अ. दानिय्येल = परमेश्वर का न्याय, या परमेश्वर मेरा न्यायी है।

आ. <u>न्याय की पुस्तक"</u>

इ. <u>राज्यों की पुस्तक</u>

2. लेखकः

बन्धुआई के भविष्यद्वक्ता, दानिय्येल ने लिखी है, जिसने सांसारिक और स्वर्गीय राज्यों दोनों के विषय में भविष्यद्वाणी की थी।

3. तारीखः

अ. दानिय्येल की सेवा लगभग 70 वर्षों (606 - 536 ई.पू.) में फैली हुई थी, यहोयाकीम के शासनकाल में आरम्भ होकर, यहूदा के राजा यहोयाकीन और सिदकिय्याह के शासनकालों में जारी रही, और फारस के राजा कुस्रू के शासनकाल में समाप्त हुई थी।

आ. 560 और 536 ई.पू. के बीच लिखी गई थी।

4. मूल शब्दः

अ. राजा.......................................187

आ. राज्य..59

इ. समय.......................................47

ई. अर्थ..32

उ. दर्शन..............................32

ऊ. सपना..............................29

ए. अन्त...............................27

ऐ. अधिकार..........................19

मूल वाक्यांशः

अ. "परमप्रधान".......................................12

5. मूल आयतः 2:21-22; 7:13-14, 18

6. उद्देश्यः

अ. परमेश्वर की उसके लोगों के लिए उनकी बन्धुआई में भी चिन्ता चित्रित करना।

आ. परमेश्वर का राज्य सांसारिक राज्यों से ऊँचा है प्रमाणित करना।

इ. दिखाना कि परमेश्वर किस प्रकार देशों के इतिहास को नियंत्रित और संचालित करता है।

7. संदेशः

अ. "परमप्रधान परमेश्वर" की प्रभुसत्ता विश्वव्यापी है।

आ. परमेश्वर, देशों में उसके काम के विषय में, अपने रहस्य अपने सेवकों पर प्रकट करता है, और उन्हें अंधेरे में नहीं रखता है।

8. रूपरेखाः

अ. इतिहास की पुस्तक...........(कसदी में लिखी)............अ. 1-6 (नबूकदनेस्सर के सपने)

आ. भविष्यद्वाणी की पुस्तक......(इब्रानी में लिखी)............अ. 7-12 (दानिय्येल के दर्शन)

9. सारांशः

दानिय्येल और उसके साथियों के अनुभव दिखाते हैं कि प्रभु के वफादार और आज्ञाकारी सेवक अकसर सांसारिक सफलता की आशीष पाते, उसके रहस्यों का भरोसा पाते, और दुख और परीक्षा में शान्ति पाते हैं। पहले छः अध्यायों में नबूकदनेस्सर के सपने इस संसार के राज्यों को मनुष्य के दृष्टिकोण से दिखाते हैं (अर्थात् एक दोषी मनुष्य के रूप में)।

अन्तिन छः अध्यायों में दानिय्येल के सपने उन्हीं राज्यों को ईश्वरीय दृष्टिकोण से दिखाते हैं (अर्थात् जंगली, मांसाहारी पशुओं के समान) और उनके क्रमिक क्रम देते हैं। निस्सेदंह, दानिय्येल में सबसे व्यापक (और विवादास्पद) भविष्यद्वाणी "70 सप्ताह" की भविष्यद्वाणी है, जो बेबिलोन की बन्धुआई की समाप्ती से लेकर "मनुष्य के सन्तान" के अनन्त राज्य के निर्णायक स्थापना तक की अवधि में पहुँचती है।
दानिय्येल और प्रकाशितवाक्य साथी लेख हैं, हर एक दूसरे को सम्पूर्ण करते हैं।

10. मसीह देखा गयाः

मसीह मनुष्य के सन्तान (7:13), इस संसार के राज्यों को चूर-चूर करता हुआ (मत्ती 21:42-44), किसी के हाथ के बिना खोदे पहाड़ में से उखड़ा एक पत्थर (2:34-35, 44-45) है। परमेश्वर का राज्य सदा का राज्य है (दानिय्येल 7:27) और मसीह राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है। (प्रकाशित. 19:16)

होशे

1. नामः

अ. होशे = उद्धार, प्रभु बचाता है।
आ. दृढ़ रहनेवाले प्रेम की पुस्तक"
इ. व्यवस्था और प्रेम की पुस्तक

2. लेखकः

व्यवस्था और प्रेम के भविष्यद्वक्ता, होशे ने लिखी है, जिसने इस्राएल के घराने की सेवा की थी।

3. तारीखः

अ. होशे की सेवा लगभग 45 वर्षों (755 - 710 ई.पू.) में फैली हुई थी, इस्राएल के यारोबाम 2 के शासनकाल के अन्त से आरम्भ होकर, जकर्याह, शल्लूम, मनहेम, पेकह, और होशे के शासनकालों में जारी रही, और यहूदा के हिजकिय्याह के शासनकाल के दौरान अश्शूरी बन्धुआई के बाद समाप्त हुई थी।
आ. 750 और 710 ई.पू. के बीच लिखी गई थी।

4. मूल शब्दः

अ. इस्राएल..44
आ. एप्रैम...37
इ. फिरो, लौटो....................................20
ई. विश्वासघात....................................14
उ. दया...11

5. मूल आयतः 1:6, 9; 2:4, 23; 14:1, 4

6. उद्देश्यः

अ. इस्राएल को मन फिराने के लिए बुलाना।
आ. अश्शूर की बन्धुआई के कारण की भविष्यद्वाणी करना, जो इस्राएल की अविश्वासयोग्यता थी।
इ. पुनःस्थापना की भविष्यद्वाणी करना जो केवल मनश्शे के द्वारा ही आएगा।

7. संदेशः

अ. प्रभु धर्मत्यागी से प्रेम करता है और उसे पुनःस्थापित करने और चंगा करने की चाह करता है, और व्यवस्था की ताड़ना और दण्ड के द्वारा वह ऐसों को लौटा लाता है।
आ. प्रेम सन्तुलन लाता है, और कभी भी व्यवस्था का उल्लंघन नहीं करता।

8. रूपरेखा:

अ. भविष्यद्वक्ता - प्रतीकात्मक विवाह......................................अ. 1-3
   1. भविष्यद्वक्ता का परिवार...अ. 1
   2. अविश्वासयोग्य पत्नी...अ. 2
   3. विश्वासयोग्य उद्धार करनेवाला पति..............................अ. 3

आ. भविष्यद्वाणी..........................प्रभु का वचन........................अ. 4-14
   1. इस्राएल का पाप...............परमेश्वर पवित्र है...................अ. 4-7
   2. इस्राएल का दण्ड..............परमेश्वर न्यायी है.................अ. 8-10
   3. इस्राएल की पुनःस्थापना......परमेश्वर प्रेम है.....................अ. 11-14

9. सारांश:

होशे की पुस्तक होशे के घरेलू जीवन को परमेश्वर के इस्राएल से निपटने को एक उदाहरण के रूप में इस्तेमाल करती है, जो परमेश्वर का इस्राएल के साथ उसका संयोग, विवाह की वाचा की ओर उनकी अविश्वासयोग्यता, उसकी उनकी ताड़ना करना, और उन्हें अपने साथ पुनःस्थापित करने में उसका प्रेम और दया प्रकट करती है। यह तीन महान वाचाओं के बीच सम्बंध भी दिखाती है:

अ. अब्राहम की वाचा...............................देश चुना जाना

आ. मूसा की वाचा...................................देश की ताड़ना

इ. नई वाचा...देश का शुद्ध करना

10. मसीह देखा गया:

मसीह को भविष्यद्वक्ता (प्रेरितों 3:22-23) के रूप में देखा गया है जो व्यवस्था पूरी करता है (मत्ती 5:17-18) और प्रेम में उद्धार करता है (यूहन्ना 3:16)।

योएल

1. नाम:

अ. योएल = यहोवा परमेश्वर है, जो इरादा करता, आज्ञा देता, या शपथ खाता है।

आ. <u>प्रभु के दिन की पुस्तक</u>

2. लेखक:

पिन्तेकुस्त के भविष्यद्वक्ता, योएल ने लिखी है, जिसने यहूदा के घराने में भविष्यद्वाणी की थी।

3. तारीख:

अ. योएल की सेवा लगभग 30 वर्षों (810 - 780 ई.पू.) में फैली हुई थी, यहूदा के योआश, अमस्याह और उज्जियाह के शासनकालों में जारी रही थी।

आ. 810 और 780 ई.पू. के बीच लिखी गई थी।

4. मूल शब्द:

अ. महान......................................10

आ. सिय्योन...................................7

इ. दाखरस....................................7

ई. इकट्ठा करो.........................6

उ. यहूदा.................................6

ऊ. भेंट..................................6

मूल वाक्यांश:

अ. "प्रभु का दिन".......................................5

5. मूल आयतः 2:28-32

6. उद्देश्यः ("प्रभु के दिन" का तीन तरफा उपयोग)

अ. स्थानीयः यहूदा के घराने को, जो ईश्वरीय न्याय के अधीन था, पश्चाताप के लिए बुलाना।

आ. भविष्यसूचकः अन्तिम दिनों के न्याय, पश्चाताप, बेदारी, और सब मनुष्यों पर आत्मा के उँडेले जाने का संकेत करना।

इ. अन्तिमः प्रभु के पुनरागमन के दिन की ओर संकेत करना।

नोटः प्रभु का दिन परमेश्वर के राज्य के सारे इतिहास भर में है, और उस महान और अन्तिम प्रभु के दिन के प्रतीक के रूप में हर न्याय में घटित होता है।

7. संदेशः

अ. सच्चा पश्चाताप एक भक्ति का दुख है, हृदय को फाड़ना है, और बुराई से फिरना है।

आ. सच्चा पश्चाताप सब असली बेदारी और हर आत्मा के उँडेले जाने का आधार है।

8. रूपरेखाः

अ. विनाश और पश्चाताप..............न्याय....................अ. 1:1-2:17 (एतिहासिक)

1. विनाश...अ. 1:1-2:11
2. पश्चाताप...अ. 2:12-17

आ. बेदारी और पुनःस्थापना............आशीष..................अ. 2:18-3:21 (भविष्यसूचक)

1. बेदारी..अ. 2:18-32
2. पुनःस्थापना...अ. 3:1-21

9. सारांशः

योएल हमें यहूदा की एक तस्वीर देता है जो अब्राहम और उसके वंश को प्रतिज्ञा की गई भूमि में रहते हैं। वे पलिशतीनी वाचा (व्यवस्था. 28) की शर्तो को तोड़ने के कारण (व्यवस्था. 1:10-17; 1 राजा 8:35-40) उसका शाप पा रहे थे। योएल के द्वारा परमेश्वर का वचन उन्हें सच्चे पश्चाताप के लिए पुकारता हैः कपड़ों का फाड़ना नहीं परन्तु हृदय का फाड़ना। प्रभु यहूदा के देश से एक प्रकृतिक बारिश के द्वारा ताज़गी, बेदारी और पुनःस्थापना प्रतिज्ञा करता है, जो कलीसिया पर आत्मा की बारिश की भविष्यद्वाणी है। पवित्र आत्मा की यह बारिश योएल की नए नियम के साथ स्पष्ट कड़ी है (प्रेरितों 2:14-21)। इसलिए उसे "पिन्तेकुस्त का भविष्यद्वक्ता" कहते हैं।

10. मसीह देखा गयाः

मसीह हमारा "यहोवा-परमेश्वर" है, जो उँडेले पवित्र आत्मा का प्रतिज्ञा करनेवाला (लूका 24:49), पानेवाला (प्रेरितों 2:33), और बपतिस्मा देनेवाला (यूहन्ना 1:31-33) है।

आमोस

1. नामः

अ. आमोस = बोझ उठानेवाला, या एक बोझ उठाना।

आ. <u>न्याय की पुस्तक"</u>

इ. दण्ड की पुस्तक

2. लेखकः

दण्ड के भविष्यद्वक्ता, आमोस ने लिखी है, जिसने इस्राएल के घराने की सेवा की थी।

3. तारीखः

अ. आमोस की सेवा, इस्राएल के राजा योरोबाम 2 के शासन के दौरान, लगभग 10 वर्षों (785 - 755 ई.पू.) में होती रही थी।

आ. 765 और 755 ई.पू. के बीच लिखी गई थी।

4. मूल शब्दः

अ. इस्राएल..30

आ. बन्धुआई..13

इ. अपराध..12

ई. दण्ड...8

मूल वाक्यांशः

अ. "मैं उसका दण्ड न छोड़ूँगा"..8

आ. "तौभी तुम मेरी ओर फिरकर न आएँ"..........................5

5. मूल आयतः 4:11-12

6. उद्देश्यः

अ. अन्यजाति देशों पर उनके अपराधों के कारण दण्ड घोषित करना।

आ. चुने हुए देश, इस्राएल पर उसके अपराधों के कारण दण्ड घोषित करना।

इ. मसीहा के समय में पुनःस्थापना की प्रतिज्ञाओं की घोषणा करना।

7. संदेशः

अ. परमेश्वर सब देशों पर प्रभु है और दूसरी जातियों और देशों के साथ उनके बर्ताव के लिए उन्हें उत्तरदायी ठहराता है।

आ. राष्ट्रीय पाप राष्ट्रीय दण्ड लाता है।

8. रूपरेखाः

अ. अन्यजाति और इस्राएल पर आठ बोझ...............................अ. 1-2
(घोषणा / दण्ड / पाप)

आ. इस्राएल के विरुद्ध तीन उपदेश...अ. 3-6
(न्याय के योग्य / न्याय का आदेश)

इ. इस्राएल के विषय में पाँच दर्शन.......................................अ. 7-9
(न्याय रोका गया / न्याय निश्चित किया गया / न्याय किया गया)

9. सारांशः

आमोस एक पशुपालक था और उसने भविष्यद्वक्ता होने की कोई शिक्षा नहीं पाई थी, और न ही वह याजक या राजकीय परिवार से था। फिर भी उसे ईश्वरीय न्याय का भविष्यद्वक्ता होने के लिए चुना गया था। उसका काम व्यवस्था की धार्मिकता को ऊँचा उठाना और पापी देशों पर न्याय घोषित करना था। उसकी सेवा विशेषकर देशों के बीच सम्बंध से निपटना, और उनके क्रूरता के पापों को निन्दा करना था। आमोस दाऊद के तम्बू की पुनःस्थापना और मसीहा के समय में अन्यजातियों का आशीष में आने की उल्लेखनीय भविष्यद्वाणी भी देता है (प्रेरितों 15:15:15-18)।

10. मसीह देखा गयाः

मसीह हमारा "बोझ-उठानेवाला" है, जो न केवल हमारे पापों का बोझ (यशा. 53:12) उठाता है, परन्तु प्रभु के वचन का बोझ (प्रेरितों 1:1-2) भी उठाता है। वह अन्तिम न्यायी और सब देशों को दण्ड देनेवाला है (2 थिस्स. 1:7-9) और वह दाऊद के आत्मिक तम्बू, कलीसिया (मत्ती 16:18-19) का निर्माता है।

ओबद्याह

1. नामः

अ. ओबद्याह = प्रभु का सेवक, या यहोवा का आराधक।

आ. प्रतिशोध की पुस्तक"

2. लेखकः

ईश्वरीय प्रतिशोध के भविष्यद्वक्ता, ओबद्याह ने लिखी है, जिसने एदोम के विरुद्ध भविष्यद्वाणी की थी।

3. तारीखः

अ. ओबद्याह की सेवा, यहूदा के याहोराम के शासन के दौरान, लगभग 8 वर्षों (848 - 840 ई.पू.) में होती रही थी। (कुछ ओबद्याह की सेवा को बेबिलोन की बन्धुआई के दौरान या बाद में हुई बताते हैं)

आ. 848 और 840 ई.पू. के बीच लिखी गई थी।

4. मूल शब्दः

अ. दिन..12

आ. एसाव, एदोम.......................................9

इ. अपराध...7

मूल वाक्यांशः

अ. "नष्ट हो जाएगा"..3

5. मूल आयतः 4, 15

6. उद्देश्यः

अ. एसाव / एदोम का सर्वनाश, विनाश, और बरबादी घोषित करना।

आ. याकूब / इस्राएल के छुटकारे और पुनःस्थापना, एतिहासिक और भविष्यसूचक दोनों की प्रतिज्ञाओं की पुष्टि करना।

7. संदेशः

अ. "विनाश से पहले गर्व, और ठोकर खाने से पहले घमण्ड आता है। (नीतिवचन 16:18)

आ. "मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा।" (गलातियों 6:7-8)

8. रूपरेखाः

अ. एसाव / एदोम..आय. 1-16

1. विनाश निश्चित है......................................आय. 1-9
2. पाप की निन्दा...आय. 10-14
3. दण्ड की घोषणा...आय. 15-16

आ. याकूब / इस्राएल...आय. 17-21 (छुटकारा और पुनःस्थापना)

9. सारांशः

ओबद्याह की पुस्तक ईश्वरीय प्रतिशोध का नियम दिखाती है।

जैसा तू ने किया है, वैसा ही तुझ से भी किया जाएगा" (आय. 15)

- यहूदा के विरुद्ध एदोम का विश्वासघात
- एदोम विश्वासघात द्वारा नष्ट होगा (आय. 11)
- एदोम ने यहूदा को लूटा (आय. 13)
- एदोम लूटा जाएगा (आय. 5-6)
- एदोम ने उपद्रव में तलवार उठाई (आय. 9)

- एदोम ने यहूदा का सत्यानाश चाहा था (आय. 12-14)
- एदोम का भी सत्यनाश होगा (आय. 9-10, 18)

हालाँकि यहूदा को दण्ड के बाद पुनःस्थापना की प्रतिज्ञा दी गई थी, एदोम को ऐसी कोई प्रतिज्ञा नहीं दी गई थी। इस पुस्तक की पृष्ठभूमि और कुंजी इन दो देशों और उनके पिताओं, एसाव और याकूब के सम्बंध में पाई जाती है।

नोटः ओबद्याह और आमोस के बीच कई अन्योन्य संदर्भ हैं।

10. मसीह देखा गयाः

मसीह यहोवा का सेवक (फिलि. 2:7) और आराधक (इब्रा. 2:12), और ईश्वरीय प्रतिशोध का निष्पादक है (2 थिस्स. 1:6-10)।

योना

1. नामः

अ. योना = कबूतर

आ. अन्यजातियों पर दया की पुस्तक"

2. लेखकः

अन्यजातियों पर दया के भविष्यद्वक्ता, योना ने लिखी है, जिसने इस्राएल के घराने और अश्शूरी साम्राज्य की सेवा की थी।

3. तारीखः

अ. योना की सेवा, इस्राएल के यहोआश और यारोबाम 2 के शासन के दौरान, लगभग 15 वर्षों (785 - 770 ई.पू.) में होती रही थी।

आ. 780 और 770 ई.पू. के बीच लिखी गई थी।

4. मूल शब्दः

अ. क्रोध..6

आ. तैयार...4

इ. पतन..4

मूल वाक्यांशः

अ. "यहोवा के सम्मुख से".......................................3

5. मूल आयतः 3:2-10

6. उद्देश्यः

अ. अन्यजातियों और इस्राएल के लिए भी परमेश्वर का प्रेम और दया दिखाना। (रोमियों 3:29; 10:12)

आ. उसके अवज्ञाकारी सेवकों से निपटने का परमेश्वर का तरीका दिखाना।

7. संदेशः

अ. परमेश्वर पक्षपात नहीं करताः "वरन् हर जाति में जो उससे डरता और धर्म के काम करता है, वह उसे भाता है।" (प्रेरितों 10:34-35)

आ. परमेश्वर के सेवकों को सबक सीखने चाहिए कि परमेश्वर जिस पर चाहता है उस पर दया करता है।

इ. अवज्ञा के द्वारा, परमेश्वर का सेवक अपने ऊपर परमेश्वर की ताड़ना लाएगा।

8. रूपरेखाः

- अ. योना और आँधी.................अवज्ञाकारी भविष्यद्वक्ता......................अ. 1
- आ. योना और मछली................प्रार्थना कर रहा भविष्यद्वक्ता.................अ. 2
- इ. योना और शहर...................प्रचार कर रहा भविष्यद्वक्ता...................अ. 3
- ई. योना और प्रभु.....................दण्ड पाया भविष्यद्वक्ता........................अ. 4

9. सारांशः

योना में, हम नीनवे के महान अन्यजाति शहर को भविष्यद्वक्ता योना के अनिच्छुक प्रचार के अधीन मन फिराते और परमेश्वर की ओर फिरते पाते हैं। अध्याय एक में हम योना को प्रभु के सम्मुख से भागते पाते हैं, वह याफा की ओर जहाज में जाता है, और अन्त में मछली के पेट में पड़ता है जिसे परमेश्वर ने तैयार किया था। तब अध्याय दो में परमेश्वर से प्रार्थना करता है और मछली से छुड़ाया जाता है। अध्याय तीन में वह अन्त में परमेश्वर का संदेश नीनवे को देता है और सारा शहर मन फिराता है, परन्तु अध्याय चार में एक बार फिर योना को प्रभु से ताड़ना पाते देखते हैं क्योंकि वह क्रोधित हुआ जब परमेश्वर ने नीनवे को नष्ट करने की उसकी भविष्यद्वाणी पूरी नहीं की।

10. मसीह देखा गयाः

मसीह को "योना से बड़ा" के रूप में देखा गया है, और वह योना के अनुभव को उसकी अपनी मृत्यु, गाड़े जाने और मरे हुओं में से जी उठने और पश्चातापी अन्यजातियों पर परमेश्वर की दया के रूप में उपयोग करता है (मत्ती 12:39-41)।

मीका

1. नामः

- अ. मीका = यहोवा के समान कौन है, परमेश्वर समान।
- आ. उपदेशों की पुस्तक
- इ. <u>दृढ़ निश्चय की पुस्तक</u>

2. लेखकः

मसीहा के दृढ़ निश्चय के भविष्यद्वक्ता, मीका ने लिखी है, जिसने इस्राएल और यहूदा दोनों की सेवा की थी। (केवल वह ही अकेला "छोटा" भविष्यद्वक्ता था जिसने ऐसा किया था)।

3. तारीखः

- अ. मीका की सेवा, यहूदा के योताम, आहाज, और हिजकिय्याह के शासनकाल और इस्राएल के पेकह और होशे के शासनकाल के दौरान, लगभग 35 वर्षों (735 - 700 ई.पू.) में होती रही थी। उसने इस्राएल की अश्शूर की बन्धुआई को देखा था।
- आ. 735 और 700 ई.पू. के बीच लिखी गई थी।

4. मूल शब्दः

- अ. इस्राएल....................................12
- आ. सुनो..10
- इ. सिय्योन.....................................9
- ई. यरूशलेम..................................8
- उ. पाप.....................................7
- ऊ. अपराध...............................6
- ए. इकट्ठा करो.........................6
- ऐ. बचे हुए..............................6

5. मूल आयतः 3:8; 6:8; 7:18

6. उद्देश्यः

अ. इस्राएल और यहूदा को उनके पास स्वीकार करवाना और उनके अनुवर्ती दण्डों को अश्शूर और बेबिलोन की उनकी अपनी-अपनी बन्धुआई में दिखाना।

आ. विश्वासयोग्य बचे हुओं को मसीहा के समय में पुनःस्थापना की प्रतिज्ञा देना।

इ. मसीहा के जन्म के शहर को ठीक ठीक बताना। (केवल मीका ने ही ऐसा किया है)

7. संदेशः

अ. परमेश्वर अपराध और विधिवाद से घृणा करता है, और उनसे निपटने के बाद, क्षमा में आनन्दित होता है।

आ. जो विश्वासयोग्य बने रहते हैं, परमेश्वर की दया और उद्धार के अनुग्रह का आश्वासन पा सकते हैं।

8. रूपरेखाः

अ. पाप और न्याय..अ. 1-3
लोगों को................."सुनो"

आ. अनुग्रह और पुनःस्थापना..अ. 4-5
अगुवों को................"सुनो"

इ. विवाद और शान्ति..अ. 6-7
पहाड़ों को................"सुनो"

9. सारांशः

मीका की भविष्यद्वाणी कई "उपदेशों" से बनी हुई है, जो चेतावनियों, न्यायों, उपदेशों, पुनःस्थापना की प्रतिज्ञाओं और मसीहा की भविष्यद्वाणियों से मिश्रित है। लोगों के पहले उपदेश में, वह इस्राएल और यहूदा को उनका धर्मत्याग और उनके अनुवर्ती न्याय को दिखाता है। अगुवों को दूसरे उपदेश में, वह मसीहा की स्पष्ट पुनस्थापना की प्रतिज्ञाओं के साथ इस्राएल और यहूदा को शान्ति देता है, और फिर पहाड़ों (राज्यों) को तीसरे उपदेश में, वह सच्चे धर्म के विषय में इस्राएल से आग्रह करता है और शान्ति भरे शब्दों से समाप्त करता है कि परमेश्वर क्षमा करेगा।

10. मसीह देखा गयाः

मसीह स्वर्गीय मीका है, जो बैतलहम में जन्मा (5:2; मत्ती 2:1-6), यहूदियों के राजा के रूप में अस्वीकार किया गया (5:1; यूहन्ना 19:15), और उसके भवन को दृढ़ करनेवाला (4:1; इब्रा. 3:6) "परमेश्वर समान" है।

नहूम

1. नामः

अ. नहूम = शान्ति देनेवाला, या पश्चातापी।

आ. <u>प्रतिशोध की पुस्तक</u>

2. लेखकः

शान्ति और प्रतिशोध के भविष्यद्वक्ता, नहूम ने लिखी है, जिसने यहूदा के घराने और नीनवे के शहर की सेवा की थी।

3. तारीखः

अ. मीका की सेवा, यहूदा के मनश्शे, आमोन और योशिय्याह के शासनकाल के दौरान, लगभग 30 वर्षों (650 - 620 ई.पू.) में हुई थी।

आ. 650 और 620 ई.पू. के बीच लिखी गई थी।

4. मूल शब्दः

अ. विरुद्ध.....................................5
आ. दुष्ट..4
इ. भागना.....................................4
ई. दूर..4
उ. प्रतिशोध.................................3
ऊ. दुख देना.................................3

5. मूल आयतः 1:2-3

6. उद्देश्यः

अ. परमेश्वर के प्रतिशोध का न्याय नीनवे पर घोषित करना।
आ. यहूदा के शत्रुओं के विनाश की घोषणा करके उसे शान्ति देना।

7. संदेशः

अ. परमेश्वर उनके विरुद्ध है जो उसके विरुद्ध हैं।
आ. जो परमेश्वर की दया को अस्वीकार करते हैं ईश्वरीय प्रतिशोध उन पर पड़ता है।
इ. एक कठोर धर्मत्यागी देश के लिए परमेश्वर के पास विकल्प उसे नष्ट करना ही है।

8. रूपरेखाः

अ. न्याय की घोषणा..............परमेश्वर बदला लेता है.................अ. 1
आ. न्याय का वर्णन...............परमेश्वर कैसे बदला लेता है...........अ. 2
इ. न्याय के योग्य................परमेश्वर बदला क्यों लेता है...........अ. 3

9. सारांशः

अश्शूर की राजधानी, नीनवे को दो भविष्यद्वक्ताओं, योना और नहूम की सेवा मिली थी। योना दया का भविष्यद्वक्ता था, उसने शहर को पश्चाताप के लिए बुलाया था। उस समय नीनवे ने पश्चाताप किया था और योना द्वारा विनाश की भविष्यद्वाणी से बच गया था। इसके पश्चाताप के 150 वर्षों में, शहर पहले से भी बुरी मूर्तिपूजा में लौट गया था। नहूम को नीनवे पर शीघ्र आ रहे विनाश में परमेश्वर के प्रतिशोध की घोषणा करने को नीनवे भेजा गया। अश्शूर को परमेश्वर की दया दिखाने के बाद भी, उसने इस्राएल को बन्धुआई में कोई दया नहीं दिखाई और इसलिए परमेश्वर ने उनका बिना दया न्याय कर दिया (याकूब 2:13)। नीनवे पर नहूम की ईश्वरीय प्रतिशोध की घोषणा यहूदा के लिए शान्ति थी।

10. मसीह देखा गयाः

मसीह शान्ति और प्रतिशोध का भविष्यद्वक्ता है, जो अपनों को शान्ति देता (यूहन्ना 14:16) और जो "परमेश्वर को नहीं पहचानते और हमारे प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार को नहीं मानते उनसे पलटा" लेता है (2 थिस्स. 1:8)।

हबक्कूक

1. नामः

अ. हबक्कूक = प्रेम का आलिंगन, पहलवान।
आ. <u>विश्वास की पुस्तक</u>

2. लेखकः

विश्वास के भविष्यद्वक्ता, हबक्कूक ने लिखी है, जिसने यहूदा के घराने की सेवा की थी।

3. तारीखः

अ. हबक्कूक की सेवा, यहूदा के योशिय्याह, यहोआहाज और यहोयाकीम के शासनकाल के दौरान, लगभग 20 वर्षों (620 - 600 ई.पू.) में हुई थी।

आ. 620 और 600 ई.पू. के बीच लिखी गई थी।

4. मूल शब्दः

अ. उपद्रव.....................................5

आ. हाय..4

इ. दण्ड.......................................4

ई. लूट..4

5. मूल आयतः 2:4

6. उद्देश्यः

अ. इस समस्या को सामने रखना कि क्यों एक पवित्र परमेश्वर दुष्ट यहूदा को दण्ड देने के लिए एक उससे अधिक दुष्ट बेबिलोन को इस्तेमाल करेगा।

आ. समस्या का उत्तर यह प्रकट करके देना कि परमेश्वर बदले में बेबिलोन को दण्ड देगा।

7. संदेशः

अ. अनुमत दुष्टता में परमेश्वर अपने साथ संबद्ध है।

आ. परमेश्वर पवित्र और धर्मी है और पाप को दण्ड देगा।

इ. धर्मी विश्वास के द्वारा जीवित रहेगा।

8. रूपरेखाः

अ. बोझः विश्वास की समस्या................पहली बातचीत........................अ. 1

आ. दर्शनः विश्वास का उत्तर...................दूसरी बातचीत........................अ. 2

इ. प्रार्थनाः विश्वास का आश्वासन............भविष्यद्वक्ता का भजन.............अ. 3

9. सारांशः

हबक्कूक सीधे यहूदा के लोगों को सम्भोदित नहीं किया गया था, परन्तु यह भविष्यद्वक्ता और परमेश्वर के बीच संवाद है। पहले संवाद में, वह यहूदा के पाप पर परमेश्वर की प्रकट चिन्ता की कमी की शिकायत करता है। प्रभु उत्तर देता है कि वह यहूदा को दण्ड देने के लिए बेबिलोन को इस्तेमाल करेगा। हबक्कूक इससे अधिक उलझन में पड़ता है और दूसरे संवाद में वह बेबिलोन की क्रूरता पर परमेश्वर की प्रकट चिन्ता की कमी की शिकायत करता है, और परमेश्वर उत्तर देता है कि वह बेबिलोन को भी उसके उपद्रव के लिए दण्ड देगा। भविष्यद्वक्ता, प्रश्नों के उत्तर पाने पर, प्रभु में भरोसे और विजय के एक भजन के साथ समाप्त करता है।

नोटः पुराने नियम की केवल इस पुस्तक में विश्वास शब्द का सकारात्मक उपयोग पाया जाता है।

10. मसीह देखा गयाः

मसीह बेबिलोन का न्यायी (प्रकाशित. 17-18) और जो उसे विश्वास से खोजते हैं उनका प्रतिफल देनेवाला (इब्रा. 10:38; 11:6) है।

सपन्याह

1. नामः

अ. सपन्याह = यहोवा से छिपा, यहोवा ने छिपाया है, या सुरक्षित।

आ. रोष का दिन की पुस्तक

2. लेखकः

रोष के दिन के भविष्यद्वक्ता, सपन्याह ने लिखी है, जिसने यहूदा के घराने की सेवा की थी।

3. तारीखः

अ. सपन्याह की सेवा, यहूदा के राजा योशिय्याह के शासनकाल के दौरान, लगभग 14 वर्षों (638 - 624 ई.पू.) में हुई थी।

आ. 638 और 624 ई.पू. के बीच लिखी गई थी।

4. मूल शब्दः

अ. दिन..21

आ. उजाड़...8

इ. विरुद्ध...8

ई. क्रोध, रोष.......................................6

उ. बचे हुए..4

मूल वाक्यांशः

अ. "मैं ..कर दूँगा"..............................30

आ. "प्रभु का दिन"................................7

इ. "नष्ट होना"...................................5

5. मूल आयतः 1:18

6. उद्देश्यः

अ. यहूदा के घराने को रोष के आनेवाले दिन की चेतावनी देना: बेबिलोन के हाथों उनका विनाश।

आ. पलिश्तियों, मोआब, अम्मोन, कूश और अश्शूर को आनेवाले प्रभु के दिन की चेतावनी देना।

इ. विश्वासयोग्य बचे हुओं को पुनःस्थापना की प्रतिज्ञाओं से शान्ति देना।

7. संदेशः

अ. "जाति की बढ़ती धर्म ही से होती है, परन्तु पाप से देश के लोगों का अपमान होता है।" (नीतिवचन 14:34)

आ. परमेश्वर खुद देशों की दुष्टता के लिए उन्हें दण्ड देगा।

8. रूपरेखाः

अ. यहूदा पर रोष का दिन...................................अ. 1:1-2:3 (भीतर झाँको)

आ. देशों पर रोष का दिन....................................अ. 2:4-15 (आसपास देखो)

इ. यहूदा पर रोष का कारण................................अ. 3:1-7 (ऊपर देखो)

ई. विश्वासयोग्य बचे हुए पुनःस्थापित..................अ. 3:8-20 (आगे देखो)

9. सारांशः

भविष्यद्वक्ता सपन्याह और राजा योशिय्याह दोनों हिजकिय्याह के पर-परपोते थे (1:1)। इसलिए सपन्याह दाऊद के घराने का राजकुमार था। उसकी भविष्यद्वाणी मनश्शे और आमोन के शासनों में आरम्भ हुए बुरे दिनों को प्रतिबिम्बित करती है। इसलिए वह प्रभु के आनेवाले दिन को रोष, क्रोध, संकट, विपत्ति, विनाश, अन्धकार, और उदासीनता के रूप में देखता है। इसकी बेबिलोन के अधीन एक एतिहासिक और स्थानीय पूर्ति होती है, जिसके दौरान परमेश्वर अपने लिए एक विश्वासयोग्य झुँड को बचा रखता है। उसकी भविष्यद्वाणी प्रभु यीशु मसीह के पुनरागमन और कलीसिया की सुरक्षा की ओर संकेत करती है।

10. मसीह देखा गयाः

मसीह उसके लोगों के साथ सम्बंध में एक ईर्ष्या रखनेवाले परमेश्वर (1:18; 3:8; 2 कुरिं. 11:2), और रोष के दिन (रोमियों 2:5-6) परमेश्वर के न्याय को लागू करनेवाले (यूहन्ना 5:7) के रूप में देखा गया है।

हाग्गै

1. नामः

अ. हाग्गै = उत्सव सम्बंधी, या मेरा भोज।

आ. <u>मन्दिर के पुनर्निमाण की पुस्तक</u>

2. लेखकः

मन्दिर के भविष्यद्वक्ता, हाग्गै ने लिखी है, जिसने यहूदा के पुन-स्थापित घराने की, विशेषकर ज़रूब्बाबेल और यहोशू की सेवा की थी।

3. तारीखः

अ. हाग्गै की सेवा, बेबिलोन से पहले शेष के लोटने के 16 वर्षों के बाद से आरम्भ होकर लगभग 15 वर्षों (520 - 505 ई.पू.) कर होती रही थी।

आ. 520 में लिखी गई थी।

4. मूल शब्दः

अ. दिन..11

आ. भवन (प्रभु का)...8

इ. सोचो..5

मूल वाक्यांशः

अ. "सेनाओं का यहोवा यों कहता है".........................19

आ. "सेनाओं का यहोवा"...14

5. मूल आयतः 1:8

6. उद्देश्यः

अ. अगुवों (गवर्नर जरूब्बाबेल और महायाजक यहोशू) और पहले शेष जो जरूब्बाबेल के साथ लौटे थे उनको मन्दिर के पुनर्निमाण के लिए प्रोत्साहित करना।

आ. मसीहा के समयों की ओर संकेत करना।

7. संदेशः

अ. उद्धार पाए हुओं के जीवन और सेवा में परमेश्वर और उसका भवन पहले स्थान पर होने चाहिए।

आ. परमेश्वर उन्हें आशीष देगा जो उसे पहला स्थान देते हैं (मत्ती 6:33)।

8. रूपरेखाः

अ. फटकार का वचन...अ. 1:1-15
जरूब्बाबेल, यहोशू और लोगों को

आ. प्रोत्साहन का वचन.......................................अ. 2:1-9
जरूब्बाबेल और यहोशू को

इ. सुधार का वचन...अ. 2:10-19
याजकों को

ई. प्रतिज्ञा का वचन..अ. 2:20-23
जरूब्बाबेल को

9. सारांशः

हाग्गै तीन में से एक भविष्यद्वक्ता था जिसने बेबिलोन की बन्धुआई के बाद सेवा की थी। विरोध के कारण, मन्दिर के पुनर्निमाण का काम कई वर्षो के लिए रुक गया था। लोग ठंडे पड़ गए थे और उन्होंने काम को दोबारा आरम्भ करने का कोई प्रयत्न नहीं किया था। इसलिए हाग्गै और जकर्याह ने उन्हें करने के लिए उपदेश दिया। हाग्गै की अधिकाँश भविष्यद्वाणी गवर्नर जरूब्बाबेल (राजनीतिक अगुवा) और महायाजक यहोशू (धार्मिक अगुवा) के लिए व्यक्तिगत थी। बाकी की, याजकों और लोगों की फटकार और प्रोत्साहन है। उस भौतिक मन्दिर से सम्बंधित भविष्यद्वाणियों में आत्मिक मन्दिर - कलीसिया की भविष्यद्वाणियाँ भी हैं।

10. मसीह देखा गयाः

मसीह हमारा भविष्यद्वक्ता (हाग्गै), याजक (यहोशू), और राजकुमार (जरूब्बाबेल) है, जो तीन पदों को एक व्यक्ति में इकट्ठा करता है। वह प्रभु के भवन - कलीसिया का निर्माता है (मत्ती 16:18; इब्रा. 3:5)।

जकर्याह

1. नामः

अ. जकर्याह = यहोवा स्मरण करता है।

आ. <u>मसीहा के दर्शन की पुस्तक</u>

2. लेखकः

मसीहा के दर्शन के भविष्यद्वक्ता, जकर्याह ने लिखी है, जिसने यहूदा के पुन-स्थापित घराने की सेवा की थी।

3. तारीखः

अ. जकर्याह की सेवा, बेबिलोन से पहले शेष के लौटने के 16 वर्षो के बाद से आरम्भ होकर लगभग 40 वर्षो (520 - 480 ई.पू.) तक होती रही थी।

आ. अध्याय 1-8 520 और 518 में लिखे गए थे जबकि अध्याय 9-14 490 से 480 के बीच लिखे गए थे।

4. मूल शब्दः

अ. यरूशलेम..41
आ. यहूदा..22
इ. विरुद्ध...18
ई. भवन (प्रभु का)..10
उ, ईर्ष्या...5

मूल वाक्यांशः

अ. "सेनाओं का यहोवा"..53
आ. "यहोवा यों कहता है"..42
इ. "उस दिन"..21
ई. "यहोवा का वचन"..13

5. मूल आयतः 6:12-13; 8:1-3

6. उद्देश्यः

अ. शेष को अधूरे मन्दिर को पूरा करने के लिए प्रेरित करना। (हाग्गै के समान)

आ. मसीह के पहले और दूसरे आगमन, और उसके राज्य का स्थापना करना।

7. संदेश:

अ. परमेश्वर उसके भवन के लिए ईर्ष्या रखता है और देखेगा कि यह पुनःस्थापित हो।

आ. परमेश्वर के सारे उद्देश्य मसीहा और उसके राज्य में पूरे होंगे।

8. रूपरेखा:

अ. आठ प्रतीकात्मक दर्शन..अ. 1-6

आ. चार शिक्षात्मक संदेश..अ. 7-8

इ. दो भविष्यद्वाणी के बोझ......................................अ. 9-14

9. सारांश:

जकर्याह तीन भविष्यद्वक्ताओं में से दूसरा है जिसने बेबिलोन की बन्धुआई के बाद यहूदा की सेवा की थी। हाग्गै का संदेश फटकार का संदेश था जो मन्दिर के पुनर्निमाण के बाहरी काम से निपट रहा था, जबकि जकर्याह का संदेश एक भीतरी परिवर्तन लाने के लिए प्रोत्साहन का संदेश था। इस प्रकार हम उन्हें इकट्ठे सेवा करते पाते हैं (एज्रा 5:1)। जकर्याह के पहले दो भाग उस समय दिए गए थे जब मन्दिर का पुनर्निमाण हो रहा था और थोड़ा बन चुका था। तीसरा भाग मन्दिर के पुनर्निमाण के बाद दिया गया था और मसीहा के समयों में चला जाता है।

नोट: जकर्याह में बाकी के सारे छोटे भविष्यद्वक्ताओं की इकट्ठी भविष्यद्वाणियों से अधिक निश्चित भविष्यद्वाणियाँ हैं।

10. मसीह देखा गया:

मसीह "जिसे यहोवा स्मरण रखता है" (जकर्याह), शाख (3:8; मत्ती 2:23...नासरी), यहोवा का दास (3:8; फिल. 2:7), काटा हुआ चरवाहा (13:7; मरकुस 14:27), राजा - याजक (6:9-12; इब्रा. 5:5-6), आत्मिक मन्दिर का निर्माता (6:12-15; मत्ती 16:18), और सारी पृथ्वी का राजा (14:9; प्रकाशित. 19:16) है।

मलाकी

1. नाम:

अ. मलाकी = यहोवा का दूत, या मेरा दूत।

आ. <u>प्रभु के दूतों की पुस्तक</u>

2. लेखक:

प्रभु के दूतों का भविष्यद्वक्ता, मलाकी ने लिखी है, जो यहूदा के पुन-स्थापित घराने की सेवा करनेवाला पुराने नियम का अन्तिम भविष्यद्वक्ता था।

3. तारीख:

अ. मलाकी की सेवा, यहूदा के पुनःस्थापित घराने पर गवर्नर नहेम्याह के दौरान लगभग 25 वर्षों (435 - 410 ई.पू.) तक होती रही थी।

आ. 435 से 410 के बीच लिखी गई थी। यह पुराने नियम की लिखी गई अन्तिम पुस्तक है।

4. मूल शब्द:

अ. कहाँ ?, क्या ?...13

आ. शाप...7

इ. वाचा..6

ई. विश्वासघात...5

मूल वाक्यांशः

अ. "यहोवा यों कहता है"...25

आ. "सेनाओं का यहोवा"..24

ई. "तुम पूछते हो"..11

5. मूल आयतः 3:1, 9-10

6. उद्देश्यः

अ. शेष को मन्दिर की उपेक्षा करने के लिए फटकारना।

आ. याजकों को मन्दिर की आराधना अपवित्र करने के लिए फटकारना।

इ. विश्वासयोग्य शेष को मसीहा की प्रतिज्ञाओं के साथ प्रोत्साहित करना।

7. संदेशः

अ. पाखंडीपन का पाप हृदय को कठोर और अंधा करता है।

आ. आज्ञापालन आशीष और अवज्ञा शाप लाता है।

8. रूपरेखाः

अ. याजकों के लिए संदेश (धार्मिक)..अ. 1:1-2:9

आ. लोगों के लिए संदेश (सामाजिक)..अ. 2:10-17

इ. विश्वासयोग्यों के लिए संदेश (नैतिक).................................अ. 3-4

9. सारांशः

मलाकी तीन भविष्यद्वक्ताओं में से अन्तिम है जिसने बेबिलोन की बन्धुआई के बाद यहूदा की सेवा की थी। हाग्गै और जकर्याह को मन्दिर के पुनर्निमाण में असफलता के लिए लोगों को फटकारने भेजा था। तब पीढ़ियों के बाद, मलाकी को याजकों और लोगों को मन्दिर की आराधना के विषय में उपेक्षा, अपवित्रता, और रूढ़ीवाद के लिए फटकारने भेजा था। उसने इसे प्रश्न और उत्तर के तरीके से किया (इस पुस्तक में लगभग 23 प्रश्न हैं)। मलाकी पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं में से अन्तिम दूत है, याजकों को प्रभु के दूत कहा गया है (2:7), और नए नियम के पहले दूत, यूहन्ना की ओर संकेत करता है (3:1; मरकुस 1:2), और मसीहा की ओर भी जो नई वाचा का दूत है (3:1)।

नोटः मलाकी और यूहन्ना बपतिस्मादाता के बीच "400 वर्षों की शामोशी" का समय है।

10. मसीह देखा गयाः

मसीह नई वाचा का दूत, अपने लोगों का परिष्कारक और शोधक (3:1-3; मत्ती 3:11) और मन्दिर का शोधित्र (यूहन्ना 2:13-17; मत्ती 21:12-14) है।

इस्राएल और यहूदा के राजा और भविष्यद्वक्ता

संयुक्त राज्य

शाऊल....................1051 - 1011 ई.पू................40 वर्ष

दाऊद.....................1011 - 971 ई.पू..................40 वर्ष

सुलेमान.................971 - 931 ई.पू...................40 वर्ष

विभाजित राज्य

यहूदा का राजा	शासन आरम्भ हुआ	वर्ष	भविष्यद्वक्ता
रहूबियाम	931 ई.पू.	17	शमायाह इद्दो
एबिय्याम	913	3	इद्दो
आसा	911	41	अजरिय्याह हनानी
यहोशापात	873	25	यहजील एलीएजर
याहोराम	853	8	ओबद्याह ?
अहज्याह	841	1	
अतल्याह	841	6	
योआश	835	40	योएल
अमस्याह	796	29	योएल
उजिय्याह	790	52	योएल यशायाह
योताम	750	16	यशायाह मीका
आहाज	735	16	यशायाह मीका
हिजकिय्याह	715	29	यशायाह मीका
मनश्शे	695	55	नहूम
आमोन	642	2	नहूम
योशिय्याह	640	31	नहूम सपन्याह हबक्कूक यिर्मयाह हुल्दा
यहोआहाज	609	3 महिने	हबक्कूक यिर्मयाह
यहोयाकीम	609	11	हबक्कूक यिर्मयाह दानिय्येल
यहोयाकीन	597	3 महिने	यिर्मयाह दानिय्येल

सिदकिय्याह	597	11	यिर्मयाह यहेजकेल दानिय्येल

बेबिलोन की बन्धुआई

606 ई.पू. में दक्षिणी यहूदा का घराना बेबिलोन के राजा नबूकदनेस्सर ने जीत लिया था। वह लोगों को यहोयाकीम, यहोयाकीन, और सिदकिय्याह के अधीन तीन चरणों में बन्धुआ करके ले गया था।

पुनःस्थापना

बन्धुआई से यहूदा का लौटना भी जरूब्बाबेल, एज्रा, और नहेम्याह के अधीन तीन चरणों में हुआ था। इस समय के भविष्यद्वक्ता हाग्गै, जकर्याह और मलाकी थे।

इस्राएल के राजा	शासन का आरम्भ	वर्ष	भविष्यद्वक्ता
यारोबाम	931 ई.पू.	22	अहिय्याह परमेश्वर का भक्त इद्दो
नादाब	910	2	येहू
बाशा	909	24	
एला	886	2	
जिम्री	885	7 दिन	
ओम्री	885	12	एलिय्याह
अहाब	874	22	एलिय्याह मीकायाह
अहजियाह	853	2	एलिय्याह
योराम	852	12	एलीशा
येहू	841	28	एलीशा
यहोआहाज	814	17	एलीशा
यहोआश	798	16	एलीशा योना
यारोबाम द्वितीय	793	41	योना आमोस होशे
जकर्याह	753	6 महिने	होशे
शल्लूम	753	1 महिना	होशे
मनहेम	752	10	होशे
पकह्याह	742	2	होशे
पेकह	752	20	होशे मीका
होशे	732	9	होशे मीका

अश्शूरी बन्धुआई

721 ई.पू. में उत्तरी इस्राएल के घराने को अश्शूर के राजा शल्मनेसेर चढ़ाई करके जीत लिया। वह सामरिया के विरुद्ध आया, और तीन वर्षों तक घेरा डाले रहने के बाद शहर को ले लिया, इस्राएल को बन्धुआई में ले गया और दूसरे लोगों को लाकर वहाँ बसा दिया।

छितराव

इस्राएल बन्धुआई से कभी भी लौट नहीं पाया और देशों में तितर-बितर हो गया।

मत्ती

1. नामः

अ. मत्ती = परमेश्वर का वरदान, लेवी = जुड़ा हुआ।

आ. मत्ती के अनुसार सुसमाचार।

इ. राजा की पुस्तक

2. लेखकः

मत्ती ने लिखी है जो एक महसूल लेनेवाला था और जिसे यीशु ने बारह प्रेरितों में से एक होने के लिए बुलाया था।

3. तारीखः

अ. मसीह के जन्म से उसके स्वर्गारोहण होने तक लगभग 34 वर्षों का इतिहास है।

आ. सन् 52 और 68 के बीच, यरूशलेम के गिरने से पहले लिखा गया था।

4. मूल शब्दः

अ. राज्य (स्वर्ग का)..56

आ. उचित, सही (धर्मी)...25

इ. पूरा हुआ...18

मूल वाक्यांशः

अ. मनुष्य का पुत्र..32

आ. पिता जो स्वर्ग में है, स्वर्गीय पिता.........................20

ई. कहा गया था..13

ई. दाऊद की सन्तान...9

5. मूल आयतः 1:1; 5:17-18; 24:14

6. उद्देश्यः

अ. यहूदियों को, भविष्यद्वाणी और पूर्ति के द्वारा दिखाना कि यीशु नासरी ही प्रतिज्ञात राजा मसीहा है।

आ. यहूदियों के उनके राजा और उसके राज्य के अस्वीकार को दिखाना।

इ. मसीह के स्वर्गारोहण से लेकर उसके पुनरागमन तक की इस वर्तमान युग की घटनाओं का पूर्वदर्शन देना।

7. संदेशः

अ. स्वर्ग का राज्य सांसारिक सिद्धान्तों से संचालित भैतिकवाद राज्य नहीं है और न ही यह इस पृथ्वी तक सीमित एक राष्ट्रवादी राज्य है।

आ. परमेश्वर का राज्य एक आत्मिक राज्य है जिसका चरित्र, स्वभाव और व्यवस्था स्वर्ग की है। यह विशेषकर बताता है कि राजा के आत्मिक सिद्धान्तों के अधीन होकर परमेश्वर का शासन कहाँ प्रभावशाली बनता है।

8. रूपरेखाः

अ. राजा के लिए तैयारी.......................................अ. 1-4

आ. राज्य का प्रस्तुतिकरण..अ. 5-10

इ. राज्य का प्रचार..अ. 11-25

ई. राजा का दुखभोग...अ. 26-28

9. सारांशः

मत्ती के सुसमाचार की सुस्पष्ट विशेषता इसका यहूदियों को आकर्षित करना था। यह सम्भवतः आरम्भ में इब्रानी भाषा में लिखा गया था और इसमें दूसरे सुसमाचारों की तुलना में अधिक पुराने नियम के वचन हैं। यह यहूदियों को कायल करने के लिए था कि यीशु नासरी उनका प्रतिज्ञात मसीहा है यह राजा और उसके राजा को प्रस्तुत करता है। उनके राज्य

के राष्ट्रवादी और भौतिकवादी विचार होने के कारण उन्होंने राजा को अस्वीकार किया। इसलिए उनसे राज्य ले लिया गया और इस प्रकार राज्य के सुसमाचार का सारे संसार भर में प्रचार करना कलीसिया की सेवा बन गया।

10. मसीह देखा गयाः

मसीह राजा (2:2), व्यवस्था देनेवाला (यशायाह 33:22; मत्ती 5-7), अभिषिक्त (3:16-17), दाऊद की सन्तान (1:1), और व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की पूर्ति (5:17) है।

मरकुस

1. नामः

अ. मरकुस = शिष्ट, चमकदार (यूहन्ना मरकुस)

आ. मरकुस के अनुसार सुसमाचार।

इ. <u>सेवक की पुस्तक</u>

2. लेखकः

यूहन्ना मरकुस ने लिखी है जो बरनबास का चचेरा भाई और पतरस का साथी था। कइयों का कहना है कि मरकुस वास्तव में "पतरस के अनुसार सुसमाचार" लिख रहा था।

3. तारीखः

अ. मसीह के जन्म से उसके स्वर्गारोपण होने तक लगभग 34 वर्षों का इतिहास है।

आ. सम्भवतः सन् 55 और 68 के बीच लिखा गया था।

4. मूल शब्दः

अ. तुरन्त..42

आ. भीड़, लोग...38

इ. सुसमाचार...8

5. मूल आयतः 10:45

6. उद्देश्यः

अ. यीशु नासरी को यहोवा के सिद्ध और विश्वासयोग्य सेवक के रूप में पेश करना।

आ. रोमियों को दिखाना कि यीशु सेवक था जो यहोवा के अधिक में कार्य कर रहा और सारी आज्ञाओं को तात्कालिक और पूर्ण आज्ञापालन दे रहा था।

7. संदेशः

अ. परमेश्वर के राज्य में महान बनने का तरीका सबका सेवक बनना है।

आ. जो अपने आपको परमेश्वर के हाथ के नीचे दीन करता है उचित समय बना ऊँचा किया जाएगा (1 पतरस 5:6)।

8. रूपरेखाः

अ. सेवक का अलग होना.......................................अ. 1:1-13

आ. सेवक की सेवा..अ. 1:14-8:30

इ. सेवक का बलिदान..अ. 8:31-15:47

ई. सेवक का सत्र..अ. 16:1-20

9. सारांशः

मरकुस के सुसमाचार की सुस्पष्ट विशेषता इसका रोमी मन को आकर्षित करना था। यह सम्भवतः रोम में लिखा गया था और इसमें दूसरे सुसमाचारों की तुलना में अधिक लतीनी शैली है। यहूदी प्रथाएँ, स्थान, सिक्के, और अरामिक अभिव्यक्तियों को समझाया गया है, जिन्हें रोमियों के समझने के लिए आवश्यक है। मरकुस का सुसमाचार सेवक-पुत्र को एक कार्य के पुरुष, शब्दों से अधिक कार्य के पुरुष के रूप में पेश किया गया है, और दूसरे सुसमाचारों से अधिक चमत्कार लिखे गए हैं। यह सेवक के प्रस्तुतिकरण के साथ खुलता और सेवक के प्रभु बनने के साथ समाप्त होता है (मरकुस 16:19; फिलि. 2:6-11; प्रेरितों 2:36)।

10. मसीह देखा गया:

मसीह परमेश्वर का पुत्र (1:1) है जो मनुष्य का पुत्र बना (10:45), और भेजा हुआ (9:37) और दुखी सेवक जो अपने प्राण को बहुतों की छुड़ौती के रूप में देने का बाद प्रभु बना (16:17)।

लूका

1. नाम:

अ. लूका = ज्योतिर्मय

आ. लूका के अनुसार सुसमाचार।

इ. सिद्ध पुरुष की पुस्तक

2. लेखक:

लूका जो एक वैद्य था, ने लिखी है जो पौलुस का एक साथी था। उसने प्रेरितों के काम पुस्तक भी लिखी है।

3. तारीख:

अ. यूहन्ना बपतिस्मादाता के जन्म से लेकर स्वर्गारोहण तक लगभग 35 वर्षों का इतिहास है।

आ. सम्भवतः सन् 58 और 60 के बीच लिखा गया था।

4. मूल शब्द:

अ. पुत्र...145

आ. राज्य (परमेश्वर का)......................................45

इ. प्रचार...20

ई. आत्मा, पवित्र आत्मा.......................................17

मूल वाक्यांश:

अ. मनुष्य का पुत्र..25

5. मूल आयत: 4:18-19; 19:10

6. उद्देश्य:

अ. यीशु नासरी को एक अभिषिक्त सिद्ध पुरुष के रूप में पेश करना, जिसने एक सिद्ध सेवा के बाद पापी मनुष्यजाति के लिए एक सिद्ध उद्धार प्रदान किया।

आ. यूनानियों को दिखाना कि यीशु परमेश्वर का आदर्श पुरुष था, केवल एक मात्र उद्धारकर्त्ता।

7. संदेश:

अ. सुसमाचार का सब प्रचार पवित्र आत्मा के सामर्थ्य में किया जाना चाहिए।

आ. परमेश्वर का मनुष्य के लिए आदर्श उसके पुत्र के समान सिद्ध होना है।

8. रूपरेखाः

अ. मनुष्य के पुत्र की/के लिए तैयारी..अ. 1:1-4:15
आ. मनुष्य के पुत्र की सेवा..अ. 4:16-21:38
इ. मनुष्य के पुत्र का दुख...अ. 22:1-23:56
ई. मनुष्य के पुत्र की प्रतिष्ठा...अ. 24:1-53

9. सारांशः

लूका के सुसमाचार की सुस्पष्ट विशेषता इसका यूनानी मन को आकर्षित करना था। जबकि रोमियों ने कार्य की शक्ति को प्रतिष्ठा दी थी, यूनानियों ने विचार की बुद्धि को प्रतिष्ठा दी थी। इसलिए लूका दूसरों की तुलना में यीशु के अधिक दृष्टान्तों को लिखता है। लूका यीशु का एक सिद्ध पुरुष के रूप में चित्र पेश करता है, परमेश्वर की बुद्धि, जो यूनानियों के आदर्शों को अधिक पूरा करता है। लूका यीशु का पवित्र आत्मा के साथ सम्बंध भी बताता है। यह यीशु का आत्मा के द्वारा जन्म के साथ आरम्भ होता है, आत्मा के सामर्थ्य में उसकी सेवा के साथ जारी रहता है, और आत्मा के उँडेले जाने की उसकी प्रतिज्ञा के साथ समाप्त होता है।

10. मसीह देखा गयाः

मसीह सिद्ध मनुष्य का पुत्र, अभिषिक्त प्रचारक, और खोई हुई मानजाति का उद्धारकर्त्ता है (4:18-19; 19:10)।

यूहन्ना

1. नामः

अ. यूहन्ना = प्रिय
आ. यूहन्ना के अनुसार सुसमाचार।
इ. परमेश्वर के पुत्र की पुस्तक

2. लेखकः

यूहन्ना एक मछुवा ने लिखी है जो बारह प्रेरितों में से एक था। उसने तीन पत्र और प्रकाशितवाक्य भी लिखे हैं।

3. तारीखः

अ. यूहन्ना बपतिस्मादाता के जन्म से लेकर स्वर्गारोहण से थोड़ा पहले तक, लगभग 4 वर्षों का इतिहास है।
आ. सम्भवतः सन् 85 और 95 के बीच लिखा गया था।

4. मूल शब्दः

अ. पिता.....................................122
आ. विश्वास करना..........................101
इ. जगत.......................................80
ई. यहूदी.......................................70
उ. प्रेम..57
ऊ. जीवन.....................................52
ए. सत्य...............................47
ऐ. गवाह..............................47
ओ. पुत्र (मसीह)......................43
औ. बने रहना........................41
अं. सच, सच.........................25
अः. ज्योति............................24

5. मूल आयतः 3:16; 20:31

6. उद्देश्यः

अ. यीशु मसीह को परमेश्वर के एकलौते पुत्र के रूप में पेश करना, और पिता के साथ उसका सम्बंध दिखाना।
आ. सारे संसार को दिखाना कि पिता परमेश्वर ने यीशु को संसार में भेजा था ताकि संसार उसके द्वारा उद्धार पाए।
इ. यीशु में परमेश्वर प्रकट हुआ था दिखाना।

ई. यीशु मसीह के परमेश्वर और मनुष्य दोनों होने का परमेश्वर की ओर से स्पष्टीकरण देना और इस प्रकार प्रचलित कहानियों का इन्कार करना।

7. संदेश:

अ. पिता परमेश्वर के पास जाने का एक मात्र मार्ग उसके प्रिय पुत्र यीशु के द्वारा है (यूहन्ना 14:1, 6)।

आ. पुत्र के अलावा कोई अनन्त जीवन नहीं।

इ. जो विश्वास करते हैं परमेश्वर के साथ एक पिता और पुत्र का सम्बंध बनाते हैं।

ई. विश्वास जीवन लाता है; अविश्वास मृत्यु लाता है।

8. रूपरेखा:

अ. परमेश्वर का पुत्र..अ. 1:1-18

आ. उसकी सार्वजनिक सेवा................यहूदियों की.......................अ. 1:19-12:50

इ. उसकी निजी सेवा.......................चेलों की...........................अ. 13-17

ई. उसका दुखभोग..........................संसार के लिए....................अ. 18-21

9. सारांश:

यूहन्ना के सुसमाचार की सुस्पष्ट विशेषता इसका सारे संसार को आकर्षित करना है। न केवल यूहन्ना संसार शब्द अनेक बार इस्तेमाल करता है, परन्तु वह मसीह की मध्यस्थता की विश्वव्यापी प्रकृति पर भी जोर देता है; कि यीशु ही सारे संसार के लिए उद्धार का एक मात्र मार्ग है। मत्ती, मरकुस और लूका प्रभु के जीवन और मानवता के बाहरी पहलुओं को पेश करते हैं, और उसके सार्वजनिक उपदेशों और गलीली सेवा पर जोर देते हैं। यूहन्ना मुख्य रूप से प्रभु के जीवन और व्यक्तित्व के भीतरी सिद्धान्तीय पहलुओं को पेश करता है, और उसकी निजी सेवा और यहूदी सेवा पर जोर देता है।

10. मसीह देखा गया:

मसीह वचन (1:1, 14), पुत्र (3:16), जीवन (1:4), ज्योति (1:5), "मैं हूँ" (8:56-58), और उद्धार का एक मात्र मार्ग (14:6) है।

प्रेरितों के काम

1. नाम:

अ. प्रेरितों के काम

आ. <u>पवित्र आत्मा की पुस्तक</u>

2. लेखक:

लूका वैद्य ने लिखी है जो पौलुस का एक साथी था और जिसने उसके नाम का सुसमाचार भी लिखा है।

3. तारीख:

अ. मसीह के स्वर्गारोहण से लेकर जब पौलुस रोम में दो वर्ष के लिए कैदी था तब तक का लगभग 33 वर्षों का इतिहास है।

आ. सम्भवत: सन् 61 और 65 के बीच लिखा गया था।

4. मूल शब्द:

अ. यहूदी..81

आ. आत्मा, पवित्र आत्मा..........................54

इ. अन्यजाति, देश.................................44
ई. वचन (परमेश्वर का)...........................40
उ. नाम (यीशु, प्रभु का)..........................37
ऊ. प्रार्थना..35

5. मूल आयतः 1:8

6. उद्देश्यः

अ. मसीह ने जो कुछ पृथ्वी पर करना और सिखाना आरम्भ किया था उस सेवा का स्वर्ग से जारी रहने का ब्योरा देना।

आ. आरम्भिक कलीसिया के जन्म, बनने, और विकास का एक विशालदर्शी दृश्य देना।

इ. मसीह का कलीसिया बनाने का नमूना देना।

7. संदेशः

अ. मसीह की देह, कलीसिया पवित्र आत्मा की सेवा के बिना कार्य नहीं कर सकती है।

आ. केवल पवित्र आत्मा के सामर्थ्य के द्वारा ही महान आदेश पूरा किया जा सकता है (जकर्याह 4:6)।

8. रूपरेखाः

अ. पतरस की सेवा..........यहूदियों की..................खतना........................अ. 1-12
यरूशलेम / यहूदिया / सामरिया

आ. पौलुस की सेवा...............अन्यजातियों की.........खतनारहित.............अ. 13-28
पृथ्वी की छोर तक

9. सारांशः

सुसमाचारों में मसीह की सांसारिक सेवा दिखाई गई है, परन्तु प्रेरितों में उसकी स्वर्गीय सेवा दिखाई गई है, जैसा उसने प्रतिज्ञा की थी वह, पवित्र आत्मा के सामर्थ्य के द्वारा, अपनी कलीसिया बना रहा है (मत्ती 16:18)। प्रेरितों में, हम गवाह होने के क्रम को पूरा होते देखते हैं: पहले यरूशलेम में, फिर यहूदिया, सामरिया, और तब पृथ्वी की छोर तक। प्रेरितों की पुस्तक मूल रूप से दो प्रेरितों की सेवा के बारे में है: पतरस, यहूदियों का प्रेरित, और पौलुस, अन्यजातियों का प्रेरित (उत्प. 2:8)। यह प्रेरितों की शिक्षा के मूल सिद्धान्तों पर कलीसिया का बनना और स्थापित होना दिखाता है, और इस प्रकार यह विश्वव्यापी और स्थानीय कलीसिया के लिए नमूना बनता है।

10. मसीह देखा गयाः

मसीह कलीसिया का सिर है, जो अपने आत्मा के द्वारा संचालन, मार्गदर्शन, सज्जित, और निर्माण कर रहा है।

रोमियों

1. नामः

अ. रोमियों का पत्र

आ. पौलुस के अनुसार सुसमाचार (16:25)

इ. <u>धर्मी ठहराए जाने की पुस्तक</u>

2. लेखकः

अन्यजातियों के प्रेरित, पौलुस ने लिखा है।

3. तारीखः

सम्भवतः सन् 55 और 58 के बीच, पौलुस की कुरिन्थ की दूसरी यात्रा के दौरान, लिखा गया था।

4. मूल शब्दः

अ. व्यवस्था..78
आ. धार्मिकता (42), धर्मी ठहराया जाना (22)...................64
इ. विश्वास (करना)..60
ई. पाप...57
उ. अनुग्रह...24
ऊ. श्रेय देना (समझना)..19

5. मूल आयतः 1:16-17

6. उद्देश्यः

अ. युगों के प्रश्न का उत्तर देनाः "मनुष्य परमेश्वर की दृष्टि में कैसे धर्मी ठहर सकता है?"
आ. परमेश्वर के विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराने के तरीके का एक स्पष्ट सिद्धान्तीय व्याख्या देना।
इ. यहूदी और अन्यजाति मसीह में नई वाचा के द्वारा ही परमेश्वर को स्वीकार्य हैं दिखाना।

7. संदेशः

अ. विश्वास से धर्मी जन जीवित रहेगा (1:17)।
आ. सब मनुष्य पाप के अधीन हैं और व्यवस्था के कामों से धर्मी नहीं ठहर सकते हैं।
इ. विश्वास पर आधारित धार्मिकता ही परमेश्वर स्वीकार करता है - उसके वचन पर आधारित धार्मिकता।

8. रूपरेखाः

अ. सिद्धान्तीयः धार्मिकता दी गई.......................................अ. 1-8
आ. राष्ट्रीयः यहूदी और अन्यजाति.................................अ. 9-11
इ. व्यावहारिकःधार्मिकता का कार्य....................................अ. 12-16

9. सारांशः

रोमियों को लिखे अपने पत्र में, पौलुस मसीह के सुसमाचार की रूपरेखा देता है जो यहूदियों और अन्यजातियों के लिए परमेश्वर की धार्मिकता निश्चित करती है। अध्याय 1-3 में सारा संसार पाप के अधीन दोषी हैः अन्तजाति व्यवस्था बिना और यहूदी व्यवस्था के अधीन। तब अध्यायों 3-8 में वह सुसमाचार का संदेश बताता है जिसमें हैः धर्मी ठहराया जाना (3-5), पवित्र किया जाना (6-8), और महिमा पाना (8:18-39)। अध्यायों 9-11 में वह चुने जाने (9), अविश्वास के द्वारा अस्वीकार किए जाने (10), और मसीह में विश्वास के द्वारा यहूदियों की पुनःस्थापना (11) की बात करता है। अध्यायों 12-16 में, पौलुस धर्मी ठहरे हुओं के व्यावहारिक कर्तव्यों की ओर संकेत करता है।

10. मसीह देखा गयाः

मसीह परमेश्वर का उद्धार, परमेश्वर की धार्मिकता (10:3-4), और हमारे पाप का प्रायश्चित (3:25) है।

1 कुरिन्थियों

1. नामः

अ. कुरिन्थियों का पहला पत्र
आ. सुधार की पुस्तक
इ. नए नियम कलीसिया की व्यवस्था की पुस्तक

2. लेखकः

अन्यजातियों के प्रेरित, पौलुस ने लिखा है।

3. तारीखः

सम्भवतः सन् 53 और 57 के बीच, पौलुस की तीसरी यात्रा के दौरान इफिसुस में ठहरने के समय (प्रेरितों 19) लिखा था। बाद में वह दोबारा कुरिन्थ गया था (प्रेरितों 20:1-2)।

4. मूल शब्दः

अ. देह...44

आ. आत्मा..41

इ. बुद्धि...31

ई. जीभ...22

उ. भविष्यद्वक्ता, भविष्यद्वाणी..................................21

ऊ. प्रेम...16

5. मूल आयतः 1:24, 30; 3:10-11

6. उद्देश्यः

अ. उन प्रश्नों के उत्तर देना, जिन प्रश्नों को कुरिन्थियों ने कलीसिया में समस्या के कारण पौलुस को लिखे थे (7:1; 8:1; 12:1; 16:1)।

आ. कुरिन्थियों की कलीसिया के मानसिक, नैतिक, सामाजिक, और आत्मिक जीवन में दुर्व्यवहारों को फटकारना और सुधारना।

7. संदेशः

अ. मसीह की देह में विभाजन का समाधान यीशु के प्रभुत्व को समझना है।

आ. परमेश्वर की कलीसिया मनुष्य की नहीं परन्तु परमेश्वर की बुद्धि और सामर्थ्य से बननी चाहिए।

इ. कलीसिया में व्यवस्था लाने के लिए हमें परमेश्वर की व्यवस्था के अधीन होना है।

ई. जो कलीसिया की उन्नति करती है खरी शिक्षा है और जो कलीसिया को प्रेरित करता है परमेश्वर का प्रेम है।

8. रूपरेखाः

अ. सुधार का भागः सांसारिकता.......................................अ. 1:1-8:13
फूट / अनैतिकता/ विवाह / मूर्तिपूजा

आ. रचनात्मक भागः आध्यात्मवाद..अ. 9:1-16:24
सेवा / प्रभुभोज / आत्मिक वरदान / मसीह की देह
प्रेम / पुनरुत्थान / वसूली

9. सारांशः

कुरिन्थ की कलीसिया, जैसा प्रेरितों 18 में लिखा है, पौलुस ने स्थापित की थी। इसे पौलुस, पतरस, और अपुल्लोस की सेवाओं का लाभ मिला था और इन व्यक्तियों के ईर्द-गिर्द गुट बन गए थे। अनैतिकता, मूर्तिपूजा, और अपसिद्धान्त जैसा सांसारिकताएं उत्पन्न हो गई थीं। इसलिए पौलुस ने यह पहला पत्र कुरिन्थियों को फटकारने और प्रभुभोज, आत्मिक वरदान, और दानों की वसूली के विषय में सुधार करने के लिए लिखा था। उसने पुनरुत्थान के विषय में प्रश्नों के उत्तर दिए और गलतफहमियों को दूर किया। यह सब चीजें आध्यात्मिकता की कमी का प्रमाण हैं, जिसका सार प्रेम है।

10. मसीह देखा गयाः

मसीह परमेश्वर का सामर्थ्य (1:24), परमेश्वर की बुद्धि (1:24, 30), हमारी धार्मिकता, पवित्रता, और उद्धार (1:30), परमेश्वर का प्रेम (अ. 13), और पुनरुत्थान (अ. 15) है।

2 कुरिन्थियों

1. नाम:

अ. कुरिन्थियों का दूसरा पत्र

आ. शान्ति की पुस्तक

इ. प्रेरित की योग्यता की व्यवस्था की पुस्तक

2. लेखक:

अन्यजातियों के प्रेरित, पौलुस ने लिखा है।

3. तारीख:

सम्भवत: सन् 54 और 57 के बीच, पौलुस की तीसरी यात्रा के दौरान फिलिप्पी में ठहरने के समय (प्रेरितों 20) लिखा था।

4. मूल शब्द:

अ. महिमा, शेखी मारना (एक यूनानी मूल)..31

आ. शान्ति, सान्त्वना, अनुनय करना (एक यूनानी मूल)....................................29

इ. महिमा (परमेश्वर की) (ऊपर वाले से अलग यूनानी शब्द)..........................22

ई. सेवा (करना)..18

5. मूल आयत: 1:3-4

6. उद्देश्य:

अ. पौलुस की प्रेरित की सेवा और अधिकार का झूठे सेवकों के विरुद्ध बचाव करना जो उसके प्रभाव को नष्ट करने का प्रयत्न कर रहे थे।

आ. यरूशलेम में सन्तों के लिए दान के विषय में अतिरिक्त निर्देश देना (9:1-5)।

इ. पहले पत्र में लिखे अनुशासन के मामले में सान्त्वना की आवश्यकता का संकेत देना (2:5-11)।

ई. दिखाना कि नई वाचा महिमा में पुरानी वाचा से बढ़कर है।

7. संदेश:

अ. परमेश्वर का सच्चा सेवक अपने में नहीं, परमेश्वर में गर्व अनुभव करेगा।

आ. कलीसिया के अनुशासन का प्रमुख उद्देश्य पुन:स्थापना है दण्ड देना नहीं।

इ. प्रेरित की सेवा के प्रमाण धैर्य, चिन्ह, आश्चर्यकर्म, और चमत्कार होते हैं (12:12)।

8. रूपरेखा:

अ. मेल-मिलाप की सेवा...अ. 1-7

आ. वितरण की सेवा (देने की)......................................अ. 8-9

इ. रक्षण की सेवा (प्रेरिताई)......................................अ. 10-13

9. सारांश:

कुरिन्थियों की कलीसिया ने पौलुस के पहले पत्र के उत्तर में कुछ अव्यवस्था के मामलों, विशेषकर अनैतिकता से निपटा था। यह दूसरा पत्र उस अनुशासन में सन्तुलन लाने के लिए लिखा गया था, और उन्हें पश्चातापी भाई को संगति में लेने के लिए प्रोत्साहित किया था। जबकि पहला पत्र सुधारने के लिए लिखा था, तो दूसरा पत्र शान्ति देने के लिए लिखा था। दूसरा पत्र, इब्रानियों के समान, नई वाचा और इसके सेवकों (मसीह और कलीसिया) की तुलना पुरानी वाचा और इसके सेवकों (मूसा और भविष्यद्वक्ता) से करता है। व्यावहारिक क्षेत्र में, पौलुस कलीसिया को यरूशलेम के गरीब सन्तों के लिए दान तैयार रखने की बात स्मरण दिलाता और उसके विषय में उपदेश देता है। बाकी के पत्र में, पौलुस उसकी सेवा के फल की ओर संकेत करके अपनी प्रेरिताई का रक्षण करता है।

10. मसीह देखा गया:

मसीह हमारा शान्तिदाता, हमारा पाप-हरनेवाला (5:21), हमारा प्रेरित और नई वाचा की महिमा (3:4) है।

गलातियों

1. नामः

अ. गलातियों का पत्र

आ. <u>मसीही स्वतन्त्रता की पुस्तक</u>

2. लेखकः

अन्यजातियों के प्रेरित, पौलुस ने लिखा है।

3. तारीखः

सम्भवतः सन् 48 और 58 के बीच अन्ताकिया से, पौलुस की पहली या दूसरी मिशनरी यात्रा के दौरान लिखा गया था (प्रेरितों 14, 18)।

4. मूल शब्दः

अ. व्यवस्था..32

आ. विश्वास..22

इ. शरीर...18

ई. आत्मा...18

उ. धार्मिकता, धर्मी ठहराया गया.............13

ऊ. जीवन...........................13

ए. सुसमाचार.......................12

ऐ. कार्य.............................10

ओ. अनुग्रह...........................7

5. मूल आयतः 3:2-3, 11

6. उद्देश्यः

अ. पौलुस के अनुसार सुसमाचार की वास्तविकता का प्रमाण देना।

आ. पुरानी वाचा के अधीन यहूदा मत वालों के कर्मकाण्डवाद का खण्डन करना।

इ. नई वाचा के अधीन मसीही स्वतन्त्रता का सिद्धान्त स्थापित करना।

7. संदेशः

अ. मसीह में सच्ची स्वतन्त्रता न तो व्यवस्था का कर्मकाण्डवाद है और न ही शरीर की अनुमति है।

आ. जीवन और धार्मिकता केवल विश्वास के द्वारा अनुग्रह से आते हैं।

इ. आत्मा पाने के बाद हमें आत्मा से चलना भी है।

8. रूपरेखाः

अ. व्यक्तिगतः पौलुस का सुसमाचार.....................................अ. 1, 2

आ. सिद्धान्तीय : व्यवस्था या अनुग्रह.......................................अ. 3, 4

इ. व्यावहारिकःस्वतन्त्रता या अनुज्ञा......................................अ. 5, 6

9. सारांशः

जिन यहूदा मत वालों का प्रेरितों 15:1 में जिक्र है, अन्यजातियों की कलीसियाओं में पौलुस की सेवा का पीछा किया करते थे, और उन्हें विशेषकर गलातियों में सफलता मिली थी। उनकी शिक्षा व्यवस्था और अनुग्रह, विश्वास और कार्य, मूसा और यीशु का मिश्रण थी। वे कहते थे कि एक पापी विश्वास, और कार्यों से उद्धार पाता है, और उद्धार पाए हुए कार्यों के द्वारा सिद्ध होते हैं जैसे वे मूसा की व्यवस्था का पालन करते हैं। इस शिक्षा का परिणाम यह हुआ कि गलातियों के मसीही व्यवस्था के बन्धन के जूए में फँस गए थे। इसलिए पौलुस यह पत्र लिखता है जिसमें वह यहूदा मत वालों के भ्रष्ट सुसमाचार का खण्डन करता है और अपने सुसमाचार के सत्य को स्थापित करता है। वह अब्राहम के साथ वाचा को

लेता है और दृष्टान्त के द्वारा, अब्राहम के दो बेटों, इश्माएल और याकूब को लेकर, दो वाचाओं (मूसा की वाचा और नई वाचा) को चित्रित करता है। पौलुस यह दिखाते हुए कि मसीही स्वतन्त्रता न कर्मकाणडवाद न अनुज्ञा है पत्र समाप्त करता है।

10. मसीह देखा गयाः

मसीह हमारा विश्वास, हमारी धार्मिकता, हमारा जीवन, हमारा उद्धारकर्त्ता, अब्राहम की सन्तान, और अनुग्रह का नई वाचा का सुसमाचार है।

इफिसियों

1. नामः

अ. इफिसियों का पत्र

आ. मसीह की देह की पुस्तक

इ. <u>कलीसिया की पुस्तक</u>

2. लेखकः

अन्यजातियों के प्रेरित, पौलुस ने लिखा है।

3. तारीखः

सम्भवतः सन् 57 और 62 के बीच, रोम में पौलुस की पहली कैद के दौरान लिखा गया था (प्रेरितों 28)।

4. मूल शब्दः

अ. प्रेम..18

आ. अनुग्रह....................................12

इ. विश्वास..................................10

ई. देह.......................................10

उ. स्वर्ग.................................8

ऊ. चाल चलो...........................8

ए. रहस्य.................................6

ऐ. इच्छा (परमेश्वर की).............6

5. मूल आयतः 1:22-23; 2:6; 4:1

6. उद्देश्यः

अ. विश्वासियों को मसीह में उनके प्रेम और विश्वास को मजबूत करना।

आ. विश्वासियों को प्रोत्साहित करना कि वे पुराने मनुष्यत्व को निकाल दें और नए मनुष्यत्व को पहिन लें।

इ. मसीह की एक देह में यहूदी और अन्यजाति की एकता दिखाना।

ई. मसीह और कलीसिया के रहस्य का उद्देश्य बताना।

7. संदेशः

अ. विश्वासी जो मसीह की देह का सदस्य है मसीह में स्वर्गीय स्थानों में बैठा हुआ है, परन्तु फिर भी उसे पृथ्वी पर व्यावहारिक प्रेम में चलना है।

आ. कलीसिया मसीह में परमेश्वर के अनन्त उद्देश्यों की एक समय की अभिव्यक्ति है।

8. रूपरेखाः

अ. सिद्धान्तीयः स्वर्गीय बुलावा.....................................अ. 1 - 3

आ. व्यावहारिकःसांसारिक बुलावा................................. अ. 4 - 6

9. सारांशः

पौलुस की तीसरी मिशनरी यात्रा के दौरान उसने इफिसुस में कम से कम तीन वर्ष बिताए जिस समय उसने वहाँ कलीसिया भी स्थापित की। यह शीघ्र ही एशिया माइनर के लिए सुसमाचार प्रचार का केन्द्र बन गया। तब जब वह कैद में था, उसने यह पत्र लिखा। अध्याय एक में वह मसीह में अनन्त बुलावे के विषय में बताता है और कलीसिया के स्वर्गीय बुलावे और स्थिति को दिखाता है। अध्याय दो में परमेश्वर का अनुग्रह यहूदी और अन्यजाति दोनों को क्रूस के द्वारा एक देह में एक करता हुआ दिखता है, और इस प्रकार परमेश्वर के निवास के लिए एक आत्मिक मन्दिर बनता है। अध्याय तीन मसीह और कलीसिया का रहस्य बताता है। अध्याय चार देह के सदस्यों की एकता से निपटता है और अध्याय पाँच विवाह के अधीन देह की मसीह के साथ एकता से निपटता है। तब अध्याय छः में पौलुस कलीसिया के आत्मिक युद्ध की बात करता है। यदि कलीसिया ने प्रेम की चाल चलने की पौलुस की शिक्षा पर कान लगाया होता तब उसे प्रकाशितवाक्य 2:1-7 की मसीह की फटकार नहीं सुननी पड़ती।

10. मसीह देखा गया:

मसीह परमेश्वर की सम्पूर्णता, कलीसिया का सिर, दुल्हा, सेवाओं का देनेवाला, परमेश्वर का अनुग्रह और हमारी शान्ति है।

फिलिप्पियों

1. नामः

अ. फिलिप्पियों का पत्र

आ. आनन्द और उल्लहास की पुस्तक

2. लेखकः

अन्यजातियों के प्रेरित, पौलुस ने लिखा है।

3. तारीखः

सम्भवतः सन् 60 और 64 के बीच, रोम में पौलुस की पहली कैद के दौरान लिखा गया था (प्रेरितों 28)।

4. मूल शब्दः

अ. आनन्द..18

आ. मन..10

5. मूल आयतः 2:2; 4:4

6. उद्देश्यः

अ. कलीसिया का उनके दान के लिए धन्यवाद करना और उनको पौलुस के आने की सूचना देना।

आ. उन्हें यहूदी मत वाले झूटे शिक्षकों के विरुद्ध चेतावनी देना।

इ. उन्हें मसीह का मन रखते हुए एक मन होने के लिए उपदेश देना।

ई. उन्हें सब परिस्थितियों में आनन्दित होने के लिए प्रोत्साहित करना।

7. संदेशः

अ. मसीही जीवन खुशी और आनन्द का जीवन है जो सब परिस्थितियों से स्वतन्त्र है।

आ. एकता की कुंजी (एक मन होना) मसीह का मन होना है।

8. रूपरेखाः

आनन्दित हो:

अ. मसीह हमारा जीवन (1, 21)....................................अ. 1

आ. मसीह हमारा मन (2:5)..अ. 2
इ. मसीह हमारा लक्ष्य (3:10, 14).................................अ. 3
ई. मसीह हमारी शक्ति (4:13).....................................अ. 4

9. सारांशः

पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा के दौरान उसने और सीलास ने फिलिप्पी की कलीसिया स्थापित की थी। पहले कुछ विश्वासी पौलुस के कैद में आनन्दित होने के कारण मिले थे और यह बिलकुल सही है कि रोम की कैद में होते हुए पौलुस इस कलीसिया को आनन्द का एक पत्र लिखता। खुशी और आनन्द का विषय सारे पत्र में इस प्रकार देखा जा सकता हैः आनन्द और प्रार्थना (1:4, 6), आनन्द और विरोध (1:14-18), आनन्द और विश्वास (1:25-26), आनन्द और एकता (2:2), आनन्द और सेवा (2:14-16), आनन्द और बलिदान (2:17-18), आनन्द और विजय (2:25-29), प्रभु में आनन्दित रहना (3:1-3), सदा आनन्दित रहना (4:4), सब परिस्थितियों में आनन्दित रहना (4:10-12)। यह दिलचस्प बात है कि विश्वास, प्रेम, एकता और दीनता आनन्द के मूल के रूप में हैं।

10. मसीह देखा गयाः

मसीह हमारा आनन्द, हमारा जीवन, हमारा मन, हमारा लक्ष्य, और हमारी शक्ति है।

कुलुस्सियों

1. नामः

अ. कुलुस्सियों का पत्र
आ. <u>देह के सिर की पुस्तक</u>

2. लेखकः

अन्यजातियों के प्रेरित, पौलुस ने लिखा है।

3. तारीखः

सम्भवतः सन् 60 और 64 के बीच, रोम में पौलुस की पहली कैद के दौरान लिखा गया था (प्रेरितों 28)।

4. मूल शब्दः

अ. देह..8
आ. पूर्णता, सम्पूर्णता...............................7
इ. बुद्धि..6
ई. रहस्य..4
उ. महिमा..4
ऊ. सिर...3

5. मूल आयतः 1:18; 2:9-10

6. उद्देश्यः

अ. मसीह के व्यक्ति और स्वभाव के विषय में अपसिद्धान्तों के विरुद्ध उन्हें चेतावनी देना।
आ. विधिवाद और सन्यास के विरुद्ध उन्हें चेतावनी देना।
इ. मसीह को उसके परमेश्वरत्व और मानवता में कलीसिया के सिर के रूप में पेश करना।
ई. उन्हें पुराना मनुष्यत्व निकालने और नया मनुष्यत्व पहनने के लिए उपदेश देना।

7. संदेशः

अ. मसीह सब में, सब के द्वारा, और सब के ऊपर है। उसमें परमेश्वर की सारी सम्पूर्णता वास करती है और कलीसिया उसमें सम्पूर्ण है।

आ. हमें अपना स्नेह स्वर्ग की चीजों पर लगाना है पृथ्वी की चीजों पर नहीं।

8. रूपरेखाः

अ. सिद्धान्तीयः सिर की महिमा....................................अ. 1:1 - 2:5

आ. व्यावहारिकःदेहा का आचरण..................................अ. 2:6 - 4:18

9. सारांशः

प्रेरितों में पौलुस का कुलुस्से जाने का कोई रिकार्ड नहीं है, और प्रकट है उसने वहाँ कलीसिया स्थापित नहीं की थी (2:1)। सम्भवतः इपफ्रुदीतुस ने कलीसिया स्थापित की थी (1:7; 4:12-13) जो सम्भवतः फिलेमोन के घर में मिलती थी (4:9 और फिले. 10, 23; फिले. 2 और 4:17)। प्रेरितों 19:10 के अनुसार, कलीसिया सम्भवतः उस समय स्थापित हुई थी जब पौलुस वहाँ से 100 मील दूर इफिसुस में था। पौलुस कलीसिया की प्रगति से और उन अपसिद्धन्तों से जो वहाँ आ गए थे अच्छी तरह परिचित था। इसलिए उसने उनका खण्डन करने के लिए यह पत्र लिखा। पहले भाग में पौलुस मसीह की महिमा और उत्कर्ष की बात करता है, मसीह के व्यक्ति और स्वभाव के विषय में, विशेषकर उसके पूर्वभाव, परमेश्वरत्व, और मानवता के विषय में अपसिद्धान्तों का खण्डन करता है। वह उन्हें देह पर सिर के उचित स्थान को पहचानने के लिए उपदेश देता है। दूसरे भाग में, पौलुस उन्हें पहले भाग में दिए सिद्धान्त के व्यावहारिक उपयोग का उपदेश देता है, कि उन्हें पुराना मनुष्यत्व इसके कार्यों के साथ उतार देना है और नया मनुष्यत्व पहिन लेना है। कलीसिया सन्यास, विधिवाद और रूढ़िवाद के अलावा मसीह में पूर्ण है।

10. मसीह देखा गयाः

मसीह पूर्ववर्ती, श्रेष्ठ, सृष्टिकर्त्ता, शासक, उद्धारकर्त्ता, देह का सिर है जिसमें परमेश्वर की सम्पूर्णता वास करती है।

1 थिस्सलुनीकियों

1. नामः

अ. थिस्सलुनीकियों को लिखा पहला पत्र

आ. <u>मसीह के पुनरागमन की पुस्तक</u>

2. लेखकः

अन्यजातियों के प्रेरित, पौलुस ने लिखा है।

3. तारीखः

सम्भवतः सन् 50 और 52 के बीच, पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा के दौरान कुरिन्थ से लिखा गया था (प्रेरितों 18)।

4. मूल शब्दः

अ. विश्वास..12

आ. आनन्द...7

इ. प्रेम...6

ई. शान्ति..6

उ. आना..4

ऊ. आशा..4

5. **मूल आयतः** 2:19; 4:15-18

6. **उद्देश्यः**

अ. मसीह के पुनरागमन के विषय में गलत विचारों को सुधारना और सिद्धान्त स्थापित करना।

आ. विश्वासियों को तीन प्रमुख भक्तिपूर्ण गुणों को दिखाने के लिए उपदेश देना: विश्वास, आशा और प्रेम।

इ. थिस्सलुनीकियों में पौलुस की सेवा की शुद्धता को प्रमाणित करना।

7. **संदेशः**

अ. मसीह का आना उसके लोगों के लिए जो उसके आने का धीरज से प्रतीक्षा करते हैं शान्ति की बात है।

आ. पुनरागमन का सिद्धान्त पवित्रता के लिए एक महान प्रेरक है।

इ. प्रभु का लौटना उनके लिए जो अन्धकार में हैं एक चोर के समान होगा, परन्तु उनके लिए जो ज्योति में हैं ऐसा नहीं होगा।

8. **रूपरेखाः**

अ. प्रतीक्षा कर रही कलीसिया....................................अ. 1 - 3
1. चुने हुए..अ. 1
2. सताए हुए...अ. 2
3. दुखी...अ. 3

आ. आनेवाला मसीह.. अ. 4 - 5
1. प्रकाशन...अ. 4
2. पवित्रीकरण...अ. 5

9. **सारांशः**

पौलुस ने अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा के दौरान थिस्सलुनीकियों में कलीसिया की नींव डाली थी। उसने यहूदा मत वालों से काफी विरोध सहा और वहाँ अधिक देर तक नहीं रह सका था, और वहाँ से जाने के तुरन्त बाद उसने यह पत्र लिखा। कलीसिया की सामान्य आत्मिक स्थिति अच्छी थी, परन्तु कई चीजें थी जिनमें सुधार लाना था। अध्याय एक में, पौलुस उनकी एक आदर्श होने के लिए प्रशंसा करता है। अध्याय दो और तीन वह उन्हें उस सताव और पीड़ा की याद दिलाता है जो उसने और उन्होंने यहूदा मतवालों के हाथ से सही थी। तब अध्याय चार और पाँच में, वह उन्हें उपदेश देता है कि वे उनकी पवित्रता को आत्मा, प्राण और शरीर के व्यवहार में दिखाएँ। पत्र में से चल रहा मुख्य विषय मसीह का पुनरागमन है, जिसके विषय में हर अध्याय में कुछ न कुछ कहा गया है। (1:10; 2:19; 3:13; 4:13-18; 5:1-11, 23)। सारे पत्र में विश्वास, आशा और प्रेम का बने रहनेवाला त्रिएक भी पाया जाता है।

10. **मसीह देखा गयाः**

मसीह हमारी पवित्रता और हमारा आनेवाला प्रभु है।

2 थिस्सलुनीकियों

1. **नामः**

अ. थिस्सलुनीकियों को लिखा दूसरा पत्र

आ. <u>मसीह के पुनरागमन की पुस्तक</u>

2. **लेखकः**

अन्यजातियों के प्रेरित, पौलुस ने लिखा है।

3. तारीखः

सम्भवतः सन् 50 और 52 के बीच, पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा के दौरान कुरिन्थ से लिखा गया था (प्रेरितों 18)।

4. मूल शब्दः

अ. विश्वास..8
आ. प्रेम..6
इ. प्रकट होना...4
ई. आज्ञा...4
उ. आना..3

5. मूल आयतः 1:7-10

6. उद्देश्यः

अ. प्रभु के आने से सम्बंधित घटनाओं के अतिरिक्त विवरण देना।
आ. अत्यधिक सताव के मध्य विश्वासियों को प्रोत्साहित करना।
इ. प्रभु के आने तक वे उनके काम-धंधे और कल्याण में लगे रहें इसकी आज्ञा देना।

7. संदेशः

अ. मसीह का आना उनके लिए न्याय है जो परमेश्वर को नहीं जानते।
आ. मसीह विरोधी की आत्मा अभी भी संसार में काम कर रही है।
इ. मसीह और मसीह विरोधी दोनों के आने के प्रकाश में, विश्वासी को व्यवस्थित जीवन जीना चाहिए।

8. रूपरेखाः

अ. मसीह का पलटा लेगा..अ. 1
आ. मसीह विरोधी का धोखा देगा.......................................अ. 2
इ. कलीसिया काम करेगी...अ. 3

9. सारांशः

(पौलुस के इस कलीसिया के साथ सम्बंध के लिए 1 थिस्सलुनीकियों में इसी शीर्षक को देखो।) यह दूसरा पत्र पहले पत्र के तुरन्त बाद ही लिखा गया था। पहले पत्र में बताया था कि वे मसीह के पुनागमन के सम्बंध में मसीह में "मरे हुओं" के विषय में चिन्तित थे। दूसरे पत्र में मसीह के पुनरागमन के सम्बंध में जीवित सन्तों के दुख की उनकी चिन्ता का वर्णन है। अध्याय एक में, पौलुस उनको यह कह कर सान्त्वना देता है कि मसीह के आने पर बदले का सामना करने से उसके आने से पहले सताव सहना कहीं अधिक बेहतर है। अध्याय दो में, पौलुस उन दो घटनाओं के विषय में बताता है जो उसके आने से पहले घटेंगीः बहुतों का विश्वास से हट जाना और मसीह विरोधी का प्रकट होना। तब अध्याय तीन में वह उन्हें आज्ञा देता है कि मसीह के लौटने के प्रकाश में वे धीरज के साथ प्रतीक्षा करें, व्यवस्थित जीवन जीएँ, और विश्वासयोग्यता के साथ मेहनत करें।

10. मसीह देखा गयाः

मसीह पलटा लेनेवाला और आनोवाला प्रभु यीशु मसीह है।

1 तीमुथियुस

1. नामः

अ. तीमुथियुस = परमेश्वर का आदर करना, परमेश्वर से आदर पाया हुआ, परमेश्वर का आराधक।
आ. तीमुथियुस को लिखा पहला पत्र

इ. सेवा की योग्यताओं की पुस्तक

2. लेखकः

अन्यजातियों के प्रेरित, पौलुस ने लिखा है।

3. तारीखः

सम्भवतः सन् 61 और 65 के बीच, पौलुस की रोम में पहली कैद के बाद लिखा गया था (प्रेरितों 28)।

4. मूल शब्दः

अ. विश्वास..35
आ. भला..23
इ. आज्ञा देना...11
ई. भक्ति..9
उ. सिद्धान्त..9
ऊ. सिखाना (शिक्षक)...8

5. मूल आयतः 3:15; 6:11-12

6. उद्देश्यः

अ. झूठे शिक्षकों के विरुद्ध चेतावनी देना।
आ. खरी शिक्षा के विषय में निर्देश देना।
इ. एल्डरों और डीकनों की योग्यताओं को बताना।
ई. तीमुथियुस को उसकी सेवा के विषय में प्रोत्साहित करना।

7. संदेशः

अ. जो सेवक भक्तिपूर्ण जीवन जीता है अच्छा और विश्वासयोग्य होगा।
आ. सच्चा सेवक खरी शिक्षा देगा और अपने उत्तरदायित्व को निभाएगा।
इ. अनुभवी सेवाओं और अपरिपक्व सेवाओं के बीच सम्बंध पिता-पुत्र का होना चाहिए।

8. रूपरेखाः

अ. खरी शिक्षा के विषय में उत्तरदायित्व..अ. 1
आ. सार्वजनिक आराधना के विषय में उत्तरदायित्व............................अ. 2
इ. कलीसिया अधिकारियों के विषय में उत्तरदायित्व.........................अ. 3
ई. झूठे शिक्षकों के विषय में उत्तरदायित्व.......................................अ. 4
ई. मण्डली के सदस्यों के विषय में उत्तरदायित्व...............................अ. 5
उ. खुद सेवक के विषय में उत्तरदायित्व..अ. 6

9. सारांशः

यह पुस्तक पौलुस की चार में से एक व्यक्तिगत पत्र है जो उसने व्यक्तियों को न कि कलीसियाओं को लिखे थे। तीमुथियुस सम्भवतः लुस्त्रा में पौलुस की सेवा में था (प्रेरितों 14 और 1 तीमु. 1:2)। सात वर्षों के बाद वह आत्मिक रूप से परिपक्व हो गया था कि "सुनाम था" और पौलुस के सफर का साथी बन गया था (प्रेरितों 16)। अध्याय एक में, पौलुस खरी शिक्षा बनाए रखने की आवश्यकता और जिम्मेवारी की बात करता है। दूसरे अध्याय में पौलुस का उपदेश प्रार्थना और सार्वजनिक आराधना में पुरुषों और स्त्रियों की भूमिका के विषय में है। अध्याय तीन, एल्डरों और डीकनों की योग्यताओं के विषय में और उन्हें बनाए रखने के विषय में है। अध्याय चार सेवक का झूठे शिक्षकों से सम्बंध और अध्याय पाँच सेवक की मण्डली के विभिन्न सदस्यों के देखभाल के विषय में है। पौलुस अपना पत्र तीमुथियुस को एक व्यक्तिगत उत्तरदायित्व देते हुए समाप्त करता है।

10. मसीह देखा गयाः

मसीह एल्डर (शासक), डीकन (सेवक), और अच्छा शिक्षक है जो उसे दिए उत्तरदायित्व की ओर विश्वासयोग्य है।

2 तीमुथियुस

1. नामः

अ. तीमुथियुस = परमेश्वर का आदर करना, परमेश्वर से आदर पाया हुआ, परमेश्वर का आराधक।

आ. तीमुथियुस को लिखा दूसरा पत्र

इ. सेवक - सिद्धान्त की पुस्तक

2. लेखकः

अन्यजातियों के प्रेरित, पौलुस ने लिखा है।

3. तारीखः

सम्भवतः सन् 63 और 68 के बीच, पौलुस की रोम में दूसरी कैद के दौरान लिखा गया था।

4. मूल शब्दः

अ. विश्वास..12

आ. सिद्धान्त, सिखाना..8

इ. वचन..7

ई. सत्य...6

उ. लज्जित होना...4

5. मूल आयतः 4:1-5

6. उद्देश्यः

अ. तीमुतियुस को रोम बुलाना (4:9, 11, 13, 21)।

आ. धर्मत्याग के एक समय में एक उचित कार्य करने के लिए तीमुथियुस को निर्देश देना।

7. संदेशः

अ. मसीह के सच्चे सेवक को लज्जित नहीं होना चाहिए।

आ. सच्चा सेवक धर्मत्याग के समय में विश्वासयोग्य रहेगा।

इ. सच्चा सेवक शिक्षा में खरा रहेगा, वह सत्य का वचन सिखाएगा और प्रचार करेगा।

8. रूपरेखाः

अ. मसीह की गवाही के विषय में उत्तरदायित्व.................................अ. 1

आ. मसीह की सेवा के विषय में उत्तरदायित्व...................................अ. 2

इ. मसीह के त्याग के विषय में उत्तरदायित्व...................................अ. 3

ई. मसीह के वचन के विषय में उत्तरदायित्व...................................अ. 4:1-5

ई. पौलुस का अन्तिम अभिवादन...अ. 4:6-22

9. सारांशः

यह पुस्तक पौलुस का चार में से अन्तिम व्यक्तिगत पत्र है, और उसकी मृत्यु से तुरन्त पहले लिखा गया था। (तीमुथियुस से सम्बंधित जानकारी के लिए 1 तीमुथितुस का सारांश देखो) पहले अध्याय में पौलुस तीमुथियुस को मसीह, उसकी गवाही, या उसके सेवकों जैसे कि वह खुद और उनेसिफुरूस से लज्जित नहीं होने का उपदेश देता है। अध्याय दो में वह तीमुथियुस को उसकी सेवा में शक्तिशाली बनने का उपदेश देता है। अध्याय तीन में वह आनेवाले धर्मत्याग की बात करता है और उसका स्पष्ट वर्णन करता है। तब अध्याय चार में वह तीमुथियुस को मसीह के सच्चे सेवक के समान वचन

प्रचार करने को कहता है और व्यक्तिगत निर्देश और अभिवादन के साथ समाप्त करता है। यहाँ पर यह बात ध्यान देने योग्य है कि पौलुस स्वीकार करता है कि उसका जीवन और सेवा का अन्त नजदीक हैं (4:6-8)।

10. मसीह देखा गयाः

मसीह उद्धारकर्त्ता (1:10), दाऊद का वंश (2:8), धर्मी न्यायी (4:8), और स्वर्गीय राज्य का प्रभु (4:18) है।

तीतुस

1. नामः

अ. तीतुस = मनोहर, माननीय, नर्स, या पालनेवाला।

आ. तीतुस को लिखा पत्र

इ. सेवक - भक्ति की पुस्तक

2. लेखकः

अन्यजातियों के प्रेरित, पौलुस ने लिखा है।

3. तारीखः

सम्भवतः सन् 62 और 66 के बीच, पौलुस की रोम में पहली कैद के दौरान लिखा गया था।

4. मूल शब्दः

अ. अच्छा...11

आ. काम..8

इ. उद्धारकर्त्ता..6

ई. खरी...5

उ. सिद्धान्त...4

ऊ. शिक्षा..4

ए. भक्तिपूर्ण...3

5. मूल आयतः 2:11-14

6. उद्देश्यः

अ. तीतुस को क्रेते की कलीसियाओं में एल्डरों की योग्यताओं के विषय में विशेष निर्देश देना।

आ. भक्तिपूर्ण जीवन दिखाना जिसे परमेश्वर के अनुग्रह से जीया जाना चाहिए।

इ. तीतुस को खरी शिक्षा देने के लिए उपदेश देना।

7. संदेशः

अ. खरी शिक्षा देने का फल भक्तिपूर्ण चरित्र और भले काम हैं।

आ. सच्ची भक्ति वह नहीं जो हम कहते हैं परन्तु जो हम हैं और करते हैं वह है।

इ. परमेश्वर के अनुग्रह की सच्ची समझ भले कार्यों के लिए प्रेरणा देगा।

8. रूपरेखाः

अ. कलीसिया में भक्ति....................सेवकों की योग्यता................अ. 1

आ. घर में भक्ति.............................विश्वासियों का चरित्र.............अ. 2

इ. संसार में भक्ति.........................विश्वासियों का आचरण..........अ. 3

9. सारांशः

यह पुस्तक पौलुस का चार में से एक व्यक्तिगत पत्र है, जो कलीसियाओं के बजाय व्यक्तियों को लिखे गए थे। तीमुथियुस के समान तीतुस भी पौलुस का विश्वास में पुत्र था और उसका यात्री साथी था। उसका प्रेरितों में कोई जिक्र नहीं है परन्तु पौलुस के कई पत्रों में उसका नाम है। तीतुस को क्रेते में इसलिए छोड़ दिया गया था ताकि वहाँ कलीसियाओं में व्यवस्था स्थापित करे (1:5)। इसलिए पौलुस तीतुस को निर्देश लिख भेजता है कि वह अपना काम कैसे करे। अध्याय एक में कलीसिया की व्यवस्था पर, एल्डरों की योग्यताओं पर जोर दिया गया है। अध्याय दो में पौलुस तीतुस को खरी शिक्षा देने, और जो भक्त चरित्र यह उत्पन्न करती है, विशेषकर घर में, दिखाने को कहता है। अध्याय तीन में भले कार्यों को करते रहने और बुराई से बचने के व्यावहारिक क्षेत्र से निपटता है। ध्यान दो कि यह पत्र नए नियम की किसी भी दूसरी पुस्तक से अधिक यीशु मसीह को "हमारा उद्धारकर्त्ता परमेश्वर" बुलाता है (1:3-4; 2:10, 13; 3:4-6)।

10. मसीह देखा गयाः

मसीह हमारा उद्धारकर्त्ता (1:3), परमेश्वर का अनुग्रह (2:11), और हमारा छुड़ानेवाला (2:14) है।

फिलेमोन

1. नामः

अ. फिलेमोन = मित्रता।

आ. फिलेमोन को लिखा पत्र

इ. <u>मेल-मिलाप की पुस्तक</u>

2. लेखकः

अन्यजातियों के प्रेरित, पौलुस ने लिखा है।

3. तारीखः

सम्भवतः सन् 57 और 62 के बीच, पौलुस की रोम में पहली कैद के दौरान लिखा गया था।

4. मूल शब्दः

अ. भाई...4

आ. स्वीकार करना.......................................3

इ. प्रेम...3

ई. कैदी..3

5. मूल आयतः 9, 15-16

6. उद्देश्यः

अ. फिलेमोन को मनाना कि वह उनेसिमुस को एक भगोड़े दास के बजाय प्रभु में एक भाई के रूप में स्वीकार करे।

आ. फिलेमोन को सूचना देना कि पौलुस शीघ्र की कैद से छूटनेवाला है और उससे मिलने आएगा।

7. संदेशः

अ. हमें एक दूसरे को स्वीकार करना है जैसे मसीह ने हमें स्वीकार किया है (15:7)।

आ. हमारी सामाजिक स्थिति के अपेक्षा, हम सब प्रभु में भाई हैं।

8. रूपरेखाः

अ. पौलुस की फिलेमोन की प्रशंसा................................आ. 1-7
आ. पौलुस की उनेसिमुस की मध्यस्थता............................आ. 8-21
इ. पौलुस का अभिवादन..आ. 22-25

9. सारांशः

यह पुस्तक पौलुस का चार में से एक व्यक्तिगत पत्र है, जो कलीसियाओं के बजाय व्यक्तियों को लिखे गए थे। यह तीन व्यक्तियों के बारे में है:

फिलेमोन - मालिक
उनेसिमुस - भगोड़ा दास
पौलुस - मध्यस्थ

फिलेमोन जो कुलुस्से का एक अमीर मसीही था, जिसका एक दास उनेसिमुस उसे लूट कर भाग गया था (आय. 10-11, 16, 18)। उनेसिमुस रोम चला गया था और वहाँ पौलुस उसे मसीह में ले आया। पौलुस ने फिर उसे फिलेमोन के पास भेजने का इरादा किया (आय. 12, 15-16), और उसके लिए विनती करने के लिए यह पत्र लिखा। उनेसिमुस तुखिकुस के साथ गया था, जिसने इफिसियों और कुलुस्सियों के लिए पत्र लिए हुए थे।

यह पत्र परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार की एक सुन्दर तस्वीर पेश करता है। हमारा मालिक परमेश्वर (फिलेमोन) मध्यस्थ (पौलुस) की विनती के कारण अपने भगोड़े दासों (उनेसिमुस) को स्वीकार करता है।

10. मसीह देखा गयाः

मसीह हमारा मध्यस्थ, हमारा समर्थक (एडवोकेट) है।

इब्रानियों

1. नामः

अ. इब्रानियों को लिखा पत्र।
आ. <u>मसीह के याजकपन की पुस्तक</u>

2. लेखकः

अनिश्चित। लेखकों के रूप में लूका, अपुल्लोस, बरनबास, और पौलुस के नाम दिए गए हैं, परन्तु एतिहासिक और भीतरी प्रमाणों का प्रभाव पौलुस की ओर संकेत करता है।

3. तारीखः

सम्भवतः सन् 63 और 68 के बीच, मन्दिर और इसकी सेवाओं के सन् 70 के विनाश के तुरन्त पहले लिखा गया था (8:4; 9:6; 10:11; 13:10)।

4. मूल शब्दः

अ. याजक..37
आ. विश्वास.......................................32
इ. लहू...22
ई. आओ हम...................................18
उ. स्वर्ग..16
ऊ. सिद्ध.............................14
ए. अनन्त...........................14
ऐ. बेहतर............................13
ओ. एक बार..........................11
औ. ऐसा न हो कि...................11

5. मूल आयतः 4:14

6. उद्देश्यः

अ. इब्रानी मसीहियों को यहूदा धर्म से छुड़ाकर मसीहियत में लाना और उन्हें धर्मत्याग के विरुद्ध चेतावनी देना।

आ. प्रभु यीशु मसीह को परमेश्वर के अन्तिम और सम्पूर्ण प्रकटीकरण के रूप में उसकी सम्पूर्ण श्रेष्ठता में पेश करना।

इ. मसीह में नई वाचा की प्रतिज्ञाओं, बलिदानों, याजकपन, और पवित्रस्थान को बताना।

7. संदेशः

अ. आत्मिक पुनःपतन और धर्मत्याग का इलाज मसीह की महिमा और कार्य की सही धारणा है।

आ. स्वर्गीय याजक के अनन्त और सिद्ध लहू में विश्वास उससे बेहतर है जो पुराने नियम में प्रतिबिम्बित था।

8. रूपरेखाः

अ. सिद्धान्तीय व्याख्या..................................अ. 1-10

आ. व्यवहारिक उपदेश..................................अ. 11-13

9. सारांशः

यह पत्र इब्रानी मसीहियों को लिखा था जो यहूदा धर्म में लौटने के दबाव में थे। यह तुलना और भेद का पत्र है, और दिखाता है कि पुत्र भविष्यद्वक्ताओं, स्वर्गदूतों, आदम, मूसा, यहोशू, और अब्राहम से बेहतर है। नई वाचा इसके स्वर्गीय पवित्रस्थान, मलिकिसिदक याजकपन और एक बार के बलिदान के साथ पुरानी वाचा इसकी सांसारिक पवित्रस्थान, हारून के याजकपन, और निरन्तर पशु बलिदानों से बेहतर है। इनका सार यह है कि यह सब चीजें जो पृथ्वी के सिय्योन और पृथ्वी के यरूशलेम में सम्मिलित थीं स्वर्गीय सिय्योन और स्वर्गीय यरूशलेम की परछाई मात्र हैं। यह पत्र निर्गमन और लैव्यव्यवस्था में दिए पवित्रस्थान की विस्तार से व्याख्या और अर्थ देता है। इब्रानियों और रोमियों नए नियम के दो महान सिद्धान्तीय पत्रों के रूप में इकट्ठे खड़े हैं।

10. मसीह देखा गयाः

मसीह वचन, यहोवा का स्वर्गदूत, अन्तिम आदम, भविष्यद्वक्ता, सच्चा यहोशू (उद्धारकर्त्ता), मलिलिकिसिदक की रीति का महायाजक, नई वाचा का सेवक और बलिदान, और सब विश्वास का कर्त्ता और सिद्ध करनेवाला है।

याकूब

1. नामः

अ. याकूब = चालाकी से किसी का स्थान लेनेवाला।

आ. याकूब का पत्र।

इ. विश्वास और कर्मों की पुस्तक

2. लेखकः

अनिश्चित। अधिकाँश विद्वान् इस पत्र के लेखक का श्रेय या तो यूसुफ के पुत्र याकूब को या हलफई के पुत्र याकूब को देते हैं, परन्तु एतिहासिक और भीतरी प्रमाणों का प्रभाव हलफई के पुत्र याकूब की ओर, जो बारह प्रेरितों में से एक था, जाता है।

3. तारीखः

सम्भवतः सन् 45 और 53 के बीच लिखा गया था, जो इसे नए नियम के पत्रों में से सबसे पहला पत्र बनाता है।

4. मूल शब्दः

अ. विश्वास...16

आ. कर्म..16

इ. व्यवस्था..10

5. मूल आयत: 2:17-18

6. उद्देश्य:

अ. इब्रानी मसीहियों को प्रोत्साहित करना जो अत्यधिक परखों और परीक्षाओं में से गुज़र रहे थे।

आ. इब्रानी मसीही सभाओं में कुछ अव्यवस्था और भ्रम को सुधारना।

इ. विश्वास और कर्मो को अलग करने की प्रवृति का खण्डन करना।

7. संदेश:

अ. सच्चा विश्वास इसके भले कार्यो से दिखाई देता है।

आ. भले काम उद्धार का माध्यम नहीं हैं, परन्तु उद्धार के उपफल हैं।

इ. हालाँकि मनुष्य व्यवस्था के कामों से धर्मी नहीं ठहरता है, वह विश्वास के कर्मो की व्यवस्था से धर्मी ठहरता है।

8. रूपरेखा:

अ. हमारी परीक्षाओं द्वारा परखा गया और प्रकट विश्वास..................अ. 1:1 - 21

आ. हमारे कर्मो द्वारा प्रकट विश्वास ....अ. 1:22 - 2:26

इ. हमारे शब्दों द्वारा प्रकट विश्वास...अ. 3:1 - 18

ई. हमारी अ-सांसारिकता द्वारा प्रकट विश्वास................................अ. 4:1 - 5:6

उ. हमारे धीरज द्वारा प्रकट विश्वास...अ. 5:7 - 12

ऊ. हमारी प्रार्थनाओं द्वारा प्रकट विश्वास.......................................अ. 5:13 - 20

9. सारांश:

प्रेरित याकूब यरूशलेम की कलीसिया के विशप के रूप से जाना गया था। उसने यह पत्र यरूशलेम से "उन बारह गोत्रों को जो तितर-बितर होकर रहते हैं" (इब्रानी विश्वासी जो दूसरे देशों में रहते थे) लिखा था। एक सिद्धान्तीय लेख लिखने के बजाय उसे व्यावहारिक मसीही जीवन का एक उपयोगी पत्र लिखा, और दिखाया कि हर क्षेत्र में मुख्य चीज "फल" होता है। वह विश्वास के सिद्धान्त को परख, परीक्षा, कर्म, शब्द, सांसारिकता, धीरज, प्रार्थना से जोड़ता है। जैसे कुछ लोगों ने सुझाव दिया है परन्तु पौलुस और याकूब के बीच विश्वास और कर्मो को लेकर कोई विवाद नहीं है। पौलुस रोमियों में विश्वास से, उद्धार से पहले कर्मो के अलावा, धर्मी ठहरने की बात करता है (रोमियों 3:27-28)। याकूब उद्धार के बाद कर्मो से धर्मी ठहरने की बात करता है (याकूब 2:20-24)।

नोट: याकूब और पहाड़ी उपदेश के बीच विशिष्ट अनुकूलता है, और ऐसी कोई बात नहीं है जिसका मसीह की व्यक्तिगत शिक्षा से सीधा सम्बंध न हो।

10. मसीह देखा गया:

मसीह महिमायुक्त प्रभु (2:1), न्यायी (4:12), सेनाओं का प्रभु (5:4), किसान (5:7), और जिसने सिद्ध कर्मो द्वारा सिद्ध विश्वास दिखाया है।

1 पतरस

1. नाम:

अ. पतरस = पत्थर, चट्टान।

आ. पतरस का पहला पत्र।

इ. दुख और महिमा की पुस्तक

2. लेखक:

पतरस ने लिखा है, जो एक मछुवा, और बारह प्रेरितों में से एक था।

3. तारीखः

सम्भवतः सन् 63 और 65 के बीच लिखा गया था।

4. मूल शब्दः

अ. दुख...16
आ. महिमा..16
इ. अनुग्रह...10
ई. बहुमूल्य...5
उ. आशा...5

5. मूल आयतः 4:12-13

6. उद्देश्यः

अ. सताव के कारण दुख उठा रहे मसीहियों को प्रोत्साहित करना।
आ. मसीहियों को आनेवाली बड़ी परीक्षाओं के लिए तैयार करना।
इ. मसीहियों को महिमा की आशा दिखाना जो आगे रखी हुई है।
इ. उन्हें व्यावहारिक मसीही कर्तव्य पूरे करने के लिए उपदेश देना।

7. संदेशः

अ. परमेश्वर विश्वासी के दुखों को महिमा से और उनकी महिमा को दुख से बराबर कर देगा।
आ. दुख विश्वासी के विश्वास और चरित्र को शुद्ध करता और प्रमाणित करता है।
इ. मसीह दुख और महिमा का आदर्श है।
इ. विश्वासी के दुख का कारण केवल उसकी भक्ति होनी चाहिए, उसके विवेक की कमी नहीं।

8. रूपरेखाः

अ. उद्धार के सम्बंध में दुख..अ. 1:1 - 2:10
आ. आचरण के सम्बंध में दुख......................................अ. 2:11 - 4:11
इ. रवैये के सम्बंध में दुख...अ. 4:12 - 5:11

9. सारांशः

प्रेरित पतरस जो जब वह यीशु का चेला था उसे मसीह के दुखों और जो महिमा कलीसिया में आएगी उसका का प्रकाशन दिया गया था। इसी विषय पर उसके पत्रों का विषय बनाया गया है। इस पहले पत्र का विषय दुखों द्वारा महिमा है। पहले भाग में उद्धार के सम्बंध में दुख से निपटा और जीवित आशा, जीवित वचन, जीवित पत्थर और उनकी ओर हमारी प्रतिक्रिया को देखा गया है। दूसरा भाग आचरण के सम्बंध में दुखों से, और जीवन के हर क्षेत्र से निपटता और मसीह को उदाहरण के रूप में रखता है। अन्तिम भाग में चरवाहों और भेड़ों में रवैये के सम्बंध में दुखों से निपटा गया है। यह ध्यान देनेवाली बात है कि हर संदर्भ में जहाँ "दुख" मिलता है "महिमा" भी पाई जाती है।

10. मसीह देखा गयाः

मसीह पूर्व-निर्धारित मेमना, प्रमुख कोने का पत्थर, ठोकर का पत्थर, अपमान की चट्टान, प्रमुख चरवाहे का उदाहरण, और हमारे प्राणों का अध्यक्ष है, जिसने क्रूस का दुख सहा और महिमा और आदर का मुकुट पहना।

2 पतरस

1. नामः

अ. पतरस = पत्थर, चट्टान।

आ. पतरस का दूसरा पत्र।

इ. <u>सच्चे ज्ञान की पुस्तक</u>

2. लेखकः

पतरस ने लिखा है, जो एक मछुवा, और बारह प्रेरितों में से एक था।

3. तारीखः

सम्भवतः सन् 63 और 65 के बीच लिखा गया था।

4. मूल शब्दः

अ. जानो, ज्ञान..18

आ. दिन..12

इ. धर्मी (धार्मिकता)................................8

ई. न्याय...4

उ. स्मरण..4

ऊ. भ्रष्टता..4

5. मूल आयतः 3:17-18

6. उद्देश्यः

अ. सन्तों को भक्ति के लिए प्रेरित करना।

आ. उनको भीतर के झूठे शिक्षकों और ठट्टा करनेवालों की चेतावनी देना।

इ. सच्चे और झूठे ज्ञान की तुलना करना।

इ. प्रभु के दिन से सम्बंधित न्यायों का वर्णन करना।

7. संदेशः

अ. सच्चा ज्ञान भक्ति में वृद्धि से प्रमाणित होता है।

आ. भ्रष्टता और धर्मत्याग के दिनों में विश्वासी को शुद्ध और वफादार रहना चाहिए।

इ. प्रभु के दिन सब सिद्धान्त-सम्बंधी और नैतिक भ्रष्टता से निपटा जाएगा।

8. रूपरेखाः

अ. सच्चे ज्ञान का स्वभाव...अ. 1

आ. सच्चे ज्ञान को त्यागने के खतरे.................................अ. 2

इ. सच्चे ज्ञान में प्रतिज्ञा...अ. 3

9. सारांशः

जबकि 1 पतरस मत्ती 16 पर बनाया गया है, यह पत्र पतरस के मत्ती 17 के रुपान्तर के अनुभव से बनाया गया है। इस दूसरे पत्र का विषय सच्चे और झूठे ज्ञान में तुलना है। अध्याय एक में पतरस बताता है कि सच्चे ज्ञान का स्वभाव और चरित्र मसीही विकास में व्यक्त होता है। अध्याय दो भ्रम से निपटता है, इसका आक्रमण बताता, इसका उदाहरण देता, इसके क्रियाओं को प्रकट करता, और इसके खतरे की चेतावनी देता है। अध्याय तीन में, प्रभु के आने की प्रतीज्ञा की पुष्टि की गई है और उसे समझाया गया है, इस बात पर जोर देकर कि जो झूठे ज्ञान में लगे रहेंगे उनके लिए यह रोष का दिन होगा। तुलना में पहला पत्र प्रोत्साहित करने और दूसरा पत्र चेतावनी देने के लिए है; पहला विश्वासियों के दुख और महिमा को दिखाता है, तो दूसरा अविश्वासियों के दुख और न्याय को; पहला बाहर के सतावों, और दूसरा भीतर से अपसिद्धान्तों पर जोर देता है।

नोटः दूसरे अध्याय की अधिकाँश सामग्री यहूदा के पत्र में भी पाई जाती है और इन दो अध्यायों का अध्ययन एक साथ किया जाना चाहिए।

10. मसीह देखा गयाः मसीह प्रिय पुत्र, भोर का तारा, आनोवाला प्रभु है।

1 यूहन्ना

1. नाम:

अ. यूहन्ना = परमेश्वर का वरदान।

आ. यूहन्ना का पहला पत्र।

इ. <u>प्रेम की पुस्तक</u>

2. लेखक:

प्रिय यूहन्ना ने लिखा है, जिसने सुसमाचार, तीन पत्र, और प्रकाशितवाक्य भी लिखे हैं।

3. तारीख:

सम्भवत: सन् 85 और 90 के बीच लिखा गया था।

4. मूल शब्द:

अ. प्रेम..46

आ. जानो..42

इ. पाप...28

ई. संसार..23

उ. जीवन..15

ऊ. बने रहना..12

5. मूल आयत: 4:16

6. उद्देश्य:

अ. गूढ़ज्ञानवाद के अपसिद्धान्त का खण्डन करना जो धर्मत्यागी यहूदा धर्म और भ्रष्ट विधर्म से उत्पन्न हुआ था।

आ. विश्वासी को उसके परमेश्वर, भाई, संसार, और पाप के साथ सम्बंध में उपदेश देना।

इ. दिखाना कि परमेश्वर के सच्चे ज्ञान में उसके साथ एक व्यक्तिगत सम्बंध सम्मिलित है।

7. संदेश:

अ. यदि हम परमेश्वर को सच में जानते हैं और उसके साथ संगति में हैं, तब हम संसार से प्रेम नहीं करेंगे परन्तु ज्योति में चलेंगे और प्रेम में चलेंगे।

आ. यदि विश्वासी जीवन में बना रहता है तो वह पाप में नहीं जीएगा।

8. रूपरेखा:

अ. परमेश्वर ज्योति है...अ. 1, 2

आ. परमेश्वर प्रेम है...अ. 3, 4

इ. परमेश्वर जीवन है...अ. 5

9. सारांश:

यह पत्र यूहन्ना के प्रभु यीशु के साथ घनिष्ठ सम्बंध और व्यक्तिगत ज्ञान में से निकला था जैसा उसके सुसमाचार में भी देखा जा सकता है। यहूदा मत और विधर्म से आए नए विश्वासी सुसमाचार के सत्य में उनके पहले के सिद्धान्तों को मिलाने लगे थे। इसने आगे चलकर गूढ़ज्ञानवाद के घातक अपसिद्धान्त को जन्म दिया था। यीशु के परमेश्वरत्व को स्वीकार करके परन्तु उसकी मानवता का इन्कार करके वे कहने लगे कि उन गूढ़ज्ञानवादियों के पास ही सच्चा ज्ञान है। वे उनकी निन्दा करने लगे जो सच्चे प्रेरितों के सिद्धान्तों में बने हुए थे। इसलिए यूहन्ना विश्वासियों को आश्वासन देने के लिए लिखता है कि वे ही सच्चा ज्ञान रखने रखते हैं क्योंकि उनके पास मसीह का सच्चा ज्ञान है। अध्याय एक और दो में वह इस सत्य को प्रकट करता है कि "परमेश्वर ज्योति है और उसमें कोई भी अन्धकार नहीं"। अध्याय तीन और चार दिखाते हैं कि यदि एक विश्वासी में परमेश्वर का सच्चा ज्ञान है तो वह परमेश्वर और भाइयों की ओर प्रेम में चलेगा। अध्याय पाँच में मुख्य विचार यह है "जिसके पास पुत्र है उसके पास जीवन है।"

10. मसीह देखा गयाः

मसीह वचन, पुत्र, हमारा सहायक, हमारा प्रायश्चित, मसीह, ज्योति, प्रेम और जीवन है।

2 यूहन्ना

1. नामः

अ. यूहन्ना = परमेश्वर का वरदान।

आ. यूहन्ना का दूसरा पत्र।

इ. सत्य - सिद्धान्त की पुस्तक

2. लेखकः

प्रिय यूहन्ना ने लिखा है, जिसने सुसमाचार, तीन पत्र, और प्रकाशितवाक्य भी लिखे हैं।

3. तारीखः

सम्भवतः सन् 85 और 90 के बीच लिखा गया था।

4. मूल शब्दः

अ. सत्य...5

आ. आज्ञा...4

इ. प्रेम...4

ई. सिद्धान्त...3

उ. चलना..3

5. मूल आयतः 9 - 10

6. उद्देश्यः

अ. धोखेबाजों के विरुद्ध चेतावनी देना जो मसीह विरोधी की आत्मा में आते हैं।

आ. ऐसे धोखेबाजों को स्वीकार करने के विरुद्ध चेतावनी देना।

इ. उन्हें मसीह के सिद्धान्त में बने रहने के लिए प्रोत्साहित करना।

7. संदेशः

अ. विश्वासी को प्रेम की आज्ञा में चलना और सच्ची शिक्षा में बने रहना है।

आ. विश्वासी को धोखेबाजों और मसीह के सिद्धान्त के अपराधियों को जो मसीह विरोधी हैं, अतिथि-सत्कार भी नहीं दिखाना है।

8. रूपरेखाः

अ. सच्ची शिक्षा में चलना..आ. 1 - 6

आ. सच्ची शिक्षा से गिरना..आ. 3 - 13

9. सारांशः

यूहन्ना का यह दूसरा पत्र या तो एक व्यक्तिगत पत्र है जो एक मसीह स्त्री और उसके बच्चों को लिखा गया था, या एक कलीसिय का पत्र है जो एक स्थानीय कलीसिया और उसके सदस्यों को लिखा गया था। दोनों परिस्थितियों में पत्र का सत्य सब विश्वासियों के लिए है। पत्र के पहले भाग में यूहन्ना सच्ची शिक्षा में चलने और प्रेम की आज्ञा का पालन करने पर जोर देता है। दूसरा भाग उनके विषय में चेतावनी देता है जो सच्ची शिक्षा का उल्लंघन करते हैं, और दिखाता है कि

वे धोखेबाज और मसीह विरोधी हैं। वह उन्हें उपदेश देता है कि वे झूठे भाइयों का अतिथि-सत्कार भी न करें। इस पत्र के मूल सिद्धान्त यूहन्ना के सुसमाचार में पाए मसीह की शिक्षाओं में से निकले हैं।

10. मसीह देखा गयाः

मसीह सत्य, पुत्र, मसीह है जो शरीर में आनेवाला है।

3 यूहन्ना

1. नामः

अ. यूहन्ना = परमेश्वर का वरदान।

आ. यूहन्ना का तीसरा पत्र।

इ. सत्य - व्यवहार की पुस्तक

2. लेखकः

प्रिय यूहन्ना ने लिखा है, जिसने सुसमाचार, तीन पत्र, और प्रकाशितवाक्य भी लिखे हैं।

3. तारीखः

सम्भवतः सन् 85 और 90 के बीच लिखा गया था।

4. मूल शब्दः

अ. सत्य...7

आ. स्वीकार करो...................................3

इ. चलना...2

ई. प्रेम...2

5. मूल आयतः 3

6. उद्देश्यः

अ. गयुस को भाइयों का स्वागत करने के लिए प्रोत्साहित करना।

आ. गयुस को आश्वासन देना कि यूहन्ना खुद दियुत्रिफेस से निपट लेना जब वह आगली बार कलीसिया में आएगा।

इ. दिमेत्रियुस की सत्य में अच्छी रिपोर्ट की गवाही देना।

7. संदेशः

अ. विश्वासियों को भाइयों को स्वीकार करने और उनका अतिथि-सत्कार करने के इच्छुक होना चाहिए।

आ. कोई भी अगुवा जो उत्कर्ष चाहता है अपने कर्मों के द्वारा अपने को ईश्वरीय अनुशासन में लाएगा।

इ. मसीहियत सत्य और प्रेम में एक व्यावहारिक चाल है।

8. रूपरेखाः

अ. उपदेश.....................गयुस...........................आ. 1 - 8

आ. दण्डाज्ञा.....................दियुत्रिफेस.....................आ. 9 - 11

इ. प्रशंसा.......................दिमेत्रियुस.....................आ. 12 - 14

9. सारांशः

यूहन्ना का यह तीसरा पत्र गयुस को लिखा एक व्यक्तिगत पत्र है। आरम्भिक कलीसिया में विभिन्न विश्वासियों को सफरी सेवा के लिए बुलाया गया था। भौतिक सहयोग की कोई गारंटी नहीं होने के कारण वे सेवा के उनके शहर में मसीहियों

के अतिथि-सत्कार पर निर्भर रहते थे। यूहन्ना ने कुछ भाइयों को भेजा था और कलीसिया को लिखा था कि वे उनको स्वीकार करें, परन्तु कलीसिया के एक अगुवे, दियुत्रिफेस ने उन्हें स्वीकार करने से इन्कार किया था। उसने एक अहंकारी निरंकुश आत्मा का प्रदर्शन किया था और उन्हें कलीसिया से बाहर कर देने की धमकी दी थी जो उन्हें स्वीकार करेंगे। इस प्रकार यूहन्ना इस स्थिति के विषय में लिखता है, गयुस को उन्हें स्वीकर करने की आज्ञा देता है और कहता है कि जब वह आएगा स्थिति से आप निपटेगा। यह पत्र तीन पुरुषों के विषय में है और सत्य और प्रेम के साथ उनका सम्बंध दिखाता है:

गयुस.................प्रिय, दयालु, उदार, मेहमाननवाज़
दियुत्रिफेस...........अहंकारी, निरंकुश, दबंग
दियुत्रियुस...........सुनाम, प्रशंसनीय

जबकि यूहन्ना दो झूठे शिक्षकों के विरुद्ध चेतावनी देता है जो मसीह के सिद्धान्त का इन्कार करते हैं, यूहन्ना 3 उनका स्वीकार करने के विरुद्ध चेतावनी देता है जो मसीह के सच्चे सेवक हैं।

10. मसीह देखा गया:

मसीह सत्य है।

यहूदा

1. नाम:

अ. यहूदा = स्तुति।
आ. यहूदा का पत्र।
इ. धर्मत्यागियों के काम।
ई. धर्मत्यागियों की पुस्तक

2. लेखक:

अनिश्चित। अधिकाँश लेखक इस पत्र के स्रोत का श्रेय या तो यूसुफ के पुत्र यहूदा को देते हैं या हलफई के पुत्र यहूदा को देते हैं। परन्तु प्रमाणों का प्रभाव हलफई के पुत्र यहूदा की ओर, जो बारह प्रेरितों में से एक और याकूब का भाई था, जाता है।

3. तारीख:

सम्भवतः सन् 67 और 80 के बीच लिखा गया था।

4. मूल शब्द:

अ. अभक्त..6
आ. रखा है..5
इ. अनन्त...4

5. मूल आयत: 3

6. उद्देश्य:

अ. विश्वासियों को विश्वास के लिए यत्न करने के लिए उपदेश देना।
आ. उन्हें धर्मत्यागी शिक्षकों की चेतावनी देना और उदाहरण और चित्रों द्वारा उनके चरित्र, शिक्षा और कर्मों को प्रकट करना।
इ. धर्मत्याग के रहते हुए उन्हें शान्ति देना।

7. संदेश:

अ. धर्मत्याग के मध्य सच्चे विश्वासियों को विश्वास के लिए यत्न करना है।
आ. सब अभक्तों को आग द्वारा अनन्त न्याय में लाया जाएगा।
इ. परमेश्वर उसके चुने हुओं को गिरने से रोकने के लिए सदा विश्वासयोग्य है।

8. रूपरेखाः

अ. विश्वास के लिए यत्न करना............................आ. 1 - 4
आ. विश्वास से धर्मत्याग.....................................आ. 5 - 16
इ. विश्वास रखना...आ. 17 - 25

9. सारांशः

यहूदा अपना पत्र यह कहते हुए आरम्भ करता है कि वह "उस उद्धार के विषय में...जिसमें हम सब सहभागी हैं" लिखना चाहता था, परन्तु उसे आत्मा ने एक भिन्न विषय पर लिखने के लिए विवश किया। झूठे शिक्षक आ गए थे, जो विश्वास का इन्कार और कलीसिया में अपसिद्धान्त उत्पन्न कर रहे थे। इसलिए यहूदा विश्वासियों को विश्वास के लिए यत्न करने का उपदेश देता है। वह इतिहास से उदाहरण और प्रकृति से चित्र ले लेकर उनको प्रकट करता है और फिर वह प्रभु के आने पर उनके निश्चित न्याय की बात करता है। अन्त में वह विश्वासियों को विश्वास में बने रहने का उपदेश देता और प्रोत्साहित करता है।

नोटः इसी एक पुस्तक में मूसा के शव के लिए संघर्ष और हनोक की भविष्यद्वाणी का जिक्र है।
नोटः यहूदा में से अधिकाँश बातें 2 पतरस में भी पाई जाती हैं और इन दो पत्रों को एक साथ पढ़ना चाहिए।
नोटः यह पत्र त्रिक से बना हुआ है।

10. मसीह देखा गयाः

मसीह आनेवाला प्रभु, यहूदा और "एकमात्र परमेश्वर हमारा उद्धारकर्त्ता" है।

प्रकाशितवाक्य

1. नामः

अ. प्रकाशितवाक्य।
आ. प्रकाशन-ग्रन्थ।
इ. <u>निर्णायकों की पुस्तक</u>

2. लेखकः

प्रिय यूहन्ना ने लिखा है, जिसने सुसमाचार, तीन पत्र, और प्रकाशितवाक्य लिखे हैं।

3. तारीखः

सम्भवतः सन् 90 और 96 के बीच लिखा गया था।

4. मूल शब्दः

अ. स्वर्गदूत...76
आ. देखना, देखा...................................65
इ. सात...59
ई. सुनना..46
उ. सिंहासन...40
ऊ. नाम...36
ए. बारह, चौबीस.................................30
ऐ. राजा (राज्य)..........................30
ओ. पुस्तक..................................30
औ. मेमना...................................29
अं. आत्मा..................................22
अः. कलीसिया...............................20
क. सफेद...................................19

5. मूल आयतः 1:19

6. उद्देश्यः

अ. प्रभु यीशु मसीह का उसके विविध पदों में एक प्रकटीकरण पेश करना।

आ. एशिया की सात कलीसियाओं को निर्देश, प्रोत्साहन और फटकार देना।

इ. कलीसिया को मसीह के प्रथम आगमन और पुनरागमन की घटनाओं का एक भविष्यसूचक परिदृश्य देना।

ई. उद्धार की योजना के निर्णायक परिणाम को जो उत्पत्ति में आरम्भ हुआ था, केन्द्र में लाना।

7. संदेशः

अ. परमेश्वर का राज्य निर्णायक और सम्पूर्ण रूप से सब बुराइयों पर विजयी होगा।

आ. जो संसार, शरीर और शैतान पर विजयी होंगे अनन्त इनाम पाएंगे।

इ. एक सच्चा गवाह को जो उसने देखा और सुना है उसकी गवाही देने योग्य होना चाहिए।

8. रूपरेखाः

अ. देखी गई चीजें...................महिमायुक्त मसीह............................अ. 1

आ. चीजों जो हैं......................सेवा कर रहा मसीह..........................अ. *2*, 3

इ. इसके बाद की चीजें............विजयी मसीह..................................अ. 4 - *22*

9. सारांशः

यूहन्ना पतमुस नामक टापू पर निर्वासित था। वहाँ उसे, जब वह आत्मा में गया, दर्शनों की एक श्रृँखला दी गई, जिसमें उसने प्रथम आगमन से लेकर नए स्वर्ग और नई पृथ्वी के आने तक घटनाओं को प्रकट होते देखा। पहले तीन अध्याय मसीह का उसकी कलीसिया, स्थानीय और सम्पूर्ण, के साथ सम्बंध दिखाते हैं। बाकी की पुस्तक इन विषयों से निपटती हैः सात-मुहरों से बंद पुस्तक (4 - 7), सात तुरहियाँ (8 - 11), विपत्तियाँ (12 - 14), सात कटोरे (15 - 16), रहस्यमयी बेबिलोन (17 - 18), पुनरागमन, राज्य, और नया स्वर्ग और नई पृथ्वी (19 - *22*)। पुरानी सृष्टी से सम्बंधित सबकुछ जो उत्पत्ति में आरम्भ हुआ था, प्रकाशित में परिपूर्ति पाता है जो फिर नई सृष्टि को लाता है।

10. मसीह देखा गयाः

मसीह कलीसिया का प्रमुख, मेमना, यहूदा के वंश का शेर, यहोवा स्वर्गदूत, दुल्हा, वचन, और राजाओं का राजा और प्रहभुओं का प्रभु है।

नए नियम के लेखक

राष्ट्रीयता	लेखक	सेवा / पेशा	पुस्तक
यहूदी	मत्ती	प्रेरित महसूल लेनेवाला	मत्ती
यहूदी / रोमी	मरकुस	मिशनरी पतरस का चेला	मरकुस
यूनानी	लूका	पौलुस का चेला वैद्य	लूका प्रेरितों
यहूदी	यूहन्ना	प्रेरित मछुवा	यूहन्ना 1 यूहन्ना 2 यूहन्ना 3 यूहन्ना प्रकाशितवाक्य
यहूदी	याकूब	प्रेरित ?	याकूब
यहूदी	यहूदा	प्रेरित ?	यहूदा
यहूदी	पतरस	प्रेरित मछुवा	1 पतरस 2 पतरस
यहूदी	पौलुस	प्रेरित तम्बू बनानेवाला फरीसी	रोमियों 1 कुरिन्थियों 2 कुरिन्थियों गलातियों इफिसियों फिलिप्पियों कुलुस्सियों 1 थिस्सलुनीकियों 2 थिस्सलुनीकियों 1 तीमुथियुस 2 तीमुथियुस तीतुस फिलेमोन इब्रानियों ?

पौलुस के पत्रों की पृष्ठभूमि

पृष्ठभूमि	**शहर**	**प्रेरितों के संदर्भ**
गलातियों	अन्ताकिया, इकुनियुम लिस्त्रा, दिरबे	प्रेरितों 13:14 - 14:28
फिलिप्पियों	फिलिप्पी	प्रेरितों 16:11-40
1, 2 थिस्सलुनीकियों	थिस्सलुनीके	प्रेरितों 17:1-9
1, 2 कुरिन्थियों	कुरिन्थुस	प्रेरितों 18:1-16
इफिसियों	इफिसुस	प्रेरितों 19:1-41; 20:17-38; 20:17-38
पुस्तक	**कहाँ लिखी**	**प्रेरितों का संदर्भ**
गलातियों	अन्ताकियों	प्रेरितों 14
1, 2 थिस्सलुनीकियों	कुरिन्थुस	प्रेरितों 18
1 कुरिन्थियों	इफिसियों	प्रेरितों 19
2 कुरिन्थियों	मकिदुनिया	प्रेरितों 20:1, 2
रोमियों	कुरिन्थुस	प्रेरितों 20:2
कुलुस्सियों		
फिलेमोना		
इफिसियों	रोम	प्रेरितों 28:30
फिलिप्पियों		
1 तीमुथियुस		
तीतुस		
2 तीमुथियुस	रोम, "प्रेरित" की कैद के बाद	
इब्रानियों		

पत्रों में प्रकाशन का प्रकटीकरण

नए नियम में हम पाते हैं कि पत्र सुसमाचारों और प्रेरितों की नींव पर बने हुए हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य यह बताना है कि किस प्रकार पत्रों के मुख्य विषय उनके आधार सुसमाचारों में पाते हैं। सुसमाचारों में हम आत्मा के अनुसार मसीह को जान पाते हैं।
जबकि सुसमाचार एतिहासिक तथ्यों को घोषित करते हैं, पत्र उन तथ्यों को सिद्धान्तों के रूप में अर्थ बताते हैं।

सुसमाचार		**पत्र**
	क्रूस	
शरीर के भाव से मसीह		आत्मा के भाव से मसीह
घोषणा		अर्थ
इतिहास		सिद्धान्त

पत्र	**मुख्य विषय**	**सुसमाचार का आधार**
रोमियों	विश्वास द्वारा धर्मी ठहराया जाना	यूहन्ना 3:16
1, 2 कुरिन्थियों	नए नियम का कलीसिया का क्रम	मत्ती 16:18
गलातियों	व्यवस्था और अनुग्रह; स्वतन्त्रता	मत्ती 14:24; यूहन्ना 8:36
इफिसियों	देह; कलीसिया - अनन्त उद्देश्य	मत्ती 16:18
फिलिप्पियों	खुशी और आनन्द	यूहन्ना 15:11
कुलुस्सियों	प्रमुख (मसीह का प्रताप)	मत्ती 28:19-20
1, 2 थिस्सलुनीकियों	पुनरागमन; मसीह विरोधी	यूहन्ना 14:1-3
तीमुथियुस; तीतुस	पास्तरीय पत्र; एल्डर और डीकन	लूका 11:49; मत्ती 23:34
फिलेमोन	मेल-मिलाप	मत्ती 5:24; 18:15
इब्रानियों	मसीह का याजकपन; सिद्धता	मरकुस 10:45; मत्ती 5:48
याकूब	विश्वास और कर्म	मत्ती अध्याय 5 - 7
1 पतरस	दुख और महिमा; कलीसिया	मत्ती 16:18, 21, 27
2 पतरस	पुनरागमन; झूठे भविष्यद्वक्ता	मत्ती 24
1, 2, 3 यूहन्ना	प्रेम, ज्योति, जीवन; मसीह विरोधी	यूहन्ना अध्याय 1, 6, 11, 13
यहूदा	धर्मत्यागियों के कार्य	मत्ती 24
प्रकाशितवक्य	पुनरागमन; निर्णायक	लूका 19:11-27; यूहन्ना 5:29

"इसलिए यहोवा का वचन उनके पास आज्ञा पर आज्ञा, आज्ञा पर आज्ञा, नियम पर नियम, नियम पर नियम है, थोड़ा यहाँ थोड़ा वहाँ।" यशायाह 28:13
"मुझे तुम से और भी बहुत सी बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते। परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा...।" यूहन्ना 16:12-13

यूहन्ना का मसीह का चित्रः

- अ. 1 (आय. 1-14), परमेश्वर का पुत्र
- अ. 2 (आय. 1-10), मनुष्य का पुत्र
- अ. 3 (आय. 2-21), ईश्वरीय शिक्षक
- अ. 4 (आय. 7-29), मनुष्यों को जीतनेवाला
- अ. 5 (आय. 1-9), महान वैद्य
- अ. 6 (आय. 32-58), जीवन की रोटी
- अ. 7 (आय. 37), जीवन का जल
- अ. 8 (आय. 3-11), कमज़ोर का रक्षक
- अ. 9 (आय. 1-39), जगत की ज्योति
- अ. 10 (आय. 1-16), अच्छा चरवाहा
- अ. 11 (आय. 1-44), जीवन का राजकुमार
- अ. 12 (आय. 12-15), राजा
- अ. 13 (आय. 1-10), सेवक
- अ. 14 (आय. 1-3), सहायक
- अ. 15 (आय. 1-16), सच्ची दाखलता
- अ. 16 (आय. 1-15), पवित्र आत्मा देनेवाला
- अ. 17 (आय. 1-26), महान मध्यस्थ
- अ. 18 (आय. 1-11), आदर्श दुख सहनेवाला
- अ. 19 (आय. 16-19), ऊँचा उद्धारकर्त्ता
- अ. 20 (आय. 1-31), मृत्यु को जीतनेवाला
- अ. 21 (आय. 1-17), पश्चातापी को पुनःस्थापित करनेवाला

मसीही जीवन के मूल शब्दों को समझना

<u>मेल–मिलाप</u> – हमें इकट्ठा करो

राष्ट्रपति के चुनाव के दौरान, एक छोटा नगर अचानक प्रसिद्ध हो गया। एक प्रत्याशी वहाँ थोड़े समय के लिए रुकने वाला था। एक 13 वर्ष की लड़की ने एक पट्ट को ऊपर उठाया जिसे किसी ने बनाया हुआ था। पट्ट में लिखा था, "हमें एक बार फिर इकट्ठे करो।" खबरों ने इसे पकड़ लिया, और उस नगर की छोटी लड़की रातों-रात प्रसिद्ध हो गई। "हमें एक बार फिर इकट्ठे करो", अकसर सुना जा रहा है। मेल-मिलाप की आवश्यकता है, लोगों को एक बार फिर इकट्ठा करने की।
बाइबल का आरम्भ स्वर्ग और पृथ्वी के एक साथ काम करने के समन्वय के विवरण के साथ होता है। परन्तु तब चित्र में पाप आ जाता है और मतभेद, मृत्यु और विभाजन आरम्भ हो जाते हैं। मनुष्य परमेश्वर से अलग हो जाता है। मनुष्य परमेश्वर से भागता और छिपता है। और तब मनुष्य मनुष्य से अलग हो जाता है और भाई भाई से घृणा करता है। उत्पत्ति पाप के भयानक परिणामों के विषय में बताती है और लोग और देश एक दूसरे से अलग हो जाते हैं। मेल-मिलाप की महान आवश्यकता उत्पन्न होती है और यह काम हमारे प्रभु यीशु मसीह करते हैं।
<u>**मेल–मिलाप का अर्थ है:** जो अलग या शत्रुता में था उसे इकट्ठा करना।</u> मेल-मिलाप में पापी, उद्धारकर्त्ता और विश्वासी सम्मिलित हैं।

पापी

मेल-मिलाप का तात्पर्य है कि पापी परमेश्वर के साथ युद्ध में है। रोमियों 5:7-10 कहता है, "किसी धर्मी जन के लिए कोई मरे, यह तो दुर्लभ है; परन्तु हो सकता है किसी भले मनुष्य के लिए कोई मरने का भी साहस करे। परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रकट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा। अतः जब कि हम उसके लहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा परमेश्वर के क्रोध से क्यों न बचेंगे? क्योंकि बैरी होने की दशा में उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर से हुआ, तो फिर मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पाएँगे?"
प्राचीन रोम साम्राज्य में दो प्रकार के प्रान्त होते थेः सीनेटर प्रान्त और साम्राज्यिक प्रान्त। अन्तर क्या है? सीनेटर प्रान्तों में शान्ति थी, और रोम वहाँ सेना नहीं रखता था। सम्राज्यिक प्रान्त युद्ध समान प्रान्त थे जहाँ समस्या हुआ करती थी। शहनशाह अगस्तुस अपनी सेना द्वारा इन प्रान्तों पर सीधे राज्य करता था, और वह इन प्रान्तों में सदा राजदूत भेजा करता था। यह तथ्य कि परमेश्वर ने हम मसीहियों को इस संसार में उसके राजदूत होने के लिए भेजा है, इस बात का संकेत है कि संसार परमेश्वर के साथ युद्ध में एक साम्राज्यिक प्रान्त है।
कई लोग इस इस तथ्य पर विवाद करते हैं। वे कहते हैं कि मनुष्य मूल रूप से अच्छा है। आखिरकार, सब कैद में नहीं हैं, सब ने नियम नहीं तोड़े हैं। परन्तु समस्या यह है कि लोग बाहर से ही अच्छे दिखते हैं; परमेश्वर हृदय को देखता है। अधिकाँश लोग कार्यों को देखते हैं और अभिप्रायों को भूल जाते हैं। परमेश्वर हृदय के घमण्ड और विद्रोह को देखता है। पापियों और परमेश्वर के बीच शत्रुता गम्भीर है। स्वभाव से ही पापी परमेश्वर का शत्रु है। यदि आपका दूसरा जन्म नहीं हुआ है तो आप परमेश्वर के साथ युद्ध में हैं। "मेरे शरीर में कोई अच्छी वस्तु वास नहीं करती" (रोमियों 7:18)। "मन तो सब वस्तुओं से अधिक धोखा देनेवाला होता है, उस में असाध्य रोग लगा है" (यिर्मयाह 17:9)। स्वभाव से पापी परमेश्वर के साथ शत्रुता में है, और कार्यों से पापी परमेश्वर से शत्रुता में है। यशायाह 53:6 कहता है, "हम तो सब के सब भेड़ों के समान भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना अपना मार्ग लिया।" यह तथ्य कि आज मनुष्य अपना सर उठाकर परमेश्वर को "नहीं" कहता है इस बात का प्रमाण है कि मनुष्य परमेश्वर के साथ शत्रुता में है। मनुष्य संसार और शरीर के लिए जीता है; उसका अभिप्राय आत्म-महिमा है। वह केवल खुद को प्रसन्न करने में रुचि रखता है; वह परमेश्वर की महिमा करने में रुचि नहीं रखता।

उद्धारकर्त्ता

यह वह स्थान है जहाँ मेल-मिलाप आता है। मेल-मिलाप के काम में उद्धारकर्त्ता दूसरा व्यक्ति है जो सम्मिलित है। वह खोए हुए पापियों से प्रेम करता और मेल-मिलाप कराता है। इसी कारण से परमेश्वर ने अपने पुत्र, प्रभु यीशु मसीह को भेजा था। "परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रकट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा।" (रोमियों

5:8)। परमेश्वर ने हमारे लिए अपना प्रेम प्रमाणित किया। परमेश्वर के प्रेम का प्रमाण प्रकृति या इतिहास में नहीं दिखता, हालाँकि हम उसे वहाँ देख सकते हैं। प्रमाण कलवरी में है, क्रूस पर जहाँ मसीह हमारे पापों के लिए मरा।

परमेश्वर हमारे पाप से घृणा करता है परन्तु वह पापी से प्रेम करता है। जितना अधिक आप किसी से प्रेम करते हो उतना अधिक उनकी बुरी बातों से घृणा करते हो। हर माँ-बाप इसे जानता है। आप अपने बेटे से प्रेम करते हो, आप अपनी बेटी से प्रेम करते हो, परन्तु आप उन चीजों से घृणा करते हो जो उनके जीवनों को नष्ट कर रही हैं। परमेश्वर पापियों से प्रेम करता है, और जितना अधिक पापी परमेश्वर से विद्रोह करते हैं उतना अधिक वे परमेश्वर के प्रेम के विरुद्ध पाप करते हैं। इसी लिए उद्धारकर्त्ता मरने के लिए आया।

मेल-मिलाप में बाधाएँ

मेल-मिलाप में कुछ बाधाएँ हैं। हो सकता है हम अपने मानवीय जीवन में उन लोगों का मेल-मिलाप करा दें जो एक दूसरे से युद्ध में हैं परन्तु फिर भी समस्या हल न हो। कुछ मेल-मिलाप युद्धविराम हैं, और वे बने नहीं रहते। परमेश्वर अपना काम उस प्रकार नहीं करता। परमेश्वर उन बाधाओं को निकालने में रुचि रखता है जो उसके और पापी के बीच हैं। निस्संदेह, पहली बाधा परमेश्वर की पवित्र व्यवस्था है। परमेश्वर अपनी व्यवस्था का उल्लंघन नहीं कर सकता। "जो प्राणी पाप करे वही मर जाएगा।" (यहेजकेल 18:4)। "अपने को शुद्ध करके पवित्र बने रहो क्योंकि मैं पवित्र हूँ।" (लैव्यव्यवस्था 11:44)। परमेश्वर की पवित्रता पापी और स्वर्ग के बीच खड़ी रहती है।

दूसरा, मनुष्य का दोष है। परमेश्वर यूँ ही मनुष्य के दोष का ब्योरा लेकर उसे नष्ट नहीं कर सकता है। परमेश्वर जानता है क्या चल रहा है। वह देखता है, और वह न्याय करता है। उसकी आँखों से कुछ भी छिप नहीं सकता। आप सोच सकते हैं आप परमेश्वर से कुछ छिपा रहे हैं परन्तु वह इसके बारे में सब जानता है। परमेश्वर की पवित्र व्यवस्था पापी और परमेश्वर के बीच खड़ी रहती है। मनुष्य का दोष उसके और परमेश्वर के बीच खड़ा रहता है। और उससे भी अधिक मनुष्य का पापी स्वभाव उसके और परमेश्वर के बीच खड़ा रहता है। हृदय में हम विद्रोही हैं। यदि मेल-मिलाप होना है तो परमेश्वर को उसकी व्यवस्था, मनुष्य के दोष, मनुष्य के स्वार्थ, और उसके पापी स्वभाव के बारे में कुछ करना होगा।

निस्संदेह, मनुष्य खुद कुछ करने का प्रयत्न करता है, है ना? मनुष्य स्तर नीचा करता है और कहता है, "मैं दूसरों जैसा ही हूँ।" मनुष्य कहता है, मेरा दोष कोई अधिक खराब तो नहीं। मैं दोबारा आरम्भ करूँगा। परन्तु यदि हम आज भी दोबारा आरम्भ करें, परन्तु हमारे अतीत के दोष की बातों के बारे में क्या? मनुष्य अपना हृदय खुद नहीं बदल सकता है। हृदय केवल परमेश्वर ही बदल सकता है।

बाधाओं को निकालना

यीशु मसीह ने उन सब बाधाओं को निकाल दिया है। उसने पवित्र परमेश्वर की व्यवस्था की माँगों को पूरा किया है। इस पर अधिक अध्ययन के लिए नीचे प्रायश्चित को देखो। जब हमारा प्रभु क्रूस पर मरा तब उसने पवित्र परमेश्वर की व्यवस्था की माँगों को पूरा किया।

दूसरा, उसने क्रूस पर हमारे पापों का दोष सह लिया। यह धर्मी ठहराया जाना है। दूसरे शब्दों में, हम परमेश्वर के सामने मसीह की धार्मिकता में खड़े हो सकते हैं। अब और दोष नहीं रहा।

तीसरा, यीशु मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने, पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के कारण वह हमारा हृदय बदल सकता है। वह हमें न केवल नई स्थिति दे सकता है बल्कि नया स्वभाव भी दे सकता है। बाइबल इसे नया जन्म लेना, दूसरा जन्म लेना कहती है। "पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है, उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है।" (रोमियों 5:5)

इस प्रकार यीशु मसीह ने परमेश्वर और मनुष्य का मेल-मिलाप करा दिया है। उसने बाधाओं को निकाल दिया है। व्यवस्था पूरी की गई है, दोष की कीमत चुका दी गई है और यीशु मसीह के सामर्थ्य के द्वारा हृदय बदला जा सकता है। निस्संदेह, इस सब की कीमत क्रूस पर उसकी मृत्यु थी। "जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिए पाप ठहराया कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ।" (2 कुरिन्थियों 5:21)। मेल-मिलाप मनुष्य का काम नहीं है। यह परमेश्वर का काम है। यह परमेश्वर है जो हमें यीशु मसीह के द्वारा इकट्ठा करता है।

विश्वासी

इसके साथ जिम्मेवारी आती है। हम मसीह के राजदूत हैं। जिस संसार में हम रहते हैं परमेश्वर के साथ युद्ध में है। पापियों को परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप कराने की आवश्यकता है। परमेश्वर पहले ही मेल-मिलाप कर चुका है। परमेश्वर ने अपना चेहरा

हमारी ओर कर लिया है। अब सब लोगों को यह शुभ संदेश देना हमारा काम है कि उन्हें परमेश्वर के साथ युद्ध में होने की आवश्यकता नहीं क्योंकि परमेश्वर उनके साथ युद्ध में नहीं है।
यह परमेश्वर के अनुग्रह के दिन हैं। एक न्याय का दिन आ रहा है तब बहुत देर हो चुकी होगी। यीशु मसीह का राजदूत होना कितने सौभाग्य की बात है - घर, पड़ोस, काम में, स्कूल में - कहीं भी। कैसी अच्छी खबर है हमारे पास - मेल-मिलाप की अच्छी खबर।

धर्मी ठहराया जाना – नई स्थिति पाना

एक मनुष्य परमेश्वर के सामने सही कैसे हो सकता है? धर्मी ठहराया जाना मसीही जीवन का एक शब्द है। मुख्य वचन रोमियों 5:1 है, "अतः जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें।" हम धर्मी ठहराए जाने को दो पहलुओं से देखना चाहते हैं: धर्मी ठहराए जाने का अर्थ और धर्मी ठहराए जाने का तरीका।

धर्मी ठहराए जाने का अर्थ

धर्मी ठहराया जाना है: पापी को जो यीशु मसीह में विश्वास करता है धर्मी घोषित करने का परमेश्वर का अनुग्रहकारी कार्य। आपको परिभाषाओं को याद कर लेना चाहिए क्योंकि वे महत्त्व की हैं। कृपया ध्यान दें कि धर्मी ठहराया जाना एक कार्य है, प्रक्रिया नहीं। कोई मसीही दूसरे से अधिक धर्मी नहीं ठहराया जा सकता। यदि आपका उद्धार हुआ है और आपकी बहन का उद्धार हुआ है तब आपकी बहन और आप दोनों एक समान धर्मी हैं। धर्मी ठहराया जाना एक प्रक्रिया नहीं है। यह एक कार्य है। एक विश्वासी एक क्षण में परमेश्वर के सामने धार्मिकता की सही स्थिति में हो जाता है। यह परमेश्वर का अनुग्रहकारी वरदान है, यह कुछ ऐसा नहीं जो मनुष्य कर सकता है। हमारी सारी मेहनत, हमारे सारे भले काम हमें धर्मी नहीं ठहरा सकते हैं। हम खुद को धर्मी नहीं ठहरा सकते हैं, यह परमेश्वर है जो हमें धर्मी ठहराता है।

धर्मी ठहराया जाना अपरिवर्तनशील

एक बार जब परमेश्वर ने घोषित किया है कि हम यीशु मसीह के द्वारा धर्मी हैं, तो पाप की बात सदा के लिए तय हो जाती है, और फिर धर्मी ठहराया जाना अपरिवर्तनशील हो जाता है।
धर्मी ठहराया जाना नया जन्म जैसा नहीं है। नया जन्म दूसरा जन्म होना है। नया जन्म हमें नई स्थिति देता है। एक नए जन्मे शिशु की भी व्यवश्ता के सामने एक कानूनी स्थिति है। धर्मी ठहराया जाना हमें परमेश्वर के सामने एक सही स्थिति देता है। हम यीशु मसीह में स्वीकार किए गए हैं।
धर्मी ठहराया जाना क्षमा जैसा नहीं है। यदि परमेश्वर ने मुझे क्षमा किया है, परन्तु मैं बाहर जाता हूँ और दोबारा पाप करता हूँ तब मुझे दोबारा क्षमा किए जाने की आवश्यकता है, परन्तु धर्मी ठहराया जाना स्थाई रूप से और अनन्तकाल के लिए निश्चित कर देता है।
धर्मी ठहराया जाना पॉरडन (क्षमा) जैसा भी नहीं है। पॉरडन किया हुआ अपराधी अभी भी अपराधी है। उसके जीवन का ब्योरा अभी भी एक फाइल में है। धर्मी ठहराए जाना दोष को निकालता है। धर्मी ठहराया जाना हमारी स्थिति को बदलता है। यह अनोखा लगता है, परन्तु यह सत्य है। धर्मी ठहराए जाने का अर्थ है कि न केवल परमेश्वर हमारे पूर्व, वर्तमान और भविष्य के पापों को भूल जाता है बल्कि वह भूल जाता है कि हम कभी पापी थे। वह हमारे साथ फिर पापियों के समान व्यवहार नहीं करता। हम पॉरडन किए हुए अपराधी नहीं हैं। हम ऐसे लोग नहीं जिन्हें केवल क्षमा किया गया है। यह सत्य है कि क्षमा और पॉरडन मसीही जीवन के अंश हैं; धर्मी ठहराया जाना पाप की समस्या से एक ही बार सदा के लिए निपटता है, और हमें परमेश्वर के सामने एक सही स्थिति देता है।

धर्मी ठहराए जाने का तरीका

धर्मी ठहराए जाने का तरीका क्या है? एक पवित्र परमेश्वर पापियों को धर्मी कैसे ठहरा सकता है? एक पवित्र परमेश्वर कैसे पाप को अनदेखा कर सकता है? वैसे तो, परमेश्वर पाप को अनदेखा नहीं करता है। परमेश्वर उससे निपटता है। चार वाक्यांश हैं जिन

पर आप अपनी बाइबल में रोमियों की पुस्तक में चिन्ह लगा सकते हैं, और ये चार वाक्यांश हमें धर्मी ठहराए जाने के तरीके को समझाते हैं।

सेंत-मेंत में अनुग्रह से

रोमियों 3:24 कहता है, "परन्तु उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंत-मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं।" परमेश्वर हमें कैसे धर्मी ठहरा सकता है? वह हमें, पुण्य से नहीं, अनुग्रह से धर्मी ठहराता है। "सेंत-मेंत" शब्द यूहन्ना 15:25 में "व्यर्थ ही" अनुवाद किया गया है। हम उसके अनुग्रह से व्यर्थ ही धर्मी ठहराए गए हैं। हम में ऐसा कुछ नहीं है जिसके लिए परमेश्वर हमें धर्मी ठहराए। धर्मी ठहराना पूर्णतया परमेश्वर के अनुग्रह का काम है। अनुग्रह का अर्थ है: कृपा जिसके हम योग्य नहीं हैं और कमाई नहीं जा सकती है।

परमेश्वर पापी को धर्मी ठहराता है। रोमियों 4:5 कहता है, "परन्तु जो काम नहीं करता वरन् भक्तिहीन के धर्मी ठहरानेवाले पर विश्वास करता है, उसका विश्वास उसके लिए धार्मिकता गिना जाता है।" पुराने नियम में परमेश्वर ने सब न्यायियों को चेतावनी दी थी कि उन्हें धर्मी को सही ठहराना और दुष्ट को दण्ड देना चाहिए। व्यवस्थाविवरण 25:1 पर विचार करो, "यदि मनुष्यों के बीच कोई झगड़ा हो, और वे न्याय करवाने के लिए न्यायियों के पास जाएँ, और वे उनका न्याय करें, तो निर्दोष को निर्दोष और दोषी को दोषी ठहराएं।" यदि परमेश्वर ने ऐसे मेरे और आपके साथ किया होता तो हम सदा के लिए दण्ड पाते। तो ऐसा क्यों है कि परमेश्वर अभक्त को धर्मी ठहराता है? इसका कारण यह है कि कोई भी भक्त नहीं है। "सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।" (रोमियों 3:23)

विश्वास के द्वारा

रोमियों 3:28 कहता है, "इसलिए हम इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि मनुष्य व्यवस्था के कामों से अलग ही, विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरता है।" न केवल हम अनुग्रह से धर्मी ठहरे हैं, हम विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरे हैं। जब कभी भी आपके पास अनुग्रह हो आपके पास विश्वास होना ही है; जब कभी भी आपके पास व्यवस्था हो, आपके पास काम होना ही है। एक व्यक्ति व्यवस्था पर चलकर धर्मी नहीं ठहर सकता। रोमियों 3:20 कहता है, "क्योंकि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी उसके सामने धर्मी नहीं ठहरेगा, इसलिए कि व्यवस्था के द्वारा पाप की पहचान (पाप की क्षमा नहीं) होती है।"

हम विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरे हैं - मसीह में विश्वास, विश्वास जो हृदय से होता है। विश्वास वस्तु जितना ही अच्छा है। आप जिसमें विश्वास करते हैं गलत हो सकता है, चाहे आप विश्वास करने में कितने भी ईमानदार क्यों न हों। एक झूठ में विश्वास गलत सुरक्षा है। सत्य में विश्वास एक सच्चा उद्धार करनेवाला विश्वास है। हम विश्वास के द्वारा, न कि कामों के द्वारा धर्मी ठहरे हैं, और हम अनुग्रह से, न कि अपनी योग्यता से धर्मी ठहरे हैं।

लहू के कारण

रोमियों 5:9 कहता है, "अतः जब कि अब हम उसके लहू के कारण धर्मी ठहरे।" न केवल हम अनुग्रह से और विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरे हैं, परन्तु हम लहू के कारण धर्मी ठहरे हैं। किसी को पाप की कीमत देनी ही है। धर्मी ठहराया जाना किसी प्रकार की कल्पित चीज नहीं है कि जहाँ परमेश्वर कहता है, "मैं अपनी आँखें बन्द कर लूँगा और भूल जाऊँगा कि उन्होंने पाप किया है।" परमेश्वर को अपनी पवित्रता में पाप से निपटना ही है। परमेश्वर को अभक्त को धर्मी ठहराने के लिए उसकी भक्तिहीनता से निपटना है। हमारे लिए विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरने के लिए, विश्वास करने के लिए एक उद्धारकर्त्ता होना चाहिए। हम उसके लहू के कारण धर्मी ठहरे हैं!

रोमियों 4:25 हमारे प्रभु के विषय में बात करते हुए कहता है, "वह हमारे अपराधों के लिए पकड़वाया गया, और हमारे धर्मी ठहरने के लिए जिलाया भी गया।" यीशु हमारे पापों के लिए क्रूस पर मरा। उसने सजा ली। अब परमेश्वर सही और उनका धर्मी ठहरानेवाला है जो मसीह में विश्वास करते हैं। शैतान आता है और कहता है, "आप उस व्यक्ति को धर्मी कैसे घोषित कर सकते हो?" और उत्तर आता है, "यीशु मसीह के लहू के कारण।" परन्तु उस व्यक्ति के पापों के बारे में क्या? यीशु मसीह उन पापों के लिए मरा, और उनसे निपटा जा चुका है। हम अनुग्रह से न कि अपनी योग्यता से धर्मी ठहरे हैं। विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरे हैं, व्यवस्था के कामों से नहीं। हम उसके लहू के कारण धर्मी ठहरे हैं क्योंकि मसीह हमारे लिए मरा है।

जीवन के निमित्त

अन्त में, रोमियों 5:18 कहता है, "इसलिए जैसा एक अपराध सब मनुष्यों के लिए दण्ड की आज्ञा का कारण हुआ, वैसा ही एक धर्म का काम भी सब मनुष्यों के लिए जीवन के निमित्त धर्मी ठहराए जाने का कारण हुआ।" यह एक अदभुत सत्य है: एक धर्मी ठहराया जाना जो जीवन लाता है। हम जीवन के निमित्त धर्मी ठहराए गए हैं। धर्मी ठहराया जाना कुछ ऐसा ही नहीं जो परमेश्वर अपनी ओर से करता है। धर्मी ठहराया जाने का परिणाम नई स्थिति और नया जीवन है। यह जीवन नए जन्म के कारण है। परन्तु धर्मी ठहराया जाना मसीह के साथ हमारे संयोग को दिखाता है, और यह संयोग रोमियों 5:1-5 में बताया गया है। यह शान्ति और महिमा और आनन्द का जीवन है।

क्या आपने अपना विश्वास यीशु मसीह में डाला है? आप क्या कर रहे हैं? आप कहते हो, "मैं अपने पुण्य के कामों में भरोसा रखे हूँ।" वे आपको बचा नहीं सकेंगे। आप अनुग्रह से, मनुष्य की योग्यता से धर्मी नही ठहरे हो। हम विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरे हैं, व्यवस्था के कामों से नहीं, न ही धर्म के कामों से। हम उसके लहू के कारण धर्मी ठहरे हैं; कीमत उसने दी है। यह जीवन के निमित्त धर्मी ठहराया जाना है; हम एक बिलकुल नए जीवन में प्रवेश करते हैं।

प्रायश्चित – परमेश्वर की पवित्रता का शोधन

प्रायश्चित नए नियम में वह तकनीकी शब्द है जिसे समझने की हमें आवश्यकता है। "उसे परमेश्वर ने उसके लहू के कारण एक ऐसा प्रायश्चित ठहराया, जो विश्वास करने से कार्यकारी होता है, कि जो पाप पहले किए गए और जिन पर परमेश्वर ने अपनी सहनशीलता के कारण ध्यान नहीं दिया। उनके विषय में वह अपनी धार्मिकता प्रकट करे।" (रोमियों 3:25)। जब आप रोमियों की पुस्तक में आते हैं तो आप एक अदालत में आते हैं। वहाँ आप और मैं न्यायी, परमेश्वर के सामने खड़े हैं। हम दोषी हैं। हम अपराधी हैं जो परमेश्वर की व्यवस्था के उल्लंघन के दोषी हैं। परमेश्वर के सामने हम अपनी स्थिति खो बैठे हैं। न केवल हम अपराधी हैं, हम कैदी भी हैं - हम बन्धन में हैं। हमारी स्थिति बन्धन और पीड़ा की है। मैं सोच नहीं सकता कि एक खोया हुआ पापी जीवन का आनन्द ले रहा हो, क्योंकि उसके पास आनन्द करने को कुछ नहीं है। परमेश्वर के न्याय की तलवार उसके सर पर लटक रही है। हम दण्डित हैं। हम परमेश्वर के रोष का सामना कर रहे हैं।
जब हम पीछे मुड़कर देखते हैं तो पाते हैं कि हम आज्ञोल्लंघन के दोषी हैं। जब आसपास देखते हैं तो पाते हैं कि हम कैदी हैं। जब हम आगे देखते हैं तो पाते हैं हम दण्डित हैं। हमारा कोई भविष्य नहीं है। यह बात रोमियों की पुस्तक अच्छी तरह सिखाती है।
अब क्या हम इस भयंकर दशा से छूट सकते हैं? हम निस्सहाय हैं, हम ऐसा खुद नहीं कर सकते हैं। हो सकता है न्यायी हम से प्रेम करता हो और अपनी शक्ति के अनुसार हमारी सहायता करना चाहता हो, परन्तु उसे व्यवस्था के अनुसार करना है। समाधान एक ही है कि कोई योग्य आए, व्यवस्था का पालन करे, व्यवस्था की धर्मी शर्तों को पूरा करे और हमें स्वतन्त्र करे। निस्संदेह वह व्यक्ति यीशु मसीह है। प्रायश्चित इसी के विषय में है।

प्रायश्चित की परिभाषा

आओ हम इस अदभुत सिद्धान्त पर तीन भिन्न पहलुओं से विचार करें। सबसे पहले, प्रायश्चित की परिभाषा। **प्रायश्चित है:** क्रूस पर यीशु मसीह का काम जिसके द्वारा उसने परमेश्वर की पवित्रता को पूरा किया ताकि परमेश्वर खोए हुए पापियों को दया दिखा सके। यदि आप "प्रायश्चित" की परिभाषा शब्दकोष में देखेंगे तो वहाँ इसकी परिभाषा इस प्रकार दी है: "किसी के क्रोध को शान्त करना"। कुछ लोग सोचते हैं कि पिता परमेश्वर खोए हुए पापियों से नाराज है। वे सोचते हैं कि वह स्वर्ग में से उन लोगों पर बिजली गिराने के लिए तैयार बैठा है जो उसकी आज्ञाओं का पालन नहीं करते। तब पुत्र परमेश्वर आता है और कहता है, "अब, पिता, क्रोधित मत होइए! मैं जाऊँगा और इन पापियों के लिए मरूँगा, और इससे आपका क्रोध शान्त हो जाएगा।" कुछ भी इतना गलत नहीं हो सकता। सबसे पहले तो यीशु मसीह, उसका पिता और पवित्र आत्मा उद्धार की इस महान योजना में मिलकर काम कर रहे हैं। ऐसा नहीं है कि एक दण्ड देना चाहता है और दूसरा क्षमा करना चाहता है। जब यीशु क्रूस पर गया तब पिता वहाँ था। यह सत्य है कि जब पुत्र पापों को लिए क्रूस पर मर रहा था, तो पिता ने उसे छोड़ दिया था, परन्तु यह एक क्षण भर के लिए ही था जब हमारे उद्धारकर्त्ता ने पुकारा था, "हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?" (मत्ती 27:46)। पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा ने उद्धार की योजना में एक साथ काम किया है। प्रायश्चित का अर्थ यह नहीं कि यीशु मसीह परमेश्वर के क्रोध को शान्त करने आया था।

कुछ लोगों का विचार है कि क्रूस पर उसकी मृत्यु के द्वारा यीशु ने परमेश्वर के क्रोध को प्रेम में बदल दिया है। दोबारा, कुछ भी इतना गलत नहीं हो सकता। हमारा परमेश्वर न्याय का परमेश्वर है। हम इसके विषय में बिलकुल स्पष्ट होना चाहते हैं। सारी बाइबल में हम परमेश्वर के रोष और परमेश्वर की दया के विषय में पढ़ते हैं। पुराने नियम में लगभग 20 इब्रानी शब्द रोष अनुवाद किए गए हैं। केवल पुराने नियम में ही रोष और न्याय के 500 से भी अधिक संदर्भ हैं। हमारा पिता जो स्वर्ग में है प्रेमी पिता है, परन्तु वह पवित्र पिता भी है। वह प्रेम है (1 यूहन्ना 4:8)। परन्तु वह ज्योति भी है (1 यूहन्ना 1:5)। परमेश्वर का क्रोध प्रेम में नहीं बदलता क्योंकि इसका अर्थ होगा परमेश्वर बदल रहा है और परमेश्वर कभी बदलता नहीं (मलाकी 3:6)। प्रायश्चित का अर्थ परमेश्वर के क्रोध को प्रेम में बदलना नहीं है। उसका रोष पवित्र रोष है। उसका न्याय पवित्र न्याय है। क्योंकि वह पवित्रता से प्रेम करता और पाप से घृणा करता है, उसे न्याय का परमेश्वर होना ही है।

प्रायश्चित का अर्थ है कि मसीह ने परमेश्वर की पवित्रता को पूरा किया जिससे अब परमेश्वर अनुग्रह और दया खोए हुए पापियों को दे सकता है। परमेश्वर पवित्र परमेश्वर है और क्योंकि वह पवित्र है, पाप को दण्ड मिलना ही है। परमेश्वर अपना नियम नहीं तोड़ सकता। यदि एक क्षण के लिए भी परमेश्वर ने उसका नियम तोड़ा तो सृष्टि टूट जाएगी। परमेश्वर के सारे गुण संगत हैं। उसकी बुद्धि उसके सामर्थ्य के साथ संघर्ष नहीं करती। उसका सामर्थ्य उसके अनुग्रह के संघर्ष नहीं करता। उसका अनुग्रह उसकी पवित्रता के साथ संघर्ष नहीं करता। परमेश्वर के चरित्र में एक सहयोग, एक संगति, एक एकता है।
आप और मैं संगत नहीं है। कभी-कभी हम अधिक संवेदी और प्रेमी हैं, दूसरे समयों में हम अधिक क्रोधित और क्षमाशील होते हैं। परमेश्वर इस प्रकार नहीं है। परमेश्वर के गुण संगत और एक से हैं, और इसलिए उसे एक के लिए दूसरे को छोड़ने की आवश्यकता नहीं है। परमेश्वर की पवित्रता की माँग है कि पाप को दण्ड दिया जाए। परमेश्वर झूठ नहीं बोल सकता। परमेश्वर अपना ही नियम नहीं तोड़ सकता। उसका प्रेम पापी को बचाना चाहता है, परन्तु उसका प्रेम पवित्र प्रेम है, और यहीं पर प्रायश्चित की बात आती है।
यीशु मसीह ने व्यवस्था की माँगों को पूरा किया है। प्रायश्चित क्रूस पर यीशु मसीह के परमेश्वर की ओर काम का वर्णन करता है - उसने तोड़ी हुई व्यवस्था का सजा भुगती है। व्यवस्था पूरी की गई। उसने दोषी पापी की सजा ले ली, और अब पापियों को धर्मी ठहराया जा सकता है। अब क्षमा परमेश्वर के अनुग्रह के कारण उपलब्ध है। अब दण्ड की आज्ञा नहीं क्योंकि यीशु मसीह मरा है।
एक पुराने विद्वान् ने प्रायश्चित को इन चार सरल शब्दों के द्वारा वर्णन किया है। पहला, एक अपराध निकालना है। पापियों ने पवित्र परमेश्वर को नाराज किया है। दूसरा, एक नाराज व्यक्ति - पिता परमेश्वर से निपटना है। परमेश्वर पिता किसी लट्टू दादा की तरह आँखें बन्द करके ऐसा नहीं कहता, "ठीक है, मैं इसके विषय में सबकुछ भूल जाऊँगा।" एक पवित्र परमेश्वर को पाप से निपटना ही है। तीसरा, जिस व्यक्ति ने नाराज किया है उसे क्षमा करना है। यदि उसे क्षमा नहीं किया गया तो वह दण्ड पागा। ऐसा होने के लिए, चौथा, एक बलिदान होना होगा। तो एक अपराध निकालना है, एक नाराज व्यक्ति को सन्तुष्ट करना है, एक नाराज करनेवाले को क्षमा करना है, और यह सब सम्भव करने के लिए एक बलिदान होना है। यह प्रायश्चित का अर्थ है।

प्रायश्चित का प्रदर्शन

प्रायश्चित का प्रदर्शन लैव्यव्यस्था 16 में मिलता है। मुझे निश्चय है कि आप लैव्यव्यवस्था 16 में दिए प्रायश्चित के दिन से परिचित हो। वर्ष में एक बार महायाजक उसके सुन्दर वस्त्रों को निकलता था, और पहले वह अपने पापों के लिए दो बकरों के द्वारा बलिदान करता था। एक बकरा मरने के लिए चुना जाता था, और और दूसरे को जीवित रहने के लिए चुना जाता था। महायाजक उसे लेता था जिसे बलिदान के लिए रखा गया था और उसका लहू अति पवित्रस्थान में ले जाता था। केवल यही एक समय था जब महायाजक अति पवित्रस्थान में जा सकता था कि लहू को प्रायश्चित के ढकने के ऊर छिड़के। प्रायश्चित का ढकना वाचा के सन्दूक के ऊपर एक सुन्दर सोने का आवरण था। प्रायश्चित के ढकने के सिरे पर एक सोने का करूब था। सन्दूक में मन्ना और व्यवस्था थे। जब महायाजक अन्दर आकर प्रायश्चित के ढकने पर लहू छिड़कता था, लहू तोड़ी गई व्यवस्था को ढंक देता था। तब वह बाहर आकर अपने हाथ दूसरे जीवित बकरे पर रखता था और लोगों के पाप उस पर अंतरित करता था। उस जीवित बकरे को फिर जंगल में ले जाकर छोड़ दिया जाता था। ये दोनों बकरे इकट्ठे बलिदान बनते थे। यह यूहन्ना 1:29 की तस्वीर है: "देखो, यह परमेश्वर का मेमना है जो जगत के पाप उठा ले जाता है।"
प्रभु यीशु मसीह क्रूस पर लटका था; यहाँ उसने न्याय के सिंहासन को प्रायश्चित के ढकने के द्वारा अनुग्रह के सिंहासन में बदल दिया। यूनानी में "प्रायश्चित" शब्द इब्रानी 9:5 में प्रायश्चित का ढकना अनुवाद किया गया है। परमेश्वर का न्याय पूरा किया गया था, और अब परमेश्वर हमारे पापों को क्षमा कर सकता है और उन्हें हम से इतनी दूर कर सकता है जितना पूर्व पश्चिम से है। व्यवस्था पूरी की गई है, और परमेश्वर हमें क्षमा और दया देने के लिए "स्वतन्त्र" है।

प्रायश्चित की सक्रियता

यदि एक व्यक्ति यीशु को उद्धारकर्त्ता के रूप में जानता है तो उसे वे सब आशीषें मिलती हैं जो प्रायश्चित में छिपी हैं। ये चीजें क्या हैं ?

पापी बचाए जा सकते हैं

सबसे पहले, पापियों को न्याय से बचाया जा सकता है। हम सब 1 यूहन्ना 4:10 जानते हैं, "प्रेम इस में नहीं कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया, पर इस में है कि उसने हम से प्रेम किया और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए अपने पुत्र को भेजा।" 1 यूहन्ना 2:2 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं, "और वही हमारे पापों का प्रायश्चित है, और केवल हमारे ही नहीं वरन् सारे जगत के पापों का भी है।" प्रायश्चित कहता है कि पापियों को न्याय से बचाया जा सकता है और केवल कुछ पापियों को ही नहीं - प्रायश्चित सारे संसार के लिए उपलब्ध है।

जब प्रभु यीशु मसीह मरे हुओं में से जीवित हो गए थे और कबर खाली थी। मरियम कबर के पास आई और बाहर खड़ी रो रही थी। जब उसने कबर के अन्दर झाँककर देखा तो उसने दो स्वर्गदूतों को जहाँ शव रखा गया था एक को उसके सिर के पास तो दूसरे को उसके पैरों के पास बैठा देखा जैसा प्रायश्चित के ढकने पर था (यूहन्ना 20:11-12)। जिन कपड़ों से प्रभु को लपेटा गया था वहाँ खाली पड़े थे क्योंकि वह मरे हुओं में जी उठा था। परन्तु उस पत्थर की पट्टिया के दोनों सिरों पर एक-एक स्वर्गदूत बैठा था। यह प्रायश्चित के ढकने के समान दिख रहा था। क्योंकि यीशु हमारे लिए मरा है पापियों को न्याय से बचाया जा सकता है।

यदि आप हाथ खड़े करने को तैयार हो। आप छोड़ देने को तैयार हो। पाप ने आपके जीवन पर ऐसा शिकंजा कसा है कि आपको पता नहीं क्या किया जाए। मेरे पास आपके लिए अच्छी खबर है: मसीह हमारे पापों का प्रायश्चित है, और केवल हमारे ही नहीं, परन्तु सारे संसार के पापों का भी। सारे संसार को सुसमाचार सुनाने का यह एक अच्छा अभिप्राय है। आपकी कलीसिया की और आपकी सेवा आपके स्थानीय लोगों के लिए भी और सारे संसार के लिए भी होनी चाहिए। इसलिए प्रायश्चित की सक्रियता यह है कि पापी यीशु मसीह पर भरोसा करके उनके पापों से बच सकते हैं।

विश्वासियों को क्षमा किया जा सकता है

दूसरा, विश्वासी जब वे पाप करते हैं क्षमा किए जा सकते हैं। 1 यूहन्ना 1-2 कहते हैं, "हे मेरे बालको, मैं ये बातें तुम्हें इसलिए लिखता हूँ कि तुम पाप न करो; और यदि कोई पाप करे, तो पिता के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात् धर्मी यीशु मसीह; और वही हमारे पापों का प्रायश्चित है, और केवल हमारे ही नहीं वरन् सारे जगत के पापों का भी।" क्योंकि यीशु मसीह हमारे पापों के लिए मरा, उसने परमेश्वर की व्यवस्था की पवित्र माँगों को पूरा किया, और हम क्षमा किए जा सकते हैं। हमें फिर से दोबारा बचाने की आवश्यकता नहीं: हम क्षमा किए जा सकते हैं। हम प्रभु यीशु मसीह के पास आकर अपने पाप स्वीकार कर सकते हैं। वह हमें क्षमा करता है क्योंकि हम प्रायश्चित के ढकने के पास आते हैं जहाँ उसका लहू छिड़का गया है।

हम शक्ति पा सकते हैं

<u>प्रायश्चित में एक तीसरी सक्रियता है। इसका अर्थ न केवल पापी के लिए क्षमा है, सारे संसार के लिए एक संदेश है और जब हम पाप करते हैं तो क्षमा का आश्वासन है, बल्कि इसका अर्थ है कि हम प्रायश्चित के ढकने के पास जीने के लिए शक्ति पा सकते हैं।</u> इब्रानियों 4:16 कहता है, "इसलिए आओ हम, अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाब बाँधकर चलें कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएँ जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे।" प्रायश्चित का ढकना वह स्थान है जहाँ हम परमेश्वर से मिलते हैं, जहाँ हम यीशु मसीह से मिलते हैं और जहाँ हम जीवन की माँगों के लिए अनुग्रह पाते हैं।

<u>तो इस प्रकार प्रभु यीशु मसीह हमारा प्रायश्चित है। उसने वह सब प्रदान किया है जो उद्धार के लिए, प्रतिदिन की क्षमा के लिए, सारे संसार को सुसमाचार सुनाने की प्रेरणा के लिए, और प्रतिदिन के जीवन की शक्ति के लिए आवश्यक है।</u>

<u>आरोपण</u> – परमेश्वर हमारे खाते में जमा करता है

अनन्त जीवन इतने महत्त्व का है कि बाइबल हमें बहुत सारे चित्र देती है ताकि कोई भी इससे चूक न जाए। किसानों से यीशु ने भूमि और बीज की बात की। चरवाहों से उसने भेड़ों की बात की। भिखारियों से उसने एक बड़े भोज की बात की जो परमेश्वर ने

दिया था। वकीलों से उसने धर्मी ठहराए जाने की बात की। ग्रहणी से उसने एक सिक्के की बात की जो खो गया था और उसे खोजना था। परन्तु जब हम "आरोपण" देखते हैं तो पाते हैं कि परमेश्वर बैंकर से बात कर रहा है क्योंकि यह एक आर्थिक शब्द है।

रोमियों 4:1-8 कहता है, "इसलिए हम क्या कहें हमारे शारीरिक पिता अब्राहम को क्या प्राप्त हुआ? क्योंकि यदि अब्राहम कामों से धर्मी ठहराया जाता, तो उसे घमण्ड करने की जगह होती, परन्तु परमेश्वर के निकट नहीं। पवित्रशास्त्र क्या कहता है? यह कि 'अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया, और यह उसके लिए धार्मिकता गिना गया।' काम करनेवाले को मजदूरी देना दान नहीं, परन्तु हक्क समझा जाता है। परन्तु जो काम नहीं करता वरन् भक्तिहीन के धर्मी ठहरानेवाले पर विश्वास करता है, उसका विश्वास उसके लिए धार्मिकता गिना जाता है। जिसे परमेश्वर बिना कर्मों के धर्मी ठहराता है, उसे दाऊद भी धन्य कहता है: 'धन्य हैं वे जिनके अधर्म क्षमा हुए, और जिनके पाप ढाँपे गए। धन्य है वह मनुष्य जिसे परमेश्वर पापी न ठहराए।'"

जब हम बैंक जाते हैं और कुछ पैसा जमा करते हैं, तब आरोपण होता है। वे उस पैसे को हमारे खाते में जोड़ देते हैं, और हमारे ब्योरे में लिख देते हैं।

हम आरोपण को तीन भिन्न पहलुओं से समझना चाहते हैं - पहला स्पष्टीकरण के तरीके से, तब उदाहरण के तरीके से और अन्त में अनुभव के तरीके से।

आरोपण का स्पष्टीकरण

आरोपण को समझने का सबसे सरल तरीका दो लिखित पुस्तकों को देखना है : दो बैंक की पुस्तकें। एक पर मसीह का नाम है और दूसरी पर आदम का नाम है। हमारे प्रभु यीशु मसीह की लिखित पुस्तक सिद्ध है - उसमें किसी प्रकार का भी ऋणभार नहीं है। वह बिलकुल धर्मी है, और उसका रिकार्ड निष्कलंक है। परन्तु, हाय, आदम की लिखित पुस्तक त्रुटिपूर्ण है - उसका दिवालिया निकला हुआ है! उसने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित है।

हमारा लेखा आदम का लेखा है, क्योंकि हम आदम की सन्तान हैं। उत्पत्ति 5:1 कहता है, "आदम की वंशावली यह है।" सारा पुराना नियम "आदम की वंशावली" है। और हर एक जिसका नाम पुस्तक में है असफल है। फिर हम मत्ती 1:1 चलते हैं और पढ़ते हैं: "यीशु मसीह की वंशावली"। परमेश्वर एक नई पुस्तक खोलता है और वह पुस्तक सिद्ध है क्योंकि उसके पुत्र का नाम इसमें है।

आप और मैं इस त्रुटिपूर्ण लेखा के विषय में क्या कर सकते हैं जो हमारे खाते में है। जहाँ तक परमेश्वर के आत्मिक बैंक का प्रश्न है हम दिवालिया हैं - हम कम पड़ते हैं। परमेश्वर ने हमारी पुस्तकों का लेखा-परीक्षा किया है और पाया है कि आपके और मेरे पास अपने ऋण को चुकाने के लिए कुछ भी नहीं है। हम इसके विषय में क्या कर सकते हैं? वैसे तो, हम इसे अनदेखा कर सकते थे, और अधिकाँश करते भी हैं। अधिकाँश लोग उनके परमेश्वर के ऋण के विषय में कुछ नहीं सोचते हैं। उन्होंने उसके नियम तोड़े हैं; वे उसकी सीमाओं का उल्लंघन किया है। उसने कहा है, "इतनी दूर और इसके आगे नहीं।" और उन्होंने कहा है, "हम तो इसे करेंगे ही।" फिर वे उनकी अवज्ञा को अनदेखा करने की कोशिश करते हैं। परन्तु एक हिसाब का दिन आ रहा है, और वह दिन शीघ्र आ सकता है। एक मनुष्य एक बैंक में काम कर रहा हो और पैसा चुरा रहा हो और लेखों में फेर-बदल कर रहा हो। परन्तु हिसाब का एक दिन आता है और वह पकड़ा जाता है। तो हम भी अनदेखा कर सकते हैं, परन्तु हिसाब का दिन आने वाला है।

हम इसे खुद बदलने की कोशिश कर सकते हैं, परन्तु हमारा तो दिवालिया है हम कर नहीं सकते। हमारे पास आत्मिक ऋण को मिटाने के लिए कोई भी आत्मिक पूंजी नहीं है। क्या हम पुस्तक को नष्ट कर सकते हैं? नहीं! वह पुस्तक परमेश्वर के हाथ में है; कोई भी उस लेखे को नष्ट नहीं कर सकता है। तो हम अपने ऋणभार की समस्या को कैसे हल कर सकते हैं, ऋण जो हमारा परमेश्वर की ओर है? इसका उत्तर आरोपण है, और यीशु मसीह वो है जो समाधान लाता है। उसने क्या किया?

मसीह हमारा ऋण ले गया

सबसे पहले, वह हमारा ऋण ले गया है। यह तो बड़ी अदभुत बात है। और हमारा प्रभु यीशु पृथ्वी पर आया। वह मरने के लिए आया। जिसने पाप नहीं जाना, उसने उसे हमारे लिए पाप बनाया। क्यों? कि हम परमेश्वर की धार्मिकता बन सकें। (2 कुरिन्थियों 5:21)। यशायाह 53:12 में हमें बताया गया है कि वह अपराधियों के संग गिना गया था; इसकी बात मरकुस 15:28 में की गई है। उसे गरीब बनाया गया ताकि हम अमीर बन सकते। (2 कुरिं. 8:9)। तो उसने हमारा ऋण ले लिया।

उसने हमें उसकी धार्मिकता दी

परन्तु यह मेरे लिए समस्या खड़ी करता है। वह मेरा ऋण लेता है, परन्तु अगली घड़ी मैं दोबारा ऋण में चला जाता हूँ। इसलिए वह कुछ और करता है। उसने न केवल मेरा ऋण ले लिया, उसने मेरे खाते में अपनी धार्मिकता जमा कर दी। रोमियों 4:6, " जिसे परमेश्वर बिना कर्मों के धर्मी ठहराता है, उसे दाऊद भी धन्य कहता है।" **आरोपण का अर्थ है** : हमारे खाते में डालना।
आप को आरोपण को प्रदान से उलझाना नहीं है। मैं समझाता हूँ। धर्मी ठहराया जाने का अर्थ है : परमेश्वर अपनी धार्मिकता हमारे खाते में डालता है। यह आरोपित धार्मिकता है। परन्तु पवित्रीकरण है प्रदान की गई धार्मिकता - परमेश्वर हमारे जीवन में हमें धार्मिकता देता है और हमें एक पवित्र जीवन जीने की योग्यता देता है। तो, मसीह ने हमारा ऋण चुकायाः उसने हमारा दिवालिया धारण कर लिया। दूसरा, उसने अपनी धार्मिकता हमारे खाते में जमा कर दी ताकि हमें अपने खाते में मसीह की धार्मिकता मिले। यह बड़ी विचित्र बात है।

परन्तु मैं यह प्रश्न दोबारा पूछता हूँ, अगली बार के बारे में क्या? रोमियों 4:8 उसे सम्भाल लेता हैः "धन्य है वह मनुष्य जिसे परमेश्वर पापी न ठहराए।" एक बार जब मसीह की धार्मिकता हमारे खाते में डाली गई हो तब परमेश्वर हमें पापी कैसे ठहरा सकता है? क्या वह मसीह की धार्मिकता के साथ पाप भी जोड़ सकता है? निस्संदेह नहीं! यीशु मसीह की धार्मिकता हमारे खाते में लिखी गई है। "क्या ही धन्य है वह जिसका अपराध क्षमा किया गया, और जिसका पाप ढाँपा गया हो। क्या ही धन्य है वह मनुष्य जिसके अधर्म का यहोवा लेखा न ले।" (भजन 32:1-2; रोमियों 4:7-8)। इस प्रकार नकारात्मक और सकारात्मक है। नकारात्मक रूप से, उसने हमारा ऋण ले लिया, सकारात्मक रूप से, उसने अपनी धार्मिकता हमारे खाते में जमा कर दी। वह हमारे पाप का लेख नहीं लेता।

आरोपण का उदाहरण

अब आओ हम आरोपण को उदाहरण के तरीके से देखें। आरोपण का सबसे सुन्दर उदाहरण पौलुस के अपने मित्र फिलेमोन को लिखे एक छोटे से पत्र में मिलता है। मुझे लगता है आप कहानी को जानते हैं। फिलेमोन का एक उनेसिमुस नामक दास था। उनेसिमुस ने अपने मालिक फिलेमोन का कुछ चुराया और रोम शहर भाग गया। परमेश्वर के पूर्वप्रबन्ध में, उनेसिमुस पौलुस से मिलता है और उद्धार पाता है। पौलुस उनेसिमुस की ओर से पिलेमोन को एक पत्र लिखता है, क्योंकि वह चाहता है कि फिलेमोन उनेसिमुस को क्षमा कर दे और पुनःस्थापित कर दे।
उनेसिमुस एक खोए हुए पापी की तस्वीर है। वह एक दास था - उसकी अपनी कोई स्वतन्त्रता नहीं थी, वह बन्धन में था। वह एक चोर था; उसने अपने मालिक की चोरी की थी। उन दिनों दासों को कोई दया और भलाई नहीं दिखाई जाती थी। उसे मरना था। उसने भागने की कोशिश की। वह कानून-तोड़नेवाला था, और वह पकड़ा गया था। और फिर भी पौलुस उससे प्रेम करता था, और परमेश्वर उससे प्रेम करता था, और इसलिए पौलुस ने 18 आयत में ये शब्द फिलेमोन को लिखे, "यदि उसने तेरी कुछ हानि की हो, या उस पर तेरा कुछ आता है, तो मेरे नाम पर लिख दे।" क्या यह रोमांचक बात नहीं? पौलुस कह रहा था, "मैं चाहता हूँ तू यह ऋण मेरे खाते में डाल दे। उसने तुम से चुराया है, और सम्भवतः जो उसने चुराया था बेच दिया होगा और खर्च कर दिया होगा। उसके पास अब कुछ नहीं है। वह दिवालिया है, परन्तु तू उसे मेरे खाते में डाल दे।" यह आरोपण है।
परन्तु इतना ही काफी नहीं। आय. 17 कहता है, "यदि तू मुझे अपना सहभागी समझता है, तो उसे इस प्रकार ग्रहण कर जैसे मुझे।" यह सकारात्मक भाग है। उसने कहाः जब उनेसिमुस घर आए तो उसे उनेसिमुस नहीं पौलुस समझो। उसे वैसे ही स्वीकार करो जैसे मुझे करते। उसे मुझे स्वीकार करो।
प्रभु यीशु मसीह ने हमारे लिए ऐसा ही किया। उसने पिता परमेश्वर को कहा। "यह व्यक्ति दिवालिया है। वह अपना ऋण चुकाना आरम्भ भी नहीं कर सकता है। उसे मेरे खाते में डाल दो।" वह मेरे लिए मरा है। और अब वह पिता परमेश्वर से कहता है। "जब कभी आप उस व्यक्ति को देखो, तो मुझे देखो। उसे वैसे स्वीकार करो जैसे मुझे करते।" यह आरोपण है। यह अदभुत है, है ना? कि परमेश्वर न केवल हमारा ऋण चुकाता है, वह हमें अपनी धार्मिकता भी देता है। तब वह कहता है, "तुम्हारे पाप और तुम्हारे अपराध मैं स्मरण नहीं करूँगा।" मैं हिसाब नहीं रख रहा हूँ।

आरोपण का अनुभव

अब आओ हम आरोपण को अनुभव के तरीके से देखें। हम इसे अपने जीवन में कैसे काम में ला सकते हैं?

= अपने ऋण को मान लो

सबसे पहले, अपने ऋण को मान लो। यदि आपका नया जन्म नहीं हुआ है, यदि आपका उद्धार नहीं हुआ है तो, केवल स्वीकार करो कि आप ऋण में हैं, कि आप दिवालिया है और कि आप इसे खुद नहीं चुका सकते हो। आपको याद होगा लूका 7:36-50 में यीशु

परीसी के घर गया हुआ था। जब यीशु फरीसी के साथ भोजन कर रहा था, तो उस समय एक सड़क की स्त्री भीतर आई और रोती हुई हमारे प्रभु के पाँव धोने लगी। फरीसी को बुरा लगा। परन्तु यीशु ने एक कहानी सुनाई: एक एक हजार चाँदी के सिक्कों का ऋणी था और एक सौ सिक्कों का ऋणी था। परन्तु जिस व्यक्ति के वे ऋणी थे उसने उन दोनों को स्वेच्छा से क्षमा कर दिया। तब यीशु ने फरीसी से कहा, "उनमें से कौन उससे अधिक प्रेम करेगा?" फरीसी ने कहा, "मेरी समझ में वह, जिसका उसने अधिक छोड़ दिया।" परन्तु शमौन को पता नहीं चला कि वह आप भी ऋण में है। उसने कहा, "अरे, ये सड़क की स्त्री। ये तो परमेश्वर की कर्ज़दार है। उसने परमेश्वर का नियम तोड़ा है। परन्तु शमौन फरीसी ने नहीं तोड़ा है। यीशु ने कहा, "जरा सुनो, तुम भी उतने ही कर्ज़दार हो जितनी वह है और हो सकता है अधिक हो, क्योंकि उस प्रकार नहीं देख रहे हो जैसा वह देखती है।" इसके अलावा, आप भी उतने की कर्ज़दार हो। अपना कर्ज़ मान लो और अनुग्रह से परमेश्वर की धार्मिकता का दान ले लो।

= <u>दूसरों के पापों का हिसाब मत रखो</u>

दूसरा, दूसरे लोगों के पापों का हिसाब मत रखो। 1 कुरिन्थियों 13:5 हमें याद दिलाता है कि प्रेम दूसरों के अपराधों का हिसाब नहीं रखता। जो बुरी चीजें लोगों ने आपके साथ की हैं उनका हिसाब अपने मन और हृदय में मत रखो। उन्हें परमेश्वर को दे दो। परमेश्वर हिसाब नहीं रख रहा है। तो आपको क्यों रखना है? बस प्रेम से क्षमा कर दो।

= <u>परमेश्वर हमारे कर्मों का हिसाब रखता है</u>

अन्त में, याद रखो कि परमेश्वर हमारे कर्मों का हिसाब रख रहा है। उसने हमें धार्मिकता दी है कि हम धर्मी जीवन जीएँ। धार्मिकता न केवल आरोपित की गई है (हमारे खाते में डाली गई है), परन्तु पवित्र आत्मा के द्वारा धार्मिकता प्रदान की गई है। आओ हम विश्वासयोग्य बनें। आओ हम इस अदभुत स्वतन्त्रता के कारण आनन्दित हों जो हमारे पास है। हमारे सिर के ऊपर ऋण लटक नहीं रहा है। हमें क्षमा किया गया है। हमारा लेखा स्पष्ट है। यीशु मसीह की धार्मिकता हमारे खाते में डाली गई है।
इसलिए आश्चर्य नही जब दाऊद ने कहा, "क्या ही धन्य है वह जिसका अपराध क्षमा किया गया, और जिसका पाप ढाँपा गया हो। क्या ही धन्य है वह मनुष्य जिसके अधर्म का यहोवा लेखा न ले।" (भजन 32:1-2)। परमेश्वर ने उसकी धार्मिकता आपके हिसाब में जोड़ी है, अब उसे उस धार्मिकता को आपके जीवन में लिखने दो।

<u>पवित्रीकरण</u> – पवित्रता और आज्ञापालन

<u>**पवित्रीकरण है** : विश्वासी को अपने लिए और संसार में सेवा के लिए अलग करने का परमेश्वर का अनुग्रह का काम।</u>
पवित्रीकरण के तीन पहलू हैं। बाइबल के विद्वान इसे स्थित पवित्रीकरण, व्यावहारिक या प्रगतिशील पवित्रीकरण और सिद्ध पवित्रीकरण।

स्थित पवित्रीकरण

स्थित पवित्रीकरण का अर्थ है : कि हम मसीह में परमेश्वर के होने के लिए और उसकी सेवा करने के लिए अलग किए गए हैं। स्थित पवित्रीकरण कभी बदलती नहीं है। 1 कुरिन्थियों 1:2 कहता है, "परमेश्वर की उस कलीसिया के नाम जो कुरिन्थुस में है, अर्थात् उनके नाम जो मसीह यीशु में पवित्र किए गए, और पवित्र होने के लिए बुलाए गए हैं; और उन सबके नाम भी जो हर जगह हमारे और अपने प्रभु यीशु मसीह के नाम से प्रार्थना करते हैं।"
आप कुरिन्थुस की कलीसिया के लोगों को शायद ही भक्त कह सकते हो। उनमें कुछ नशे में चूर हो रहे थे, कुछ अनैतिकता में जी रहे थे, कुछ एक दूसरे पर मुकद्दमा चला रहे थे। और फिर भी पौलुस उनको एक कलीसिया (बुलाए हुए लोग), मसीह यीशु में पवित्र लोग कहता है। यह स्थित पवित्रीकरण है, जो कभी बदलता नहीं।

व्यावहारिक या प्रगतिशील पवित्रीकरण

व्यावहारिक या प्रगतिशील पवित्रीकरण हमारे प्रतिदिन के जीवन के बारे में है। हमारे प्रभु यीशु ने प्रार्थना की, "सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर : तेरा वचन सत्य है।" (यूहन्ना 17:17)। क्योंकि हमारी मसीह में एक पवित्र स्थिति है, और हमें उसी प्रकार जीना चाहिए।

सिद्ध पवित्रीकरण

सिद्ध पवित्रीकरण तब होगा जब हम प्रभु यीशु मसीह को उसके आने पर देखेंगे, और हम उसके समान होंगे, क्योंकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है। (1 यूहन्ना 3:2)। पवित्रीकरण के ये तीन पहलू एक दूसरे के साथ सम्बंध में हैं। क्योंकि हम जानते हैं यीशु आ रहा है और हम उसके समान होंगे, और हम आज अपने जीवनों को शुद्ध रखना चाहते हैं। हम अधिकाधिक प्रभु यीशु मसीह के समान होना चाहते हैं। एक विद्वान् ने कहा, "पाप को हम में रहना एक बात है, और हमारा पाप में रहना दूसरी बात है।" यह हमारे वश में नहीं कि हमारा पुराना स्वभाव एक पापी स्वभाव है। परन्तु परमेश्वर ने हमें एक नया स्वभाव दिया है और यह नया स्वभाव हमें पुराने स्वभाव को मरा हुआ जानकर एक पवित्र जीवन जीने के योग्य करता है। हम व्यावहारिक या प्रगतिशील पवित्रीकरण की बात कर रहे हैं, जो हर दिन उद्धारकर्त्ता के समान होता जा रहा है, हर दिन पाप और परीक्षा को जीता जा रहा है, हर दिन आत्मिक चीजों में शक्तिशाली हो रहा है।

मैं 2 कुरिं. 7:1 पर ध्यान लगाना चाहता हूँ, "अतः हे भाइयो, जब कि ये प्रतिज्ञाएँ हमें मिली हैं, तो आओ, हम अपने आप को शरीर और आत्मा की सब मलीनता से शुद्ध करें, और परमेश्वर का भय रखते हुए पवित्रता को सिद्ध करें।" इस आयत में दोहरे सत्यों की एक श्रृँखला है। यदि हम इन सत्यों को समझ लें तो यह हमें हमारी प्रगतिशील पवित्रीकरण में सहायता करेंगे।

पाप के दो पहलू

आरम्भ में, पौलुस बताता है कि पाप के दो विभिन्न पहलू हैं: शरीर के पाप होते हैं और आत्मा के पाप होते हैं। "आओ, हम अपने आप को शरीर और आत्मा की सब मलीनता से शुद्ध करें।" (2 कुरिं. 7:1)। दूसरे शब्दों में, उड़ाऊ पुत्र है (वह आत्मा के पाप का दोषी था)। जब दाऊद ने बतशीबा के साथ व्यभिचार किया, तो यह शरीर का पाप था। जब दाऊद ने घमण्ड में आकर लोगों की गिनती की और परमेश्वर से विद्रोह किया, वह आत्मा का पाप था। कार्य के पाप होते हैं और रवैये के पाप होते हैं।

शरीर के पाप

आओ हम शरीर के इन पापों के बारे में बात करें। निस्संदेह, पौलुस का शरीर से अर्थ था पुराना स्वभाव। जब आप का और मेरा नया जन्म हुआ था, तब परमेश्वर ने हमें एक नया स्वभाव दिया था, परन्तु उसने पुराने स्वभाव को बदला नहीं। आप और मैं आज भी पाप करने के योग्य हैं। हम करना नहीं चाहते हैं, क्योंकि नए स्वभाव की इच्छाओं ने हमें एक ऊँचे स्तर पर कर दिया है। परन्तु अब हम देखते हैं पाप वास्तव में कैसा है। परमेश्वर के वचन और परमेश्वर के आत्मा ने हम पर पाप की भयानकता प्रकट की है, और हम इससे कोई वास्ता नहीं रखना चाहते। परन्तु हम फिर भी पाप करने के योग्य हैं।

बाइबल जो कुछ भी शरीर के बारे में कहती है नकारात्मक ही है। प्रभु यीशु ने कहा, "आत्मा तो जीवनदायक है, शरीर से कुछ लाभ नहीं" (यूहन्ना 6:63)। हमें शरीर में कोई भरोसा नहीं रखना है (फिलि. 3:3)। शरीर ही है जो पाप उत्पन्न करता है। मनुष्य के हृदय (पुराना स्वभाव) में से सब प्रकार की बुरी चीजें निकलती हैं - झूठ बोलना और कामुकता और वे सब चीजें जो हमारे जीवनों को नष्ट करती और हमारी गवाही को खराब करती हैं। गलातियों 5:19-21 में शरीर के कार्य बताए गए हैं, और 17 विभिन्न पापों का वहाँ वर्णन है। रोमियों 1:23 में विभिन्न पापों का वर्णन है। जहाँ तक पाप उत्पन्न करने का प्रश्न है शरीर बहुत ही उत्पादक है, और शरीर को बदला नहीं जा सकता है। शरीर के पाप होते हैं और हमें अपने आप को शरीर की सारी मलीनता से साफ करना है, शुद्ध करना है।

आत्मा के पाप

आत्मा के पाप भी होते हैं। आप और मैं शायद नशा, व्यभिचार, पेटूपन या आलस के दोषी न हों, परन्तु घमण्ड, हठ, आलोचना के बारे में क्या? एक प्रचारक आत्मा के पापों को इस प्रकार बुलाता था: "अच्छे नाम वाले पाप।" आप को उन के बारे में सावधान रहना चाहिए। आप शायद उड़ाऊ पुत्र न हों, परन्तु आप बड़ा भाई हो सकते हो - इतने आलोचनात्मक कि अपने भाई के साथ संगति नहीं करते। पाप के दो पहलू होते हैं, और हमें उनसे निपटना है - शरीर की गन्दगी और आत्मा की गन्दगी भी।

पवित्रता के दो पहलू

2 कुरिन्थियों 7:1 प्रकट करता है कि पवित्रता के दो पहलू होते हैं। एक नकारात्मक पहलू है और एक सकारात्मक पहलू है। नकारात्मक रूप से, "आओ हम अपने आप को शुद्ध करें।" सकारात्मक रूप से, "परमेश्वर का भय रखते हुए पवित्रता को शुद्ध करें।"

शुद्ध करना

"आओ हम अपने आप को शुद्ध करें" का अर्थ है कि आओ हम अपने जीवनों में से पाप की भ्रष्टता को सदा के लिए निकाल दें। असल में, पौलुस ने इस के विषय में 2 कुरिन्थियों 6:14-18 में लिखा है। "अविश्वासियों के साथ असमान जूए में न जुतो" (आय. 14)। यह खेती-बाड़ी की तस्वीर है। आप बैल और गधे को एक ही जूए में नहीं रखते हो। उन दोनों के दो भिन्न स्वभाव हैं और वे एक साथ काम नहीं कर पाएँगे। विश्वासियों को भी विवाह या व्यवसाय में विश्वासियों के साथ एक जूए में नहीं होना चाहिए। "क्योंकि धार्मिकता और अधर्म का क्या मेल-जोल?" (आय. 14)। "मेल-जोल" एक व्यवसायी शब्द है और इसका अर्थ है : साझेदारी। "या ज्योति और अन्धकार की क्या संगति?" (आय. 14)। शब्द संगति का अर्थ है: सम्मिलित होना। यह एक परिवारिक शब्द है। हमारा अविश्वासियों के साथ कुछ भी सामूहिक नहीं है क्योंकि हम ज्योति हैं और वे अन्धकार हैं। हमारे पास धार्मिकता है और उनके पास अधर्म है। "और मसीह का बलियाल के साथ क्या लगाव?" लगाव शब्द एक संगीत का शब्द है, और अर्थ है कि इसका सम्बंध समस्वरता से है। हमें अविश्वासियों के साथ वाद्य-मण्डल में भी नहीं होना है। हम संगीत के निदेशक के साथ नहीं चल रहे हैं या उसी स्वर को नहीं पढ़ रहे हैं। इसलिए, हम एक साथ संगीत कैसे बजा सकते हैं? बड़े दुख की बात होती है जब विश्वासी अविश्वासियों के साथ मेल-जोल करने का प्रयास करते हैं। उस प्रकार आप एक सुन्दर घर नहीं बना सकते।
"या विश्वासी के साथ अविश्वासी का क्या नाता? और मूर्तियों के साथ परमेश्वर के मन्दिर का क्या सम्बंध? क्योंकि हम तो जीवते परमेश्वर के मन्दिर हैं; जैसा परमेश्वर ने कहा है, 'मैं उनमें बसूँगा और उनमें चला फिरा करूँगा; और मैं उनका परमेश्वर हूँगा, और वे मेरे लोग होंगे।" (2 कुरिं. 6:15-16)

पवित्रता का पहला पहलू अपने आप को शुद्ध करना है

तो पवित्रता का पहला पहलू अपने आप को शुद्ध करना है। इसका अर्थ यह नहीं कि हम अलगाववादी हो जाएँ। हम संसार में तो रहते हैं परन्तु संसार के समान नहीं। हमें संसार के नमक और संसार की ज्योति होना है। हमारा अपना सम्पर्क है, परन्तु हम दूषित नहीं होते। बाइबल अलग होना कहती है और कहती है, "मैं अविश्वासियों के साथ मत नहीं दूँगा। मेरा उनके साथ भाग नहीं है। मैं अविश्वासियों के साथ संगीत नहीं बनाने वाला, क्योंकि मेरा वही निदेशक नहीं है। " पवित्रता अलग होने की माँग करती है, एकाकी-पन नहीं, न ही पृथक्करण, परन्तु बाइबल का अलगाव जिसका अर्थ है अपने आप को शुद्ध करना।
हम अकसर प्रार्थना करते है, "हे परमेश्वर, मुझे शुद्ध कर।" और परमेश्वर हमारे पास आता है और कहता है, "तुम खुद अपने आप को शुद्ध क्यों नहीं करते? उन रॉक संगीक के रेकार्डों को अपनी लाइब्रेरी से निकाल दो। उन गन्दी और शैतानी पुस्तकों और मैगज़ीनों को अपनी लाइब्रेरी में से निकाल दो। तुम खुद अपने आप को शुद्ध क्यों नहीं करते? इन चीजों से अपने आप को शुद्ध करो और अलग हो जाओ।" यशायाह 1:16, "अपने को धोकर पवित्र करो।"

उसकी उपस्थिति में रहना

सकारात्मक है: "परमेश्वर का भय रखते हुए पवित्रता को शुद्ध करें।" (2 कुरिं. 7:1)। फरीसियों के समान नकारात्मक होना और कुछ चीजें नहीं करना काफी नहीं है। हमें सकारात्मक होना है। हम एक संगत, स्थिर प्रक्रिया में हैं। पवित्रता है जो परमेश्वर है, और जैसे हम पवित्रता में बढ़ते हैं, हम परमेश्वर समान बनते जाते हैं।
पुराने नियम के तम्बू में एक हौदी थी। हौदी शुद्धीकरण में सहायता करती थी। यह नकारात्मक है। परन्तु एक अति पवित्र स्थान भी था। याजक वहाँ वर्ष में एक बार जा सकता था। आप और मैं परमेश्वर की उपस्थिति में कभी भी जा सकते हैं। असल में, हमें उसकी उपस्थिति में ही रहना चाहिए। होदी हमें शुद्ध करती है, परन्तु अति पवित्र स्थान में परमेश्वर के साथ संगति में रहने से हम सिद्ध होते हैं। पवित्रता से डरे नहीं। पवित्रता कोई "भुरभुरी भक्ति" नहीं है जिसे कुछ लोग प्रकट करते हैं - एक धार्मिकता जो कितनी बनावटी है। नहीं, पवित्रता सम्पूर्णता है। पवित्रता आपके प्राण के लिए है जो स्वास्थ्य शरीर के लिए है। पाप के दो पहलू होते हैं: शरीर के पाप और आत्मा के पाप। पवित्रता के भी दो पहलू हैं। अपने आप को शुद्ध करना और पवित्रता सिद्ध करना।

आज्ञापालन के दो पहलू

अन्त में इस वचन में आज्ञापालन के दो पहलू हैं।

परमेश्वर का प्रेम

जब आपका उद्धार हुआ था तब परमेश्वर आपका पिता बना। परन्तु वह आपका पिता नहीं हो सकता यदि आप अवज्ञाकारी हैं। हम माता-पिता अपने बच्चों से प्रेम करना और सबसे अच्छी चीजें उन्हें देना चाहते हैं, परन्तु वे कभी-कभी हमें करने नहीं देते।

इसलिए प्रतिज्ञा दी गई है कि यदि हम आज्ञाकारी होंगे तो परमेश्वर हमें गहरी संगति में स्वीकार करेगा। वह हमारा पिता होगा और हम उसके पुत्र और पुत्रियाँ होंगे। न केवल उसका प्रेम हमारे लिए उपलब्ध है, बल्कि उसका सामर्थ्य भी हमारे लिए उपलब्ध है, क्योंकि वह प्रभु सर्वशक्तिमान है। वह हमें स्वीकार करने की प्रतिज्ञा करता है। वह हमें आशीष देने की प्रतिज्ञा करता है। वह परमेश्वर के वचन और पवित्र आत्मा के द्वारा एक गहरी संगति की प्रतिज्ञा करता है।

यूहन्ना 14:21-23 पढ़ो: "जिस के पास मेरी आज्ञाएँ हैं और वह उन्हें मानता है, वही मुझ से प्रेम रखता है; और जो मुझ से प्रेम रखता है उससे मेरा पिता प्रेम रखेगा, और मैं उससे प्रेम रखूँगा और अपने आप को उस पर प्रकट करूँगा। उस यहूदा ने जो इस्करियोती न था, उससे कहा, 'हे प्रभु, यह क्या हुआ कि तू अपने आप को हम पर प्रकट करना चाहता है और संसार पर नहीं?' यीशु ने उसको उत्तर दिया, 'यदि कोई मुझ से प्रेम रखेगा तो वह मेरे वचन को मानेगा, और मेरा पिता उससे प्रेम रखेगा, और हम उसके पास आएँगे और उसके साथ वास करेंगे।'" यह परमेश्वर के साथ एक गहरी संगति है, क्योंकि हम अपने आप को शुद्ध कर रहे और परमेश्वर के भय में पवित्रता को सिद्ध कर रहे हैं।

परमेश्वर का भय

आज्ञापालन का पहला पहलू प्रेम है; दूसरा भय है - "परमेश्वर के भय" में पवित्रता को सिद्ध करना (2 कुरिं. 7:1)। हमारे पास केवल परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं ही नहीं हैं, हमारे पास उसका अनुशासन भी है। यदि हम अलगाव में नहीं चलते तो परमेश्वर हमें अनुशासित करेगा। वह नहीं चाहता हम कैदी बनें; वह चाहता है हम पुत्र और पुत्रियाँ बनें जो उसके साथ चलते हैं। वह कहता है, "उनके बीच में से निकलो और अलग रहो; और अशुद्ध वस्तु को मत छूओ, तो मैं तुम्हें ग्रहण करूँगा; और मैं तुम्हारा पिता होऊँगा" (6:17)। हम इसे परमेश्वर के भय में करते हैं।

मध्यस्थता – शत्रुता निपटाना

"परमेश्वर एक ही है और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात् प्रभु यीशु मसीह जो मनुष्य है।" (1 तीमु. 2:5)

अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों और श्रम-समस्या के दिनों में हम मध्यस्थ शब्द अकसर सुना करते थे। एक मध्यस्थ वह व्यक्ति है जो दो विरोधी दलों को किसी प्रकार के समझौते में लाने का प्रयास करता है।

नए नियम के संसार में, एक मध्यस्थ एक तटस्थ पक्ष होता था जिस पर दोनों दल भरोसा कर सकते थे - एक पंच या वार्ताकर जो न केवल दो दलों के बीच शान्त सम्बंध स्थापित करना चाहता है, बल्कि समझौते की शर्तों की भी गारंटी लेता है। 1 तीमुथियुस 2:5 हमें बताता है कि यीशु मसीह मध्यस्थता की प्रार्थना के सिद्धान्त के संदर्भ में पाया गया है, क्योंकि मध्यस्थता की प्रार्थना और मध्यस्थता एक साथ चलते हैं।

मध्यस्थता क्या है? मध्यस्थता है: परमेश्वर और मनुष्य को एक साथ करने और सदा के लिए शत्रुता निपटाने की यीशु मसीह की सेवा। 1 तीमुथियुस 2:6 कहता है, "जिसने अपने आप को सब के छुटकारे के दाम में दे दिया, और उसकी गवाही ठीक समय पर दी गई।"

मध्यस्थ होने के योग्य कौन था? वह निश्चित रूप से था।

अपने जीवन में योग्य था

आरम्भ में, वह अपने जीवन में योग्य है। वह : परमेश्वर और मनुष्य दोनों है, जो महत्त्वपूर्ण है। एक मध्यस्थ को दोनों दलों को समझने के योग्य होना चाहिए। यीशु मसीह सबसे अच्छा मध्यस्थ है क्योंकि वह परमेश्वर है और वह मनुष्य है। "परमेश्वर एक ही है और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात् प्रभु यीशु मसीह जो मनुष्य है।" (1 तीमु. 2:5)। परन्तु यह मनुष्य यीशु मसीह परमेश्वर भी है।

मुझे कितना आश्चर्य होता है कि कैसे लोग नए नियम को पढ़कर इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि यीशु मसीह परमेश्वर नहीं है। दुष्टात्माओं ने कहा था कि वह परमेश्वर है। उसने स्वयं गवाही दी कि वह परमेश्वर है। असल में, जब वह महासभा में खड़ा था तब उसने शपथ खाकर कहा था कि वह परमेश्वर है। सारी बाइबल गवाह है कि यीशु मसीह परमेश्वर है।

पुराने नियम में, भविष्यद्वक्ता मध्यस्थ नहीं थे। भविष्यद्वक्ताओं ने परमेश्वर और मनुष्य के बीच खड़े होकर दोनों को एक साथ लाने का प्रयास नहीं किया था। उन्होंने उस चीज की घोषणा की जिसे परमेश्वर ने उन्हें घोषणा करने को दिया था; वे परमेश्वर के

प्रवक्ता थे। याजक भी असल में मध्यस्थ नहीं थे, क्योंकि उनको खुद भी अपने पापों के लिए बलिदान करना पड़ता था। वे निश्चित रूप से परमेश्वर और मनुष्य को सदा के लिए इकट्ठा नहीं कर सकते थे, क्योंकि कुछ भी जो पुराने नियम के याजकों ने किया था स्थाई नहीं था। यीशु मसीह के आने तक मामला सम्पूर्ण रूप से तय नहीं हुआ था। पुराने नियम के याजक वचन का प्रचार कर सकते थे, और याजक धर्मक्रियाएं चला सकते थे, परन्तु वे परमेश्वर और मनुष्य के बीच की शत्रुता की समस्या को स्थाई रूप से निपटा नहीं सकते थे।

अपनी मृत्यु में योग्य

यीशु मसीह न केवल अपने जीवन में मध्यस्थ होने के योग्य है, परन्तु वह अपनी मृत्यु में भी मध्यस्थ होने के योग्य है। उसकी मृत्यु ने परमेश्वर और मनुष्य के बीच की शत्रुता का निकालना सम्भव किया है। "जिसने अपने आप को सब के छुटकारे के दाम में दे दिया, और उसकी गवाही ठीक समय पर दी गई।" (1 तीमु. 2:6)। यह बात इब्रानियों 9:13-16 में तय हो चुकी है, "क्योंकि जब बकरों और बैलों का लहू और करोल की राख का अपवित्र लोगों पर छिड़का जाना शरीर की शुद्धता के लिए उन्हें पवित्र करता है, तो मसीह का लहू जिसने अपने आप को सनातन आत्मा के द्वारा परमेश्वर के सामने निर्दोष चढ़ाया, तुम्हारे विवेक को मरे हुए कामों से क्यों न शुद्ध करेगा ताकि तुम जीवते परमेश्वर की सेवा करो। इसी कारण वह नई वाचा का मध्यस्थ है, ताकि उसकी मृत्यु के द्वारा जो पहली वाचा के समय के अपराधों से छुटकारा पाने के लिए हुई है, बुलाए हुए लोग प्रतिज्ञा के अनुसार अनन्त मीरास को प्राप्त करें। क्योंकि जहाँ वाचा बाँधी गई है वहाँ वाचा बाँधनेवाले की मृत्यु का समझ लेना भी अवश्य है।"

पुरानी वाचा में कई धर्मविधियाँ थीं। याजक परमेश्वर के निर्देश के अनुसार पशुओं के लहू बहाते थे और छिड़कते थे। वे करोल की राख से एक विशेष, पवित्र पानी बनाते थे जिसे भी छिड़का जाता था। वे विभिन्न धर्मविधियाँ बाहरी पवित्रीकरण देती थीं, अर्थात्, वे व्यवस्था के अनुसार पाप से निपटती थीं, परन्तु वे हृदय को बदल नहीं सकती थीं।

यहाँ तर्क छोटे से बड़े की ओर है। यदि बैलों और बकरों का लहू और यदि पवित्र पानी जो पुराने नियम में छिड़का जाता था शरीर को शुद्धा करता था (बाहरी पवित्रीकरण), तो यीशु मसीह का लहू कितना अधिक हमें पवित्र क्यों न करेगा? यीशु मसीह का लहू विवेक में और हृदय में कार्य करता है और पाप ले जाता है। "इसी कारण (क्योंकि यीशु मसीह ने क्रूस पर एक सिद्ध काम को पूरा किया है) वह नई वाचा का मध्यस्थ है" (आय. 15)। अपने काम में, यीशु मसीह सिद्ध मध्यस्थ है। जैसे कि, जब पर क्रूस पर लटका हुआ था, उसने एक बाँह बढ़ाकर स्वर्ग में परमेश्वर को छूआ, और दूसरी बाँह को इस जरूरतमंद संसार में पापियों को छूआ और उन्हें एक कर दिया।

वर्तमान सेवा में मध्यस्थ

स्वर्ग में उसकी वर्तमान सेवा उसे मध्यस्थ होने के योग्य बनाती है। इब्रानियों 8:6 कहता है, "पर उन याजकों से बढ़कर सेवा यीशु मसीह को मिली क्योंकि वह और भी उत्तम वाचा का मध्यस्थ ठहरा, जो और उत्तम प्रतिज्ञाओं के सहारे बाँधी गई।" पुराने नियम का महा याजक उसी प्रकार मध्यस्थ नहीं था जैसा यीशु मसीह था। पुरानी वाचा कानूनी कर्मों की वाचा थी; नई वाचा विश्वास और अनुग्रह की वाचा है। पुरानी वाचा इसके शुद्धीकरण और बलिदानों के साथ बाहरी थी जो भीतरी अशुद्धता से निपट नहीं सकती थी। नई वाचा भीतरी है: यह मनुष्य के अन्दर - हृदय और विवेक से निपटती है। पुरानी वाचा कुछ भी समाप्त नहीं हुआ थी, परन्तु नई वाचा समाप्त है। यीशु ने कहा, "पूरा हुआ" (यूहन्ना 19:30), और वह गारंटी है कि नई वाचा टिकी रहेगी।

नए नियम के संसार में, एक मध्यस्थ न केवल लोगों को मिलाता था, परन्तु वह समझौतों की शर्तों की गीरंटी भी लेता था। वह देखता था कि समझौतों की शर्तों का पालन किया जा रहा है। इब्रानियों 7:22 में, यीशु मसीह को एक उत्तम वाचा का जामिन कहा गया है। जब तक वह स्वर्ग में है, आपका और मेरा उद्धार अनन्त है। इब्रानियों 7:25 कहता है, "इसी लिए जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वह उनका पूरा पूरा उद्धार कर सकता है।" यह सच है कि वह किसी भी पापी को बचा सकता है। परन्तु हमारा पूरा पूरा उद्धार हुआ है, जिसका अर्थ है: अनन्तकाल के लिए। "इसी लिए जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वह उनका पूरा पूरा उद्धार कर सकता है, क्योंकि वह उनके लिए विनती करने को सर्वदा जीवित है।" (इब्रा. 7:25)। वह अपनी वर्तमान सेवा में मध्यस्थ है, और वही है जिसकी हमें आवश्यकता है।

मध्यस्थता की परिभाषा

मध्यस्थता है: परमेश्वर और मनुष्य का मेल-मिलाप कराने और सदा के लिए शत्रुता के निपटने, और समझौते की शर्तों की गारंटी देने की यीशु मसीह की सेवा ताकि हमारा उद्धार अनन्तकाल का हो।

युद्धविराम नहीं

आओ हम देखें मध्यस्थता क्या नहीं है। यह युद्धविराम नहीं है। युद्धविराम कभी भी समाप्त हो सकता है। उत्पत्ति 31 लाबान और याकूब का विवरण है। ये दोनों बाइबल के सबसे बड़े चालबाज थे। यह बताना कठिन है कि उन में से कौन सबसे चतुर चालबाज था। याकूब भाग निकला और अपना परिवार उसके साथ ले गया। लाबान ने उसका पीछा किया, उसे जा पकड़ा और दोनों में समझौता हुआ। उन्हें किसी प्रकार के समझौते की आवश्यकता थी - उन्होंने पत्थरों का एक ढेर लगाया, और पत्थरों के ढेर का नाम "मिज़पा" रखा गया, जिसका अर्थ था ताकने का स्थान। जब हम एक दूसरे से दूर हैं तब प्रभु मुझे और तुझे ताकते रहे। इस वक्तव्य को अकसर आर्शीवाद में इस्तेमाल किया जाता है, परन्तु इसे नहीं किया जाना चाहिए। आओ मैं समझाता हूँ क्यों।

क्या आपको पता है लाबान और याकूब एक दूसरे को क्या कह रहे थे? वे कह रहे थे, "मैं तुम पर भरोसा नहीं करता हूँ, और तुम मुझ पर नहीं करते, तो इसलिए हम पत्थरों का एक ढेर लगाएँगे। लाबानः तू इसे पार मत करना; याकूबः तू इसे पार मत करना। हम एक दूसरे पर निगाह नहीं रख सकते हैं, परन्तु प्रभु देखने वाला है, इसलिए तू समझौते की शर्तो को मानना।" कलीसिया की सभा को समाप्त करने के लिए यह कैसा वक्तव्य है! "हम एक दूसरे पर भरोसा नहीं करते हैं, परन्तु प्रभु हम पर निगाह रखने वाला है।" यह तो केवल युद्धविराम घोषित करना है। ये दोनों का 20 वर्षो से झगड़ा था, और अब वे कह रहे थे, "आओ युद्धविराम घोषित करें और इसे समाप्त करें।" परन्तु यह मध्यस्थता नहीं है। मध्यस्थता युद्धविराम घोषित नहीं करता। मध्यस्थता युद्ध समाप्त करता है। मध्यस्थता शत्रुता मिटाता है। यीशु मसीह ने परमेश्वर के पाप पर प्रकोप को अपने ऊपर ले लिया। उन्होंने उसके साथ बुरा बर्ताव किया! फिर भी वह प्रेमपूर्वक और स्वेच्छा से हमारे लिए मर गया! अब वह परमेश्वर और मनुष्य के बीच मध्यस्थ है।

परमेश्वर के साथ बहस करना नहीं

मध्यस्थता युद्धविराम घोषित करना नहीं है, और न ही यह परमेश्वर के साथ बहस करने का अवसर है। अय्यूब 9:32-33 में, अय्यूब एक बिचवई के लिए पुकारता है, एक मध्यस्थ, जो उसका प्रतिनिधि हो सकता ताकि वह परमेश्वर के साथ वाद-विवाद कर सकता। उसने कहा, "मैं कैसे प्रमाणित करूँ कि मैं सही हूँ? मेरी पहुँच परमेश्वर तक नहीं है; वह मुझ से बहुत दूर है। मुझे ऐसा कोई चाहिए हम दोनों तक पहुँच सकता है।" संसार में ऐसा कौन है जिसकी पहुँच परमेश्वर तक है? केवल परमेश्वर ही स्वयं ऐसा कर सकता है। यहाँ अय्यूब मध्यस्थ, यीशु मसीह के लिए पुकार रहा था। तो मध्यस्थता युद्धविराम घोषित करना नहीं है, और मध्यस्थता परमेश्वर के साथ बहस करने का अवसर भी नहीं है। मध्यस्थता हमें परमेश्वर के साथ मिलाने की और हमें इकट्ठे रखने की और स्वर्ग से हमारी सेवा करने की यीशु मसीह की सेवा है।

परमेश्वर से शान्ति

स्वर्ग में एक व्यावहारिक तरीके एक मध्यस्थ होने का अर्थ क्या है? सबसे पहले, इसका अर्थ है परमेश्वर के साथ शान्ति। "अतः जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें" (रोमियों 5:1)। अब हम परमेश्वर के शत्रु नहीं हैं। यीशु मसीह ने हमारा मेल करा दिया है, और वह हमें एक साथ रखे हुए है। जब आपकी परमेश्वर के साथ संधी है, तब चाहे कैसी भी परीक्षाएं आएँ, आपके हृदय में शान्ति रहेगी।

परमेश्वर स्वीकार करता है

दूसरा, इसका अर्थ है परमेश्वर हमें स्वीकार करता है। हम जानते हैं कि हमें स्वीकार किया हुआ है क्योंकि यीशु मसीह स्वर्ग में हमारे मध्यस्थ के रूप में जीवित है। केवल एक परमेश्वर और एक मध्यस्थ है। यदि दो मध्यस्थ होते तो भी शान्ति नहीं होती। कलीसिया आपके और परमेश्वर के बीच मध्यस्थता नहीं करती है। कोई भी धार्मिक व्यक्ति आपके और परमेश्वर के बीच मध्यस्थता नहीं करताः केवल यीशु मसीह मध्यस्थ है।

परमेश्वर तक पहुँच और सुरक्षा

तीसरा, हमारी परमेश्वर तक पहुँच है, क्योंकि स्वर्ग में हमारा एक मध्यस्थ है। हम दूसरों के लिए प्रार्थना कर सकते हैं। लोगों के लिए हमारी प्रार्थना उसकी मध्यस्थता पर निर्भर है।

अन्त में, इसका अर्थ सुरक्षा है। हम सुरक्षित हैं क्योंकि मध्यस्थ यीशु मसीह ने अपना काम समाप्त किया है। इब्रानियों 12:22 में स्वर्ग की एक सुन्दर तस्वीर है, "पर तुम सिय्योन पर्वत के पास, और जीवते परमेश्वर के नगर, स्वर्गीय यरूशलेम के पास आए हो", आय. 24 कहती है, "नई वाचा के मध्यस्थ, यीशु के पास आए हो।" वह स्वर्ग में नई वाचा की शर्तो को लागू कर रहा है। जब तक वह वहाँ है, हम उद्धार पाए हुए और सुरक्षित हैं।

<u>उद्धार</u> – बन्धन से छुटकारा

स्वतन्त्रता संसार में आज एक बहुत बहुमूल्य चीज है। हर वर्ष अधिकाधिक लोग उनकी व्यक्तिगत स्वतन्त्रता खोते जा रहे हैं। एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था इस स्थिति पर निगरानी रखे हुए हैं, और वे बताते हैं कि संसार की जनसंख्या का केवल 6% असली में स्वतन्त्र है।

नए नियम के संसार में स्वतन्त्रता एक बहुत बहुमूल्य चीज थी। एक विशेषज्ञ हमें बताता है कि रोम साम्राज्य में ही लगभग एक करोड़ गुलाम थे क्योंकि प्राचीन समाज गुलामी की बुनियाद पर ही बनाया गया था। केवल कुरिन्थुस के नगर में ही, एक समय में, लगभग 5 लाख गुलाम थे। तो इसलिए "उद्धार" शब्द ने इन लोगों के लिए बड़ा आनन्द और आशा लाई थी।

उद्धार बाइबल में और मसीही जीवन में एक मूल शब्द है। <u>**उद्धार का अर्थ है:** एक कीमत देकर खरीदना और स्वतन्त्र करना। निस्संदेह, वह कीमत यीशु मसीह का लहू था।</u> "हम को उसके लहू के द्वारा छुटकारा मिला है" (इफि. 1:7)। यीशु क्रूस पर मरा ताकि हमारा उद्धार हो सके और एक कीमत देकर हमें स्वतन्त्र कर दिया।

क्योंकि हम ने मसीह पर अपने उद्धारकर्त्ता के रूप में विश्वास किया है, तो हम किस प्रकार के बन्धन से स्वतन्त्र किए गए हैं ? हमारे भिन्न प्रकार के बन्धन हैं जिनमें से हमें छुड़ाया गया है, और हमें उनके बारे में जानना चाहते हैं।

पाप का बन्धन

सबसे पहले, हम पाप के बन्धन से छुड़ाए गए हैं। तीतुस 2:11-14, "क्योंकि परमेश्वर का वह अनुग्रह प्रकट है, जो सब मनुष्यों के उद्धार का कारण है, और हमें चेतावनी देता है कि हम अभक्ति और सांसारिक अभिलाषाओं से मन फेरकर इस युग में संयम और धर्म और भक्ति से जीवन बिताएँ; और उस धन्य आशा की अर्थात् अपने महान परमेश्वर और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह की महिमा के प्रकट होने की बाट जोहते रहें। जिस ने अपने आप को हमारे लिए दे दिया कि हमें हर प्रकार के अधर्म से छुड़ा ले, और शुद्ध करके अपने लिए एक ऐसी जाति बना ले जो भले-भले कामों में सरगर्म हो।" हमें पाप के बन्धन से छुड़ाया गया है। निस्संदेह, यह हमें मिस्र में इस्राएल की याद दिलाता है। वे मिस्र में बन्धन में थे। वे कठोर अधिकारियों के अधीन थे। हर दिन वे कठोर परिश्रम करते और उन्हें कुछ मिलता भी नहीं था। हर दिन वे परिश्रम करते और दुर्व्यवहार सहते थे। यह एक भयानक बन्धन था।

आप अविश्वासियों को निश्चय नहीं दिला सकते हो कि वे बन्धन में हैं, क्योंकि वे सोचते हैं वे स्वतन्त्र हैं। यह पाप के कपट का एक भाग है। पाप आनन्द की प्रतिज्ञा करता है और अन्त में दर्द लाता है। पाप सफलता की प्रतिज्ञा करता है और अन्त में असफलता लाता है। उड़ाऊ पुत्र स्वतन्त्र होना चाहता था। वह अपने बड़े भाई और पिता से दूर चला जाना चाहता था, तो वह एक दूर के देश में चला गया। उसने सोचा वह स्वतन्त्र है, परन्तु उसने पाया कि उसकी स्वतन्त्रता शीघ्र ही बन्धन में बदल गई है। वह एक गुलाम बन गया, और न केवल अन्यजाति कठोर मालिक का, परन्तु सूअरों का भी सेवक बन गया।

आप और मैं, उद्धार पाने से पहले, कोई अच्छी स्थिति में तो न थे। तीतुस 3:3 कहता है, "क्योंकि हम भी पहले निर्बुद्धि, और आज्ञा न माननेवाले, और भ्रम में पड़े हुए और विभिन्न प्रकार की अभिलाषाओं और सुखविलास के दासत्व में थे, और बैरभाव और डाह करने में जीवन व्यतीत करते थे, और घृणित थे, और एक दूसरे से बैर रखते थे।" यह तो कोई स्वतन्त्रता जैसा नहीं लगता, है ना? परन्तु जब यीशु मसीह में परमेश्वर का अनुग्रह प्रकट हुआ, हम स्वतन्त्र हो गए। यह ऐसा कुछ नहीं था जो हम ने खुद किया था। उसने हमारे लिए किया। तीतुस 3:4-5 कहता है, "परन्तु जब हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर की कृपा और मनुष्यों पर उसका प्रेम प्रकट हुआ, तो उसने हमारा उद्धार किया; और यह धर्म के कामों के कारण नहीं, जो हम ने आप किए, पर अपनी दया के अनुसार नए जन्म के स्नान और पवित्र आत्मा के हमें नया बनाने के द्वारा हुआ।" <u>हमें पाप के बन्धन से मोल देकर छुड़ाया गया है, और यह उद्धार सुधार लाता है। न केवल हमें दोष और पाप की सजा से स्वतन्त्रता मिली है, परन्तु हमारे पास पवित्र आत्मा के सामर्थ्य के द्वारा पाप नहीं करने की स्वतन्त्रता भी है।</u> हमारे पास एक नई धन्य आशा है। "उस धन्य आशा की अर्थात् अपने महान परमेश्वर और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह की महिमा के प्रकट होने के बाट जोहते रहें। (तीतुस 2:13)। क्या आप पाप के बन्धन से स्वतन्त्रता पाए, या उद्धार पाए हुए हो ?

पुराने जीवन का बन्धन

दूसरे प्रकार का बन्धन जिसमें से हमें छुटकारा मिला है पुराने जीवन का बन्धन है। 1 पतरस 1:18-19 कहता है, "क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हारा निकम्मा चाल-चलन जो बाप-दादों से चला आता है, उससे तुम्हारा छुटकारा चाँदी-सोने अर्थात् नाशवान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ; पर निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने, अर्थात् मसीह के बहुमूल्य लहू के द्वारा हुआ।" यीशु मसीह के लहू ने हमें पुराने जीवन के बन्धन से स्वतन्त्र किया है।

पतरस जिस प्रकार पुराने जीवन का वर्णन करता है दिलचस्प है। "तुम्हारा निकम्मा चाल-चलन जो बाप-दादों से चला आता है।" निकम्मा का अर्थ है: पाप का निकम्मा। 1 पतरस 4:2-4 में पतरस इसे आगे बताता है, "ताकि भविष्य में अपना शेष शारीरिक जीवन मनुष्यों की अभिलाषाओं के अनुसार नहीं वरन् परमेश्वर की इच्छा के अनुसार व्यतीत करे। क्योंकि अन्यजातियों की इच्छा के अनुसार काम करने, और लुचपन की बुरी अभिलाषाओं, मतवालापन, लीलाक्रीड़ा, पियक्कड़पन, और घृणित मूर्तिपूजा में जहाँ तक हमने पहले समय गँवाया, वही बहुत हुआ। इससे वे अचम्भा करते हैं कि तुम ऐसे भारी लुचपन में उनका साथ नहीं देते, और इसलिए वे बुरा-भला कहते हैं।" जो जीवन हम जीते थे व्यर्थ का जीवन था। हमें लगता था यह सुख का जीवन है। अविश्वासी कभी-कभी कहते हैं, "अरे, तुम मसीहियों को पता नहीं जीवन का मजा लेना क्या होता है! मैं स्वतन्त्र हूँ! मैं अपनी मर्जी से जीता हूँ!" बाइबल बताती है हम क्या कर रहे थे: "लुचपन की बुरी अभिलाषाओं, मतवालापन, लीलाक्रीड़ा, पियक्कड़पन, और घृणित मूर्तिपूजा में" (आय. 3)। यह मुझे स्वतन्त्रता जैसा तो नहीं लगता। दुख की बात तो यह है कि कई लोग सोचते हैं कि क्योंकि वे अपनी मर्जी कर रहे हैं वे स्वतन्त्र हैं, जबकि सच्ची स्वतन्त्रता परमेश्वर की इच्छा पूरी करना है!

लोगों के मन में विचार है कि परमेश्वर की इच्छा बन्धन है। यह बन्धन नहीं है; परमेश्वर की इच्छा एक सुन्दर स्वतन्त्रता है। जब प्रभु यीशु मसीह ने हमें छुड़ाया, तब उसने हमारा उद्धार किया और पुराने जीवन के बन्धन से हमें छुड़ाया। इसलिए हमें अपना बाकी का जीवन पहले के समान नहीं जीना है। बाकी का जीवन कितना लम्बा होगा? हम नहीं जानते, कोई नहीं जानता। हमारे पास कई वर्ष हो सकते हैं, हमारे पास कई दिन हो सकते हैं। हम नहीं जानते। दिन ढलते-ढलते हमें घर महिमा में बुलाया जा सकता है। हम नहीं जानते। "मनुष्यों के लिए एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है" (इब्रानियों 9:27)। यह एक नियुक्ति है, संयोग नहीं है, और परमेश्वर जानता है कब होने वाला है।

जब आपका उद्धार होता है आप पुराने जीवन के बन्धन से स्वतन्त्र किए जाते हो। इसीलिए इफिसियों 5:16 हमें कहता है समय को बहुमूल्य समझो। अपना बाकी का जीवन वैसे मत जीओ जैसे पहले जिया करते थे। आप को उससे स्वतन्त्र किया गया है। पुरानी बातें बीत गई हैं: देखो, सब बातें नई हो गई हैं। (2 कुरिं. 5:17)। इसलिए, समय को कीमती जानो, अवसर का लाभ उठाओ, अपने बाकी के जीवन को भरपूर उपयोग करो।

परमेश्वर की इच्छा सुन्दर स्वतन्त्रता है

यदि इज़ाजत हो तो मैं इसे उपयोग करना चाहूँगा। सम्भवतः आपका नया जन्म हुआ है, परन्तु आप दूसरे लोगों की परम्पराओं पर चल रहे हैं। आप वह कर रहे हैं जो सब करते हैं। वह क्यों कर रहे हो जो सब करते हैं? आप परमेश्वर से क्यों नहीं पूछते वह क्या चाहता है आप अपने बाकी के जीवन में करें? सम्भवतः आप एक गलत स्कूल में हो और आपको दूसरे स्कूल में परमेश्वर की सेवा करने का प्रशिक्षण लेने के लिए होना चाहिए। सम्भवतः आप गलत पेशे में हैं। सम्भवतः आप एक व्यवसायी हैं, और कुछ सफल भी हैं, परन्तु परमेश्वर आपको उसकी सेवा में बुला रहा है। आप पूर्णकालिक मसीही सेवा में परमेश्वर की महिमा के लिए अपने अनुभव और अपने वरदानों को उपयोग कर सकते हो। यदि आपको पता होता कि आपके पास जीवन के दस वर्ष या एक वर्ष रह गया है, तो यह आपके जीवन को कैसे बदलेगा? हमें हर दिन ऐसे जीना है जैसे कि यह हमारा अन्तिम दिन है। क्योंकि हमारा बन्धन से स्वतन्त्रता के लिए उद्धार हुआ है, हमारा बन्धन से जीवन के लिए उद्धार हुआ है। हमें पूरी तरह परमेश्वर के लिए जीना चाहिए।

व्यवस्था का बन्धन

हमारा व्यवस्था से भी उद्धार हुआ है। गलातियों 3:13, "मसीह ने जो हमारे लिए शापित बना, हमें मोल लेकर व्यवस्था के शाप से छुड़ाया, क्योंकि लिखा है, 'जो कोई काठ पर लटकाया जाता है वह शापित है'।" गलातियों 4:4-5 कहता है, "परन्तु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ, ताकि व्यवस्था के अधीनों को मोल लेकर छुड़ा ले, और हम को लेपालक होने का पद मिले।"

व्यवस्था ने कभी किसी का उद्धार नहीं किया; व्यवस्था को पाप प्रकट करने के लिए दिया गया था। व्यवस्था एक आइना है, परन्तु आप आइने में अपना चेहरा नहीं धोते। आपको पता चलता है आपका चेहरा गन्दा है, तब आपको अपना चेहरा धोना होता है। जब आप और मैं परमेश्वर की पवित्र व्यवस्था में देखते हैं तो पाते हैं कि हम कितने पापी हैं, और व्यवस्था एक शाप देती है! गलातियों 3:10 कहता है, "इसलिए जितने लोग व्यवस्था के कामों पर भरोसा रखते हैं, वे सब पाप के अधीन हैं, क्योंकि लिखा है, 'जो कोई व्यवस्था की पुस्तक में लिखी हुई सब बातों के करने में स्थिर नहीं रहता, वह शापित है।'"

इस वचन में दो बहुत महत्त्वपूर्ण सच्चाइयाँ हैं। पहली, यदि आप व्यवस्था से उद्धार पाने वाले हैं तो आपको इसे पूरा का पूरा मानना होगा। आप चुन नहीं सकते; यह मेन्यू नहीं है। परमेश्वर आपके सामने मेन्यू रखता है और कहता है, "यह है! तुम्हें सारी व्यवस्था का पालन करना है। तुम चुन नहीं सकते हो।"

दूसरा, आपको इसे करते रहना है। यदि एक बार भी आज्ञा नहीं मानी, तो आप शाप के अधीन हो जाओगे। परमेश्वर का वचन इसे बहुत स्पष्ट करता है कि व्यवस्था दण्ड लाता है, उद्धार नहीं! पुराने नियम का यहूदी व्यवस्था के अधीन था; उसे कुछ भोजन और कुछ स्थानों से बचना होता था। उसे कुछ धर्मविधियों में से गुज़रना होता था।

हमें व्यवस्था और व्यवस्था के शाप से छुटकारा मिला है। गलातियों 5:1 कहता है, "मसीह ने स्वतन्त्रता के लिए हमें स्वतन्त्र किया है; अतः इसी में स्थिर रहो।" यह हमें व्यवस्थाहीन नहीं बनाता। परमेश्वर की व्यवस्था पवित्र आत्मा ने हमारे हृदयों में लिखी है। हम परमेश्वर की व्यवस्था को मानते हैं क्योंकि हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं। हम परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करते हैं क्योंकि हमारा नया स्वभाव हमें परमेश्वर की व्यवस्था मानने के लिए प्रेरित करता है। पुराना स्वभाव कोई व्यवस्था नहीं जानता; नए स्वभाव को किसी व्यवस्था की आवश्यकता नहीं। कभी भी ऐसी कोई व्यवस्था नहीं दी गई है जो पुराने स्वभाव को बदल सकती या नियंत्रण में कर सकती। यीशु मसीह ने हमें व्यवस्था के शाप से मोल देकर छुड़ाया है। "अतः अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं" (रोमियों 8:1)।

पाप के शरीरों का बन्धन

हमें पाप के अपने शरीरों से भी छुटकारा मिला है। यह अभी हुआ नहीं है, परन्तु यह होने वाला है। रोमियों 8:23 में, (हम) लेपालक होने को, अर्थात् अपनी देह के छुटकारे की बाट जोहते हैं।" इफिसियों 1:13-14 हमें बताता है कि हम पर छुटकारे के दिन के लिए पवित्र आत्मा की छाप लगी है। इफिसियों 4:30 कहता है, "परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित मत करो, जिस से तुम पर छुटकारे के दिन के लिए छाप दी गई है।" एक छुटकारे का दिन आ रहा है।

हमारे हृदयों में परमेश्वर की व्यवस्था पवित्र आत्मा द्वारा लिखी गई है

आज हमारी आत्माओं का उद्धार हुआ है, परन्तु हमारे शरीरों का उद्धार नहीं हुआ है। हमारे शरीर अभी भी बीमारी और पीड़ा, दुर्घटना और रोग के अधीन हैं। हमारे शरीर अभी भी सड़न अनुभव करते हैं। परन्तु एक दिन हम यीशु मसीह को देखेंगे और हमें महिमायुक्त शरीर मिलेंगे। "पर हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है; और हम एक उद्धारकर्त्ता प्रभु यीशु मसीह के वहाँ से आने की बाट जोह रहे हैं। वह अपनी शक्ति के उस प्रभाव के अनुसार जिसके द्वारा वह सब वस्तुओं को अपने वश में कर सकता है, हमारी दीन-हीन देह का रूप बदलकर, अपनी महिमा की देह के अनुकूल बना देगा।" (फिलि. 3:20-21)। हम उद्धार के एक महिमा के दिन की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

यीशु मसीह ने हमें पाप से छुड़ाया है। उसने हमें पुराने जीवन से छुड़ाया है। उसने हमें व्यवस्था से छुड़ाया है। और एक दिन वह आएगा और हमें पाप के इन शरीरों से छुड़ाएगा जो हमारे लिए कितनी समस्या खड़ी करते हैं। यह छुटकारा जो हमारा है अस्थाई नहीं है। "छुटकारा" शब्द का अर्थ है: गुलामी में से खरीदना और स्वतन्त्र करना, ताकि दोबारा कभी भी गुलाम न बनें। एक व्यक्ति एक गुलाम को खरीद सकता है और उसे गुलाम ही बनाए रखे। परन्तु यीशु ने ऐसा नहीं किया। हमारे प्रभु यीशु ने हमें अपने लहू के द्वारा खरीदा और उसकी महिमा करने के लिए हमें स्वतन्त्र किया।

इब्रानियों 9:12 हमें बताता है कि यीशु मसीह अनन्त छुटकारे का कर्त्ता है। हम कितनी देर तक छुड़ाए गए हैं ? अनन्तकाल के लिए: यह अनन्त छुटकारा है। हमें अन्धकार के वश से छुड़ाया गया है, और हमें परमेश्वर के प्रिय पुत्र के राज्य में लाया गया है (कुलु. 1:13-14)। यदि आप यीशु में विश्वास के द्वारा छुड़ाए गए हैं तो आनन्द करो। मसीह में अपनी स्वतन्त्रता के लिए आनन्द करो, और इस स्वतन्त्रता को दूसरों की सेवा करने और प्रभु यीशु मसीह की सेवा करने के लिए इस्तेमाल करो।

रचा जाना – विश्वासी का इतिहास

रोमियों 8:29 कहता है, "जिन्हें उसने पहले से जान लिया है उन्हें पहले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों।" विश्वासी के इतिहास को : "रचना" शब्द में बताया जा सकता है। हम केवल मिट्टी हैं। मिट्टी खुद को नहीं रच सकती; केवल परमेश्वर हमें रच सकता है। परमेश्वर के हर बच्चे के जीवन में चार अवस्थाएँ होती हैं। पहला, हमें परमेश्वर ने परमेश्वर के स्वरूप में रचा था। दूसरा, हमें परमेश्वर के स्वरूप से पाप ने विकृत किया था। तीसरा, हम परमेश्वर के स्वरूप में आत्मा द्वारा बदले जा रहे हैं। चौथा, हम एक दिन जब प्रभु यीशु मसीह को देखेंगे तो उसके समान हो जाएँगे।

परमेश्वर के स्वरूप में बनाए गए

अपने आत्मिक अनुभव में इस पहली अवस्था पर ध्यान दो। परमेश्वर द्वारा परमेश्वर के स्वरूप में रचा जाना। तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा, और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूँक दिया; और आदम जीवित प्राणी बन गया।" (उत्पत्ति 2:7)। "तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया; नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की" (उत्पत्ति 1:27)। परमेश्वर के स्वरूप में रचे जाने का अर्थ क्या होता है। परमेश्वर के स्वरूप का अर्थ है कि हम, परमेश्वर के समान, आत्मा, प्राण और शरीर वाले प्राणी हैं। परमेश्वर एक त्रिएक है - पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा।

व्यक्तित्व

इसका अर्थ उससे कहीं अधिक है। इसका अर्थ है व्यक्तित्व; एक व्यक्ति होना। परमेश्वर के पास सोचने के लिए मन है, महसूस करने के लिए हृदय है और फैसलों और कार्य करने के लिए एक इच्छाशक्ति है। हमारा व्यक्तित्व परमेश्वर के व्यक्तित्व का प्रतिबिम्ब है। मनुष्य मूल रूप से त्रिएक है। उसके भौतिक शरीर में, मनुष्य पृथ्वी से सम्बंध रखता है; वह मिट्टी से बना है। परन्तु उसकी आत्मिक बनावट में, वह आत्मा से सम्बंधित है; वह भूमि और परमेश्वर दोनों से है। हमारी बनावट में स्वर्ग और पृथ्वी दोनों हैं, और परमेश्वर ने हमें ऐसा बनाया है। हमें परमेश्वर के स्वरूप में परमेश्वर ने बनाया है।

जिम्मेवारी

इसका अर्थ यह भी है कि हमारी जिम्मेवारी है। हम परमेश्वर की ओर उत्तरदायी हैं। वह सृष्टिकत्ता है, हम सृष्टि हैं। जिस तरीके से हम दूसरों के साथ बर्ताव करते हैं बताता है कि हम परमेश्वर के बारे में क्या सोचते हैं, क्योंकि मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया था। हमें दूसरे लोगों के साथ दुर्व्यवहार करने या उनका अनुचित लाभ उठाने का कोई अधिकार नहीं है क्योंकि वे परमेश्वर के स्वरूप में बनाए गए हैं।

नियती

इसका अर्थ है कि हमारी एक विशेष नियती है। हमें परमेश्वर ने उसके स्वरूप में एक निश्चित उद्देश्य से बनाया है। हम यहाँ संयोग से नहीं हैं, हम यहाँ नियुक्ति से हैं। हम यहाँ परमेश्वर की आराधना करने और उसका आनन्द लेने के लिए हैं, जैसा प्रश्नोत्तरी हमें बताती है। इससे पता चलता है कि क्यों कई लोगों के जीवन खाली से हैं। वे उनकी नियती को साकार नहीं करते, वे उनकी जिम्मेवारी को पूरा नहीं करते, और वे इस अदभुत नियती के लिए तैयार नहीं हैं।

परमेश्वर के स्वरूप से विकृत हुए

हमें परमेश्वर ने परमेश्वर के स्वरूप में रचा है, तो फिर इतनी सारी गड़बड़ क्यों है? क्योंकि हमें पाप ने परमेश्वर के स्वरूप से विकृत कर दिया है। नहीं तो आज संसार जिस अव्यवस्था में है उसका कारण क्या हो सकता है? हम में कुछ है जो परमेश्वर को पुकारता है, और हम में कुछ और है जो पाप को पुकारता है। ऐसा क्यों है? क्योंकि मनुष्य पतित हुआ, मनुष्य पापी है। जब मनुष्य पाप में गिरा, उसकी आत्मा मर गई - वह परमेश्वर से बिछुड़ गया। उसका प्राण खराब हो गया; उसमें परमेश्वर का स्वरूप पाप के कारण खराब हो गया। अब हमारे पास वो सब क्षमताएँ नहीं रही हैं जिन्हें परमेश्वर ने आरम्भ में हमें दिया था, कुछ भयानक हुआ है।

निस्संदेह, एक दिन शरीर मर जाएगा। परमेश्वर ने आदम और हव्वा को कहा था, "जिस दिन तू उसका फल खाएगा उसी दिन अवश्य मर जाएगा।" (उत्पत्ति 2:17)। मृत्यु यहीं से आई है। हम भूमि में से आए हैं, हम भूमि में लौट जाएँगे, और हम अपनी सहायता नहीं कर सकते। केवल परमेश्वर अन्तर ला सकता है।

परमेश्वर के स्वरूप में बदले गए

हम परमेश्वर द्वारा परमेश्वर के स्वरूप में रचे गए थे, और हम पाप द्वारा परमेश्वर के स्वरूप से विकृत किए गए हैं। परन्तु जब हम यीशु मसीह अपने उद्धारकर्त्ता पर भरोसा करते हैं, एक चमत्कार होता है। हमारी आत्माएं दोबारा जीवित हो जाती हैं, और परमेश्वर हमारे भीतरी मनुष्यत्व में हमें अपने समान बनाने के लिए कार्य करने लगता है: हम आत्मा द्वारा परमेश्वर के स्वरूप में बदले जा रहे हैं।

रोमियों 12:1-2 कहता है, "इसलिए हे भाइयो, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर विनती करता हूँ कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ। यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है। इस संसार के सृदश न

बनो; परन्तु तुम्हारे मन के नए हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली, और भावती और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो।" जब आप मसीह को अपना उद्धारकर्त्ता मानते हो, तो पवित्र आत्मा आता है, और तुम नई सृष्टि बन जाते हो। परमेश्वर काम दोबारा आरम्भ करता है। "इसलिए यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है : पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, सब बातें नई हो गई हैं।" (2 कुरिं. 5:17)

कुलुस्सियों 3:10 में पौलुस ने यह लिखा: "(तुम ने) नए मनुष्यत्व को पहिन लिया है, जो अपने सृजनहार के स्वरूप के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने के लिए नया बनता जाता है।" जब आप यीशु मसीह को अपना प्रभु मानकर उसे अपना शरीर, अपना मन, अपनी इच्छाशक्ति और अपना हृदय देते हो - तब परमेश्वर आपको बदलने लगता है। रोमियों 12:2 कहता है, " इस संसार के सृदश न बनो; परन्तु तुम्हारे मन के नए हो जाने से" बदलते जाओ। "बदलना" शब्द "रुपान्तरित होना" है। मत्ती 17 में हमारा प्रभु उसके चेलों के सामने रुपान्तरित हो गया था। रुपान्तरण बाहरी बदलाव है जो भीतर से आता है। आप बाहरी रूप को छद्मवेश पहनावे से बदल सकते हो, परन्तु छद्मवेश का मसीही जीवन में कोई स्थान नहीं है। रुपान्तरण बाहर का एक बदलाव है जो भीतर से आता है। यह पवित्र आत्मा का कार्य है।

इसी कारण से हम बाइबल पढ़ते हैं। जैसे हम परमेश्वर का वचन पढ़ते हैं तो पवित्र आत्मा हमें बदलता है और हमारे मन को नया करता है। इसी कारण से हम प्रार्थना करते हैं। मैं ने प्रार्थना पर अनेक पुस्तकें पढ़ी हैं और मैं ने इसका अध्ययन किया, परन्तु प्रार्थना मेरे लिए एक निरन्तर होने वाला चमत्कार है। जैसे हम प्रार्थना करते और परमेश्वर के साथ संगति करते हैं तो हमारे चरित्र में बदलाव होता है। मूसा पहाड़ पर गया और परमेश्वर से मिला। जब वह नीचे आया तो उसका चेहरा चमक रहा था, परन्तु महिमा धीरे-धीरे कम होती गई। आप और हम महिमा "उधार" नहीं लेते, कि इसे खो दें। हमारी महिमा भीतर से है। हम पवित्र आत्मा द्वारा परमेश्वर के स्वरूप में बदले जा रहे हैं (2 कुरिं. 3:18)। इसका अर्थ है कि हम संसार के समान नहीं बन रहे हैं। मसीहियों को न तो संसार से प्रेम करना है और न ही इसे प्रसन्न करने का प्रयास करना है। अपने शरीर, अपने मन, अपनी इच्छाशक्ति, अपने हृदय में हम पवित्र आत्मा की सहायता से प्रभु यीशु मसीह समान बन रहे हैं!

परमेश्वर के स्वरूप सदृश हुए

हम परमेश्वर द्वारा परमेश्वर के स्वरूप में बदले गए हैं, और हम पाप द्वारा परमेश्वर के स्वरूप से विकृत किए गए थे। हम आत्मा द्वारा परमेश्वर के स्वरूप में बदले जा रहे हैं। एक दिन जब हम यीशु मसीह को देखेंगे तब परमेश्वर के स्वरूप के सदृश हो जाएँगे।

यह कोई अस्पष्ट आशा नहीं है; यह परमेश्वर के वचन पर आधारित आश्वासन है। रोमियों 8:29 कहता है, "क्योंकि जिन्हें उसने पहले से जान लिया है उन्हें पहले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों, ताकि वह बहुत भाइयों में पहिलौठा ठहरे।" "पर हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है; और हम एक उद्धारकर्त्ता प्रभु यीशु मसीह के वहाँ से आने की बाट जोह रहे हैं। वह अपनी शक्ति के उस प्रभाव के अनुसार जिसके द्वारा वह सब वस्तुओं को अपने वश में कर सकता है, हमारी दीन-हीन देह का रूप बदलकर, अपनी महिमा की देह के अनुकूल बना देगा।" (फिलि. 3:20-21)। एक दिन हम प्रभु यीशु मसीह के समान होंगे क्योंकि जैसा वह है हम उसे वैसा ही देखेंगे।

यह विश्वासी की धन्य आशा है। असल में, वह तो पहले ही महिमा पा चुका है। रोमियों 8:30 पर ध्यान दो, "फिर जिन्हें उसने पहले से ठहराया, उन्हें बुलाया भी; और जिन्हें बुलाया, उन्हें धर्मी भी ठहराया है; और जिन्हें धर्मी ठहराया, उन्हें महिमा भी दी है।" महिमा भी दी - पहले ही समाप्त! यीशु ने कहा, "वह महिमा जो तू ने मुझे दी मैं ने उन्हें दी है।" (यूहन्ना 17:22)। जब हम प्रभु यीशु मसीह को देखेंगे, हम उसके स्वरूप में हो जाएँगे।

आओ हम संसार के सदृश न हों। यह तो केवल समय और शक्ति की बर्बादी है और हम कितनी सारी आशीषों को खो देंगे, क्योंकि यीशु मसीह का आगमन निकट आता जा रहा है। परमेश्वर आपको पवित्र आत्मा के सामर्थ्य में बदलता जाए। उसके हाथ में हो जाओ और हमारे प्रभु यीशु मसीह के आगमन की प्रतीक्षा करो। जो भी आपकी कमज़ोरियाँ और समस्याएँ हैं, याद रखो कि जब आप और मैं यीशु मसीह को देखेंगे, हम उसके स्वरूप में हो जाएँगे। परन्तु आओ हम तब तक का इन्तज़ार न करें। आओ हम आज से ही प्रभु यीशु मसीह द्वारा बदलते जाएँ और परमेश्वर के आत्मा को उसका काम करने दें।

<u>पहले से ठहराना</u> – उसके अपनों के लिए परमेश्वर की योजना

परमेश्वर ने इस सृष्टि को एक समय में एक दिन कार्य करने के लिए रचा है। और आप को और मुझे एक समय में एक दिन जीना चाहिए। "जैसे तेरे दिन वैसी ही तेरी शक्ति हो" (व्यवस्था. 33:25)। आप और मैं एक समय में एक दिन जी पा रहे हैं क्योंकि परमेश्वर नियंत्रण में है।
क्या आप कभी कुछ लोगों के बीच गए हो जब वे बातें कर रहे थे और बेचैनी महसूस की है क्योंकि आप को पता नहीं था क्या हो रहा है? क्या आपने कभी पुस्तक के अन्त में पढ़ना आरम्भ किया है? जब हम ऐसी किसी स्थिति में चले जाते हैं को हम परेशानी अनुभव करते हैं क्योंकि हमें पता नहीं होता क्या हो रहा है।
आज लोगों को पता नहीं है क्या हो रहा है। आजकल परिवर्तन इतनी शीघ्रता और मौलिक रूप से हो रहा है कि लोग डर रहे हैं। कुछ लोग विद्रोही भी हैं। कुछ लोग जीवन के दबावों से इतने घबरा जाते हैं कि वे पीछे हट जाते हैं, अकसर बीमारी का बहाना करते हैं। कुछ लोग तो आत्महत्या भी कर लेते हैं, क्योंकि वे जीवन के दबावों को सह नहीं सकते हैं।
परन्तु अर्थपूर्ण होने के लिए, हमें पता होना चाहिए हम कहाँ से आए हैं, हम यहा क्यों हैं और हम कहाँ जा रहे हैं। निस्संदेह, कुछ लोगों के पास दर्शनशास्त्र हैं जो इन तथ्यों के उत्तर देने का प्रयास करते हैं। साम्यवादी आर्थित शक्तियों और जाति संघर्ष की बात करता है। विकासवादी के पास समस्या का हल जिसकी लाठी उसकी भैंस के नियम में है। अज्ञेयवादी कहता है हम जान नहीं सकते: हम संयोग या किस्मत से जी रहे हैं। आज जी लो क्योंकि कल हम शायद आ नहीं सकें। अपनी मर्जी करो जीवन का एक भाग्यवादी दर्शनशास्त्र है। और फिर ऐसे लोग भी हैं जो अन्धविश्वासी हैं। वे तारों, विभिन्न ज्योतिषशास्त्र के चार्टो की सलाह लेते हैं, गूढ़ विद्या में हाथ डालते हैं, परन्तु मसीही को ऐसी किसी भी चीज की आवश्यकता नहीं है। मसीही के पास उसकी बाइबल है, और बाइबल हमें सिखाती है कि परमेश्वर पूरे अधिकार में है।
जो मैं अपको बताना चाहता हूँ "पहले से ठहराया" शब्द में छिपा हुआ है। जिस क्षण आप इस शब्द का जिक्र करेंगें, तो कुछ लोग घबरा जाते हैं क्योंकि यह शब्द "भाग्य" शब्द का आहास दिलाता है। यह कितना भाग्यवादी लगता है, यह नियंत्रण से बाहर लगता है। मसीही जीवन से डरता नहीं है। वह उसका जीवन एक समय में एक दिन करके नहीं जी रहा है, क्योंकि उसका भरोसा परमेश्वर में है और वह जानता है कि परमेश्वर नियंत्रण में है।
रोमियों 8:28-30 कहता है, "हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं; अर्थात् उन्ही के लिए जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं। क्योंकि जिन्हें उसने पहले से जान लिया है उन्हें पहले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों, ताकि वह बहुत भाइयों में पहिलौठा ठहरे। फिर जिन्हें उसने पहले से ठहराया, उन्हें बुलाया भी; और जिन्हें बुलाया, उन्हें धर्मी भी ठहराया है; और जिन्हें धर्मी ठहराया, उन्हें महिमा भी दी।" यहाँ इन तीन वचनों में परमेश्वर की उसकी लोगों के लिए अदभुत योजना दिखाई गई है। हम इस शब्द "पहले से ठहराया" का अध्ययन करने वाले हैं क्योंकि जब आप इसे समझ लोगे तब आप आराम से रहोगे और चिन्ता नहीं करोगे कि आप के आसपास क्या हो रहा है। "पहले से ठहराया" शब्द नए नियम में केवल छः बार इस्तेमाल किया गया है। यह सदा इसी प्रकार अनुवाद नहीं किया गया है। यह यूनानी शब्द "proorizo" है। आप कहेंगे, इसका अर्थ क्या है? "Pro" का अर्थ है: पहले से और "orizo" का अर्थ है: समझना। "क्षितिज" शब्द भी इसी शब्द में से निकलता है। क्षितिज वह क्षेत्र है, हमारे सामने, जो आकाश को भूमि से अलग करता है।

आओ हम पहले से ठहराया के बारे में तीन प्रश्नों के उत्तर दें, और इन प्रश्नों के उत्तर में अपने डरों को शान्त करें और अपने हृदयों को आश्वासन दें।

पहले से ठहराया का अर्थ क्या है?

पहला प्रश्न: पहले से ठहराया का अर्थ क्या है? <u>**पहले से ठहराया का अर्थ है:** उसके लोगों को प्रभु यीशु मसीह के समान बनाने की परमेश्वर की अनन्त योजना।</u> "पहले से ठहराया" का अर्थ है: पहले से तय किया हुआ एक लक्ष्य। पहले से ठहराया केवल स्वीकार करता है कि परमेश्वर की उसके लोगों के लिए एक अनन्त योजना है। जो लक्ष्य उसने उनके लिए बनाया है वह यह है कि वे प्रभु यीशु के समान बनें। क्योंकि जिन्हें उसने पहले से जान लिया है उन्हें पहले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों (रोमियों 8:29)।

आपको पहले से ठहराया के विषय में कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्यों पर ध्यान देना चाहिए। सबसे पहला, पहले से ठहराया केवल उद्धार पाए हुओं पर लागू होता है। मैं ने बाइबल में कहीं नहीं लिखा हुआ पढ़ा है कि परमेश्वर लोगों को नरक में जाना पहले से ठहराता

है। मैं ने परमेश्वर के वचन में कहीं नहीं पढ़ा है कि परमेश्वर लोगों को नष्ट होना पहले से ठहराता है। (2 पतरस 3:9)। इसका उलटा सच है। वह हमें सारे संसार में जाने और सुसमाचार का प्रचार करने को कहता है। क्या बाइबल चुनाव की बात करती है? निश्चित रूप से करती है। "उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले उसमें चुन लिया" (इफि. 1:4)। क्या इसका अर्थ यह है कि हमें किसी को भी सुसमाचार नहीं सुनाना चाहिए? नहीं। आप को और मुझे पता नहीं है परमेश्वर के चुने हुए कौन हैं। पहले से ठहराया हमें सिखाता है कि परमेश्वर के चुने हुए एक दिन प्रभु यीशु मसीह के समान होने वाले हैं। मैं बाइबल में एक भी ऐसे वचन को नहीं जानता हूँ जो कहता है कि परमेश्वर ने लोगों को नरक में जाना पहले से ठहराया है।
मत्ती 25 में दो विरोधी वचन पाए जाते हैं। आय. 34 में लिखा है, "तब राजा अपनी दाहिनी ओर वालों से कहेगा, हे मेरे पिता के धन्य लोगो, आओ, उस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो जगत की आदि से तुम्हारे लिए तैयार किया गया है।" आयत 41 में हम पढ़ते हैं, "तब वह बाईं ओर वालों से कहेगा, हे शापित लोगो, मेरे सामने से उस अनन्त आग में चले जाओ, जो शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार की गई है।" आयत 41 "जगत की आदि से तुम्हारे लिए तैयार किया गया है" नहीं कहती। उसने उद्धार पाए हुओं से जरूर कहा कि जो जगत की आदि से तुम्हारे लिए तैयार किया गया है।
पहले से ठहराया एक प्रेमी पिता के हृदय में से निकलता है। हमें कभी नहीं सोचना है कि पहले से ठहराया कोई दूर दराज के अनन्तकाल में बनाया उदासीन कार्यक्रम है। इफि. 1:4-5 कहता है, "जैसा उसने हमें जगत की उत्पत्ती से पहले चुन लिया कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों। और अपनी इच्छा के भले अभिप्राय के अनुसार हमें अपने लिए पहले से ठहराया कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों।" उसने हमें पहले से कैसे ठहराया है? प्रेम में! पहले से ठहराना एक प्रेमी पिता की बुद्धि की योजना है, और वह अपनी योजना पूरी करने वाला है।
कुछ और भी सत्य है। पहले से ठहराना सम्पूर्ण योजना का एक अंश ही है। रोमियों 8:29-30 में पाँच मूल तत्त्वों का जिक्र है और हम कुछ विस्तार से उन पर ध्यान देंगे।

पहले से ठहराया कैसे कार्य करता है?

दूसरा प्रश्नः पहले से ठहराया कैसे कार्य करता है? रोमियों 8:29 के अनुसार, पहले से ठहराना पूर्वज्ञान से आरम्भ होता है। "जिन्हें उसने पहले से जान लिया है उन्हें पहले से ठहराया भी है।" पूर्वज्ञान का अर्थ मात्र "पहले से जान लेना" नहीं है। ऐसे भी हैं जो सिखाते हैं कि परमेश्वर पहले से जानता है कौन विश्वास करेंगे, इसलिए उसने उन्हें उद्धार पाने के लिए पहले से ठहराया है। यह उलटा है। यदि परमेश्वर केवल भविष्य की घटनाओं को ही देख पाता है तो इन घटनाओं को निश्चित क्या करता है? हर घटना इससे पहले पता चले यह निश्चित है उसे निश्चित बनाया जाना चाहिए, और केवल परमेश्वर ही घटनाओं को निश्चित बना सकता है।
पूर्वज्ञान का अर्थ है: पहले से चुनना, किसी पर अपना प्रेम रखना। यह सब परमेश्वर के अनुग्रह से है। परमेश्वर अपने अनुग्रह में हम से प्रेम रखता है। वह कुछ लोगों पर अपना प्रेम रखता है जिनका उद्धार होने वाला है। यह सब यहीं से, परमेश्वर के पूर्वज्ञान के साथ आरम्भ होता है।
या तो उद्धार अनुग्रह से, पूर्ण रूप से परमेश्वर के प्रेमी हृदय से है, या उद्धार बिलकुल नहीं है।
परमेश्वर कुछ पर अपना प्रेम रखता, अपना हृदय रखता है। ये कुछ पहले से ठहराए हुए हैं, और कि वे फिर मसीह के स्वरूप में हों। प्रेरितों 4:27-28 कहता है, "क्योंकि सचमुच तेरे सेवक यीशु के विरोध में, जिसका तू ने अभिषेक किया, हेरोदेस और पुन्तियुस पिलातुस भी अन्य जातियों और इस्राएलियों के साथ इस नगर में इकट्ठे हुए कि जो कुछ पहले से तेरी सामर्थ्य और मति से ठहरा था वही करें।" मसीह की मृत्यु कोई संयोग नहीं था; इसे एक प्रेमी पिता ने पूर्वनिर्धारित किया था।
पहले से ठहराया का सरल अर्थ है: कि एक दिन आप यीशु मसीह के समान होने वाले हो। यह पूर्वज्ञान से आरम्भ होता है, और इसमें पवित्र आत्मा द्वारा बुलाना सम्मिलित होता है। रोमियों 8:30 कहता है, " फिर जिन्हें उसने पहले से ठहराया, उन्हें बुलाया भी।" यह बुलाना मनुष्य के माध्यम से होता है।

कभी भी ऐसा मत सोचो कि क्योंकि परमेश्वर ने कुछ को चुना है और जिन्हें उसने चुना है स्वर्ग जाने के लिए ठहराए गए हैं, इसलिए मसीहियों को कुछ नहीं करना चाहिए। "हे भाइयो, और प्रभु के प्रिय लोगो, चाहिए कि हम तुम्हारे विषय में सदा परमेश्वर का धन्यवाद करते रहें, क्योंकि परमेश्वर ने आदि से तुम्हें चुन लिया कि आत्मा के द्वारा पवित्र बनकर, और सत्य की प्रतीति करके उद्धार पाओ, जिस के लिए उसने तुम्हें हमारे सुसमाचार के द्वारा बुलाया, कि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा को प्राप्त करो।" (2 थिस्स. 2:13-14)। जिन्हें परमेश्वर चुनता और पहले से जानता है, पहले से ठहराता है, और जिन्हें पहले से ठहराता है, उन्हें बुलाता है। इसी लिए हमारे पास सुसमाचार सुनाने की एक सेवा है। इसी लिए हम गवाह बनते और प्रार्थना करते हैं। जिन्हें बुलाया गया है और जो उस बुलावे की ओर प्रतिक्रिया दिखाते हैं धर्मी ठहराए जाते हैं। जिन्हें वह धर्मी ठहराता है, उनकी महिमा भी करता

है। इस आयत में भूतकाल पर ध्यान दो: "फिर जिन्हें उसने पहले से ठहराया, उन्हें बुलाया भी।" (रोमियों 8:30)। यह सब परमेश्वर की पूरी योजना है। जो पूर्वज्ञान से आरम्भ होता है महिमा से समाप्त होता है। पहले से ठहराया जाना केवल घोषित करता है कि कुछ वहाँ पहुँचने वाले हैं - वे एक दिन मसीह के स्वरूप में हो जाएँगे।

आज पहले से ठहराया का अर्थ क्या है?

यह हमारा तीसरा प्रश्न है: आज हम विश्वासियों के लिए पहले से ठहराया का अर्थ क्या है? कृपया ध्यान में रखें कि पौलुस ने रोमियों को, साधारण लोगों को, सामान्य लोगों को लिखा था, विद्वानों को नहीं। विद्वान इस प्रकार की कुछ चीजों के साथ संघर्ष करते हैं, परन्तु पौलुस ने यह पत्र सामान्य लोगों को लिखा था, और वह जानता था कि यदि उन्होंने उनके हृदय पवित्र आत्मा के लिए खोले तो वे इसे समझ जाएँगे।

इस प्रकार उद्धार हमारी सोच से बड़ा है: हम विश्वासियों के लिए पहले से ठहराया का अर्थ क्या है? सबसे पहले, उद्धार जो हम समझते हैं उससे कहीं बड़ा है। आपका उद्धार कोई छोटी-मोटी घटना नहीं है, परन्तु एक अनन्त योजना का अंश है। परमेश्वर का वचन कहता है कि सारे अनन्तकाल से परमेश्वर जानता था कि हम उसके पुत्र के स्वरूप में हो जाएँगे। कभी भी उद्धार को कोई छोटी बात मत समझो। यह बड़ी चीज है, हमारी समझ से बड़ी, हम एक महान अनन्त योजना का हिस्सा हैं।

परमेश्वर हमारी परेशानियों से बड़ा है

दूसरा: पहले से ठहराया का अर्थ है कि परमेश्वर हमारी परीक्षाओं और परेशानियों से कहीं बड़ा है। रोमियों 8:31 पर ध्यान दो, "अतः हम इन बातों के विषय में क्या कहें?" क्या बातें? बातें कि हम पहले से जाने, पहले से ठहराए, बुलाए, धर्मी ठहराए और पहले ही महिमा पाए हैं। "यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है? रोमियों 8 के बाकी के भाग में पौलुस बड़ी सुन्दरता के साथ वर्णन करता है कि परमेश्वर हमारी तकलीफों और परीक्षाओं से कहीं बड़ा है। आपको आज चोट लग सकती है। सबकुछ नियंत्रण से बाहर हो रहा होगा। मैं चाहता हूँ आप जान लें कि यदि आपका उद्धार हुआ है तो आप कुछ अनन्त और बड़ा और अदभुत और महिमायुक्त का एक हिस्सा हैं। परमेश्वर हर उस समस्या से बड़ा है जिसमें से आप गुज़र रहे हैं।

कोई भी मसीही खोएगा नहीं

तीसरा: इसका अर्थ है कि कोई भी सच्चा मसीही खोएगा नहीं। परमेश्वर से कोई अलगाव नहीं होगा। परमेश्वर ने इस महान उद्धार को आरम्भ किया है और वह इसे समाप्ति तक देखेगा। इन चीजों के होने से पहले ही परमेश्वर जानता था क्या हो रहा है। मैं विश्वास नहीं कर सकता कि कोई सच्चा मसीही खो सकता है क्योंकि वह एक महान अनन्त योजना का हिस्सा है। परमेश्वर के उद्धार की योजना अनन्तकाल से सुरक्षित है। मेम्ना जगत की उत्पत्ति के समय से घात हुआ है (प्रकाशित. 13:8)। परमेश्वर को आश्चर्य नहीं होता। परमेश्वर आपकी या मेरी शक्ति पर निर्भर नहीं है। "जिन्हें धर्मी ठहराया, उन्हें महिमा भी दी" (रोमियों 8:30)। परमेश्वर को पूरा निश्चय है कि हम स्वर्ग जा रहे हैं, कि उसने हमें पहले ही महिमा दी है। हम केवल उस महिमा के प्रकट होने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

हम विश्वास से जीते हैं

यह हमें चौथे उपयोग में लाता है: हमें देखकर नहीं, परन्तु विश्वास से जीना है। परमेश्वर जानता है वह क्या कर रहा है। याकूब देखकर जी रहा था जब उसने कहा, "ये सब विपत्तियाँ मेरे ऊपर आ पड़ी हैं।" (उत्प. 42:36)। वास्तव में सबकुछ उसके भले के लिए काम कर रहा था। इसलिए, देखकर नहीं, विश्वास से चलो, और परमेश्वर को उसका काम करने दो।

हमें परमेश्वर की आज्ञाओं को मानना है

अन्त में, हमें परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करना और उसके उद्देश्यों में सम्मिलित होना है। वह उसकी सुन्दर योजना आपके जीवन में साकार कर रहा है, इसलिए डरो मत, और न ही भयभीत हो। परमेश्वर ने हर चीज का ध्यान रखा है। केवल उस पर भरोसा करो, उसकी आज्ञाओं को मानो और उसके साथ रहो। प्रार्थना करो और विश्वास करो, और किसी दिन, परमेश्वर के सब लोगों के साथ, आप स्वर्ग में होगे - महिमा में!

नया जन्म

तीतुस 3:5 में हम व्यक्तिगत नए जन्म के विषय में पढ़ते हैं: "तो उसने हमारा उद्धार किया; और यह धर्म के कामों के कारण नहीं, जो हम ने आप किए, पर उसकी दया के अनुसार नए जन्म के स्नान और पवित्र आत्मा के हमें नया बनाने के द्वारा हुआ।" उस शब्द "स्नान" से आप बपतिस्मा के विषय में मत सोचिए, क्योंकि नया जन्म बपतिस्मा के द्वारा नहीं होता है। तीतुस 3:5 में "स्नान" आयत के अन्त में "नया बनाने" के समान्तर है: "नए जन्म के स्नान और पवित्र आत्मा के हमें नया बनाने के द्वारा"। व्यक्तिगत नया जन्म उस व्यक्ति के जीवन में पवित्र आत्मा का काम है जो मसीह पर उसके उद्धारकर्त्ता के रूप में भरोसा करता है। तो एक व्यक्तिगत नया जन्म है।

परन्तु विश्वव्यापी नया जन्म भी है। इसके विषय में हमारा प्रभु मत्ती 19:28 में बात करता है: "यीशु ने उनसे कहा, 'मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि नई सृष्टि में जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा के सिंहासन पर बैठेगा, तो तुम भी जो मेरे पीछे हो लिए हो, बारहों सिंहासनों पर बैठकर इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय करोगे।" हमारा प्रभु हमें बताता है कि भविष्य में इस संसार का एक नया जन्म होने वाला है जब वह सिंहासन पर बैठेगा और वह न्याय करेगा और वहाँ महिमा और सिद्धता होगी।

"**नया जन्म**" शब्द का अर्थ है: परमेश्वर का कार्य जिसके द्वारा व्यक्ति के जीवन में जो मसीह में उद्धारकर्त्ता के रूप में भरोसा करता है नया जन्म प्रदान किया जाता है। धर्मी ठहराया जाना मुझे परमेश्वर के सामने एक धर्मी स्थिति देता है; लेपालक मुझे परमेश्वर के सामने व्यस्क स्थिति देता है, परन्तु नया जन्म मेरे जीवन में परमेश्वर का जीवन, परमेश्वर का स्वभाव देता है।

नया जन्म हमें केवल उस स्थान में नहीं पहुँचाता है जहाँ आदम पाप करने से पहले था। नया जन्म हमें नवीनतम जीवन देता है; यह परमेश्वर के जीवन में भागी होना है। यह केवल सुधार नहीं है। यदि नया जन्म केवल सुधार होता तब तो पहली बार जब आप पाप करते तो इसे खो देते थे। नया जन्म परमेश्वर का वो काम है जिसके द्वारा उन व्यक्तियों में परमेश्वर का जीवन डाला जाता है जो मसीह में उनके उद्धारकर्त्ता के रूप में भरोसा करते हैं।

नया जन्म पर यूहन्ना 3 का आदर्श पाठ। "फरीसियों में नीकुदेमुस नाम का एक मनुष्य था, जो यहूदियों का सरदार था। उसने रात को यीशु के पास आकर कहा, हे रब्बी, हम जानते हैं कि तू परमेश्वर की ओर से गुरू होकर आया है, क्योंकि कोई इन चिन्हों को जो तू दिखाता है, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो तो नहीं दिखा सकता। यीशु ने उसको उत्तर दिया, मैं तुझ से सच सच कहता हूँ, यदि कोई नए सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता। नीकुदेमुस ने उस से कहा, मनुष्य जब बूढ़ा हो गया, तो कैसे जन्म ले सकता है? क्या वह अपनी माता के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश करके जन्म ले सकता है? यीशु ने उत्तर दिया, मैं तुझ से सच सच कहता हूँ, जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। क्योंकि जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है; और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है। अचम्भा न कर कि मैं ने तुझ से कहा, तुझे नए सिरे से जन्म लेना अवस्य है। हवा जिधर चाहती है उधर चलती है और तू उसका शब्द सुनता है, परन्तु नहीं जानता कि वह कहाँ से आती और किधर को जाती है? जो कोई आत्मा से जन्मा है वह ऐसा ही है। नीकुदेमुस ने उसको उत्तर दिया, ये बातें कैसे हो सकती हैं।" (आय. 1-9)।

यह परिच्छेद कई सदियों से प्रचार किया गया है और सिखाया गया है। हम इससे परिचित हैं। असल में, मैं सोचता हूँ कि अति-परिचय के कारण हम इसके सच्चे अर्थ से वंचित न रह जाएँ। नये जन्म के बारे में अनेक तथ्य हैं, जिन्हें समझना अवश्य है और वे हमें इस परिच्छेद में दिए गए हैं।

नए जन्म की वास्तविकता

सबसे पहले, हम नए जन्म की वास्तविकता का सामना करते हैं। "जन्म" शब्द यूहन्ना 3:1-9 में आठ बार उपयोग किया गया है। यीशु एक असली अनुभव की बात कर रहे थे - नए जन्म की वास्तविकता। कुछ ऐसे हैं जो हमें बताते हैं कि नए जन्म का यह अनुभव मनोवैज्ञानिक है, कि लोग इस प्रकार का अनुभव यीशु मसीह में विश्वास के बिना भी पा सकते हैं। झूटे धर्म और मनोवैज्ञानिक तरीके हैं जो हमें बताते हैं कि नया जन्म किसी मनोवैज्ञानिक अनुभव के कारण होता है। नया जन्म एक वास्तविकता है; यह शारीरिक जन्म जैसा एक असली अनुभव है।

कोई भी अपने शारीरिक जन्म का इन्कार नहीं कर सकता है और हमें अपने आत्मिक जन्म का इन्कार करने की आवश्यकता नहीं है। यीशु ने कहा कि नया जन्म एक वास्तविकता है। यदि आप उन लोगों से बात करते जिन्होंने यीशु पर भरोसा किया है तो जान लेते कि यह कितना असली है। पतरस से पूछो, वह जानता था कि यीशु मसीह में विश्वास करना और नया जन्म अनुभव करना क्या होता है। क्रूस पर से चोर यीशु की ओर फिरा और उसने कहा, "हे यीशु, जब तू अपने राज्य में आए तो मेरी सुधि लेना"

(लूका 23:42 देखो)। मसीह में उसके विश्वास के कारण उसका नया जन्म हुआ। उससे पूछो कि यह नया जन्म था या नहीं। तरसुस के, प्रेरित पौलुस से पूछो जो उसके समय का प्रमुख जवान यहूदी रब्बी था, जो कलीसिया को सता रहा था जब वह यीशु से मिला। उसने अपना भरोसा यीशु में डाला और उसका नया जन्म हुआ। यह एक असली अनुभव था।

जब हमारा प्रभु पृथ्वी पर सेवा कर रहा था तब उस समय सबके पास जीवन की समस्याओं के कुछ-न-कुछ उत्तर थे। रोमी कहते थे कि जीवन की समस्याओं को हल करने का तरीका व्यवस्था है और सेना द्वारा व्यवस्था लाई जा सकती है। यूनानी कहते थे, नहीं, समस्याओं को हल करने का तरीका बुद्धि है। लोगों को स्कूल, समझ और दर्शनशास्त्र चाहिए। निस्संदेह, यहूदी लोग कह रहे थे, नहीं, उत्तर धर्म है। परन्तु आपको बलिदान, याजकपन, और मन्दिर चाहिए। यीशु ने कहा उत्तर हृदय में है। व्यवस्था हृदय को कभी भी बदलेगी नहीं; बुद्धि हृदय को कभी बदलेगी नहीं; धर्म हृदय को कभी बदलेगा नहीं परन्तु नया जन्म बदलेगा। नए जन्म की वास्तविकता, सुसमाचार यह है: तुम जीवन दोबारा आरम्भ कर सकते हो। क्योंकि नया जन्म जैसी चीज है, इसलिए तुम्हारा नया जन्म हो सकता है।

नए जन्म की सरलता

अगली बात नए जन्म की सरलता है। हमारे प्रभु यीशु ने जब एक व्यक्ति का उद्धार होता है तब क्या होता है को चित्रित करने के लिए जन्म का सरल उदाहरण उपयोग किया। हालाँकि निकुदेमुस इस्राएल का शिक्षक था, वह समझ नहीं पाया प्रभु क्या कह रहे थे, "मनुष्य जब बूढ़ा हो गया, तो कैसे जन्म ले सकता है? क्या वह अपनी माता के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश करके जन्म ले सकता है? (यूहन्ना 3:3, 4 देखो)। हमारा प्रभु आत्मिक बात कर रहे थे, परन्तु निकुदेमुस ने इसे कुछ शारीरिक समझा। यूहन्ना 4 में, जब हमारा प्रभु कूँए पर स्त्री से बात कर रहे थे, तब उसने जीवित जल की बात की। उसने कहा, "यदि तू माँगती, तो मैं तुझे जीवन का जल देता, और तू अनन्तकाल तक प्यासी न होगी।" (यूहन्न 4:10, 14 देखो)। वह आत्मिक रूप से बोल रहा था, परन्तु उसने उसे अक्षरशः और भौतिक रूप से लिया और उसने कहा, "तेरे पास जल भरने को कुछ है भी नहीं, तो फिर वह जीवन का जल तेरे पास कहाँ से आया?" (आय. 11 देखो)।

यूहन्ना 6 में, हमारा प्रभु जीवन की रोटी, उसके माँस खाने और उसका लहू पीने की बात कर रहे थे। यहूदियों को यह बुरा लगा। परन्तु वह भौतिक बातें नहीं बोल रहा था। वह आप हमें बताता है कि यह आत्मा है जो जीवन देता है, शरीर से कुछ लाभ नहीं (यूहन्ना 6:63)। जब यीशु जन्म के विषय में बोला तो निकुदेमुस ने उसे अक्षरशः लिया। यीशु ने यूहन्ना 3:5, 6 में उत्तर दिया, "जब तक कोई मनुष्य जल (शारीरिक जन्म) और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। क्योंकि जो शरीर (शारीरिक जन्म) से जन्मा है, वह शरीर है; और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है। हमारा प्रभु कह रहा था, "निकुदेमुस, कृपया शारीरिक और भौतिक पर अधिक जोर मत दो, मैं आत्मिक बातें कर रहा हूँ।"

दो माता-पिता यह नया जन्म रचते हैं - परमेश्वर का आत्मा और परमेश्वर का वचन, याकूब 1:8 और 1 पतरस 1:23 के अनुसार। हम परमेश्वर के वचन, परमेश्वर के जीवित वचन से दोबारा जन्मे थे। परमेश्वर का आत्मा परमेश्वर का वचन लेता है और परमेश्वर के वचन को प्रकट करता है। और जब आप यीशु मसीह पर अपने उद्धारकर्त्ता और प्रभु के रूप में भरोसा करते हो, तब आपके हृदय में एक चमत्कार होता है - आपका नया जन्म होता है। दो "आत्मिक" माता-पिता जो इस जन्म को सम्भव करते हैं परमेश्वर का आत्मा और परमेश्वर का वचन हैं।

बाइबल यूहन्ना 1:13 में बिलकुल स्पष्ट करती है कि हम शरीर से नहीं जन्में है, हम मनुष्य की इच्छा से नहीं जन्में हैं, हम अपने प्रयत्नों से नहीं जन्में हैं। कोई बच्चा अपने आप को पैदा नहीं कर सकता। हम परमेश्वर के आत्मा से जन्में हैं। रहस्य शामिल है। मैं मानता हूँ। यूहन्ना 3:8 में मसीह कहता है, "हवा जिधर चाहती है उधर चलती है और तू उसका शब्द सुनता है, परन्तु नहीं जानता कि वह कहाँ से आती और किधर को जाती है? जो कोई आत्मा से जन्मा है वह ऐसा ही है।" वह हवा की तुलना पवित्र आत्मा से नहीं कर रहा है, हालाँकि यह एक उचित उदाहरण है। वह विश्वासियों की तुलना हवा से कर रहा है। "जो कोई आत्मा से जन्मा है वह ऐसा ही है।" शारीरिक जन्म में एक रहस्य है; आत्मिक जन्म में भी एक रहस्य है। परन्तु देखो कि यह कितना सरल है। यीशु मसीह पर भरोसा करो और तुम्हारा नया जन्म हो जाएगा।

नए जन्म की प्रतिष्ठा

तीसरा तथ्य हमारे ध्यान में आता है - नए जन्म की प्रतिष्ठा। अनुवाद किए गए शब्द "नया जन्म" को "ऊपर से जन्मा" भी कह सकते हैं। हम राजा से जन्में बच्चे हैं, परमेश्वर के बच्चे हैं। "परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास करते हैं।" (यूहन्ना 1:12)। "देखो, पिता ने हम से कैसा प्रेम किया है कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएँ; और हम हैं भी।" (1 यूहन्ना 3:1)। नए जन्म की प्रतिष्ठा एक आश्चर्यचकित करनेवाली चीज है।

बच्चे उनके माता-पिता पर गर्व करते हैं। यदि हमारा कोई रिश्तेदार है जो कोई बड़ा आदमी है तो हमें उसके बारे में बात करना अच्छा लगता है। आप और मैं नए जन्म की प्रतिष्ठा में भागी होते हैं; हम परमेश्वर की सन्तान हैं - परमेश्वर जिसने सृष्टि की रचना की है, हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर और पिता। हम उसके परिवार में हैं। हम उसके स्वभाव में शामिल होते हैं। मुझ में मेरे माता-पिता का स्वभाव है और मेरे बच्चों में मेरा स्वभाव है। हम में परमेश्वर का स्वभाव है क्योंकि हमारा ऊपर से जन्म हुआ है।
जब आप परमेश्वर की एक सन्तान हैं और आप में परमेश्वर का स्वभाव है तब आपको उसी प्रकार जीना चाहिए जैसा परमेश्वर चाहता है आप जीएँ। परमेश्वर प्रेम है और इसलिए हम प्रेम करते हैं; परमेश्वर ज्योति है और हम ज्योति की सन्तान के समान चलते हैं। हम में उसका स्वभाव और उसका जीवन है और लोग हमारे जीवनों में अन्तर देख सकते हैं।

नए जन्म की अत्यावश्यकता

अन्त में नए जन्म की अत्यावश्यकता। यीशु ने कहा, "तुझे नए सिरे से जन्म लेना अवश्य है" (यूहन्ना 3:7)। यह सुझाव नहीं है; यह एक आज्ञा है। यह ऐसा विचार नहीं जिसके बारे में हम सोच सकते हैं, यह बिलकुल अत्यावश्यक है - हमारा नया जन्म होना अवश्य है। नया जन्म तात्कालिक है; यह एक प्रक्रिया नहीं है। तैयारी की एक प्रक्रिया हो सकती है; आप में परमेश्वर को जानने की इच्छा या पाप से छुटकारा पाने की चिन्ता हो सकती है। परन्तु जन्म तात्कालिक, अलौकिक और स्थाई होता है। एक बार आपका जन्म हो जाए, तो इसे बदला नहीं जा सकता है। आप अवज्ञाकारी हो सकते हो; आप वैसे न बढ़ो जैसे बढ़ना चाहिए, परन्तु आप वापस नहीं जा सकते हो। हमारा आत्मिक जन्म स्थाई और अलौकिक है और इसमें एक अत्यावश्यकता है। "यदि कोई नए सिरे से न जन्में तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता" (आय. 3)। इस संसार का ईश्वर उनको अंधा करता है जो विश्वास नहीं करते। जब तक आपका नया जन्म न हो आप देख नहीं सकते आप क्या खो रहे हो; आप देख नहीं सकते आप वास्तव में क्या हो; आप वह देख नहीं सकते जो परमेश्वर के पास आपके लिए है। आप का नया जन्म होना अवश्य है, न केवल परमेश्वर के राज्य को देखने के लिए, परन्तु परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए। "जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्में तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता" (आय. 5)।
जब आपका पहली बार जन्म हुआ था तब आप ने पाप और शैतान के राज्य में प्रवेश किया था। आप इस संसार के ईश्वर के अनुसार जी रहे थे और आप शैतान के आदेश मान रहे थे। परन्तु जब आपने नए जन्म के द्वारा परमेश्वर के राज्य में प्रवेश किया, तब आप इस महिमायुक्त राज्य का हिस्सा बन गए। अनन्त न्याय से बचने का तरीका मसीह में विश्वास करना ही है। "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (आय. 16)। यह वचन प्रेम से आरम्भ होता है और नष्ट के साथ समाप्त होता है - "नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।"
क्या आप इसके विषय में सोच रहे थे? क्या परमेश्वर आप से बातें कर रहा था? नए जन्म की सुरक्षा है कि आप बदल जाएँगे; जब आप मसीह में भरोसा करेंगे परमेश्वर आपको बदल देगा। नए जन्म की सरलता है कि यह धर्म या भले कामों के द्वारा नहीं है, परन्तु यीशु मसीह में उद्धारकर्त्ता के रूप में भरोसा करने से है। परमेश्वर की सन्तान बनने और नए जन्म की प्रतिष्ठा का आनन्द लेने की कल्पना करो! नए जन्म की अत्यावश्यकता है कि आपका नया जन्म होना अवश्य है। यदि परमेश्वर आपसे इस विषय में बात कर रहा था तो इसी समय प्रभु यीशु मसीह के लिए अपना हृदय खोलो और उसे अपने व्यक्तिगत प्रभु और उद्धारकर्त्ता के रूप में स्वीकार करो!!!

महिमा पाना – परमेश्वर की योजना की समाप्ति

एक सुहावने गर्मी के दिन मेरी पत्नि और मैं संसार के सबसे प्रसिद्ध कब्रिस्तान में गए। यह कब्रिस्तान यूरोप में है। जैसे मैं वहाँ प्राचीन कब्रों के बीच खड़ा था, मुझे एक कविता का एक बन्द याद आया: कुलचिन्ह की डींग, बल की शान, और ये सब सुन्दरता, ये सब जो दौलत ने कभी दिया, अनिवार्य घड़ी की प्रतीक्षा करता है, महिमा के पथ कब्र को ही जाते हैं।
कवि सही था जब उसने यह लिखा। जहाँ तक मनुष्य का प्रश्न है, उसकी सारी महिमा कब्र में समाप्त होती है। "क्योंकि तुम ने नाशवान नहीं पर अविनाशी बीज से, परमेश्वर के जीवते और सदा ठहरनेवाले वचन के द्वारा नया जन्म पाया है। क्योंकि 'हर प्राणी घास के समान है, और उसकी सारी शोभा घास के फूल के समान है। घास सूख जाती है, और फूल झड़ जाता है, परन्तु प्रभु का

वचन युगानुयुग स्थिर रहता है।' और यही सुसमाचार का वचन है जो तुम्हें सुनाया गया है।" (1 पतरस 1:23-25)। मनुष्य की महिमा बनी नहीं रहती क्योंकि मनुष्य की महिमा पर पाप का कलंक लगा हुआ है।

एक समय था जब मनुष्य परमेश्वर के साथ चलता था और उसकी महिमा में भागी था परन्तु अब सबने पाप किया है और उसकी महिमा से रहित हैं। (रोमियों 3:23)। **महिमा पाना** बाइबल में एक महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त है। परमेश्वर की महिमा का अर्थ है: परमेश्वर जो है उसका कुल जोड़, उसके सत्व की अभिव्यक्ति। महिमा परमेश्वर जो सबकुछ करता है उसका परिणाम है। केवल परमेश्वर की ही महिमा है और केवल परमेश्वर ही महिमा के योग्य है। परन्तु मसीहियों के रूप में हम परमेश्वर की महिमा में भागी होते हैं। रोमियों 8:30 कहता है, "जिन्हें धर्मी ठहराया, उन्हें महिमा भी दी है।" विश्वासियों के रूप में आप और मैं परमेश्वर की महिमा में भागी होते हैं।

परमेश्वर उसकी अनन्त योजना समाप्त करता है

महिमा पाने के इस सिद्धान्त का वास्तव में अर्थ क्या है? सबसे पहले, इसका अर्थ है कि परमेश्वर उसकी अनन्त योजना समाप्त करता है। मैं आशा करता हूँ कि जैसे हम मसीही जीवन के कुछ मुख्य शब्दों का अध्ययन कर रहे थे तो आप समझ गए होंगे कि उद्धार इतिहास का कोई छोटी घटना नहीं है; उद्धार अनन्तकाल से ठहराए एक महान योजना का हिस्सा है। आपका उद्धार कोई संयोग नहीं है, आपका उद्धार कोई छोटी चीज नहीं है। आपका उद्धार परमेश्वर के महान अनन्त योजना का एक हिस्सा है और उस योजना का अन्त महिमा पाना है। "जिन्हें धर्मी ठहराया, उन्हें महिमा भी दी है" रोमियों 8:30 कहता है। इफिसियों अध्याय एक में पौलुस हमें तीन बार याद दिलाता है कि उद्धार परमेश्वर की महिमा के लिए है। आय. 6 में वह कहता है, "कि उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो, जिसे उसने हमें उस प्रिय में सेंत-मेंत दिया है।" आयत 12 कहती है, "कि हम, जिन्होंने पहले से मसीह पर आशा रखी थी, उसकी महिमा की स्थुति के कारण हों।" आयत 14 कहती है, "वह उसके मोल लिए हुओं के छुटकारे के लिए हमारी मीरास का बयाना है, कि उसकी महिमा की स्तुति हो।"

किसी दिन प्रभु यीशु मसीह लौटने वाला है और वह सबकुछ ठीक करेगा। शैतान सबकुछ तोड़ने-फोड़ने में व्यस्त है और उसे पापियों से बहुत सारी मदद मिल रही है। परन्तु एक दिन प्रभु यीशु मसीह सबकुछ ठीक करने वाला है। इफि. 1:9-10 हमें बताता है, "क्योंकि उसने अपनी इच्छा का भेद उस भले अभिप्राय के अनुसार हमें बताया, जिसे उसने अपने आप में ठान लिया था कि समयों के पूरे होने का ऐसा प्रबन्ध हो कि जो कुछ स्वर्ग में है और जो कुछ पृथ्वी पर है, सबकुछ वह मसीह में एकत्र करे।" यीशु मसीह सबकुछ एकत्र करने वाला है और हम सब उसकी महिमा में प्रवेश करेंगे।

सारी सृष्टि में सबसे बड़ा उद्देश्य मनुष्य की नहीं, परन्तु परमेश्वर की महिमा है। मनुष्य में तो कुछ भी महिमा करने के योग्य नहीं है। जब परमेश्वर कुछ अपनी महिमा के लिए करता है तो वह स्वार्थी या अहंकारी नहीं हो रहा है। कोई भी परमेश्वर के अलावा, और कोई भी परमेश्वर से बड़ा नहीं है। यदि परमेश्वर से किसी छोटी की महिमा हो तो यह अच्छा नहीं होगा। परमेश्वर जैसा वह महान है सारी महिमा और सारी स्तुति और सारे आदर के योग्य है!!!

असल में स्वर्ग में वे यही गा रहे हैं। "हे हमारे प्रभु और परमेश्वर, तू ही महिमा और आदर और सामर्थ्य के योग्य है; क्योंकि तू ही ने सब वस्तुएँ सृजीं और तेरी ही इच्छा से थीं और सृजी गईं" (प्रकाशित. 4:11)। क्या आप किसी मनुष्य को देखकर कह सकते हो, "तू महिमा और आदर के योग्य है? "और वे ऊँचे शब्द से कहते थे,'वध किया हुआ मेम्ना ही सामर्थ्य और धन और ज्ञान और शक्ति और आदर और महिमा और धन्यवाद के योग्य है" (प्रकाशित. 5:12)। आप सृष्टि में परमेश्वर की महिमा से बड़ा कोई उद्देश्य नहीं पा सकते हैं। महिमा पाने का अर्थ है: कि परमेश्वर उसकी अनन्त योजना समाप्त करता है!

आप इस समय दुखों में होंगे, परन्तु बाइबल के अनुसार मैं आपको याद दिलाना चाहता हूँ कि, दुख हमें महिमा में ले जाते हैं। क्योंकि अनुग्रह का परमेश्वर, जिसने हमें मसीह यीशु में उसकी अनन्त महिमा में बुलाया है, हमारे थोड़ी देर दुख उठाने के बाद" (1 कुरिं. 6:10)। "क्योंकि मैं समझता हूँ कि इस समय के दुख और क्लेश उस महिमा के सामने, जो हम पर प्रकट होनेवाली है, कुछ भी नहीं हैं।" (रोमियों 8:18)। हम यहाँ दुख उठाते हैं, परन्तु इसका अर्थ वहाँ महिमा है और परमेश्वर हमारे दुखों की क्षतिपूर्ति करने वाला है।

मन में रखो कि सारे संसार में सबसे बड़ा उद्देश्य परमेश्वर की महिमा है। यीशु केवल लोगों को पाप से छुड़ाने के लिए नहीं मरा था। न ही वह क्रूस पर केवल लोगों के जीवन बदलने और उनके परिवार ठीक करने के लिए मरा था। वह मरा था ताकि परमेश्वर की महिमा हो। जब आप सुसमाचार प्रचार के काम में लगे होते हैं, तो मन में रखो कि यह सेवा परिणाम प्राप्त करने के लिए नहीं है। यह आँकड़ों की घोषणा करने के लिए नहीं है। यह परमेश्वर की महिमा करने के लिए है!

मसीह उसके बलिदान के लिए इनाम पाता है

महिमा पाने का अर्थ है कि परमेश्वर उसकी अनन्त योजना समाप्त करता है। इसका अर्थ है कि मसीह उसके बलिदान के लिए इनाम पाता है। यहूदा 24 में हम पढ़ते हैं, "अब जो तुम्हें ठोकर खाने से बचा सकता है, और अपनी महिमा की भरपूरी के सामने मगन और निर्दष करके खड़ा कर सकता है।" किसी दिन प्रभु यीशु मसीह कलीसिया को पिता के सामने बड़े आनन्द के साथ प्रस्तुत करेगा। यह इब्रानियों 12:2 के साथ मेल खाता है "जिसने उस आनन्द के लिए जो उसके सामने धरा था।" कौन सा आनन्द उसके सामने धरा था? उसकी दुल्हन को महिमा में लाने का आनन्द।

हमारे प्रभु यीशु मसीह ने क्रूस पर केवल शारीरिक दुख ही नहीं उठाया था। और लोग भी क्रूस पर चढ़ाए जाते और दुख उठाते थे। परन्तु उसने आत्मिक रूप से भी दुख उठाया था। उसे आपको और मेरे लिए पाप ठहराया गया था। हमारा प्रभु हमारे लिए नरक की पीड़ाओं में से गुज़रा था। इसके लिए उसका इनाम क्या है? उसका इनाम सारे अनन्तकाल भर में कलीसिया में उसकी महिमा।

जब हमारा प्रभु यीशु मसीह लौटेगा तब हम उसके साथ उसकी महिमा में भाग लेंगे। 2 थिस्स. 1:10 कहता है, "यह उस दिन होगा, जब वह हमारे पवित्र लोगों में महिमा पाने और विश्वास करनेवालों में आश्चर्य का कारण होने को आएगा।" वह उसके सन्तों में महिमा पाने वाला है। महिमा पाने का अर्थ है कि परमेश्वर उसकी अनन्त योजना को समाप्त करता है और कि मसीह को उसके बलिदान के लिए इनाम मिलता है।

मसीहियों का उद्धार पूरा होगा

महिमा पाने का अर्थ यह भी है कि मसीही उनके उद्धार की पूर्ति को अनुभव करेंगे। नया जन्म पाना तो शुरूआत ही है। जब आप मसीह में उद्धारकर्त्ता के रूप में भरोसा करते हैं और प्रभु के रूप में उसकी आज्ञापालन करते हैं, तो यह तो केवल शुरूआत ही है और उत्तम तो आनेवाला है।

रोमियों 8:30 में पढ़ते हैं कि अन्तिम अनुभव महिमा पाना है! "जिन्हें धर्मी ठहराया, उन्हें महिमा भी दी है।" "क्योंकि सृष्टि बड़ी आशाभरी दृष्टि से परमेश्वर के पुत्रों के प्रकट होने की बाट जो रही है।" आय. 19। इस वचन में कई बड़े-बड़े शब्द हैं। वह कह रहा है कि सारी सृष्टि बड़ी उत्सुकता के साथ खड़ी है, हमारी महिमा की प्रतीक्षा कर रही है। क्यों? जब हम महिमा पाएँगे तब सृष्टि भी पाप के बन्धन से छूट जाएगी। मसीही उनके उद्धार की पूर्ति को अनुभव करेंगे।

शुरू में, इसका अर्थ एक नया शरीर है। परमेश्वर हमारे शरीरों का आज उद्धार नहीं कर रहा है। वह हमारे शरीरों को पाप से छुड़ा रहा है और उन्हें अपनी महिमा के लिए उपयोग कर रहा है, परन्तु आज परमेश्वर की प्रमुख सेवा शरीरों के लिए नहीं है। हमारे शरीरों का छुटकारा भविष्य में होगा। परमेश्वर उसकी महिमा के लिए चरित्र बनाने और आत्मिक जीवन बनाने को महत्त्व दे रहा है। परन्तु एक दिन हमें नए शरीर मिलेंगे। यह नाशवान अविनाशी को पहन लेगा और अपमान महिमा को पहन लेगा। एक दिन हम भी मसीह की देह के समान महिमा की देह पाएँगे। परमेश्वर सम्पूर्ण मनुष्य का उद्धार करता है। परमेश्वर को केवल आत्माएँ ही नहीं चाहिए। परमेश्वर सम्पूर्ण मनुष्य का उद्धार करता है। एक दिन हमारा पूरा उद्धार होगा।

इसका अर्थ एक नया वातावरण, एक नवीनतम घर भी है। जब आप निराश होते हो तब बैठ जाओ और प्रकाशितवाक्य 21 और 22 पढ़ो। यूहन्ना कहता है, "फिर मैं ने नए आकाश और नई पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहला आकाश और पहली पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा। फिर मैं ने पवित्र नगर नए यरूशलेम को स्वर्ग से परमेश्वर के पास से उतरते देखा। वह उस दुल्हिन के समान थी जो अपने पति के लिए सिंगार किए हो। फिर मैं ने सिंहासन में से किसी को ऊँचे शब्द से यह कहते सुना, 'देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है। वह उनके साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा, और उनका परमेश्वर होगा।' वह उनकी आँखों से सब आँसू पोंछ डालेगा; और इसके बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहली बातें जाती रहीं।" (प्रकाशित. 21:1-4)। महिमा पाने का अर्थ है कि हम एक नवीनतम वातावरण में प्रवेश करने वाले हैं।

जब परमेश्वर हमारे शरीरों की महिमा करेगा तो वह हमें रहने के लिए एक महिमामय घर भी देगा, और वह महिमामय घर स्वर्ग है। स्वर्ग में न पीड़ा, न मृत्यु, न अन्धकार, न दुख, न रोना होगा। स्वर्ग वह स्थान है जहाँ आप एक मुरदाघर या कब्रिस्तान भी नहीं पाएँगे, जहाँ न कोई अस्पताल या औषधालय होंगे, जहाँ कोई आँसू नहीं गिरेंगे और कोई शंका कभी आकाश को ढँकेगी नहीं। यह यशस्वी मिलन का स्थान होगा जब हम प्रभु यीशु मसीह और अपने प्रिय जनों से जो हम से पहले गए हैं मिलेंगे। महिमा पाने का अर्थ एक नया घर, एक नया वातावरण है।

एक नई सेवा

और अन्त में महिमा पाने का अर्थ एक नई सेवा है। यदि आप का यह विचार है कि स्वर्ग केवल बादलों और वीणाओं और वस्त्रों का स्थान है, तब तो अच्छा है आप जाग जाओ, क्योंकि प्रकासिवाक्य 7:15 हमें बताता है कि, "इसी कारण वे परमेश्वर के सिंहासन के सामने हैं, और उसके मन्दिर में दिन-रात उसकी सेवा करते हैं।" मुझे पता नहीं है कि सारे अनन्तकाल में हम क्या करने वाले हैं

परन्तु यह कुछ अदभुत ही होगा। एक सारी सृष्टि हमारे लिए खुल जाएगी। विभिन्न लोगों ने स्वर्ग में हमारी सेवा के विषय में अनुमान लगाए हैं, परन्तु मैं अनुमान लगाने वाला नहीं हूँ। मैं सिर्फ इतना जानता हूँ कि हम उसकी सेवा करेंगे। इसी लिए उसने हमारा उद्धार किया है। हमारे पास परमेश्वर के अपने ज्ञान में बढ़ने और उसके सत्य को गहराई से समझने के लिए सारा अनन्तकाल है। हम स्वर्गदूतों और पूर्वजों और परमेश्वर के सन्तों के संगति को अनुभव करनेवाले हैं, और हम एक नई सेवा में प्रवेश करने वाले हैं। वह हमें इस समय हमारी सेवा के लिए तैयार कर रहा है। आप सोचते होंगे, "मैं परीक्षाओं के इन समयों में से क्यों गुज़र रहा हूँ ?" वह आपको महिमा के लिए तैयार कर रहा है।

महिमा पाने का सिद्धान्त मुझे सुरक्षा की बड़ी भावना देता है। परमेश्वर ने जो आरम्भ किया था समाप्त करने वाला है, और परमेश्वर उसकी कलीसिया को महिमा देने वाला है। दुखों के समयों में यह मुझे बहुत प्रोत्साहन देता है। जैसे हम कठिनाई के समयों में से गुज़रते हैं, हम ऊपर देख सकते हैं क्योंकि हम जानते हैं यीशु आ रहा है। हम जानते हैं कि आज के हमारे दुख उस महिमा के सामने जो हम पर प्रकट होनेवाली है कुछ भी नहीं हैं (रोमियों 8:18 देखो)। मेरे लिए महिमा पाना सुरक्षा, दुखों में प्रोत्साहन और सेवा के लिए प्रेरणा है।

"इसलिए हे मेरे प्रिय भाइयो, दृढ़ और अटल रहो, और प्रभु के काम में सर्वदा बढ़ते जाओ, क्योंकि यह जानते हो कि तुम्हारा परिश्रम प्रभु में व्यर्थ नहीं है।" (1 कुरिं. 15:58)। यह उपदेश पुनरुत्थान और भावी महिमा के एक महान अध्याय के अन्त में है। सेवा करते रहो। हिम्मत मत हारो, उत्तम तो अभी बाकी है। परमेश्वर की योजना समाप्त होगी, और आप और मैं स्वर्ग में किसी दिन महिमा की सम्पूर्ण महिमा में भाग लेने वाले हैं।

<u>धार्मिकता</u> – एक सही स्थिति प्राप्त करना

"विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़..." (1 तीमु. 6:12)। विश्वास की लड़ाई एक ही ऐसी लड़ाई है जिसे लड़ने के लिए मसीही को कहा गया है। मुझे लगता है कुछ लोगों ने इस वचन को, ठीक, पढ़ा है, परन्तु उन्होंने "लड़ाई" शब्द को ही पढ़ा है। वे वहीं रुक गए हैं और लड़ने लगे हैं। दूसरों को लगा, यह कहता है, "कुछ मसीहियों से लड़ो।" परन्तु परमेश्वर का वचन "विश्वास की अच्छी कुश्ती" के बारे में बात कर रहा है।

"अतः विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है।" (रोमियों 10:17)। विश्वास का सबसे बड़ा शत्रु परमेश्वर के वचन की समझ की कमी है, क्योंकि विश्वास सुनने से और परमेश्वर के वचन के सुनने से आता है। जैसे ही परमेश्वर के वचन का प्रकाश मनुष्य के हृदय पर चमकता है, विश्वास है। भजनकार कहता है, "तेरी बातों के खुलने से प्रकाश होता है...।" (भजन 119:130)।

<u>हमारे पास परमेश्वर के वचन के असली ज्ञान के परे विश्वास नहीं हो सकता है।</u>

इस अध्ययन में हम अपने विश्वास में एक बाधा - "धार्मिकता के समझ की कमी - का अध्ययन करेंगे।

पढ़ोः याकूब 5:16-18, परिच्छेद में लिखा है कि एक धर्मी जन की प्रार्थना से बहुत कुछ हो सकता है। "धार्मिकता" (यह क्या है और यह क्या देता है) की समझ की कमी किसी और चीज से अधिक लोगों को बन्धन में रखती है। मेरे विचार से, यह बाइबल का सबसे अधिक गलत समझा गया विषय है।

रोमियों 10:10 कहता है, "क्योंकि धार्मिकता के लिए मन से विश्वास किया जाता है..." और रोमियों 5:17 कहता है, "क्योंकि जब एक मनुष्य के अपराध के कारण मृत्यु ने उस एक ही के द्वारा राज्य किया, तो जो लोग अनुग्रह और धर्मरूपी वरदान बहुतायत से पाते हैं वे एक मनुष्य के, अर्थात् यीशु मसीह के द्वारा अवश्य ही अनन्त जीवन में राज्य करेंगे।"

ध्यान दें कि पौलुस इन वचनों में धार्मिकता के विषय में दो महत्त्वपूर्ण बातें कहता है:

1. मनुष्य हृदय से धार्मिकता के लिए विश्वास करता है।
2. हमें "धार्मिकता का वरदान" मिला है।

पौलुस ने कहा, धार्मिकता एक वरदान है। अनेक बार हम धार्मिकता को भले कामों के साथ जोड़ते हैं। निस्संदेह, बाइबल भले कामों और सही आचरण के विषय में सिखाती है, जो अनुग्रह से उद्धार पाने का फल हैं (इफि. 2:8-10), परन्तु हमारे सारे भले काम और अच्छा आचरण हमें कभी भी धर्मी नहीं बनाएँगे। यदि ऐसा हो सकता तो हमें यीशु की आवश्यकता नहीं होती। परन्तु हम ने

सोचा है कि हमें धार्मिकता में "बढ़ना" है। हम ने सोचा है कि यदि मैं धर्मी बन जाता हूँ तो मेरी प्रार्थनाएँ काम करेंगी। यदि मैं आत्मिक परिपक्वता के किसी स्तर तक पहुँच जाता तो मैं धर्मी होता। परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि मैं प्रभु में बढ़ सकता हूँ और आत्मिक रूप से विकसित हो सकता हूँ, परन्तु क्या आप जानते हो कि आप धार्मिकता में बढ़ नहीं सकते हो?! आप इस समय जितने धर्मी हो उससे अधिक धर्मी नहीं हो सकते हो! आप इस समय जितने धर्मी हो स्वर्ग पहुँचने पर उससे अधिक धर्मी नहीं हो जाओगे।

यह एक चीज है जो हमारे विश्वास में बाधा डालती है। यही चीज - धार्मिकता के विषय में समझ की कमी - के कारण मैं ने अपना जीवन लगभग खो दिया था।

कई वर्ष पहले जब मैं बीमार पड़ा था, और जब पाँच डॉक्टरों ने मुझे मरने के लिए छोड़ दिया था, मैं बाइबल पढ़ने लगा। मैं जानता था कि यदि मुझे कहीं से सहायता मिल सकती है तो यह बाइबल से है। मेरी आत्मा मुझे बताती रही कि मुझे मरना अवश्य नहीं है। (सुनो, आपकी आत्मा उन चीजों को जानती है जिन्हें आपका मन नहीं जानता; विशेषकर तब जब आप परमेश्वर से जन्मे हैं।) मेरे हृदय ने - कुछ मेरे अन्दर - मुझे बताया कि मेरे लिए परमेश्वर के वचन में आशा और सहायता है। तो मैं खुले मन से परमेश्वर के वचन में गया और विश्वास और प्रार्थना के बारे में कुछ चीजें देखने लगा।

मैं मरकुस के ग्यारहवें अध्याय में पहुँचा और विश्वास की उन महान बातों के बारे में पढ़ा जहाँ यीशु कहते हैं, "...जो कोई इस पहाड़ से कहे, तू उखड़ जा, और समुद्र में जा पड़, और अपने मन में सन्देह न करे, वरन् प्रतीति करे कि जो कहता हूँ वह हो जाएगा, तो उसके लिए वही होगा। इसलिए मैं तुम से कहता हूँ कि जो कुछ तुम प्रार्थना करके माँगो, तो प्रतीति कर लो कि तुम्हें मिल गया, और तुम्हारे लिए हो जाएगा।" (मरकुस 11:23-24)। मेरी आत्मा मेरे अन्दर खुशी से नाच उठी। मैं इतना खुश हो गया कि मैं ने विश्वास और प्रार्थना से सम्बंधित सब संदर्भो को खोजने का निश्चय किया। इससे मैं याकूब 5:14-15 में पहुँचा। जब मैं ने कलीसिया के एल्डरों को बुलाने की बात पढ़ी, तो मैं ने सोचा कि चंगा होने के लिए यह करना होगा। (आपको बुलाना अवश्य नहीं है, परन्तु बुला सकते हो)। मेरी आँखों में आँसू भर गए और मैं रोने लगा, क्योंकि बुलाने के लिए कोई नहीं था। प्रभु की स्तुति हो, पवित्र आत्मा हमारा शिक्षक है, और उसने मुझे कुछ याद दिलाया। (जब मैं ने कहा कि पवित्र आत्मा ने मुझ से बात की, तो मेरे कहने का अर्थ है कि जैसे कोई मेरे अन्दर बोला है - मेरी आत्मा में)। उसने कहा, "क्या तुम ने उस आयत पर ध्यान दिया है, 'विश्वास की प्रार्थना के द्वारा रोगी बच जाएगा।"

मैं ने इसे दोबारा देखा और कहा, "हाँ, इसमें तो यही लिखा है।"

और उस आवाज ने मेरे अन्दर कहा, "तुम भी औरों की तरह यह प्रार्थना कर सकते हो।"

मैं इसे देखने लगा! मैं विश्वास करने लगा! परन्तु जब मैं ने आगे "धर्मी जन की प्रार्थना से बहुत कुछ हो सकता है" पढ़ा, तो शैतान ने मेरी समझ की कमी का लाभ उठाकर मुझे हराने की कोशिश की (क्योंकि मुझे पता नहीं था धार्मिकता क्या है और क्या देती है)। उसने मुझ से कहा (और जब मैं कह रहा हूँ कि शैतान ने मुझ से कहा, तो यह ऐसा था जैसा कि कोई मेरे मन में बोल रहा है), "हाँ, ठीक है, तुम विश्वास की यह प्रार्थना कर सकते हो, परन्तु धर्मी हो तब ही। परन्तु यहाँ लिखा है, 'धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से से बहुत कुछ हो सकता है', यदि तुम धर्मी हो तो कर सकते हो। तुम यह प्रार्थना कर सकते हो और अपनी चंगाई पा सकते हो।"

ध्यान दो कि उसने जो मुझे कहा गया था उसका खण्डन नहीं किया, और न ही उसने कहा, "तुम विश्वास की प्रार्थना नहीं कर सकते हो", क्योंकि मुझे विश्वास था मैं कर सकता हूँ। परन्तु उसने दूसरा रास्ता लिया और, निस्संदेह, मेरा गलतियाँ, कमियाँ और असफलताएं याद दिलाई। उसे पता था, मैं नहीं जानता था धार्मिकता क्या है। मैं सोचता था कि यह कोई आत्मिक स्थिति है जिसे मैं अधिक आत्मिक बन कर प्राप्त कर सकूँगा, और मैं जानता था मैं वहाँ अभी वहाँ पहुँचा नहीं हूँ।

शैतान ने मुझे पूछा, "क्या तुम धर्मी हो?" न जानते हुए कि यह क्या है, मैं ने कहा, "नहीं, मैं नहीं हूँ।" जब मैं ने अपने आप को स्वाभाविक नज़रों से देखा तो पाया कि मैं वह नहीं था जिसे धर्मी कहा जा सकता है - मैं इससे कहीं दूर था। तो शैतान की बात मानकर, मैं ने उसे (मेरी धार्मिकता की समझ की कमी के कारण) परमेश्वर की आशीष चुराने दी, जो आशीष परमेश्वर चाहता था मेरी हो।

मैं ने अपने मन में सोचा; यदि आत्मिक रूप से बढ़ने के लिए कुछ और जी सकूँ तो मैं धर्मी हो जाऊँगा। तब तो जब प्रार्थना की बात होगी मैं "सनसनाहट" होऊँगा। परन्तु मुझे निश्चय नहीं था मैं धर्मी हूँ। यह सब कुछ महिनों में घटा था। एक बार मैं याकूब की पुस्तक पढ़ रहा था, "एलिय्याह भी तो हमारे समान दुख-सुख भोगी मनुष्य था..." (याकूब 5:17)। मैं सोचा, मुझे एलिय्याह के विषय में कुछ और पता लगाना चाहिए। यदि वह प्रार्थना करने और उत्तर पाने का उदाहरण है तो मैं उसके उदाहरण का अनुकरण करके परिणाम पा सकता हूँ। वह हमें एक धर्मी मनुष्य के उदाहरण के रूप में दिया गया है।

तो मैं एल्लियाह के बारे में पढ़ने लगा, और जितना अधिक मैं ने पढ़ा, उतना अधिक उसने मुझे मेरे अपने बारे में याद दिलाया। तब मुझे याद आया कि याकूब ने यही कहा था: "एलिय्याह भी तो हमारे समान दुख-सुख भोगी मनुष्य था।" याकूब एलिय्याह की तुलना अपने और दूसरे मसीहियों के साथ जिन्हें वह लिख रहा था कर रहा था।
शैतान ने मुझे कहा, "तुम तो धर्मी नहीं हो और तुम्हारी प्रार्थनाएँ नहीं सुनी जा सकती हैं। तुम गुस्सा हो गए थे और तुम ने थाली को बिस्तर पर से फेंक दिया था। धर्मी व्यक्ति तो ऐसा नहीं करेगा, है ना?" मैं ने एलिय्याह की ओर देखा, जो हमारे समान दुख-सुख भोगी था। उसने बड़े बड़े काम किए थे। उसने प्रार्थना की और स्वर्ग तीन वर्ष और छः महिनों के लिए बन्द हो गया (1 राजा 17:1); उसने बाल के नबियों के साथ प्रतियोगिता की और स्वर्ग से आग गिराई थी; वह प्रार्थना करके बारिश लाया था; परमेश्वर का आत्मा उस पर उतरा था और वह यिज्रेल के मैदान से 23 किलोमीटर दौड़ते हुए राजा के रथ से आगे निकल गया था (1 राजा 18:19-46)। परन्तु जब किसी ने उसे बताया, "ईजेबेल ने कहा है वह कल इस समय तक तेरे सर को कटवा देगी।" (एलिय्याह ने बाल के 450 नबियों के सर कटवा दिए थे, और ईजेबेल उसका सर कटवाना चाहती थी)। एलिय्याह दोबारा दौड़ने लगा। जब वह 23 किलोमीटर दौड़ा था तब प्रभु का हाथ उसके ऊपर था। इस समय जब वह दौड़ा था तब प्रभु का हाथ उस पर नहीं था। यह केवल एलिय्याह दौड़ रहा था और तब तक दौड़ता रहा जब तक थक नहीं गया। वह झाऊ के पेड़ के तले बैठ गया और कहा, "प्रभु, अब मेरा प्राण ले ले।" (1 राजा 19:14)
वह वास्तव में मरना नहीं चाहता था। यदि वह चाहता था तो वहाँ क्यों नहीं रहा जहाँ था? वह उस समय तक मर गया होता। नहीं, वह उतना ही मरना नहीं चाहता था जितना आप ने कभी कहा होगा, 'मैं मर जाता तो अच्छा था।'। एलिय्याह हमारे समान दुख-सुख भोगी मनुष्य था। उसने मुझे मेरी याद दिलाई। वह कभी दोहरी बात करता था, और उसके विचार गलत होते थे। मैं ने कहा, "वह मेरे विचार का धर्मी मनुष्य तो नहीं है।" (परन्तु यहीं तो हम समस्या में पड़ जाते हैं - परमेश्वर के वचन के स्थान पर अपने विचार लगाते हैं)। परमेश्वर उसे धर्मी कैसे कह सकता है? मुझे आश्चर्य हुआ। एलिय्याह कह रहा था, "प्रभु, तू मुझे मरने देगा तो अच्छा है। वैसे भी केवल मैं ही रह गया हूँ। मेरे अलावा बाकी सब धर्मत्यागी हो गए हैं।" (1 राजा 19)। (जानते हो, आज भी ऐसे लोग मिल जाते हैं, "मेरे अलावा किसी के पास कुछ नहीं है - केवल मैं और मेरा छोटा सा गुट।" मैं बहुत खुश हूँ कि यह सत्य नहीं है, क्या आप नहीं हैं? परन्तु उनके सारे गलत विचारों के होते हुए भी, वे परमेश्वर की नज़रों में धर्मी हैं, और वे अभी भी उनकी प्रार्थनाओं के उत्तर पा सकते हैं।) एलिय्याह बोला, "हाँ, केवल मैं ही रह गया हूँ, मेरे अलावा सब धर्मत्यागी बन गए हैं। सबने बाल के आगे घुटने टेक दिए हैं।" (आय. 18)।

परमेश्वर एलिय्याह को धर्मी कैसे कह सकता था? याकूब पवित्र आत्मा की प्रेरणा में, एक प्रार्थना कर रहे धर्मी जन के उदाहरण के लिए एलिय्याह को कैसे ले सकता था? मैं इन बातों के विषय में आश्चर्य करता हुआ, जाँच-पड़ताल करने लगा। मैं ने पाया कि परमेश्वर ने एक व्यवस्था ठहरा रखी थी जिसके द्वारा पुराने नियम के सन्तों के पापों को ढँकने के लिए निर्दोष पशुओं का लहू बहाया जा सकता था। इस प्रकार, परमेश्वर उनके पाप के लिए उनको जिम्मेवार नहीं ठहराता था। वह उन्हें धर्मी मान लेता था। भजन 32:1-2, "क्या ही धन्य है वह जिसका अपराध क्षमा किया गया, और जिसका पाप ढाँपा गया हो। क्या ही धन्य है वह मनुष्य जिसके अधर्म का यहोवा लेखा न ले...।"
तब नए नियम में मैं ने यह लिखा देखा कि हमारे पास एक बेहतर वाचा है जो बेहतर प्रतिज्ञाओं पर स्थापित की गई है। (इब्रा. 8:6)। हम ने कहा है, "हमारे पाप ढाँपे गए हैं।" परन्तु वास्तव में वे ढाँपे गए नहीं है; नया नियम कहता है हम अपने पापों से शुद्ध किए गए हैं! शुद्ध किए गए - हालेलुया - प्रभु यीशु मसीह के लहू के द्वारा! (2 कुरिं. 5:17।
2 कुरिन्थियों 5:21 कहता है, "जो पाप से अज्ञात था, उसी को (परमेश्वर ने यीशु को) उसने हमारे लिए पाप ठहराया कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ।" इन वचनों में "मसीह में" और "उस में" पर ध्यान दो। मसीह में हम नई सृष्टि बन जाते हैं (आय. 17)। उस में हम परमेश्वर की धार्मिकता बन जाते हैं (आय. 21)। हालेलुया!
जब आप का नया जन्म होता है, तब आप, यीशु मसीह में, एक नया मनुष्य, एक नई सृष्टि बन जाते हैं! आप जानते हैं और मैं जानता हूँ कि परमेश्वर कभी भी एक "अधर्मी" नई सृष्टि नहीं बनाता। यह परमेश्वर के काम का अपमान होगा। रोमियों 10:10, जिसका पहले इस शिक्षा में जिक्र किया गया था, कहता है, "क्योंकि धार्मिकता के लिए मन से विश्वास किया जाता है...।" एक मनुष्य वहाँ कैसे पहुँच सकता है। वह धार्मिकता के लिए विश्वास करता है! रोमियों 5:17 हमें बताता है कि हम ने अनुग्रह और "धर्मरूपी वरदान" बहुतायत से पाया है।
धार्मिकता एक वरदान है! जब आपका नया जन्म हुआ था, तब आप यीशु मसीह में एक नया मनुष्य बन गए थे, और आपको उसमें परमेश्वर की धार्मिकता बनाया गया था! **धार्मिकता का अर्थ है:** परमेश्वर के साथ सही स्थिति!
हमारी परमेश्वर के साथ सही स्थिति है, जो हम ने किया उसके कारण नहीं परन्तु जो मसीह ने किया उसके कारण!
यह एक वरदान है! हमें मसीह यीशु में धार्मिकता का एक वरदान मिला है। वरदान ले लो!

रोमियों 3:21-26 पढ़ो।

रोमियों 5:17-21 पढ़ो। वापस, आय. 17 के अनुसार, हम ने अनुग्रह और धर्मरूपी वरदान बहुतायत से पाया है। तब, धार्मिकता एक वरदान है। धार्मिकता परमेश्वर के साथ एक सही स्थिति है। यह क्या देता है? आय. 17 में हम पढ़ते हैं, "जो लोग अनुग्रह और धर्मरूपी वरदान बहुतायत से पाते हैं वे...जीवन में राज्य करेंगे।" जीवन में राज्य करेंगे - इस जीवन में, यहाँ! हमारी एक समस्या यह है कि हम काफी कुछ भविष्य के लिए रखना चाहते हैं और इसलिए अभी के लिए कुछ अधिक नहीं होता। यह रवैया उन गीतों में भी दिखता है जिन्हें हम गाते हैं, जैसे कि, "जब हम स्वर्ग पहुँचेंगे।" परमेश्वर का धन्यवाद हो, हम वहाँ जा रहे हैं, और यह अदभुत होगा, परन्तु बहुत सारी चीजों के लिए हमें वहाँ पहुँचने का इन्तज़ार नहीं करना है। परमेश्वर की स्तुति हो, हम उन्हें अभी पा सकते हैं। और परमेश्वर का धन्यवाद हो, हम मसीह के साथ अनन्तकाल में राज्य करेंगे, परन्तु हमें राज्य करने के लिए तब का इन्तज़ार नहीं करना है।

एक दूसरे बाइबल के अनुवाद में लिखा है, "राजाओं के समान राज्य करना।" हम राजाओं के समान कहाँ राज्य करने वाले हैं? वह कहता है हम "जीवन में राज्य करेंगे" - इस जीवन में! कैसे? यीशु मसीह के द्वारा!

पौलुस ने यह चित्र इस लिए उपयोग किया था क्योंकि उन दिनों राजा होते थे। आज इतने राजा नहीं रह गए हैं, और जो हैं भी, कोई अधिकार, सामर्थ्य नहीं रखते। परन्तु उन दिनों, कई राज्यों के राजा होते थे, उसके राज्य में राजा का वचन अन्तिम अधिकार होता था। बाइबल कहती है हम मसीह यीशु के साथ जीवन में राज्य करेंगे! हम ऐसा क्यों कर सकते हैं? क्योंकि हम मसीह में परमेश्वर की धार्मिकता बनाए गए हैं! यीशु जो धर्मी है हमारी धार्मिकता बन गया।

परमेश्वर के साथ हमारी स्थिति सुरक्षित है:

= हम परमेश्वर की उपस्थिति में इस प्रकार खड़े हो सकते हैं जैसे कि हम ने कभी गलत किया नहीं था।

= हम परमेश्वर की उपस्थिति में इस प्रकार खड़े हो सकते हैं जैसे कि हम ने कभी पाप नहीं किया था।

= हम परमेश्वर की उपस्थिति में दण्ड की किसी भावना या एक आत्मिक हीनभावना के बिना खड़े हो सकते हैं।

कोई आश्चर्य नहीं कि इब्रानियों में लिखा है, "इसलिए आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाब बाँधकर चलें कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएँ जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे।" (इब्रा. 4:16)। हम साहस के साथ परमेश्वर के सिंहासन के निकट आ सकते हैं, **केवल यीशु के कारण**!

इस जीवन में, हम हर जगह शैतान से भिड़ जाते हैं। 2 कुरिन्थियों 4:4 में पौलुस कहता है कि शैतान इस संसार का ईश्वर है। परन्तु हम शैतान के सामने बिना डरे खड़े हो सकते हैं। वह हम पर दोष नहीं लगा सकता। जब आप सच्चाई जानते हैं तो आप शैतान की उपस्थिति में खड़े हो सकते हो क्योंकि आपके पास उसके ऊपर, दुष्टात्माओं पर, और बीमारियों पर अधिकार है, क्योंकि आपको पता है आप यीशु में खड़े थे। हालेलुया! शैतान भी यह जानता है। (जकर्याह 3:1-7)

जब मैं ने यह देखा तो जाना कि शैतान मुझे मेरे ज्ञान की कमी के कारण हरा रहा था। मैं कहने लगा "मैं मसीह में परमेश्वर की धार्मिकता हूँ। मैं वह धर्मी व्यक्ति हूँ जिसके विषय में याकूब बात कर रहा था जब उसने कहा, 'धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है'" (याकूब 5:16)। मैं पहले कहा था, "यदि मैं धर्मी हो जाता हूँ, तो मैं प्रार्थना करने में 'सनसनाहट' होऊँगा।" और आप भी होंगे, यदि आप इसे जानते और इसका लाभ उठा पाते। कभी-कभी लोग सोचते हैं कि सबकुछ अपने आप हो जाएगा। परन्तु जैसा स्वाभाविक में होता है, वैसे आत्मिक रूप से भी कुछ आपका हो सकता है, परन्तु यदि आपको पता नहीं है, तो आपको इसका कुछ भी लाभ नहीं होगा। ज्ञान पर कार्य करने से परिणाम मिलते हैं।

क्या यह मूर्खता नहीं होगा, कि आप एक अंधेरे कमरे में आएँ, इधर-उधर टटोलें, जब एक कुर्सी मिल जाए, तो उस पर बैठ जाएँ और कहें, "पता नहीं कमरे में लाइट क्यों नहीं हो रही है?" कभी-कभी लोग जब आत्मिक चीजों की बात होती है ऐसा ही करते हैं। वे कहते हैं, "यदि ऐसा है तो, मेरे पास क्यों नहीं है?" यह तब होता है जब जो आपको पता है उस पर कार्य करते हो तो प्रकाश आता है। यह है जब कोई पता लगाता है स्विच कहाँ है और उसे चालू करता है। **जब आप पता लगाते हो परमेश्वर का वचन क्या कहता है और जो आपको पता है उस पर कार्य करते हो, तब आपको परिणाम मिलते हैं**!

कभी-कभी लोग कहते हैं, "परमेश्वर उसकी प्रार्थना सुनेगा क्योंकि वह प्रचारक है परन्तु वह मेरी नहीं सुनेगा।" नहीं, उस सुसमाचार प्रचारक, पास्टर या सेवक की परमेश्वर के सामने स्थिति आपकी स्थिति से बेहतर नहीं है। उसके पास केवल एक कर्तव्य है जो आपके पास नहीं है, एक जिम्मेवारी है जो आपके पास नहीं है। वह जिम्मेवारी उसे अधिक धर्मी नहीं बनाती या परमेश्वर के सामने बेहतर स्थिति नहीं देती। परमेश्वर आपकी प्रार्थनाओं से शीघ्र उसकी प्रार्थनाओं को नहीं सुनेगा!

सुनो, परमेश्वर देह के एक सदस्य को दूसरे से अधिक प्रेम नहीं करता। हम में इस के विषय में सब प्रकार के गलत विचार हैं, जैसे कि, "यदि वह मेरे लिए प्रार्थना करेगा तो मेरा काम हो जाएगा, क्योंकि वह असल में परमेश्वर का जन है।" नहीं, हो सकता है

उसने जो उसका है उसका लाभ उठाना सीख लिया है, और आपको अभी सीखना है, परन्तु वह आपसे अधिक धर्मी नहीं है। परमेश्वर जितनी शीघ्रता से आपकी प्रार्थनाओं को सुनेगा उससे अधिक शीघ्रता से उसकी प्रार्थनाओं को नहीं सुनेगा!

मुझे पूर्ण निश्चय है कि इन अन्तिम दिनों में विश्वासियों के समूह उत्पन्न होंगे जो मसीह में उनके स्थान को लेना सीखेंगे - जानेंगे कि उसमें वे कौन और क्या हैं। प्रार्थना योद्धाओं के बारे में बात कीजिए। प्रार्थना के जीवन के बारे में बात कीजिए। परिणाम पाने के बारे में बात कीजिए - वे प्राप्त करने वाले हैं! उन्हें उनके लिए प्रार्थना करने और उत्तर पाने के लिए दूसरों पर निर्भर होने की आवश्यकता नहीं है। परमेश्वर आपकी सुनेगा! हमारी कलीसियाओं में हमें सब प्रार्थनाएँ करना पास्टर के ऊपर छोड़ना सिखाया गया है। परन्तु जब आपको पता चले धार्मिकता क्या है और इसका अर्थ क्या है, तब आप उस संकीर्ण धर्मसिद्धान्त में से निकलकर परमेश्वर की भरपूरता में कदम रखोगे!

कुछ लोग कहते हैं, "मैं इस पवित्रशास्त्र से कह सकता हूँ कि हम ने पूर्व के पापों से क्षमा और धार्मिकता का वरदान पाया है। मैं देखता हूँ कि हम एक धार्मिक नई सृष्टि बनाए गए हैं, परन्तु उन पापों और अपराधों के बारे में क्या कहेंगे जिन्हें मैं ने मसीही बनने के बाद किया है? मेरे बाइबल में से धार्मिकता की इन सच्चाइयों के सीखने के बाद, शैतान ने इन्हीं प्रश्नों को मुझे हराने के लिए इस्तेमाल किया था। उसने कहा, "हाँ, सही है, तुम मसीह में एक नई सृष्टि बनाए गए थे और परमेश्वर ने एक अधर्मी नई सृष्टि नहीं बनाई थी। परन्तु, तुम्हारे उद्धार पाने के बाद, तुम ने गुस्सा किया और बिस्तर पर से थाली फेंक दी।" (वह विवाद नहीं करेगा क्योंकि वचन सत्य है, और वह जानता है कि मैं ने पता लगाया है)। उसने मुझे देर तक गिराए रखा क्योंकि मुझे बुरा लग रहा था कि मसीही बनने के बाद भी मैं चूक गया था। क्या आपने मसीही बनने के बाद चूके हो? आपके उद्धार होने के बाद, क्या आप कभी असफल नहीं हुए, कभी पाप नहीं किया, कभी चूके नहीं?

मैं दोबारा वचन को पढ़ने लगा, और एक यूहन्ना अध्याय एक के नौवी आयत में वह वचन पाया। यूहन्ना यहाँ पापियों को नहीं लिख रहा था; वह मसीहियों को लिख रहा था क्योंकि उसने कहा, 'हे मेरे बालको, मैं ये बातें तुम्हें इसलिए लिखता हूँ कि तुम पाप न करो; और यदि कोई पाप करे, तो पिता के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात् धर्मी यीशु मसीह; और वही हमारे पापों का प्रायश्चित है, और केवल हमारे ही नहीं वरन् सारे जगत के पापों का भी है।" (1 यूहन्ना 2:1-2)। जब एक व्यक्ति पाप करता है, तो वह दण्ड के अधीन हो जाता है और वह धार्मिकता का भाव खो देता है। परन्तु जब वह पाप स्वीकार करता है, "मैं ने पाप किया है, मैं ने परमेश्वर का भरोसा तोड़ा है, प्रभु मुझे क्षमा कर, यीशु के नाम में", तब प्रभु दो काम करता है। यदि परमेश्वर ने केवल उसके पापों को ही क्षमा किया तब भी कोई अधिक लाभ नहीं होगा, क्योंकि वह तब भी दण्ड के अधीन होगा। परन्तु 1 यूहन्ना 1:9 के अनुसार, परमेश्वर: (1) हमारे पापों को क्षमा करता है, और (2) हमें शुद्ध करता है। परमेश्वर हमें किस चीज से शुद्ध करता है? सब अधर्म से! हमारा थोड़ा सा अधर्म? नहीं, पूरा!

तो मैं शैतान के पास यह खबर ले कर आया और उसे भगाया, और वह तब से भाग रहा है। तब तक शैतान मुझे भगा रहा था। यदि मैं शैतान को कहीं भी देखता, तो मैं उससे बचने के लिए बीच में से ही सड़क पार कर जाता। मैं पिछली गली से निकल जाता ताकि उससे टकरा नहीं जाऊँ। (मैं प्रतीकात्मक रूप से बात कर रहा हूँ, आप समझते हैं)। यदि उसने कहीं भी अपना सर निकाला तो मैं मुड़कर भागने के लिए तैयार रहता था। परन्तु, जब **मैं ने पता लगाया कि मसीह में मैं कौन हूँ**, परमेश्वर की स्तुति हो, तो मैं ने लगभग उसे अपने घर के पास आने का निमंत्रण दे दिया था! यदि मैं देखूँगा, तो उससे मिलने के लिए आगे बढूँगा - और अब यह वह है जो मुड़ता है और भागता है, क्योंकि उसे पता चल गया है कि मुझे पता है वचन क्या कहता है!

एक पापी की प्रार्थना

यीशु मसीह को अपने हृदय और जीवन में प्रभु और उद्धारकर्त्ता स्वीकार करने के लिए।

प्रिय स्वर्गीय पिता....

मैं आपके पुत्र यीशु मसीह के नाम से आपके पास आता हूँ। आपका वचन कहता है, "...जो कोई मेरे पास आएगा उसे मैं कभी न निकालूँगा" (यूहन्ना 6:37)। मुझे स्वीकार करने के लिए धन्यवाद। आपने अपने वचन में कहा, "जो कोई प्रभु का नाम लेगा वह उद्धार पाएगा" (रोमियों 10:13)। मैं यीशु मसीह आपके नाम को पुकार रहा हूँ। आपने यह भी कहा, "यदि तू अपने मुँह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे, और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा। क्योंकि धार्मिकता के लिए मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिए मुँह से अंगीकार किया जाता है" (रोमियों 10:9-10)। मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूँ कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र हूँ। मैं विश्वास करता हूँ कि वह मेरे पापों के लिए क्रूस पर मरा और मेरे धर्मी ठहरने के लिए मरे हुओं में से जी उठा। और मैं उसे अपना प्रभु और उद्धारकर्त्ता मानता हूँ। मैं

अपना हृदय और मन प्रभु यीशु तेरे लिए खोलता हूँ, और मेरा प्रभु होने के लिए तुझे आमंत्रित करता हूँ। आओ और मेरे जीवन में रहो, मेरा हृदय शुद्ध करो, और मुझे नया हृदय दो। मुझे अपने पवित्र आत्मा से भर दो, और अपने बाकी के जीवन भर तेरे लिए जीने में मेरी सहायता कर! कि तुझे जानूँ, तुझ से प्रेम करूँ और तेरी सेवा करूँ। प्रभु यीशु मेरा उद्धार करने के लिए, अनन्त जीवन और धार्मिकता के मुफ्त वरदान के लिए धन्यवाद! अपने पवित्र आत्मा से मुझे ले चल। यीशु के नाम में प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

2016

अपनी पहचान जानो

हम कौन हैं पर मनन के लिए पवित्रशास्त्र:

"उस में / मसीह में"

प्रेरितों 17:28 "क्योंकि हम उसी में जीवित रहते, और चलते-फिरते, और स्थिर रहते हैं; जैसा तुम्हारे कितने कवियों ने भी कहा है, 'हम तो उसी के वंशज हैं।'"

प्रेरितों 19:4 "पौलुस ने कहा, यूहन्ना ने यह कहकर मन फिराव का बपतिस्मा दिया कि जो मेरे बाद आनेवाला है, उस पर अर्थात् यीशु पर विश्वास कर।"

रोमियों 3:22 "परमेश्वर की वह धार्मिकता जो यीशु मसीह पर विश्वास करने से सब विश्वास करनेवालों के लिए है।"

प्रेरितों 3:24 "उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंत-मेंत धर्मी ठहराए गए हैं।"

रोमियों 3:26 "इसी समय उसकी धार्मिकता प्रकट हो कि जिससे वह आप ही धर्मी ठहरे, और जो यीशु पर विश्वास करे उसका भी धर्मी ठहराने वाला हो।"

रोमियों 4:5 "परन्तु जो काम नहीं करता वरन् भक्तिहीन के धर्मी ठहरानेवाले पर विश्वास करता है, उसका विश्वास उसके लिए धार्मिकता गिना जाता है।"

रोमियों 6:3अ "क्या तुम नहीं जानते कि हम सब जिन्होंने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया...।"

रोमियों 6:3ब "...उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया।"

रोमियों 6:11 "ऐसे ही तुम भी अपने आप को पाप के लिए तो मरा, परन्तु परमेश्वर के लिए मसीह यीशु में जीवित समझो।"

रोमियों 6:23 "क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनन्त जीवन है।"

रोमियों 8:1 "अतः अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं।"

रोमियों 8:2 "क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया।"

रोमियों 8:39 "न गहराई, और न कोई और सृष्टि हमें परमेश्वर के प्रेम से जो हमारे प्रभु यीशु में है, अलग कर सकेगी।"

रोमियों 9:1 "मैं मसीह में सच कहता हूँ, मैं झूठ नहीं बोल रहा और मेरा विवेक भी पवित्र आत्मा में गवाही देता है।"

रोमियों 10:11 "क्योंकि पवित्रशास्त्र कहता है, जो कोई उस पर विश्वास करेगा वह लज्जित न होगा।"

रोमियों 12:5 "वैसा ही हम जो बहुत हैं, मसीह में एक देह होकर आपस में एक दूसरे के अंग हैं।"

रोमियों 14:14 "मैं जानता हूँ और प्रभु यीशु में मुझे निश्चय है कि कोई वस्तु अपने आप से अशुद्ध नहीं, परन्तु जो उसको अशुद्ध समझता है उसके लिए अशुद्ध है।"

रोमियों 15:17 "इसलिए उन बातों के विषय में जो परमेश्वर से सम्बंध रखती हैं, मैं मसीह यीशु में बड़ाई कर सकता हूँ।"

रोमियों 16:3 "प्रिस्का और अक्विला को जो मसीह यीशु में मेरे सहकर्मी हैं, नमस्कार।"

रोमियों 16:7 "अन्दुनीकुस और युनियास को जो मेरे कुटुम्बी हैं, और मेरे साथ कैद हुए थे और प्रेरितों में नामी हैं, और मुझ से पहले मसीही हुए थे, नमस्कार।"

1 कुरिं. 1:2 "परमेश्वर की उस कलीसिया के नाम जो कुरिन्थुस में है, अर्थात् उनके नाम जो मसीह यीशु में पवित्र किए गए, और पवित्र होने के लिए बुलाए गए हैं और उन सब के नाम भी जो हर जगह हमारे और अपने प्रभु यीशु मसीह के नाम से प्रार्थना करते हैं।"

1 कुरिं. 1:4	मैं तुम्हारे विषय में अपने परमेश्वर का धन्यवाद सदा करता हूँ, इसलिए कि परमेश्वर का यह अनुग्रह तुम पर मसीह यीशु में हुआ।"
1 कुरिं. 1:5	"कि उस में होकर तुम हर बात में, अर्थात् सारे वचन और सारे ज्ञान में धनी किए गए।"
1 कुरिं. 1:30	"परन्तु उसी की ओर से तुम मसीह यीशु में हो, जो परमेश्वर की ओर से हमारे लिए ज्ञान ठहरा, अर्थात् धर्म, और पवित्रता, और छुटकारा।"
1 कुरिं. 4:10	"हम मसीह के लिए मूर्ख हैं, परन्तु तुम मसीह में बुद्धिमान हो; हम निर्बल हैं, परन्तु तुम बलवान हो। तुम आदर पाते हो, परन्तु हम निरादर होते हैं।"
1 कुरिं. 4:15अ	"क्योंकि यदि मसीह में तुम्हारे सिखानेवाले दस हज़ार भी होते, तौभी तुम्हारे पिता बहुत से नहीं...।"
1 कुरिं. 4:15ब	"....इसलिए कि मसीह यीशु में सुसमाचार के द्वारा मैं तुम्हारा पिता हुआ।"
1 कुरिं. 4:17	"इसलिए मैं ने तीमुथियुस को जो प्रभु में मेरा प्रिय और विश्वासयोग्य पुत्र है, तुम्हारे पास भेजा है। वह तुम्हें मसीह में मेरा चरित्र स्मरण कराएगा, जैसे कि मैं हर जगह हर एक कलीसिया में उपदेश करता हूँ।"
1 कुरिं. 15:18	"वरन् जो मसीह में सो गए हैं, वे भी नष्ट हुए।"
1 कुरिं. 15:19	"यदि हम केवल इसी जीवन में मसीह से आशा रखते हैं तो हम सब मनुष्यों से अधिक अभागे हैं।"
1 कुरिं. 15:22	"और जैसे आदम में सब मरते हैं, वैसे ही मसीह में सब जिलाए जाएँगे।"
1 कुरिं. 15:31	"हे भाइयो, मुझे उस घमण्ड की शपथ जो हमारे मसीह यीशु में मैं तुम्हारे विषय में करता हूँ कि मैं प्रतिदिन मरता हूँ।"
1 कुरिं. 16:19	"आसिया की कलीसियाओं की ओर से तुम को नमस्कार; अक्विला और प्रिस्का का और उनके घर की कलीसिया का भी तुम को प्रभु में बहुत बहुत नमस्कार।"
1 कुरिं. 16:24	"मेरा प्रेम मसीह यीशु में तुम सब के साथ रहे। आमीन।"
2 कुरिं. 1:19	"क्योंकि परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह जिसका हमारे द्वारा अर्थात् मेरे और सिलवानुस और तीमुथियुस के द्वारा तुम्हारे बीच में प्रचार हुआ, उसमें हाँ और नहीं दोनों नहीं थे, परन्तु उसमें हाँ ही हाँ हुई।"
2 कुरिं. 1:20	"क्योंकि परमेश्वर में जितनी प्रतिज्ञाएँ हैं, वे सब उसी में हाँ के साथ हैं। इसलिए उसके द्वारा आमीन भी हुई कि हमारे द्वारा परमेश्वर की महिमा हो।"
2 कुरिं. 1:21	"जो हमें तुम्हारे साथ मसीह में दृढ़ करता है, और जिसने हमारा अभिषेक किया वही परमेश्वर है।"
2 कुरिं. 2:14	"परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो जो मसीह में सदा हम को जय के उत्सव में लिए फिरता है, और अपने ज्ञान की सुगन्ध हमारे द्वारा हर जगह फैलाता है।"
2 कुरिं. 2:17	"क्योंकि हम उन बहुतों के समान नहीं जो परमेश्वर के वचन में मिलावट करते हैं; परन्तु मन की सच्चाई से और परमेश्वर की ओर से परमेश्वर को उपस्थित जानकर मसीह में बोलते हैं।"
2 कुरिं. 3:14	"परन्तु वे मतिमन्द हो गए, क्योंकि आज तक पुराना नियम पढ़ते समय उनके हृदयों पर वही परदा पड़ा रहता है, पर वह मसीह में उठ जाता है।"
2 कुरिं. 5:17	"इसलिए यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है : पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, सब बातें नई हो गई हैं।"
2 कुरिं. 5:19	"अर्थात् परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल-मिलाप कर लिया, और उनके अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया, और उसने मेल-मिलाप का वचन हमें सौंप दिया है।"
2 कुरिं. 5:21	"जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिए पाप ठहराया कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ।"

2 कुरिं. 12:2	"मैं मसीह में एक मनुष्य को जानता हूँ; चौदह वर्ष हुए कि न जाने देहसहित, न जाने देहरहित, परमेश्वर जानता है; ऐसा मनुष्य तीसरे स्वर्ग तक उठा लिया गया।"
2 कुरिं. 12:19	"तुम अभी तक समझ रहे होगे कि हम तुम्हारे सामने प्रत्युत्तर दे रहे हैं। हम तो परमेश्वर को उपस्थित जानकर मसीह में बोलते हैं, और हे प्रियो, सब बातें तुम्हारी उन्नति ही के लिए कहते हैं।"
2 कुरिं. 13:4	"वह निर्बलता के कारण क्रूस पर चढ़ाया तो गया, तौभी परमेश्वर की सामर्थ्य से जीवित है। हम भी उस में निर्बल हैं, परन्तु परमेश्वर की सामर्थ्य से जो तुम्हारे लिए है, उसके साथ जीएँगे।"
गलातियों 2:4	"यह उन झूठे भाइयों के कारण हुआ जो चोरी से घुस आए थे, कि उस स्वतंत्रता का जो मसीह यीशु में हमें मिली है, भेद लेकर हमें दास बनाएँ।"
गला. 2:16अ	"तौभी यह जानकर कि मनुष्य व्यवस्था के कामों से नहीं, पर केवल यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा धर्मी ठहरता है, हम ने आप भी मसीह यीशु पर विश्वास किया..।"
गला. 2:16ब	"...कि हम व्यवस्था के कामों से नहीं, पर मसीह पर विश्वास करने से ठहरें; इसलिए कि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी धर्मी न ठहरेगा।"
गला. 3:14	"यह इसलिए हुआ कि अब्राहम की आशीष मसीह यीशु में अन्यजातियों तक पहुँचे, और हम विश्वास के द्वारा उस आत्मा को प्राप्त करें जिसकी प्रतिज्ञा हुई है।"
गला. 3:22	"परन्तु पवित्रशास्त्र ने सबको पाप के अधीन कर दिया, ताकि वह प्रतिज्ञा जिसका आधार यीशु मसीह पर विश्वास करना है, विश्वास करनेवालों के लिए पूरी हो जाए।"
गला. 3:26	"क्योंकि तुम सब उस विश्वास के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो।"
गला. 3:28	"अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी, न कोई दास न स्वतंत्र, न कोई नर न नारी, क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो।"
गला. 5:6	"मसीह यीशु में न खतना न खतनारहित कुछ काम का है, परन्तु केवल विश्वास, जो प्रेम के द्वारा प्रभाव डालता है।"
इफि. 1:1	"पौलुस की ओर से जो परमेश्वर की इच्छा से यीशु मसीह का प्रेरित है, उन पवित्र और मसीह यीशु में विश्वासी लोगों के नाम जो इफिसुस में हैं।"
इफि. 1:3	"हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद कि उसने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आत्मिक आशीष दी है।"
इफि. 1:4	"जैसा उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले उसमें चुन लिया कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों।"
इफि. 1:7	"हम को उसमें उसके लहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात् अपराधों की क्षमा उसके इस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है।"
इफि. 1:9	"क्योंकि उसने अपनी इच्छा का भेद उस भले अभिप्राय के अनुसार हमें बताया, जिसे उसने अपने आप में ठान लिया था।"
इफि. 1:10	"कि समयों के पूरे होने का ऐसा प्रबंध हो कि जो कुछ स्वर्ग में है और जो कुछ पृथ्वी पर है, सबकुछ वह मसीह में एकत्र करे।"
इफि. 1:11	"उसी में जिसमें हम भी उसी की मनसा से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार सबकुछ करता है, पहले से ठहराए जाकर मीरास बने।"
इफि. 1:12	"कि हम, जिन्होंने पहले से मसीह पर आशा रखी थी, उसकी महिमा की स्तुति के कारण हों।"
इफि. 1:13अ	"और उसी में तुम पर भी, जब तुम ने सत्य का वचन सुना जो तुम्हारे उद्धार का सुसमाचार है और जिस पर तुम ने विश्वास किया।"

इफि. 1:15 "इस कारण, मैं भी उस विश्वास का समाचार सुन कर जो तुम लोगों में प्रभु यीशु पर है और सब पवित्र लोगों पर प्रगट है।"

इफि. 1:20 "जो उसने मसीह में किया कि उसको मरे हुओं में से जिलाकर स्वर्गीय स्थानों में अपनी दाहिनी ओर..।"

इफि. 2:6 "और मसीह यीशु में उसके साथ उठाया, और स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया।"

इफि. 2:7 "कि वह अपनी उस कृपा से जो मसीह यीशु में हम पर है, आने वाले समयों में अपने अनुग्रह का असीम धन दिखाए।"

इफि. 2:10 "क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं, और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिए तैयार किया।"

इफि. 2:13 "पर अब मसीह यीशु में तुम जो पहले दूर थे, मसीह के लहू के द्वारा निकट हो गए हो।"

इफि. 2:21 "जिसमें सारी रचना एक साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मन्दिर बनती जाती है।"

इफि. 2:22 "जिसमें तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवासस्थान होने के लिए एक साथ बनाए जाते हो।"

इफि. 3:6 "अर्थात् यह कि मसीह यीशु में सुसमाचार के द्वारा अन्यजाति लोग मीरास में साझी, और एक ही देह के और प्रतिज्ञा के भागी हैं।"

इफि. 3:11 "उस सनातन मनसा के अनुसार जो उसने हमारे प्रभु मसीह यीशु में की थी।"

इफि. 3:12 "जिसमें हम को उस पर विश्वास करने से साहस और भरोसे के साथ परमेश्वर के निकट आने का अधिकार है।"

इफि. 3:21 "कलीसिया में और मसीह यीशु में उसकी महिमा पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे। आमीन।"

इफि. 4:15 "वरन् प्रेम में सच्चाई से चलते हुए सब बातों में उसमें जो सिर है, अर्थात् मसीह में बढ़ते जाएँ।"

इफि. 4:21 "वरन् तुम ने सचमुच उसी की सुनी और, जैसा यीशु में सत्य है, उसी में सिखाए भी गए।"

इफि. 4:32 "एक दूसरे पर कृपालु और करुणामय हो, और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी एक दूसरे के अपराध क्षमा करो।"

इफि. 5:8 "क्योंकि तुम तो पहले अन्धकार थे, परन्तु अब प्रभु में ज्योति हो।"

इफि. 6:10 "इसलिए प्रभु में और उसकी शक्ति के प्रभाव में बलवन्त बनो।"

फिलि. 1:26 "और जो घमण्ड तुम मेरे विषय में करते हो, वह मेरे फिर तुम्हारे पास आने से मसीह यीशु में अधिक बढ़ जाए।"

फिलि. 2:1 "अतः यदि मसीह में कुछ शान्ति, और प्रेम से ढाढ़स, और आत्मा की सहभागिता, और कुछ करुणा और दया है।"

फिलि. 2:5 "जैसे मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो।"

फिलि. 3:3 "क्योंकि खतनावाले तो हम ही हैं जो परमेश्वर के आत्मा की अगुआई से उपासना करते हैं, और मसीह यीशु पर घमण्ड करते हैं, और शरीर पर भरोसा नहीं रखते।"

फिलि. 3:9अ "...जिससे मैं मसीह को प्राप्त करूँ और उसमें पाया जाऊँ...।"

फिलि. 3:9ब "...न कि अपनी उस धार्मिकता के साथ, जो व्यवस्था से है, वरन् उस धार्मिकता के साथ जो मसीह की ओर से विश्वास करने पर मिलती है।"

फिलि. 3:14 "निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूँ, ताकि वह इनाम पाऊँ जिसके लिए परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है।"

फिलि. 4:7 "तब परमेश्वर की शान्ति, जो सारी सामर्थ्य से परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी।"

फिलि. 4:19 "मेरा परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है, तुम्हारी हर एक घटी को पूरी करेगा।"

फिलि. 4:21 "हर एक पवित्र जन को, जो यीशु मसीह में है नमस्कार करो। जो भाई मेरे साथ हैं, तुम्हें नमस्कार कहते हैं।"

कुलु. 1:2 "मसीह में उन पवित्र और विश्वासी भाइयों के नाम जो कुलुस्से में रहते हैं: हमारे पिता परमेश्वर की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति प्राप्त होती रहे।"

कुलु. 1:4 "क्योंकि हम ने सुना है कि मसीह यीशु पर तुम्हारा विश्वास है, और सब पवित्र लोगों से तुम प्रेम रखते हो।"

कुलु. 1:14 "जिसमें हमें छुटकारा अर्थात् पापों की क्षमा प्राप्त होती है।"

कुलु. 1:17 "वही सब वस्तुओं में प्रथम है, और सब वस्तुएँ उसी में स्थिर रहती हैं।"

कुलु. 1:19 "क्योंकि पिता की प्रसन्नता इसी में है कि उस में सारी परिपूर्णता वास करे।"

कुलु. 1:28 "जिसका प्रचार करके हम हर एक मनुष्य को चेतावनी देते हैं और सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं, कि हम हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करें।"

कुलु. 2:5 "यद्यापि मैं शरीर के भाव से तुम से दूर हूँ, तौभी आत्मिक भाव से तुम्हारे निकट हूँ, और तुम्हारे व्यवस्थित जीवन को और तुम्हारे विश्वास की, जो मसीह में है, दृढ़ता देखकर प्रसन्न होता हूँ।"

कुलु. 2:6 "अतः जैसे तुम ने मसीह यीशु को प्रभु करके ग्रहण कर लिया है, वैसे ही उसी में चलते रहो।"

कुलु. 2:7 "और उसी में जड़ पकड़ते और बढ़ते जाओ; और जैसे तुम सिखाए गए वैसे ही विश्वास में दृढ़ होते जाओ, और अधिकाधिक धन्यवाद करते रहो।"

कुलु. 2:9 "क्योंकि उसमें ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है।"

कुलु. 2:10 "और तुम उसी में भरपूर हो गए हो जो सारी प्रधानता और अधिकार का शिरोमणि है।"

कुलु. 2:11 "उसी में तुम्हारा ऐसा खतना हुआ है जो हाथ से नहीं होता, अर्थात् मसीह का खतना, जिससे शारीरिक देह उतार दी जाती है।"

कुलु. 3:11 "उसमें न तो यूनानी रहा न यहूदी, न खतना न खतनारहित, न जंगली, न स्कूती, न दास न स्वतंत्र; केवल मसीह सब कुछ और सब में है।"

कुलु. 3:16 "मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो, और सिद्ध ज्ञान सहित एक दूसरे को सिखाओ और चिताओ, और अपने अपने मन में अनुग्रह के साथ परमेश्वर के लिए भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाओ।"

1 थिस्स. 1:1 "पौलुस और सिलवानुस और तीमुथियुस की ओर से थिस्सनुनीकियों की कलीसिया के नाम जो परमेश्वर पिता और प्रभु यीशु मसीह में है: अनुग्रह और शान्ति तुम्हें मिलती रहे।"

1 थिस्स. 1:3 "और अपने परमेश्वर और पिता के सामने तुम्हारे विश्वास के काम, और प्रेम का परिश्रम, और हमारे प्रभु यीशु मसीह में आशा की धीरता को लगातार स्मरण करते हैं।"

1 थिस्स. 2:14 "इसलिए तुम, हे भाइयो, परमेश्वर की उन कलीसियाओं की सी चाल चलने लगे जो यहूदिया में मसीह यीशु में हैं, क्योंकि तुम ने भी अपने लोगों से वैसा ही दुख पाया जैसा उन्होंने यहूदियों से पाया था।"

1 थिस्स. 4:1 "इसलिए, हे भाइयो, हम तुम से विनती करते हैं और तुम्हें प्रभु यीशु में समझाते हैं कि जैसे तुम ने हम से योग्य चाल चलना और परमेश्वर को प्रसन्न करना सीखा है, और जैसा तुम चलते भी हो, वैसे ही और भी बढ़ते जाओ।"

1 थिस्स. 4:16	"क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा; उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूँकी जाएगी; और जो मसीह में मरे हैं वे पहले जी उठेंगे।"
1 थिस्स. 5:12	"हे भाइयो, हम तुम से विनती करते हैं कि जो तुम में परिश्रम करते हैं, और प्रभु में तुम्हारे अगुवे हैं, और तुम्हें शिक्षा देते हैं, उनका सम्मान करो।"
1 थिस्स. 5:18	"हर बात में धन्यवाद करो; क्योंकि तुम्हारे लिए मसीह यीशु में परमेश्वर की यही इच्छा है।"
2 थिस्स. 1:1	"पौलुस और सिलवानुस और तीमुथियुस की ओर से थिस्सलुनीकियों की कलीसिया के नाम, जो हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह में हैं।"
2 थिस्स. 1:12	"ताकि हमारे परमेश्वर और यीशु मसीह के अनुग्रह के अनुसार हमारे प्रभु यीशु का नाम तुम में महिमा पाए और तुम उस में।"
2 थिस्स. 3:4	"हमें प्रभु में तुम्हारे ऊपर भरोसा है कि जो-जो आज्ञा हम तुम्हें देते है, उन्हें तुम मानते हो, और मानते भी रहोगे।"
2 थिस्स. 3:12	"ऐसों को हम प्रभु यीशु मसीह में आज्ञा देते और समझाते हैं कि चुपचाप काम करके अपनी ही रोटी खाया करें।"
1 तीमु. 1:14	"और हमारे प्रभु का अनुग्रह उस विश्वास और प्रेम के साथ जो मसीह यीशु में है, बहुतायत से हुआ।"
2 तीमु. 1:1	"पौलुस की ओर से जो, उस जीवन की प्रतिज्ञा के अनुसार जो मसीह यीशु में है, परमेश्वर की इच्छा से मसीह यीशु का प्रेरित है।"
2 तीमु. 1:9	"जिस ने हमारा उद्धार किया और पवित्र बुलाहट से बुलाया, और वह हमारे कामों के अनुसार नहीं; पर उसके उद्देश्य और उस अनुग्रह के अनुसार है जो मसीह यीशु में सनातन से हम पर हुआ है।"
2 तीमु. 1:13	"जो खरी बातें तू ने मुझ से सुनी हैं उनको उस विश्वास और प्रेम के साथ, जो मसीह यीशु में है, अपना आदर्श बनाकर रख।"
2 तीमु. 2:1	"इसलिए हे मेरे पुत्र, तू उस अनुग्रह से जो मसीह यीशु में है, बलवन्त हो जा।"
2 तीमु. 2:10	"इस कारण मैं चुने हुए लोगों के लिए सबकुछ सहता हूँ, कि वे भी उस उद्धार को जो मसीह यीशु में है अनन्त महिमा के साथ पाएँ।"
2 तीमु. 3:12	"पर जितने मसीह यीशु में भक्ति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं वे सब सताए जाएँगे।"
2 तीमु. 3:15	"और बचपन से पवित्रशास्त्र तेरा जाना हुआ है, जो तुझे मसीह पर विश्वास करने से उद्धार प्राप्त करने के लिए बुद्धिमान बना सकता है।"
फिलेमोन 7	"क्योंकि हे भाई, मुझे तेरे प्रेम से बहुत आनन्द और शान्ति मिली है, इसीलिए कि तेरे द्वारा पवित्र लोगों के मन हरे-भरे हो गए हैं।"
फिलेमोन 23	"इपफ्रास, जो मसीह यीशु में मेरे साथ कैदी है, तुझे नमस्कार।"
इब्रा. 1:1	"पूर्व युग में परमेश्वर ने बापदादों ने थोड़ा थोड़ा करके और भाँति-भाँति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें कर...।"
1 पतरस 5:10	अब परमेश्वर जो सारे अनुग्रह का दाता है, जिस ने तुम्हें मसीह में अपनी अनन्त महिमा के लिए बुलाया, तुम्हारे थोड़ी देर तक दुख उठाने के बाद आप ही तुम्हें सिद्ध और स्थिर और बलवन्त करेगा।"
1 यूहन्ना 2:5	"पर जो कोई उसके वचन पर चले, उसमें सचमुच परमेश्वर का प्रेम सिद्ध हुआ है। इसी से हम जानते हैं कि हम उस में हैं...।"
1 यूहन्ना 2:6	"जो कोई यह कहता है कि मैं उसमें बना रहता हूँ उसे चाहिए कि आप भी वैसा ही चले जैसा वह चलता था।"

1 यूहन्ना 2:8 "फिर भी मैं तुम्हें नई आज्ञा लिखता हूँ, और यह उसमें और तुम में सच्ची ठहरती है; क्योंकि अन्धकार मिटता जाता है और सत्य की ज्योति अब चमकने लगी है।"

1 यूहन्ना 2:27 "परन्तु तुम्हारा वह अभिषेक जो उसकी ओर से किया गया, तुम में बना रहता है; और तुम्हें इसका प्रयोजन नहीं कि कोई तुम्हें सिखाए, वरन् जैसे वह अभिषेक जो उसकी ओर से किया गया तुम्हें सब बातें सिखाता है, और यह सच्चा है और झूठा नहीं; और जैसा उसने तुम्हें सिखाया है वैसे ही तुम उसमें बने रहते है।"

1 यूहन्ना 2:28 "अतः हे बालको, उसमें बने रहो कि जब वह प्रगट हो तो हमें हियाव हो, और हम उसके आने पर उसके सामने लज्जित न हों।"

1 यूहन्ना 3:5 "तुम जानते हो कि वह इसलिए प्रगट हुआ कि पापों को हर ले जाए; और उसके स्वभाव में पाप नहीं।"

1 यूहन्ना 3:6 "जो कोई उसमें बना रहता है, वह पाप नहीं करताः जो कोई पाप करता है, उसने न तो उसे देखा है न उसको जाना है।"

1 यूहन्ना 3:24 "जो उसकी आज्ञाओं को मानता है, वह उसमें और वह उनमें बना रहता हैः और इसी से, अर्थात् उस आत्मा से जो उसने हमें दिया है हम जानते हैं कि वह हम में बना रहता है।"

1 यूहन्ना 4:13 "इसी से हम जानते हैं कि हम उसमें बने रहते हैं, और वह हम में; क्योंकि उसने अपने आत्मा में से हमें दिया है।"

1 यूहन्ना 5:20 "हम यह भी जानते हैं कि परमेश्वर का पुत्र आ गया है और उसने हमें समझ दी है कि हम उस सच्चे को पहचानें; और हम उसमें जो सत्य है अर्थात् उसके पुत्र यीशु मसीह में रहते हैं। सच्चा परमेश्वर और अनन्त जीवन यही है।"

2 यूहन्ना 9 "जो कोई मसीह की शिक्षा से आगे बढ़ जाता है और उसमें बना नहीं रहता, उसके पास परमेश्वर नहीं; जो कोई उसकी शिक्षा में स्थिर रहता है, उसके पास पिता भी और पुत्र भी।

प्रकाशित. 1:9 "मैं यूहन्ना, जो तुम्हारा भाई और यीशु के क्लेश और राज्य और धीरज में तुम्हारा सहभागी हूँ, परमेश्वर के वचन और यीशु की गवाही के कारण पतमुस नामक टापू में था।"

मसीह के द्वारा / उसके द्वारा

यूहन्ना 3:17 "परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिए नहीं भेजा कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे, परन्तु इसलिए कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए।"

प्रेरितों 3:16 "और उसी के नाम ने, उस विश्वास के द्वारा जो उसके नाम पर है, इस मनुष्य को जिसे तुम देखते हो और जानते भी हो सामर्थ्य दी है। उसी विश्वास ने जो उसके द्वारा है, इसको तुम सब के सामने बिलकुल भला चंगा कर दिया है।"

प्रेरितों 13:38 "इसलिए, हे भाइयो, तुम जान लो कि इसी के द्वारा पापों की क्षमा का समाचार तुम्हें दिया जाता है...।"

प्रेरितों 13:39 "और जिन बातों में तुम मूसा की व्यवस्था के द्वारा निर्दोष नहीं ठहर सकते थे, उन्हीं सब में हर एक विश्वास करनेवाला उसके द्वारा निर्दोष ठहरता है।"

रोमियों 1:5 "उसके द्वारा हमें अनुग्रह और प्रेरिताई मिली कि उसके नाम के कारण सब जातियों के लोग विश्वास करके उसकी मानें।"

रोमियों 1:8 "पहले मैं तुम सबके लिए यीशु मसीह के द्वारा अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ, क्योंकि तुम्हारे विश्वास की चर्चा सारे जगत में हो रही है।"

रोमियों 2:16 "जिस दिन परमेश्वर मेरे सुसमाचार के अनुसार यीशु मसीह के द्वारा मनुष्यों की गुप्त बातों का न्याय करेगा।"

रोमियों 5:1 "अतः जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें।"

रोमियों 5:9	"अतः जब कि हम अब उसके लहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा परमेश्वर के क्रोध से क्यों बचेंगे ?"
रोमियों 5:11	"केवल यही नहीं, परन्तु हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा, जिसके द्वारा हमारा मेल हुआ है, परमेश्वर में आनन्दित होते हैं।"
रोमियों 5:17	"क्योंकि जब एक मनुष्य के अपराध के कारण मृत्यु ने उस एक ही के द्वारा राज्य किया, तो जो लोग अनुग्रह और धर्मरूपी वरदान बहुतायत से पाते हैं वे एक मनुष्य के, अर्थात् यीशु मसीह के द्वारा अवश्य ही अनन्त जीवन में राज्य करेंगे।"
रोमियों 5:21	"कि जैसा पाप ने मृत्यु फैलाते हुए राज्य किया, वैसा ही हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा अनुग्रह भी अनन्त जीवन के लिए धर्मी ठहराते हुए राज्य करे।"
रोमियों 7:4	"वैसे ही हे मेरे भाइयो, तुम भी मसीह की देह के द्वारा व्यवस्था के लिए मरे हुए बन गए, कि उस दूसरे के हो जाओ, जो मरे हुओं में से जी उठाः ताकि हम परमेश्वर के लिए फल लाएँ।"
रोमियों 8:37	"परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिसने हम से प्रेम किया है, जयवन्त से भी बढ़कर हैं।"
रोमियों 11:36	"क्योंकि उसी की ओर से, और उसी के द्वारा, और उसी के लिए सब कुछ है। उसी की महिमा युगानुयुग होती रहे; आमीन।"
रोमियों 16:27	"उसी एकमात्र बुद्धिमान परमेश्वर की यीशु मसीह के द्वारा युगानुयुग महिमा होती रहे। आमीन।"
1 कुरिं. 8:6	"तौभी हमारे लिए तो एक ही परमेश्वर हैः अर्थात् पिता जिसकी ओर से सब वस्तुएँ हैं, और हम उसी के लिए हैं। और एक ही प्रभु है, अर्थात् यीशु मसीह, जिसके द्वारा सब वस्तुएँ हुई, और हम भी उसी के द्वारा हैं।"
1 कुरिं. 15:57	"परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है।"
2 कुरिं. 1:5	"क्योंकि जैसे मसीह के दुखों में हम अधिक सहभागी होते हैं, वैसे ही हम शान्ति में भी मसीह के द्वारा अधिक सहभागी होते हैं।"
2 कुरिं. 3:4	"हम मसीह के द्वारा परमेश्वर पर ऐसा ही भरोसा रखते हैं।"
2 कुरिं. 5:18	"ये सब बातें परमेश्वर की ओर से हैं, जिसने मसीह के द्वारा अपने साथ हमारा मेल-मिलाप कर लिया।"
2 कुरिं. 8:9	"तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह जानते हो कि वह धनी होकर भी तुम्हारे लिए कंगाल बन गया, ताकि उसके कंगाल हो जाने से तुम धनी हो जाओ।"
इफि. 1:5	"और अपनी इच्छा के भले अभिप्राय के अनुसार हमें अपने लिए पहले से ठहराया कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों।"
इफि. 2:18	"क्योंकि उसी के द्वारा हम दोनों की एक आत्मा में पिता के पास पहुँच होती है।"
फिलि. 1:11	"और उस धार्मिकता के फल से जो यीशु मसीह के द्वारा होते हैं, भरपूर होते जाओ जिससे परमेश्वर की महिमा और स्तुति होती रहे।"
फिलि. 4:13	"जो मुझे सामर्थ्य देता है उसमें मैं सबकुछ कर सकता हूँ।"
कुलु. 1:20	"और उसके क्रूस पर बहे हुए लहू के द्वारा मेलमिलाप करके, सब वस्तुओं का उसी के द्वारा से अपना मेल करले, चाहे वह पृथ्वी पर की हों चाहे स्वर्ग में की।"
कुलु. 2:15	"और उसने प्रधानताओं और अधिकारों को ऊपर से उतारकर उनका खुल्लमखुल्ला तमाशा बनाया और क्रूस के द्वारा उन पर जयजयकार की ध्वनि सुनाई।"
तीतुस 3:6	"जिसे उसने हमारे उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के द्वारा हम पर अधिकाई से उंडेला।"
इब्रा. 10:10	"उसी इच्छा से हम यीशु मसीह की देह के एक ही बार बलिदान चढ़ाए जाने के द्वारा पवित्र किए गए हैं।"

इब्रा. 13:20-21 "अब शान्तिदाता परमेश्वर, जो हमारे प्रभु यीशु को जो भेड़ों का महान रखवाला है सनातन वाचा के लहू के गुण से मरे हुओं में से जिलाकर ले आया, तुम्हें हर एक भली बात में सिद्ध करे, जिससे तुम उसकी इच्छा पूरी करो, और जो कुछ उसको भाता है उसे यीशु मसीह के द्वारा हम में उत्पन्न करे। उसी की महिमा युगानुयुग होती रहे। आमान।"

1 पतरस 1:21 "उसके द्वारा तुम उस परमेश्वर पर विश्वास करते हो, जिसने उसे मरे हुओं में से जिलाया और महिमा दी कि तुम्हारा विश्वास और आशा परमेश्वर पर हो।"

1 पतरस 2:5 "तुम भी आप जीवते पत्थरों के समान आत्मिक घर बनते जाते हो, जिससे याजकों का पवित्र समाज बनकर, ऐसे आत्मिक बलिदार चढ़ाओ जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के ग्राह्य हैं।"

1 पतरस 3:21 "...बपतिस्मा, यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा, अब तुम्हें बचाता है; इससे शरीर के मैल को दूर करने का अर्थ नहीं है, परन्तु शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ है।"

==

यह कुल 16 पुस्तकों के एक सेट की पुस्तक क्र. 12 है

इसका अध्ययन मिनिस्ट्री और ट्रेनिंग कोर्स में होना है, जो "केवल एक बार" का कोर्स है - Project of M.L.T.C. Ministries.

(केवल निजि वितरण के लिए!! - बिक्री के लिए नहीं!! - "केवल एक बार" प्राजक्ट का एक अंश)

दॅ डायरेक्टर आफ एमएलटीसी,

पी. ओ. बॉक्स 19106,

वरली,

मुम्बई - 400 030

+ या ईमेल करें : **mltc_ministries@yahoo.com**

2025